भारत की चोरी

भारत पर यूरोपीय विजय
1498–1765

रॉय मोखनाम

विषयसूची

Title Page शीर्षक पेज
Dedication समर्पण
Table of Contents विषयसूची
Preface प्रस्तावना
One The Portuguese एक पुर्तगाली
Spices, Christianity and Extreme Violence मसाले, ईसाई धर्म और अत्यधिक हिंसा
Two The Portuguese दो पुर्तगाली
Conquest, Horticulture, the Church and the Inquisition विजय, बागवानी, चर्च और धर्म जांच
Three The English तीन अंग्रेज
Venture Capitalists and Adventurers वेंचर कैपिटलिस्ट और एडवेंचरर्स
Four The English चार अंग्रेज
Splendour and Disease वैभव और रोग
Five The English पाँच अंग्रेज
Religious Freedom and Peaceful Trade धार्मिक स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण व्यापार
Six The Portuguese छह पुर्तगाली
Terror, Luxury and Decay आतंक, विलासिता और पतन
Seven The Dutch, the English and the Danes सात: डच, अंग्रेज और डेनिश
The Triumph of Peaceful Trade शांतिपूर्ण व्यापार की विजय
Eight The French and the British आठवां: फ्रांसीसी और ब्रिटिश
Towards Conquest विजय की ओर
Nine The British नौ ब्रिटिश
The Seizure of Bengal बंगाल पर कब्ज़ा
Postscript परिशिष्ट भाग
Bibliography ग्रन्थसूची
Further Reading अग्रिम पठन
Place Name Changes स्थान के नाम में परिवर्तन
Index अनुक्रमणिका
Acknowledgements स्वीकृतियाँ
About the Book किताब के बारे में
About the Author लेखक के बारे में
Copyright कॉपीराइट

The Theft of India

भारत की चोरी

The European Conquests of India, 1498–1765

भारत पर यूरोपीय विजय, 1498-1765

ROY MOXHAM

रॉय मॉक्सहैम

HarperCollins *Publishers* India

हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया

Dedicated to all those across the world who campaign for equality of opportunity.

यह उन सभी लोगों को समर्पित है जो दुनिया भर में समान अवसर के लिए अभियान चलाते हैं।

Contents
अंतर्वस्तु

Preface
प्रस्तावना

One
एक
The Portuguese
पुर्तगाली
Spices, Christianity and Extreme Violence
मसाले, ईसाई धर्म और अत्यधिक हिंसा

Two
दो
The Portuguese
पुर्तगाली
Conquest, Horticulture, the Church and the Inquisition
विजय, बागवानी, चर्च और धर्म जांच

Three
तीन
The English
अंग्रेज़
Venture Capitalists and Adventurers
वेंचर कैपिटलिस्ट और एडवेंचरर्स

Four
चार
The English
अंग्रेज़
Splendour and Disease
वैभव और रोग

Five
पाँच
The English
अंग्रेज़
Religious Freedom and Peaceful Trade
धार्मिक स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण व्यापार

Six
छह
The Portuguese
पुर्तगाली
Terror, Luxury and Decay
आतंक, विलासिता और पतन

Seven
सात
The Dutch, the English and the Danes
डच, अंग्रेज और डेनिश
The Triumph of Peaceful Trade
शांतिपूर्ण व्यापार की विजय

Eight
आठ
The French and the British
फ्रांसीसी और ब्रिटिश
Towards Conquest
विजय की ओर

Nine
नौ
The British
ब्रिटिश

The Seizure of Bengal
बंगाल पर कब्ज़ा

Postscript
परिशिष्ट भाग
Bibliography
ग्रन्थसूची
Further Reading
अग्रिम पठन
Place Name Changes
स्थान के नाम में परिवर्तन
Index
अनुक्रमणिका
Acknowledgements
स्वीकृतियाँ
About the Book
किताब के बारे में
About the Author
लेखक के बारे में
Copyright
कॉपीराइट

Preface

प्रस्तावना

Having spent some years in colonial and post-colonial Africa, I first visited India in 1992. It soon became apparent to me that the impressions I had formed of a benevolent British rule bore, as they had in Africa, little resemblance to the reality. The British had indeed improved education, irrigation and transport, but there was a much darker side too.

औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक अफ्रीका में कुछ वर्ष बिताने के बाद, मैंने पहली बार 1992 में भारत का दौरा किया। मुझे जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उदार ब्रिटिश शासन के बारे में मेरी जो धारणाएँ थीं, वे अफ्रीका की तरह ही, वास्तविकता से बहुत कम मिलती-जुलती थीं। अंग्रेजों ने शिक्षा, सिंचाई और परिवहन में सुधार तो किया था, लेकिन इसका एक बहुत ही काला पक्ष भी था।

By chance I came across a reference to the Imperial Customs Line, a barrier that the British used to fence off the eastern part of India in order to impose a huge tax on salt. None of the standard histories of India mentioned this barrier. Following its path, and delving into its history for my book, *The Great Hedge of India*, I was shocked to discover that it had made salt, an essential commodity, prohibitively expensive for millions of Indians and that many had perished as a result. Similarly, while researching for my book *Tea: Addiction, Exploitation and Empire*, I discovered that hundreds of thousands of Indians had died unnecessary deaths because of the harsh conditions on India's nineteenth-century, British-owned tea estates. Again, this was not mentioned in the standard histories of India. On completion of these two projects, I began to research the impact of European colonialism on the Indian peninsula.

संयोगवश मुझे इंपीरियल कस्टम्स लाइन का ज़िक्र मिला, जो अंग्रेजों द्वारा भारत के पूर्वी हिस्से को घेरने के लिए बनाई गई एक दीवार थी, जिसका उद्देश्य नमक पर भारी कर लगाना था।

भारत के किसी भी मानक इतिहास में इस दीवार का उल्लेख नहीं है। इसके मार्ग का अनुसरण करते हुए और अपनी पुस्तक 'द ग्रेट हेज ऑफ इंडिया' के लिए इसके इतिहास का गहन अध्ययन करते हुए, मुझे यह जानकर गहरा सदमा लगा कि इसने नमक, जो एक आवश्यक वस्तु है, को लाखों भारतीयों के लिए अत्यधिक महंगा बना दिया था और परिणामस्वरूप कई लोगों की मृत्यु हो गई थी। इसी प्रकार, अपनी पुस्तक 'टी: एडिक्शन, एक्सप्लॉयटेशन एंड एम्पायर' के लिए शोध करते समय, मैंने पाया कि उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश स्वामित्व वाले भारत के चाय बागानों की कठोर परिस्थितियों के कारण लाखों भारतीयों की अनावश्यक मृत्यु हुई थी। इसका भी उल्लेख भारत के मानक इतिहास में नहीं है। इन दोनों परियोजनाओं के पूरा होने के बाद, मैंने भारतीय प्रायद्वीप पर यूरोपीय उपनिवेशवाद के प्रभाव का शोध करना शुरू किया।

Accounts by early travellers of India’s riches – its spices, gold and gems – had excited the imagination of the Europeans. Some of these luxuries had been brought to Europe by the Romans, but when the Roman Empire collapsed, the Europeans became reliant on supplies coming through Arabia and Persia. In the fifteenth century, Portugal and Spain developed ships equipped with powerful artillery that could travel beyond Europe. To avoid clashes between the two Catholic countries, the Pope divided the world into two spheres of influence. The East, which included India, would be explored by the Portuguese. In 1498, Vasco da Gama discovered the sea route from Europe to India. Thereafter, Europe would no longer be dependent on India’s riches being supplied through the Middle East.

भारत की समृद्ध संपदा – मसालों, सोने और रत्नों – के बारे में शुरुआती यात्रियों के वृत्तांतों ने यूरोपियों की कल्पना को जगा दिया था। इनमें से कुछ विलासिता की वस्तुएँ रोमनों द्वारा यूरोप लाई गई थीं, लेकिन रोमन साम्राज्य के पतन के बाद, यूरोपीय अरब और फारस के रास्ते आने

वाली आपूर्ति पर निर्भर हो गए। पंद्रहवीं शताब्दी में, पुर्तगाल और स्पेन ने शक्तिशाली तोपखाने से लैस ऐसे जहाज विकसित किए जो यूरोप से परे यात्रा कर सकते थे। दो कैथोलिक देशों के बीच टकराव से बचने के लिए, पोप ने दुनिया को दो प्रभाव क्षेत्रों में विभाजित किया। पूर्व, जिसमें भारत भी शामिल था, की खोज पुर्तगालियों द्वारा की जानी थी। 1498 में, वास्को दा गामा ने यूरोप से भारत तक समुद्री मार्ग की खोज की। इसके बाद, यूरोप मध्य पूर्व के रास्ते आने वाली भारत की समृद्ध संपदा पर निर्भर नहीं रहा।

With their control of the seas, the Portuguese established a monopoly over trade between India and Europe. They seized Goa and several other enclaves. Events in Europe then began to impact on India. Portuguese naval supremacy was gradually eroded by the Dutch and the English, who themselves began to travel to India, and who eventually destroyed the Portuguese monopoly. The English largely confined their activities to trade while the Dutch, alongside trading, colonized parts of India. The Danes also established colonial enclaves. The French were the last great European power to arrive and set up colonial enclaves. The wars in Europe between the French and the British then spread into India. Eventually the British were victorious.

समुद्र पर अपना नियंत्रण स्थापित करके पुर्तगालियों ने भारत और यूरोप के बीच व्यापार पर एकाधिकार जमा लिया। उन्होंने गोवा और कई अन्य क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। यूरोप में घटित घटनाओं का प्रभाव भारत पर भी पड़ने लगा। डचों और अंग्रेजों ने, जो स्वयं भारत आने लगे थे, धीरे-धीरे पुर्तगाली नौसैनिक वर्चस्व को कमजोर कर दिया और अंततः पुर्तगाली एकाधिकार को समाप्त कर दिया। अंग्रेज मुख्य रूप से व्यापार तक ही सीमित रहे, जबकि डचों ने व्यापार के साथ-साथ भारत के कुछ हिस्सों पर उपनिवेश स्थापित किए। डेनमार्क ने भी औपनिवेशिक क्षेत्र स्थापित किए। फ्रांसीसी अंतिम महान यूरोपीय शक्ति थे जिन्होंने भारत आकर औपनिवेशिक क्षेत्र स्थापित किए। यूरोप में फ्रांसीसी और अंग्रेजों के बीच हुए युद्ध भारत तक फैल गए। अंततः अंग्रेजों की जीत हुई।

Rather than consult the usual history books, I sought out, for the most part, accounts written by eyewitness of all these events. Many of these have been published, with helpful editing, over the last century and a half by the Hakluyt Society. There were other memoirs too. I supplemented these readings with the study of academic papers, whose existence was hardly known beyond academia, by such outstanding scholars as C.R. Boxer. Gradually I built up a picture of what really happened.

मैंने आम इतिहास की किताबों के बजाय, इन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा लिखे गए विवरणों का अध्ययन किया। इनमें से कई विवरणों को पिछले डेढ़ सदी में हकलुइट सोसाइटी द्वारा उपयोगी संपादन के साथ प्रकाशित किया गया है। अन्य संस्मरण भी थे। मैंने इन लेखों के साथ-साथ सी.आर. बॉक्सर जैसे विख्यात विद्वानों के अकादमिक शोध पत्रों का भी अध्ययन किया, जिनके बारे में अकादमिक जगत के बाहर शायद ही किसी को पता था। धीरे-धीरे मुझे इस बात की स्पष्ट समझ विकसित हुई कि वास्तव में क्या हुआ था।

The Theft of India highlights the terrible suffering inflicted on Indians by the European powers during the three centuries that followed Vasco da Gama's discovery of the sea route from Europe to India. For most Indians, life under the Mughals was considerably worse than is generally portrayed, but at least the Mughal spoils were generally retained in India. The Europeans, however, exported not only vast amounts of India's wealth but thousands of Indian slaves too.

'द थेफ्ट ऑफ इंडिया' पुस्तक वास्को दा गामा द्वारा यूरोप से भारत तक समुद्री मार्ग की खोज के बाद की तीन शताब्दियों के दौरान यूरोपीय शक्तियों द्वारा भारतीयों पर किए गए भयानक अत्याचारों को उजागर करती है। अधिकांश भारतीयों के लिए, मुगलों के अधीन जीवन आम तौर पर दिखाए जाने वाले चित्रण से कहीं अधिक बुरा था, लेकिन कम से कम मुगलों द्वारा लूटी गई संपत्ति आमतौर पर भारत में ही रहती थी। हालांकि, यूरोपीय लोगों ने न केवल भारत की अपार संपत्ति बल्कि हजारों भारतीय दासों को भी निर्यात किया।

European oppression began with a reign of terror by the Portuguese. Entire communities were massacred, and those who survived were often forced to convert to Christianity. Many of them were victimized by the Portuguese Inquisition and atrocities continued to take place under the conquests of the Dutch and French. All these European powers exported slaves, mostly to the East Indies. Finally, the British, who until the eighteenth century had largely confined themselves to peaceful trade, conquered Bengal. They imposed a chaotic administration and seized much of Bengal's wealth, which they then exported to Britain. The impoverished population, without money to purchase food from other parts of India, could not fend off famine as they had in previous years. Millions starved to death.

यूरोपीय अत्याचारों की शुरुआत पुर्तगालियों के आतंक से हुई। पूरे समुदायों का नरसंहार किया गया, और जो बच गए उन्हें अक्सर जबरन ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया। उनमें से कई पुर्तगाली धर्म जांच के शिकार हुए और डच और फ्रांसीसी विजयों के दौरान भी अत्याचार जारी रहे। इन सभी यूरोपीय शक्तियों ने दासों का निर्यात किया, अधिकतर पूर्वी इंडीज को। अंततः, अंग्रेजों ने, जो अठारहवीं शताब्दी तक मुख्य रूप से शांतिपूर्ण व्यापार तक ही सीमित थे, बंगाल पर विजय प्राप्त की। उन्होंने एक अव्यवस्थित प्रशासन लागू किया और बंगाल की अधिकांश संपत्ति पर कब्जा कर लिया, जिसे उन्होंने ब्रिटेन को निर्यात कर दिया। गरीब आबादी, जिनके पास भारत के अन्य हिस्सों से भोजन खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, पिछले वर्षों की तरह अकाल का सामना नहीं कर सकी। लाखों लोग भूख से मर गए।

Numerous eyewitness accounts by both Indians and Europeans bring all these events to life.

भारतीयों और यूरोपीय लोगों द्वारा दिए गए कई प्रत्यक्षदर्शी विवरण इन सभी घटनाओं को जीवंत बना देते हैं।

One

एक

THE PORTUGUESE

पुर्तगाली

SPICES, CHRISTIANITY AND EXTREME VIOLENCE

मसाले, ईसाई धर्म और अत्यधिक हिंसा

We took a ship from Mecca in which were 380 men and many women and children, and we took from it fully 12,000 ducats, with goods worth at least another 10,000. And we burned the ship and all the people on board with gunpowder.

हमने मक्का से एक जहाज़ लिया जिसमें 380 पुरुष और कई महिलाएं और बच्चे सवार थे, और हमने उससे पूरे 12,000 डुकाट लूट लिए, साथ ही कम से कम 10,000 डुकाट मूल्य का सामान भी। और हमने बारूद से जहाज़ और उस पर सवार सभी लोगों को जला दिया।

– A Portuguese companion of Vasco da Gama, 1502.

- वास्को डी गामा का एक पुर्तगाली साथी, 1502।

On 20 May 1498, Vasco da Gama anchored his ships just north of Calicut on the Malabar Coast of India. These were the first ships to reach India from Europe. Calicut was a haven of peaceful trade for the ships of the many nations that came to purchase India's spices. Only two years later the Portuguese would capture those ships, slaughter their crews, train their cannon on Calicut, destroy its houses and kill its inhabitants. The Portuguese terror would have started.

20 मई 1498 को वास्को दा गामा ने अपने जहाजों को भारत के मालाबार तट पर कालीकट के ठीक उत्तर में लंगर डाला। यूरोप से भारत पहुंचने वाले ये पहले जहाज थे। कालीकट उन अनेक देशों के जहाजों के लिए शांतिपूर्ण व्यापार का एक सुरक्षित केंद्र था जो भारत के मसालों को खरीदने आते थे। केवल दो साल बाद पुर्तगालियों ने उन्हीं जहाजों पर कब्जा कर

लिया, उनके चालक दल का नरसंहार किया, कालीकट पर तोपों से हमला किया, उसके घरों को नष्ट कर दिया और निवासियों को मार डाला। यहीं से पुर्तगाली आतंक की शुरुआत हुई।

The Indian Ocean was not unexplored territory. Vasco da Gama's achievement had been in finding the route from Europe around the tip of Africa – an achievement that would transform the trade between Europe and Asia. Once he had reached the Indian Ocean he was in a sea that had been traded on for at least two thousand years. Spices from India were well known in Europe. They were much in demand, especially pepper, but they had usually come by sea to the northern ports of the Indian Ocean and then been taken overland.

हिंद महासागर कोई अनछुआ इलाका नहीं था। वास्को दा गामा की उपलब्धि यूरोप से अफ्रीका के दक्षिणी छोर तक का मार्ग खोजना था – एक ऐसी उपलब्धि जिसने यूरोप और एशिया के बीच व्यापार को पूरी तरह बदल दिया। हिंद महासागर तक पहुँचने के बाद, वे एक ऐसे समुद्र में थे जहाँ कम से कम दो हज़ार वर्षों से व्यापार होता आ रहा था। भारत के मसाले यूरोप में प्रसिद्ध थे। उनकी बहुत मांग थी, खासकर काली मिर्च की, लेकिन वे आमतौर पर समुद्री मार्ग से हिंद महासागर के उत्तरी बंदरगाहों तक पहुँचते थे और फिर वहाँ से सड़क मार्ग से आगे ले जाए जाते थे।

Pepper had been used in ancient Egypt as a part of the armoury of spices used to embalm its rulers. The mummy of Ramesses II, who died in 1213 BC, is in the Cairo Museum. X-ray examination has revealed a peppercorn stuffed and sealed into each nostril. Pepper was the most important item imported from south India by the Greeks and the Romans. It is mentioned by Aristotle, and was recommended by the famous physician Hippocrates, when mixed with vinegar and honey, as a cure for an infected uterus. Much of this pepper probably travelled through Egypt, which came under Greek control in the

fourth century BC. It seems to have been used solely as a medicine until the Roman emperor Augustus started to use it as a condiment. It was during his reign that the Romans annexed Egypt in 30 BC. The Romans transformed the trade across the Arabian Sea. In the middle of the first century they had become acquainted with the details of the monsoon – already well known to the Arabs – and had built large ships to travel directly from Egypt to southern India. Pliny the Elder tells us that the journey from Ocelis, at the mouth of the Red Sea, to Muziris on the Malabar Coast in south-west India, took one month. The Romans destroyed the principal Arab trading centre of Aden, and made treaties with the smaller ports on the Arabian coast so that they could dominate the spice trade. By the end of the first century, spices were no longer a scarce luxury for the Romans. Alexandria became the centre of the spice trade, with large pepper warehouses. The use of pepper spread across the Roman Empire. In Rome itself, Emperor Domitian built pepper warehouses, the remains of which are still visible. Pepper was used both in the kitchen and at table. Several exquisite pepper pots from this period have been discovered in France and in Britain.

प्राचीन मिस्र में काली मिर्च का उपयोग शासकों के शवों को संरक्षित करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मसालों के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में किया जाता था। 1213 ईसा पूर्व में मृत रामसेस द्वितीय की ममी काहिरा संग्रहालय में है। एक्स-रे जांच से पता चला है कि प्रत्येक नथुने में काली मिर्च का एक दाना ठूंसा और सील किया गया था। काली मिर्च दक्षिण भारत से यूनानियों और रोमनों द्वारा आयात की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण वस्तु थी। अरस्तू ने इसका उल्लेख किया है, और प्रसिद्ध चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने इसे सिरके और शहद के साथ मिलाकर गर्भाशय के संक्रमण के इलाज के रूप में सुझाया था। इस काली मिर्च का अधिकांश भाग संभवतः मिस्र से होकर गुजरा, जो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानियों के नियंत्रण में आ गया था। ऐसा लगता है कि रोमन सम्राट ऑगस्टस द्वारा इसे मसाले के रूप में उपयोग करने

से पहले तक इसका उपयोग केवल एक औषधि के रूप में किया जाता था। उनके शासनकाल के दौरान ही रोमनों ने 30 ईसा पूर्व में मिस्र पर कब्जा कर लिया था। रोमनों ने अरब सागर के पार व्यापार को बदल दिया। पहली शताब्दी के मध्य में वे मानसून के विवरण से परिचित हो गए थे - जो अरबों को पहले से ही अच्छी तरह से ज्ञात था - और उन्होंने मिस्र से सीधे दक्षिण भारत की यात्रा करने के लिए बड़े जहाज बनाए थे। प्लिनी द एल्डर के अनुसार, लाल सागर के मुहाने पर स्थित ओसेलिस से दक्षिण-पश्चिम भारत के मालाबार तट पर स्थित मुज़िरिस तक की यात्रा में एक महीना लगता था। रोमनों ने अरबों के प्रमुख व्यापारिक केंद्र अदन को नष्ट कर दिया और अरब तट पर स्थित छोटे बंदरगाहों के साथ संधियाँ कीं ताकि वे मसालों के व्यापार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकें। पहली शताब्दी के अंत तक, मसाले रोमनों के लिए दुर्लभ विलासिता की वस्तु नहीं रह गए थे। अलेक्जेंड्रिया मसालों के व्यापार का केंद्र बन गया, जहाँ काली मिर्च के बड़े-बड़े गोदाम थे। काली मिर्च का उपयोग पूरे रोमन साम्राज्य में फैल गया। रोम में ही, सम्राट डोमिटियन ने काली मिर्च के गोदाम बनवाए, जिनके अवशेष आज भी दिखाई देते हैं। काली मिर्च का उपयोग रसोई और भोजन दोनों में किया जाता था। इस काल के कई उत्कृष्ट काली मिर्च के बर्तन फ्रांस और ब्रिटेन में पाए गए हैं।

It was not only goods of Indian origin that went from Malabar to Europe. From well before Roman times, there had been a flourishing trade in spices and other goods between south India and the East. Indian spices were exported to China. Spices from Indonesia, such as cloves and nutmeg, came to India. Quantities of these were then shipped onwards to Arabia and Europe. The spices from India were a heavy drain on the Roman exchequer. There was a market for some Roman goods in India – clothing, metals, pigments, drugs and cosmetics – and particularly for the red coral of the Mediterranean. Pliny the Elder, writing in the first century AD, observed that Roman coral enjoyed the same prestige with the men of India as did Indian pearls with the women of Rome. The coral was not only valued as attractive jewellery, but also as a charm against evil and disease. Most spices, however, had to be paid for with

gold. Pliny, worried about the drain of wealth from the empire, estimated that imports from India, principally pepper, cost fifty-five million sesterces annually – the equivalent of over half a million English gold sovereigns. Numerous caches of Roman gold and silver coins have been found in southern India.

मालाबार से यूरोप केवल भारतीय मूल की वस्तुएँ ही नहीं भेजी जाती थीं। रोमन काल से बहुत पहले से ही दक्षिण भारत और पूर्व भारत के बीच मसालों और अन्य वस्तुओं का फलता-फूलता व्यापार होता था। भारतीय मसाले चीन को निर्यात किए जाते थे। इंडोनेशिया से लौंग और जायफल जैसे मसाले भारत आते थे। फिर इन्हें बड़ी मात्रा में अरब और यूरोप भेजा जाता था। भारत से आने वाले मसालों से रोमन खजाने पर भारी बोझ पड़ता था। भारत में कुछ रोमन वस्तुओं - वस्त्र, धातुएँ, रंगद्रव्य, औषधियाँ और सौंदर्य प्रसाधन - का बाज़ार था, और विशेष रूप से भूमध्य सागर के लाल मूंगे का। पहली शताब्दी ईस्वी में लिखने वाले प्लिनी द एल्डर ने देखा कि रोमन मूंगे को भारतीय पुरुषों में वही प्रतिष्ठा प्राप्त थी जो रोम की महिलाओं में भारतीय मोतियों को। मूंगे को न केवल आकर्षक आभूषण के रूप में महत्व दिया जाता था, बल्कि इसे बुराई और बीमारियों से बचाव का कवच भी माना जाता था। हालाँकि, अधिकांश मसालों का भुगतान सोने में करना पड़ता था। साम्राज्य से धन के पलायन को लेकर चिंतित प्लिनी ने अनुमान लगाया था कि भारत से आयात, मुख्य रूप से काली मिर्च, पर प्रतिवर्ष पचपन मिलियन सेस्टर्स खर्च होते थे - जो लगभग पांच लाख अंग्रेजी सोने के सिक्कों के बराबर था। दक्षिण भारत में रोमन सोने और चांदी के सिक्कों के कई भंडार पाए गए हैं।

Much of our knowledge of the trade routes between Egypt and the Malabar Coast comes from the *Periplus of the Erythraean Sea*. This is believed to have been written as a guide by a Greek captain (many of the Roman Empire's ships were operated by Greeks) based in Alexandria around AD 79–84. It describes the journey from the Red Sea to a number of western Indian ports, stretching from the mouths of the rivers Indus and Narmada, all the way down the coast

to Muziris – which ‘abounds in ships sent there with cargoes from Arabia, and by the Greeks’ – and beyond:

मिस्र और मालाबार तट के बीच व्यापार मार्गों के बारे में हमारी अधिकांश जानकारी एरिथ्रियन सागर के पेरिप्लस से मिलती है। माना जाता है कि इसे लगभग 79-84 ईस्वी के आसपास अलेक्जेंड्रिया में तैनात एक यूनानी कप्तान (रोमन साम्राज्य के कई जहाज यूनानियों द्वारा संचालित किए जाते थे) द्वारा एक मार्गदर्शिका के रूप में लिखा गया था। यह लाल सागर से लेकर पश्चिमी भारत के कई बंदरगाहों तक की यात्रा का वर्णन करता है, जो सिंधु और नर्मदा नदियों के मुहाने से शुरू होकर तट के किनारे मुज़िरिस तक फैला हुआ है - जहाँ 'अरब से और यूनानियों द्वारा माल से भरे जहाजों की भरमार थी' - और उससे आगे तक।

They send large ships to these market towns on account of the great quantity and bulk of pepper and malabathrum [cinnamon leaf]…They make the voyage to this place in a favourable season who set out from Egypt about the month of July.

काली मिर्च और मालाबाथ्रम (दालचीनी के पत्ते) की प्रचुर मात्रा और बहुतायत के कारण वे इन बाजार कस्बों में बड़े जहाज भेजते हैं... जो लोग जुलाई के महीने के आसपास मिस्र से निकलते हैं, वे अनुकूल मौसम में इस स्थान की यात्रा करते हैं।

The trade between the Romans and the Malabar Coast continued for hundreds of years. As Rome declined, however, the trade diminished. Coin finds from the third and fourth centuries are progressively rarer. Nevertheless, some trade continued right up to the end of the empire. In AD 408, Alaric I, the Visigoth, laid siege to Rome. As part of the city’s ransom, he demanded, and received, 3,000 lb of pepper.

रोमवासियों और मालाबार तट के बीच व्यापार सैकड़ों वर्षों तक जारी रहा। हालाँकि, रोम के पतन के साथ-साथ व्यापार भी कम होता गया। तीसरी और चौथी शताब्दी के सिक्के उत्तरोत्तर दुर्लभ होते जा रहे हैं। फिर भी, कुछ व्यापार साम्राज्य के अंत तक जारी रहा। 408 ईस्वी में,

विसिगोथ वंश के अलारिक प्रथम ने रोम को घेर लिया। शहर की फिरौती के रूप में, उसने 3,000 पाउंड काली मिर्च की मांग की और उसे प्राप्त किया।

With the collapse of the Roman Empire, the trade with India reverted to the Arabs. They totally dominated the trade of the Arabian Sea until the arrival of the Portuguese. Their first written accounts date from the ninth century. These describe journeys from Muscat to Quilon – which had become the main port of Malabar – as taking one month. They also mention the presence of Chinese ships in Quilon. Ibn Batuta, from Tangier, on his way to China in the fourteenth century wrote detailed accounts of his visits to Calicut, Quilon and many other places in Malabar. His writings, however, like those of the Arabs who had been visiting India for many centuries before Vasco da Gama, were unknown in Europe.

रोमन साम्राज्य के पतन के साथ ही भारत के साथ व्यापार अरबों के हाथों में लौट आया। पुर्तगालियों के आगमन तक अरब सागर के व्यापार पर उनका पूर्ण वर्चस्व रहा। उनके पहले लिखित विवरण नौवीं शताब्दी के हैं। इनमें मस्कट से क्विलोन (जो मालाबार का मुख्य बंदरगाह बन चुका था) तक की यात्रा का वर्णन है, जिसमें एक महीना लगता था। इनमें क्विलोन में चीनी जहाजों की उपस्थिति का भी उल्लेख है। चौदहवीं शताब्दी में चीन जाते समय, तांजियर के इब्न बतूता ने कालीकट, क्विलोन और मालाबार के कई अन्य स्थानों की अपनी यात्राओं का विस्तृत विवरण लिखा। हालाँकि, वास्को दा गामा से कई शताब्दियों पहले भारत आने वाले अरबों की तरह, उनके लेखन भी यूरोप में अज्ञात थे।

Europe, fortunately, had some chroniclers of its own. The most famous of these was the Venetian, Marco Polo, who returned by ship from China to the Persian Gulf via India, at the end of the thirteenth century. He described visiting Quilon; its pepper, sandalwood and indigo; its Christians and Jews. He also mentioned the trade with China and Arabia. Chinese ships were regular visitors to India until the mid-fifteenth century. The fleets were controlled by

the eunuch faction at the Chinese court. When this lost power, the new favourites forbade all foreign voyages. Two travellers whose writings were known in medieval Europe were the French Dominican missionary Jordanus and the Italian Franciscan missionary Odoric of Pordenone. Both visited Malabar in the early fourteenth century. Jordanus wrote detailed descriptions of life in Quilon, where he wanted to set up a mission, with accurate descriptions of its spices:

सौभाग्य से, यूरोप में भी कुछ इतिहासकार थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध वेनिसवासी मार्को पोलो थे, जो तेरहवीं शताब्दी के अंत में चीन से भारत होते हुए फारस की खाड़ी तक जहाज से लौटे थे। उन्होंने क्विलोन की यात्रा का वर्णन किया; वहाँ के काली मिर्च, चंदन और नील के बारे में; वहाँ के ईसाई और यहूदी समुदाय के बारे में। उन्होंने चीन और अरब के साथ व्यापार का भी उल्लेख किया। पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य तक चीनी जहाज नियमित रूप से भारत आते थे। इन बेड़ों पर चीनी दरबार के हिजड़ों के गुट का नियंत्रण था। जब इस गुट की शक्ति समाप्त हुई, तो नए प्रमुखों ने सभी विदेशी यात्राओं पर प्रतिबंध लगा दिया। मध्यकालीन यूरोप में जिन दो यात्रियों के लेखन प्रसिद्ध थे, वे थे फ्रांसीसी डोमिनिकन मिशनरी जॉर्डनस और इतालवी फ्रांसिस्कन मिशनरी ओडोरिक ऑफ पोर्डेनोन। दोनों ने चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में मालाबार की यात्रा की थी। जॉर्डनस ने क्विलोन में जीवन का विस्तृत वर्णन लिखा, जहाँ वे एक मिशन स्थापित करना चाहते थे, और वहाँ के मसालों का सटीक वर्णन किया।

Ginger is the root of a plant which hath leaves like a reed. Pepper is the fruit of a plant something like ivy, which climbs trees, and forms grape-like fruit like that of the wild vine. This fruit is first green, then when it comes to maturity it becomes all black and corrugated as you see it.

अदरक एक पौधे की जड़ है जिसमें सरकंडे जैसी पत्तियाँ होती हैं। काली मिर्च एक ऐसे पौधे का फल है जो बेल जैसा दिखता है, पेड़ों पर चढ़ता है और जंगली लता के अंगूर जैसे फल पैदा करता है। यह फल पहले हरा होता है, फिर पकने पर पूरी तरह से काला और झुर्रीदार हो जाता है जैसा कि आप इसे देखते हैं।

He also urged the Pope to establish a Christian fleet on the Indian seas.
उन्होंने पोप से भारतीय समुद्रों में एक ईसाई बेड़ा स्थापित करने का भी आग्रह किया।
As the Dark Ages gave way to the Middle Ages, the demand in Europe for spices increased. In early medieval Europe spices were so expensive as to be the preserve of the very rich. They were used by monarchs and prelates to impress. In 1256, the Scottish king, Alexander III, visited Henry III of England, and celebrated the Assumption at Woodstock with a great feast that used fifty pounds weight each of ginger, cinnamon and pepper. As the Middle Ages progressed, the price of pepper dropped, opening up consumption to a larger class of the moderately wealthy. It has been said that the phenomenal demand for spices, particularly for pepper, was because of the putrid food served up to the medieval populace. It seems unlikely that this was a major factor, since the link between stinking food and disease was well known. More likely it was used to mask the pervasive taste of the vast amounts of salt used to keep food through the winter months. Most importantly, it was used because it was the fashion – used at first by the rich for ostentation and then imitated by others as the prices fell. Whatever the motive, the demand was huge.
जैसे-जैसे अंधकार युग का अंत होकर मध्य युग का आगमन हुआ, यूरोप में मसालों की मांग बढ़ती गई। प्रारंभिक मध्ययुगीन यूरोप में मसाले इतने महंगे थे कि वे केवल अत्यंत धनी लोगों के लिए ही उपलब्ध थे। राजा और धर्माधिकारी इनका उपयोग अपने मेहमानों को प्रभावित करने के लिए करते थे। 1256 में, स्कॉटलैंड के राजा अलेक्जेंडर तृतीय ने इंग्लैंड के हेनरी तृतीय से मुलाकात की और वुडस्टॉक में स्वर्गारोहण दिवस का भव्य भोज आयोजित किया, जिसमें अदरक, दालचीनी और काली मिर्च प्रत्येक पचास-पचास पाउंड वजन के रूप में इस्तेमाल किए गए। जैसे-जैसे मध्य युग आगे बढ़ा, काली मिर्च की कीमत गिर गई, जिससे मध्यम वर्ग के धनी लोगों के बीच इसका उपभोग संभव हो गया। ऐसा कहा जाता है कि मसालों, विशेष रूप से काली मिर्च की अत्यधिक मांग का कारण मध्ययुगीन जनता को परोसा

जाने वाला दुर्गंधयुक्त भोजन था। हालांकि यह एक प्रमुख कारण प्रतीत नहीं होता, क्योंकि दुर्गंधयुक्त भोजन और बीमारियों के बीच संबंध सर्वविदित था। अधिक संभावना यह है कि इसका उपयोग सर्दियों के महीनों में भोजन को सुरक्षित रखने के लिए उपयोग किए जाने वाले भारी मात्रा में नमक के तीखे स्वाद को छिपाने के लिए किया जाता था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसका उपयोग फैशन के कारण किया जाता था - पहले धनी लोग इसे दिखावे के लिए इस्तेमाल करते थे और फिर कीमतें गिरने पर अन्य लोगों ने भी इसका अनुकरण किया। मकसद चाहे जो भी हो, मांग बहुत अधिक थी।

The merchants of Italy controlled much of the distribution. They traded from Constantinople, Beirut, Aleppo, Alexandria and Cairo. With the fall of Constantinople, the markets at Alexandria and Cairo became the most important. Spices continued to flow into Europe, but only after massive profits had been creamed off by Muslim rulers and traders. For, although the Venetians dominated the spice trade within Europe, the Arabs controlled the sea trade to the source in Malabar.

इटली के व्यापारियों का वितरण पर काफी हद तक नियंत्रण था। वे कॉन्स्टेंटिनोपल, बेरूत, अलेप्पो, अलेक्जेंड्रिया और काहिरा से व्यापार करते थे। कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के बाद, अलेक्जेंड्रिया और काहिरा के बाज़ार सबसे महत्वपूर्ण हो गए। यूरोप में मसालों का प्रवाह जारी रहा, लेकिन मुस्लिम शासकों और व्यापारियों द्वारा भारी मुनाफा कमाने के बाद ही। क्योंकि, यद्यपि यूरोप के भीतर मसालों के व्यापार पर वेनिसवासियों का वर्चस्व था, लेकिन मालाबार में मसालों के स्रोत तक समुद्री व्यापार पर अरबों का नियंत्रण था।

Two European merchants, Afanasy Nikitin and Niccolò de' Conti, who travelled to India in the fifteenth century, brought back useful information about its riches and trade. Nikitin was a merchant who left Russia in 1468 and later crossed the Caspian Sea to Persia. From there he went to the island of Ormuz and took a ship to Chaul, a port on India’s western coast. He went to the Sultanate of Bahmani in southern India, where he stayed for three years

‘The land is overpopulated with people, but those in the country are very miserable, while the nobles are extremely opulent and delight in luxury.’ In addition he visited Cambay, Dabul and Calicut:

पंद्रहवीं शताब्दी में भारत की यात्रा करने वाले दो यूरोपीय व्यापारी, अफनासी निकितिन और निकोलो डी' कोंटी, भारत की समृद्धि और व्यापार के बारे में उपयोगी जानकारी लेकर लौटे। निकितिन एक व्यापारी थे जिन्होंने 1468 में रूस छोड़ा और बाद में कैस्पियन सागर पार करके फारस पहुंचे। वहां से वे ओरमुज द्वीप गए और वहां से भारत के पश्चिमी तट पर स्थित चौल बंदरगाह के लिए जहाज लिया। वे दक्षिण भारत में बहमनी सल्तनत गए, जहां वे तीन साल तक रहे। 'यह भूमि अत्यधिक आबादी वाली है, लेकिन ग्रामीण इलाकों के लोग बेहद दयनीय स्थिति में हैं, जबकि कुलीन लोग अत्यंत धनी हैं और विलासिता में लिप्त रहते हैं।' इसके अलावा उन्होंने कैम्बे, डाबुल और कालीकट का भी दौरा किया।

The country produces pepper, ginger, colour plants, muscat, cloves, cinnamon, aromatic roots … and every description of spices, and everything is cheap, and servants and maids are very good.

इस देश में काली मिर्च, अदरक, रंगीन पौधे, कस्तूरी, लौंग, दालचीनी, सुगंधित जड़ें... और हर तरह के मसाले पैदा होते हैं, और सब कुछ सस्ता है, और नौकर-चाकर बहुत अच्छे हैं।

Nikitin was unreserved in his observations:

निकितिन ने अपनी टिप्पणियों में कोई संकोच नहीं किया:

It is the custom for foreign traders to stay at inns where the food is cooked for the guests by the landlady, who also makes the bed and sleeps with the stranger. Women who know you willingly concede their favours for they like white men.

विदेशी व्यापारियों के लिए ऐसे सराय में ठहरना आम बात है जहाँ भोजन मालकिन द्वारा पकाया जाता है, वही बिस्तर लगाती है और अजनबी के साथ सोती है। जो स्त्रियाँ आपको जानती हैं, वे स्वेच्छा से आपके साथ संबंध बनाती हैं क्योंकि उन्हें गोरे पुरुष पसंद होते हैं।

More important than Nikitin, since Italy was the European emporium for spices, was the earlier Venetian traveller Niccolò de' Conti. He journeyed to the Middle East, India, South East Asia and perhaps China from about 1419 to 1444. In Damascus he learnt Arabic and from then onwards passed himself off as a Muslim. On his return the Pope made him do penance by relating his travels to the papal secretary, who then wrote them down and circulated the manuscript. This first went into print in 1492. It is probable that Conti's account encouraged the Portuguese explorers later in the century. It certainly influenced cartographers and early sixteenth-century travels.

निकितिन से भी अधिक महत्वपूर्ण, क्योंकि इटली मसालों का यूरोपीय व्यापार केंद्र था, वेनिस के पूर्व यात्री निकोलो डी' कोंटी थे। उन्होंने लगभग 1419 से 1444 तक मध्य पूर्व, भारत, दक्षिण पूर्व एशिया और संभवतः चीन की यात्रा की। दमिश्क में उन्होंने अरबी सीखी और तब से खुद को मुसलमान के रूप में पेश करने लगे। उनकी वापसी पर पोप ने उन्हें प्रायश्चित के रूप में अपने यात्रा वृत्तांत पोप के सचिव को सौंपने को कहा, जिन्होंने इसे लिखकर पांडुलिपि का प्रसार किया। यह पांडुलिपि पहली बार 1492 में छपी। यह संभव है कि कोंटी के वृत्तांत ने बाद में उसी शताब्दी में पुर्तगाली खोजकर्ताओं को प्रेरित किया हो। इसने निश्चित रूप से मानचित्रकारों और सोलहवीं शताब्दी के आरंभिक यात्राओं को प्रभावित किया।

Conti sailed from the Gulf to Cambay in Gujarat, and then went on to the mighty Vijayanagar Empire in the south before ending up on the east coast and taking a ship to the Far East. He then sailed back to Bengal from where he travelled up the River Ganges to Varanasi. He then travelled overland through Burma. From there he took a ship to Java and returned via Vietnam to India. He visited Cochin and Calicut before going to Cambay, and back again to Calicut before leaving for the Middle East and Venice. Conti described India as:

कोंटी ने खाड़ी से गुजरात के कैम्बे तक समुद्री यात्रा की, फिर दक्षिण में शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य की ओर बढ़े और अंत में पूर्वी तट पर पहुँचकर एक जहाज से सुदूर पूर्व

की ओर रवाना हुए। इसके बाद वे वापस बंगाल लौटे और वहाँ से गंगा नदी के मार्ग से वाराणसी तक गए। फिर उन्होंने बर्मा होते हुए ज़मीनी मार्ग से यात्रा की। वहाँ से उन्होंने जावा के लिए जहाज लिया और वियतनाम होते हुए भारत लौटे। कैम्बे जाने से पहले उन्होंने कोचीन और कालीकट का दौरा किया और मध्य पूर्व और वेनिस के लिए रवाना होने से पहले फिर से कालीकट लौटे। कोंटी ने भारत का वर्णन इस प्रकार किया:

'Great abundance of aloewood [used as incense], gold, silver, precious stones and pearls.' He was most impressed by 'Calicut abounding in pepper, lac, ginger, a large kind of cinnamon, myrobalons [dried fruits and kernels used in medicines] and zedoary [dried roots popular with pharmacists].'

'अगरबत्ती के रूप में प्रयुक्त एलोवेरा, सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर और मोती प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।' वे कालीकट से सबसे अधिक प्रभावित हुए, जहाँ काली मिर्च, लाख, अदरक, एक विशेष प्रकार की दालचीनी, मायरोबलोन (दवाओं में प्रयुक्त सूखे फल और गुठली) और ज़ेडोअरी (फार्मासिस्टों के बीच लोकप्रिय सूखी जड़ें) प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

These tales of plenty excited the imagination of the Europeans.

समृद्धि की इन कहानियों ने यूरोपियों की कल्पना को उत्तेजित कर दिया।

Vasco da Gama's vessels left Portugal on 8 July 1497, rounded the Cape of Good Hope, and sailed up the east coast of Africa to Malindi. From there, with the help of a pilot given to them by a local ruler, they had taken the wind to southern India. It took only twenty-three days to cross from Africa to Malabar.

वास्को दा गामा के जहाज 8 जुलाई 1497 को पुर्तगाल से रवाना हुए, केप ऑफ गुड होप का चक्कर लगाया और अफ्रीका के पूर्वी तट से होते हुए मालिंदी पहुंचे। वहां से, एक स्थानीय शासक द्वारा दिए गए एक पायलट की मदद से, वे हवा के रुख के सहारे दक्षिण भारत पहुंचे। अफ्रीका से मालाबार तक पहुंचने में उन्हें केवल तेईस दिन लगे।

Vasco da Gama commanded a flotilla of three ships and a store ship, with a total complement of about one hundred and seventy men. The ships were small by modern standards and even by the standards of the time. Da Gama's own ship, the *São Gabriel*, was the largest. It carried six sails on three masts, but had a total length of only eighty-four feet. The large forecastle and tall stern made the ship relatively high. This height gave additional range to its twenty cannon. The ship was unwieldy but powerful.

वास्को दा गामा के नेतृत्व में तीन जहाजों और एक भंडार जहाज का बेड़ा था, जिसमें कुल मिलाकर लगभग एक सौ सत्तर सैनिक थे। आधुनिक मानकों के अनुसार और उस समय के मानकों के अनुसार भी ये जहाज छोटे थे। दा गामा का अपना जहाज, साओ गैब्रियल, सबसे बड़ा था। इसमें तीन मस्तूलों पर छह पाल लगे थे, लेकिन इसकी कुल लंबाई केवल चौरासी फीट थी। बड़े अग्रभाग और ऊंचे पिछले हिस्से के कारण जहाज अपेक्षाकृत ऊंचा था। इस ऊंचाई से इसकी बीस तोपों की मारक क्षमता बढ़ जाती थी। जहाज भारी-भरकम होने के बावजूद शक्तिशाली था।

The fleet carried a few convicts who had been purposely taken to do dangerous tasks. One of these, probably a converted Jew who knew Arabic, was ordered ashore to seek information. After landing, he was taken to meet two Muslims traders. They were from Oran, on the Mediterranean coast of Africa, and were reported to have surprised the visitor with a greeting in Castilian:

बेड़े में कुछ ऐसे कैदी भी थे जिन्हें जानबूझकर खतरनाक काम करने के लिए ले जाया गया था। इनमें से एक, संभवतः एक धर्म परिवर्तित यहूदी जो अरबी जानता था, को जानकारी जुटाने के लिए तट पर उतरने का आदेश दिया गया। उतरने के बाद, उसे दो मुस्लिम व्यापारियों से मिलवाया गया। वे अफ्रीका के भूमध्यसागरीय तट पर स्थित ओरान के थे, और बताया जाता है कि उन्होंने आगंतुक का अभिवादन कैस्टिलियन भाषा में करके उसे आश्चर्यचकित कर दिया।

‘The devil take you! What has brought you here?’

‘भाड़ में जाओ! यहाँ कौन आया है?’

To this the convict replied:

इस पर कैदी ने उत्तर दिया:

‘Christians and spices.’

‘ईसाई और मसाले।’

The Portuguese had a long history of conflict with Islam. The Muslims of North Africa had finally been driven out of Portugal in 1249, but out of adjacent Spain only in 1492. Meanwhile; the rise of the Turkish Empire in the eastern Mediterranean had continued apace. The conquest of Constantinople by the Turks in 1453 had deeply alarmed all Christian Europe. Portugal was strongly Catholic and saw the battle between Christianity and Islam as a battle between good and evil.

पुर्तगालियों का इस्लाम के साथ संघर्ष का लंबा इतिहास रहा है। उत्तरी अफ्रीका के मुसलमानों को अंततः 1249 में पुर्तगाल से खदेड़ दिया गया था, लेकिन पड़ोसी स्पेन से उन्हें 1492 में ही खदेड़ा जा सका। इसी बीच, पूर्वी भूमध्यसागर में तुर्की साम्राज्य का उदय तेजी से जारी था। 1453 में तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल पर विजय ने पूरे ईसाई यूरोप को गहराई से चिंतित कर दिया था। पुर्तगाल एक मजबूत कैथोलिक देश था और उसने ईसाई धर्म और इस्लाम के बीच के संघर्ष को अच्छाई और बुराई के बीच का संघर्ष माना।

From the twelfth century onwards, rumours had circulated in Europe of Christian empires in the east. An emperor, Prester John, who was reputed to be descended from the Magi, was said to be the overlord of many other eastern Christian kings. These rumours were probably fuelled by the existence of a real Christian kingdom in Ethiopia. In the early fifteenth century

the Portuguese prince, Henry the Navigator sponsored a series of voyages along the West African coast to find a river route to the kingdom of Prester John. Although unsuccessful, these led to the expedition, under the command of Bartholomew Dias, which had found the southern tip of Africa. This discovery has inspired the king of Portugal to despatch Vasco da Gama further east. Little is known about da Gama's background or why he was chosen. He seems to have been born in a tiny village of fishermen on the south-west coast of Portugal where his father, who was a knight in the service of a duke, was the civil governor. In 1492 Vasco da Gama had been sent by the king of Portugal, John II, to seize French ships that were attacking Portuguese shipping. It is presumed that his conduct recommended him to the king. Vasco da Gama's year of birth is not known but he was probably under forty when he left for the East.

बारहवीं शताब्दी से ही यूरोप में पूर्व में ईसाई साम्राज्यों की अफवाहें फैल रही थीं। प्रेस्टर जॉन नामक एक सम्राट, जिसे मागी का वंशज माना जाता था, कई अन्य पूर्वी ईसाई राजाओं का अधिपति था। संभवतः इथियोपिया में एक वास्तविक ईसाई राज्य के अस्तित्व ने इन अफवाहों को और हवा दी। पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ में पुर्तगाली राजकुमार हेनरी द नेविगेटर ने प्रेस्टर जॉन के राज्य तक नदी मार्ग खोजने के लिए पश्चिम अफ्रीकी तट के साथ कई समुद्री यात्राओं का आयोजन किया। हालांकि ये यात्राएं असफल रहीं, लेकिन इनके कारण बार्थोलोम्यू डियास के नेतृत्व में एक अभियान चलाया गया जिसने अफ्रीका के दक्षिणी छोर की खोज की। इस खोज से प्रेरित होकर पुर्तगाल के राजा ने वास्को दा गामा को और पूर्व की ओर भेजा। दा गामा की पृष्ठभूमि या उनके चयन के कारणों के बारे में बहुत कम जानकारी है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका जन्म पुर्तगाल के दक्षिण-पश्चिम तट पर मछुआरों के एक छोटे से गाँव में हुआ था, जहाँ उनके पिता, जो एक ड्यूक की सेवा में एक शूरवीर थे, नागरिक राज्यपाल थे। सन् 1492 में पुर्तगाल के राजा जॉन द्वितीय ने वास्को दा गामा को पुर्तगाली जहाजों पर हमला कर रहे फ्रांसीसी जहाजों को जब्त करने के लिए भेजा था। ऐसा माना जाता

है कि उनके आचरण ने राजा को उनकी ओर आकर्षित किया। वास्को दा गामा का जन्म वर्ष ज्ञात नहीं है, लेकिन पूर्व की ओर प्रस्थान करते समय उनकी आयु संभवतः चालीस वर्ष से कम थी।

Following Columbus's discovery of the way to the New World, Spain and Portugal – the two great European naval powers – had concluded the Treaty of Tordesillas in 1494. With the blessing of the Pope, this had divided the world into two spheres of influence – the Spanish and the Portuguese. The dividing line was demarcated about 1,000 miles west of the Cape Verde Islands, which lay off western Africa. Territories west of that line went to Spain; east of it to Portugal.

कोलंबस द्वारा नई दुनिया के मार्ग की खोज के बाद, स्पेन और पुर्तगाल - यूरोप की दो महान नौसैनिक शक्तियों - ने 1494 में टोरडेसिलास की संधि पर हस्ताक्षर किए। पोप के आशीर्वाद से, इस संधि ने दुनिया को दो प्रभाव क्षेत्रों में विभाजित कर दिया - स्पेन और पुर्तगाल। यह विभाजन रेखा पश्चिमी अफ्रीका के तट पर स्थित केप वर्डे द्वीप समूह से लगभग 1,000 मील पश्चिम में निर्धारित की गई थी। इस रेखा के पश्चिम का क्षेत्र स्पेन को और पूर्व का क्षेत्र पुर्तगाल को मिला।

The king of Portugal hoped to form an alliance with the successors of Prester John to fight Islam. If it was also possible for the Portuguese to buy spices, this would be especially welcome – for the spice trade would bring wealth to Portugal, and simultaneously deprive the Muslims of one of their main sources of revenue.

पुर्तगाल के राजा को उम्मीद थी कि वह प्रेस्टर जॉन के उत्तराधिकारियों के साथ गठबंधन करके इस्लाम से लड़ेंगे। यदि पुर्तगालियों के लिए मसाले खरीदना भी संभव हो जाता, तो यह विशेष रूप से स्वागत योग्य होता – क्योंकि मसालों का व्यापार पुर्तगाल को समृद्ध बनाता और साथ ही मुसलमानों को उनकी आय के मुख्य स्रोतों में से एक से वंचित कर देता।

The Hindu ruler of Calicut, the Zamorin, was away from the city when the Portuguese arrived, but agreed to meet Vasco da Gama on his return. He also sent a pilot to take the flotilla to a safe anchorage at Pantalayini Kollam, fifteen miles to the north. It was from there, a week after reaching India that Vasco da Gama finally stepped ashore.

जब पुर्तगाली पहुंचे, तब कालीकट के हिंदू शासक ज़मोरिन शहर से बाहर थे, लेकिन उन्होंने वास्को दा गामा के लौटने पर उनसे मिलने की सहमति दी। उन्होंने एक पायलट को भी भेजा ताकि वह बेड़े को उत्तर में पंद्रह मील दूर पंतलयिनी कोल्लम में सुरक्षित लंगरगाह तक ले जाए। भारत पहुंचने के एक सप्ताह बाद, वास्को दा गामा ने अंततः वहीं से तट पर कदम रखा।

Da Gama and his dozen companions were met by a representative of the Zamorin and an armed retinue. They then proceeded by palanquin, watched by crowds of curious onlookers, towards Calicut. Halfway there, they stopped for a meal at a local noble's house, and then proceeded by boat on a backwater to the city. After disembarking, they were taken to a temple.

दा गामा और उनके एक दर्जन साथियों का स्वागत ज़मोरिन के एक प्रतिनिधि और सशस्त्र दल ने किया। फिर वे पालकी में बैठकर, उत्सुक दर्शकों की भीड़ के बीच, कालीकट की ओर रवाना हुए। आधे रास्ते में, वे एक स्थानीय रईस के घर भोजन के लिए रुके, और फिर एक शांत जलमार्ग पर नाव से शहर की ओर बढ़े। नाव से उतरने के बाद, उन्हें एक मंदिर में ले जाया गया।

It is quite clear from an account written by one of da Gama's men that the temple was Hindu. It notes that the priests wore threads across their upper bodies and that 'saints were painted on the walls wearing crowns. They were painted variously with teeth protruding an inch from the mouth and four or five arms.' Nevertheless, Vasco da Gama and his men were so expecting to find Christians, even if deviant, that they thought they were in a church. They fell

on their knees and prayed. They also took away ‘some white earth which the Christians of this country are wont to sprinkle on the forehead and chest, round the neck and on the forearm’. Incredibly, Da Gama and his men continued to believe they were in Christian territory, under a Christian king, for the whole of their time in India. They would return to Portugal to affirm this to their own king.

दा गामा के एक साथी द्वारा लिखे गए विवरण से यह स्पष्ट है कि मंदिर हिंदू था। इसमें लिखा है कि पुजारी अपने ऊपरी शरीर पर धागे बांधते थे और दीवारों पर मुकुट पहने संतों के चित्र बने थे। उन्हें अलग-अलग तरह से चित्रित किया गया था, जिनमें मुंह से एक इंच बाहर निकले दांत और चार या पांच भुजाएँ थीं। फिर भी, वास्को दा गामा और उनके साथी ईसाइयों को खोजने की इतनी उम्मीद कर रहे थे, भले ही वे धर्म से भटके हुए हों, कि उन्हें लगा कि वे एक चर्च में हैं। वे घुटनों के बल गिर पड़े और प्रार्थना की। वे अपने साथ कुछ सफेद मिट्टी भी ले गए, जिसे इस देश के ईसाई माथे, छाती, गर्दन और बांह पर छिड़कते हैं। हैरानी की बात यह है कि दा गामा और उनके साथी भारत में अपने पूरे प्रवास के दौरान यही मानते रहे कि वे एक ईसाई क्षेत्र में, एक ईसाई राजा के अधीन हैं। वे पुर्तगाल लौटकर अपने राजा को भी यही बात बताएंगे।

The Portuguese were taken through Calicut with pomp, accompanied by drums and trumpets. The roofs and balconies were thronged with spectators. There was such a crowd at the entrance to the palace that scuffles broke out and several bystanders were injured.

पुर्तगालियों को ढोल और तुरही की थापों के साथ धूमधाम से कालीकट से ले जाया गया। छतों और बालकनियों पर दर्शकों की भारी भीड़ थी। महल के प्रवेश द्वार पर इतनी भीड़ थी कि झड़पें हुईं और कई राहगीर घायल हो गए।

Within the palace, they found the Zamorin reclining on a couch of green velvet under a gilt canopy. He held a gold spittoon in his left hand and was being served with betel nut from a huge gold basin. He offered the Portuguese food –

bananas and jackfruit – and then asked da Gama to explain his mission to a courtier. Vasco da Gama insisted that as he was the ambassador of the king of Portugal, he could only deal directly with the Zamorin. The Zamorin then listened as da Gama told him that in Portugal:

महल के भीतर, उन्होंने ज़मोरिन को सोने की छतरी के नीचे हरे मखमली सोफे पर आराम करते हुए पाया। उनके बाएं हाथ में सोने का थूकदान था और उन्हें एक विशाल सोने के पात्र से पान परोसा जा रहा था। उन्होंने पुर्तगालियों को केले और कटहल का भोजन परोसा और फिर दा गामा से एक दरबारी को अपने मिशन के बारे में बताने को कहा। वास्को दा गामा ने जोर देकर कहा कि चूंकि वह पुर्तगाल के राजा के राजदूत थे, इसलिए वह केवल ज़मोरिन से ही सीधे बात कर सकते थे। ज़मोरिन ने दा गामा की बात सुनी, जिन्होंने उन्हें बताया कि पुर्तगाल में:

There reigned a king now whose name was Dom Manuel, who had ordered him to build three vessels, of which he had been appointed captain-major, and who had ordered him not to return to Portugal until he had discovered this King of the Christians, on pain of having his head cut off. That two letters had been entrusted to him to be presented in case he succeeded in discovering him, and that he would do so on the ensuing day.

उस समय डोम मैनुअल नाम का एक राजा शासन कर रहा था, जिसने उसे तीन पोत बनाने का आदेश दिया था, जिनमें से उसे मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया था। राजा ने उसे यह भी आदेश दिया था कि जब तक वह ईसाइयों के इस राजा का पता न लगा ले, तब तक वह पुर्तगाल वापस न लौटे, अन्यथा उसका सिर कलम कर दिया जाएगा। उसे दो पत्र सौंपे गए थे, जिन्हें उसे राजा का पता लगाने में सफल होने पर प्रस्तुत करना था, और उसे अगले दिन ऐसा करना था।

As the Zamorin was a Hindu and da Gama knew nothing of the local language, da Gama's words were presumably corrupted in translation.

चूंकि ज़मोरिन एक हिंदू था और दा गामा को स्थानीय भाषा का कोई ज्ञान नहीं था, इसलिए संभवतः अनुवाद में दा गामा के शब्दों में विकृति आ गई होगी।

Da Gama did not return the next day for he was involved in acrimonious discussions with the Zamorin's ministers concerning to the gifts he intended to present. They laughed when they saw the washbasins, hats, casks of oil, honey and cloth he had brought from Portugal. They told him these were unacceptable presents and that he should give gold or nothing.

दा गामा अगले दिन वापस नहीं लौटे क्योंकि वे ज़मोरिन के मंत्रियों के साथ उन उपहारों को लेकर तीखी बहस में उलझे हुए थे जो वे भेंट करने वाले थे। पुर्तगाल से लाए गए उनके वॉशबेसिन, टोपी, तेल के पीपे, शहद और कपड़े देखकर मंत्री हंस पड़े। उन्होंने दा गामा से कहा कि ये उपहार अस्वीकार्य हैं और उन्हें या तो सोना देना चाहिए या कुछ भी नहीं।

The following day, Vasco da Gama met with the Zamorin. It was a strained encounter for the Zamorin was unable to reconcile to da Gama's boasts that he came from a rich country with the absence of any gifts. He did, however, allow one of the letters carried by da Gama, which had been written in Arabic, to be translated to him. Perhaps mollified by the flattery it contained, he gave da Gama permission to land the sample goods his ships were carrying and to sell them.

अगले दिन, वास्को दा गामा की मुलाकात ज़मोरिन से हुई। यह मुलाकात तनावपूर्ण रही क्योंकि ज़मोरिन दा गामा के इस दावे को पचा नहीं पा रहे थे कि वे एक समृद्ध देश से आए हैं और उन्होंने कोई उपहार नहीं दिया है। हालांकि, उन्होंने दा गामा द्वारा लाए गए अरबी भाषा में लिखे एक पत्र का अनुवाद करने की अनुमति दे दी। शायद उसमें मौजूद प्रशंसा से प्रभावित होकर, उन्होंने दा गामा को अपने जहाजों में लाए गए नमूना माल को उतारने और बेचने की अनुमति दे दी।

The Portuguese returned to Pantalayini Kollam, where was then more tension. The Zamorin's officials feared that if they allowed the Portuguese to return to

their ships they might depart without paying port dues; the Portuguese feared that they were being held as hostages. After two days, matters were resolved when the Portuguese landed some merchandise as surety and da Gama and his companions were allowed to return to their ships.

पुर्तगाली पंतलयिनी कोल्लम लौट आए, जहाँ तनाव और बढ़ गया। ज़मोरिन के अधिकारियों को डर था कि अगर उन्होंने पुर्तगालियों को उनके जहाजों पर लौटने दिया तो वे बंदरगाह शुल्क चुकाए बिना ही चले जाएँगे; पुर्तगालियों को डर था कि उन्हें बंधक बनाया जा रहा है। दो दिन बाद मामला सुलझ गया जब पुर्तगालियों ने ज़मानत के तौर पर कुछ सामान उतारा और दा गामा और उनके साथियों को उनके जहाजों पर लौटने की अनुमति मिल गई।

Calicut and its adjacent coast were predominantly Hindu, but also housed many Muslim merchants. Some were visitors from Arabia, others were Moplas, Indians who claimed descent from thirteen Arab merchants who had settled on the nearby River Beypore in the ninth century. Calicut itself was not a particularly good harbour. It had become the chief port of the Malabar Coast by guaranteeing safe and cheap facilities to all traders, irrespective of their nationality or religion. As one Arab visitor observed:

कालीकट और उसके आसपास का तटीय क्षेत्र मुख्य रूप से हिंदू बहुल था, लेकिन यहाँ कई मुस्लिम व्यापारी भी रहते थे। इनमें से कुछ अरब से आए पर्यटक थे, जबकि अन्य मोपला थे, जो उन तेरह अरब व्यापारियों के वंशज होने का दावा करते थे जिन्होंने नौवीं शताब्दी में पास की बेपोर नदी पर अपना बसेरा बनाया था। कालीकट स्वयं कोई विशेष रूप से अच्छा बंदरगाह नहीं था। यह सभी व्यापारियों को, उनकी राष्ट्रीयता या धर्म की परवाह किए बिना, सुरक्षित और सस्ती सुविधाएँ प्रदान करके मालाबार तट का प्रमुख बंदरगाह बन गया था। जैसा कि एक अरब पर्यटक ने कहा:

Security and justice are so firmly established in this city, that most wealthy merchants bring thither from maritime countries considerable cargoes, which they unload, and unhesitatingly send into the markets and the bazaars,

without thinking in the meantime of any necessity of checking the account or of keeping watch over the goods.

इस शहर में सुरक्षा और न्याय व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि अधिकांश धनी व्यापारी समुद्री देशों से भारी मात्रा में माल लाते हैं, जिसे वे उतारते हैं और बिना किसी झिझक के बाजारों में भेज देते हैं, इस दौरान वे हिसाब-किताब की जाँच करने या माल पर नजर रखने की किसी भी आवश्यकता के बारे में नहीं सोचते।

The majority of Calicut's trade was with the ports on the northern shores of the Indian Ocean. The Muslim traders were extremely hostile to the Portuguese. It may be that they had already learnt of the several clashes between da Gama's fleet and their fellow Muslims on the African coast, but they were also fearful that they would lose their monopoly of the lucrative spice trade. The Portuguese, of course, had no love for the Muslims. The result of this mutual hostility was that the Portuguese merchandise found no buyers among the Muslim trading community at Pantalayini Kollam. As one of the sailors recorded: 'When one of us landed, they spat on the ground saying, "Portugal, Portugal." Indeed from the very first they had sought means to take and kill us.'

कालीकट का अधिकांश व्यापार हिंद महासागर के उत्तरी तट पर स्थित बंदरगाहों से होता था। मुस्लिम व्यापारी पुर्तगालियों के प्रति बेहद शत्रुतापूर्ण थे। संभवतः उन्हें अफ़्रीकी तट पर दा गामा के बेड़े और उनके साथी मुसलमानों के बीच हुए कई संघर्षों की जानकारी थी, लेकिन उन्हें इस बात का भी डर था कि कहीं वे लाभदायक मसालों के व्यापार पर अपना एकाधिकार न खो दें। पुर्तगालियों को भी मुसलमानों से कोई स्नेह नहीं था। इस आपसी शत्रुता का परिणाम यह हुआ कि पंतलयिनी कोल्लम के मुस्लिम व्यापारी समुदाय में पुर्तगाली माल के कोई खरीदार नहीं मिले। जैसा कि एक नाविक ने दर्ज किया: 'जब हममें से कोई एक उतरा, तो उन्होंने ज़मीन पर थूकते हुए कहा, "पुर्तगाल, पुर्तगाल।" वास्तव में, शुरू से ही वे हमें पकड़ने और मारने के तरीके ढूंढ रहे थे।'

Da Gama protested to the Zamorin, who sent some other merchants to view the Portuguese goods. These merchants were also critical of the goods on offer and bought nothing. The Zamorin then agreed to transport the merchandise to Calicut at his own expense for it to be sold there. Some sales were then made, but at a poor price. However, enough money was raised to purchase some cloves, cinnamon and precious stones. In addition the Portuguese crews were able to go ashore in twos and threes and make private sales of their own.

दा गामा ने ज़मोरिन से विरोध जताया, जिन्होंने पुर्तगाली सामान देखने के लिए कुछ अन्य व्यापारियों को भेजा। इन व्यापारियों ने भी सामान की आलोचना की और कुछ नहीं खरीदा। तब ज़मोरिन अपने खर्च पर माल को कालीकट ले जाने के लिए सहमत हो गए ताकि उसे वहाँ बेचा जा सके। कुछ बिक्री हुई, लेकिन कम कीमत पर। फिर भी, लौंग, दालचीनी और कीमती पत्थरों को खरीदने के लिए पर्याप्त धन जुटाया गया। इसके अलावा, पुर्तगाली दल दो-तीन के समूहों में तट पर उतरे और अपनी निजी बिक्री की।

On 13 August 1498, nearly three months after his arrival, Vasco da Gama sent some presents to the Zamorin and announced that he wished to leave for Portugal. He suggested that if the Zamorin sent some emissaries with him, he himself would leave behind some Portuguese men who were looking after the unsold merchandise. The Zamorin then demanded the customary port dues on the landed goods. Fearful that da Gama would abscond, he put guards on the Portuguese men ashore, and prohibited any boats from going out to the Portuguese ships.

13 अगस्त 1498 को, अपने आगमन के लगभग तीन महीने बाद, वास्को दा गामा ने ज़मोरिन को कुछ उपहार भेजे और पुर्तगाल लौटने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि ज़मोरिन उनके साथ कुछ दूत भेजें, तो वे स्वयं कुछ पुर्तगाली पुरुषों को पीछे छोड़ देंगे जो बिना बिके माल की देखभाल कर रहे थे। ज़मोरिन ने तब उतारे गए माल पर निर्धारित बंदरगाह शुल्क की मांग की। दा गामा के भाग जाने के भय से, उन्होंने तट पर तैनात पुर्तगाली

पुरुषों पर पहरा लगा दिया और पुर्तगाली जहाजों तक किसी भी नाव के जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।

Some merchants, however, ignored the Zamorin's edict and went out to trade with the Portuguese. Da Gama seized eighteen of them as hostages. At the end of complicated negotiations, an exchange of hostages and the return of Portuguese goods were agreed. The Zamorin also sent a note to be carried to the king of Portugal:

हालांकि, कुछ व्यापारियों ने ज़मोरिन के फरमान की अनदेखी की और पुर्तगालियों के साथ व्यापार करने चले गए। दा गामा ने उनमें से अठारह को बंधक बना लिया। जटिल वार्ताओं के अंत में, बंधकों की अदला-बदली और पुर्तगाली सामानों की वापसी पर सहमति बनी। ज़मोरिन ने पुर्तगाल के राजा को एक संदेश भी भेजा:

Vasco da Gama, a gentleman of your household, came to my country, whereat I was much pleased. My country is rich in cinnamon, cloves, ginger, pepper and precious stones. That which I ask of you in exchange is gold, silver, corals, and scarlet cloth.

आपके परिवार के एक सज्जन, वास्को दा गामा, मेरे देश आए, जिससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मेरा देश दालचीनी, लौंग, अदरक, काली मिर्च और बहुमूल्य पत्थरों से समृद्ध है। बदले में मैं आपसे सोना, चांदी, मूंगा और लाल वस्त्र मांगता हूँ।

The Portuguese, did not honour this agreement. Leaving some of their merchandise behind, they set sail for Portugal on 29 August 1498 while still holding six of the Indian hostages. The following day, their fleet was becalmed off Calicut. About seventy of the Zamorin's boats came out to attack. The Portuguese kept them at bay with cannon until a fortuitous thunderstorm erupted and they managed to escape.

पुर्तगालियों ने इस समझौते का पालन नहीं किया। अपना कुछ माल वहीं छोड़कर, वे 29 अगस्त 1498 को पुर्तगाल के लिए रवाना हो गए, जबकि उनके साथ अभी भी छह भारतीय

बंधक थे। अगले दिन, उनका बेड़ा कालीकट के तट पर शांत समुद्र में फंस गया। ज़मोरिन की लगभग सत्तर नौकाएँ हमला करने के लिए आगे आईं। पुर्तगालियों ने तोपों से उनका मुकाबला किया, लेकिन तभी अचानक एक तूफान आ गया और वे भागने में सफल रहे।

The winds were very unfavourable for Vasco da Gama's return voyage. The journey across the ocean to East Africa took nearly three months. Many of the sailors died of scurvy. Others were so debilitated that there were only a few fit enough to work the ships. At Mombasa, in East Africa, da Gama was so short of able-bodied men that he destroyed one ship to better crew the remaining two. Only a third of his original sailors survived to reach Portugal.

वास्को दा गामा की वापसी यात्रा के लिए हवाएँ बहुत प्रतिकूल थीं। पूर्वी अफ्रीका तक समुद्र पार करने में लगभग तीन महीने लग गए। कई नाविक स्कर्वी रोग से मर गए। अन्य इतने कमज़ोर हो गए थे कि उनमें से कुछ ही जहाज़ों पर काम करने के लिए सक्षम बचे थे। पूर्वी अफ्रीका के मोम्बासा में, दा गामा के पास सक्षम पुरुषों की इतनी कमी हो गई थी कि उन्होंने शेष दो जहाज़ों पर बेहतर चालक दल रखने के लिए एक जहाज़ को नष्ट कर दिया। उनके मूल नाविकों में से केवल एक तिहाई ही पुर्तगाल पहुँचने में सफल रहे।

Vasco da Gama and his men returned to a rapturous reception. They had found the sea route to India, they had found Christians (or so they thought), and they had brought back valuable spices. They had encountered no great fleets to oppose the Portuguese Navy. It seemed, therefore, that Portugal could easily seize control of the shipping and trade of the Indian Ocean. The king of Portugal was delighted. He assumed the additional title of 'Lord of Guinea and of the Conquest, Navigation and Commerce of Ethiopia, Arabia, Persia, and India'. Even though da Gama's expedition had not been intended for immediate profit, the sale of spices and other goods, which had mostly come from India raised a huge amount of money – said to be sixty times the entire expense of the expedition! With the prospect of great riches accruing to

Portugal, as well as the opportunity to strike a blow against Islam, the king immediately commissioned another expedition. He wrote to King Ferdinand and Queen Isabella of Spain:

वास्को दा गामा और उनके साथियों का ज़बरदस्त स्वागत हुआ। उन्होंने भारत का समुद्री मार्ग खोज लिया था, उन्हें ईसाई मिल गए थे (या कम से कम उन्हें ऐसा लगा था), और वे अपने साथ बहुमूल्य मसाले लाए थे। पुर्तगाली नौसेना का मुकाबला करने के लिए उन्हें कोई बड़ा बेड़ा नहीं मिला था। इसलिए ऐसा लग रहा था कि पुर्तगाल आसानी से हिंद महासागर के जहाजरानी और व्यापार पर नियंत्रण कर सकता है। पुर्तगाल का राजा बहुत खुश था। उसने 'गिनी का स्वामी और इथियोपिया, अरब, फारस और भारत की विजय, नौवहन और वाणिज्य का स्वामी' की उपाधि धारण कर ली। हालाँकि दा गामा का अभियान तत्काल लाभ के लिए नहीं था, फिर भी मसालों और अन्य सामानों की बिक्री, जो ज्यादातर भारत से आए थे, से भारी मात्रा में धन प्राप्त हुआ - कहा जाता है कि यह अभियान के पूरे खर्च का साठ गुना था! पुर्तगाल के लिए अपार धन की संभावना और इस्लाम पर प्रहार करने के अवसर को देखते हुए, राजा ने तुरंत एक और अभियान का आदेश दिया। उसने स्पेन के राजा फर्डिनेंड और रानी इसाबेला को लिखा:

The Christian people whom these explorers reached are not yet strong in the faith ... but when they have been fortified in the faith, there will be an opportunity to destroy the Moors of those regions. Moreover we hope, with the help of God, that the great trade which now enriches those Moors ... shall be diverted to the natives and ships of our own realm.

जिन ईसाई लोगों तक ये खोजकर्ता पहुँचे, वे अभी तक आस्था में दृढ़ नहीं हैं... लेकिन जब वे आस्था में मजबूत हो जाएँगे, तब उन क्षेत्रों के मूरों को नष्ट करने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा, हम ईश्वर की कृपा से आशा करते हैं कि जो बड़ा व्यापार अभी उन मूरों को समृद्ध कर रहा है... वह हमारे राज्य के मूल निवासियों और जहाजों की ओर मोड़ दिया जाएगा।

In March 1500, only six months after Vasco da Gama's return, a Portuguese fleet of thirteen powerfully armed ships sailed for India. This fleet was under the command of Pedro Álvares Cabral and it was dogged by misfortune. Some ships were blown off course to South America; four ships sank in a storm at the tip of Africa and all on board were lost. The remaining six ships anchored off Calicut on 13 September 1500. The Zamorin, a successor to the ruler who had met Vasco da Gama mindful of the power of the expedition, allowed the Portuguese to set up a trading post, or 'factory'.

मार्च 1500 में, वास्को दा गामा की वापसी के महज छह महीने बाद, तेरह शक्तिशाली हथियारों से लैस पुर्तगाली जहाजों का एक बेड़ा भारत के लिए रवाना हुआ। यह बेड़ा पेड्रो अल्वार्स कैब्राल के नेतृत्व में था और दुर्भाग्य से इसका पीछा नहीं छोड़ा। कुछ जहाज दक्षिण अमेरिका की ओर भटक गए; चार जहाज अफ्रीका के दक्षिणी छोर पर एक तूफान में डूब गए और उनमें सवार सभी लोग मारे गए। शेष छह जहाज 13 सितंबर 1500 को कालीकट के पास लंगर डाले खड़े हुए। ज़मोरिन, जो शासक का उत्तराधिकारी था और वास्को दा गामा से इस अभियान की शक्ति को ध्यान में रखते हुए मिला था, ने पुर्तगालियों को एक व्यापारिक चौकी या 'कारखाना' स्थापित करने की अनुमति दी।

Once again, however, there were disputes between the Portuguese and the Arabs. These were exacerbated when the Portuguese claimed they had been given the sole right to buy pepper. Events came to a climax when the Portuguese seized an Arab ship in the harbour. A riot ensued and thirty or forty Portuguese were killed. Cabral then ordered his fleet to bombard Calicut. He also seized some of the ships in the harbour, took their goods – including three elephants, which were later killed and salted for the homeward journey – and slaughtered their crews. The bombardment of the city lasted two days. Many of its wooden houses were destroyed, and many of its inhabitants were killed. Fortunately for the people of Calicut, however, the violent recoil of the

guns began to damage Cabral's ships. He was forced to suspend hostilities, and left.

एक बार फिर, पुर्तगालियों और अरबों के बीच विवाद छिड़ गया। ये विवाद तब और बढ़ गया जब पुर्तगालियों ने दावा किया कि उन्हें काली मिर्च खरीदने का एकमात्र अधिकार दिया गया है। स्थिति तब चरम पर पहुंच गई जब पुर्तगालियों ने बंदरगाह में एक अरब जहाज पर कब्जा कर लिया। इसके परिणामस्वरूप दंगा भड़क उठा और तीस-चालीस पुर्तगाली मारे गए। तब काब्राल ने अपने बेड़े को कालीकट पर बमबारी करने का आदेश दिया। उसने बंदरगाह में मौजूद कुछ जहाजों पर भी कब्जा कर लिया, उनका सामान लूट लिया - जिसमें तीन हाथी भी शामिल थे, जिन्हें बाद में मारकर नमक लगाकर घर वापसी के लिए तैयार किया गया - और उनके चालक दल को मार डाला। शहर पर बमबारी दो दिनों तक चली। इसके कई लकड़ी के घर नष्ट हो गए और कई निवासी मारे गए। हालांकि, कालीकट के लोगों के लिए सौभाग्य की बात यह थी कि तोपों के जोरदार झटके से काब्राल के जहाज क्षतिग्रस्त होने लगे। उसे मजबूरन युद्ध रोकना पड़ा और वह वहां से चला गया।

Cabral then sailed one hundred miles south to Cochin. The Raja of Cochin was a rival of the Zamorin of Calicut, and he saw advantages in being hospitable to the Portuguese. He allowed them to buy spices and establish a factory. Within a fortnight, Cabral's ships were almost fully loaded. Then came news that the fleet of the Zamorin of Calicut was moving down the coast to attack. Cabral hurriedly slipped away by night – so hurriedly that he left behind the thirty Portuguese at the factory. Next day, Cabral's and the Zamorin's fleets came into sight of each other, but before they could engage in battle they were becalmed. When the winds rose again, Cabral escaped.

इसके बाद कैब्रल सौ मील दक्षिण की ओर कोचीन के लिए रवाना हुआ। कोचीन का राजा कालीकट के ज़मोरिन का प्रतिद्वंद्वी था और उसने पुर्तगालियों के प्रति आतिथ्य सत्कार को अपना लाभ समझा। उसने उन्हें मसाले खरीदने और एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी। दो सप्ताह के भीतर, कैब्रल के जहाज लगभग पूरी तरह से माल से लदे हुए थे।

तभी खबर आई कि कालीकट के ज़मोरिन का बेड़ा आक्रमण करने के लिए तट की ओर बढ़ रहा है। कैब्रल रात में हड़बड़ी में निकल गया - इतनी हड़बड़ी में कि वह कारखाने में तीस पुर्तगालियों को पीछे छोड़ गया। अगले दिन, कैब्रल और ज़मोरिन के बेड़े एक-दूसरे के सामने आ गए, लेकिन युद्ध शुरू होने से पहले ही वे शांत हो गए। जब हवाएँ फिर से चलने लगीं, तो कैब्रल बच निकला।

Before sailing home, the Portuguese paused at Cannanore, eighty miles north of Calicut. At the invitation of the ruler, they topped up with more spices. Another ship was wrecked on the journey back, Cabral reached Lisbon on 31 July 1501. Although only five of the original thirteen ships had returned from India, the spices they carried were valuable enough to more than pay for the losses incurred. The Franciscan friars who had travelled with the expedition had discovered the difference between Hindus and Christians. Cabral advised the king that, since there were no Christian kings to make alliances with (although in places there were Syriac and other Christians, and two Christians from Cranganore had travelled to meet Cabral), the Portuguese would need to come to an accommodation with the Hindu rulers of the Malabar Coast.

घर लौटने से पहले, पुर्तगाली कालीकट से अस्सी मील उत्तर में स्थित कन्ननोर में रुके। शासक के निमंत्रण पर, उन्होंने अपने जहाज में और मसाले भर लिए। वापसी यात्रा में एक और जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया, कैब्राल 31 जुलाई 1501 को लिस्बन पहुंचे। हालांकि मूल तेरह जहाजों में से केवल पांच ही भारत से लौटे थे, लेकिन उनके द्वारा ले जाए गए मसाले इतने मूल्यवान थे कि उनसे हुए नुकसान की भरपाई हो गई। अभियान में साथ आए फ्रांसिस्कन भिक्षुओं ने हिंदू और ईसाई धर्म के बीच अंतर का पता लगा लिया था। कैब्राल ने राजा को सलाह दी कि चूंकि गठबंधन करने के लिए कोई ईसाई राजा नहीं थे (हालांकि कुछ स्थानों पर सीरियाई और अन्य ईसाई थे, और कन्ननोर से दो ईसाई कैब्राल से मिलने आए थे), इसलिए पुर्तगालियों को मालाबार तट के हिंदू शासकों के साथ समझौता करना होगा।

Cabral had seriously ruptured relations with the Zamorin of Calicut. He had, however, made allies of the Raja of Cannanore and the Raja of Cochin. While Calicut lacked a proper harbour, that at Cochin was superb. In addition, Cochin had better communications with the pepper country. Moreover, the Raja of Cochin was mindful of the superior strength of Calicut and keen to align with the Portuguese. Cochin was set to become Portugal's most important base in Malabar.

कैब्रल ने कालीकट के ज़मोरिन से अपने संबंध बुरी तरह तोड़ लिए थे। हालांकि, उन्होंने कन्नूर के राजा और कोचीन के राजा को अपना सहयोगी बना लिया था। कालीकट में एक उचित बंदरगाह का अभाव था, जबकि कोचीन का बंदरगाह उत्कृष्ट था। इसके अलावा, कोचीन का काली मिर्च उत्पादक क्षेत्र से बेहतर संपर्क था। साथ ही, कोचीन के राजा कालीकट की श्रेष्ठ शक्ति से अवगत थे और पुर्तगालियों के साथ गठबंधन करने के इच्छुक थे। कोचीन मालाबार में पुर्तगाल का सबसे महत्वपूर्ण अड्डा बनने के लिए तैयार था।

Six months after Cabral's return, Vasco da Gama set sail again for Malabar. He left Portugal on 10 February 1502 with fifteen ships and was joined by another five ships while off East Africa. Now that it was clear that there were no powerful Christian kingdoms in Malabar, the motive for the voyage was largely commercial. This expedition, nevertheless, had been despatched by the king of Portugal himself, for he was determined that the commerce with India would remain a Crown monopoly.

कैब्रल की वापसी के छह महीने बाद, वास्को दा गामा ने मालाबार के लिए फिर से यात्रा शुरू की। वह 10 फरवरी 1502 को पंद्रह जहाजों के साथ पुर्तगाल से रवाना हुए और पूर्वी अफ्रीका के तट पर पाँच और जहाज उनसे जुड़ गए। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि मालाबार में कोई शक्तिशाली ईसाई राज्य नहीं था, इसलिए यात्रा का मुख्य उद्देश्य व्यापारिक था। फिर भी, इस

अभियान को पुर्तगाल के राजा ने स्वयं भेजा था, क्योंकि वह भारत के साथ व्यापार को राजशाही एकाधिकार बनाए रखने के लिए दृढ़ थे।

Sailing down the Malabar Coast, Vasco da Gama's fleet intercepted the *Miri*, a ship carrying pilgrims returning from Mecca. When the Portuguese boarded the ship, some rich merchants tried to make a ransom deal with da Gama, but he refused. Some valuables were handed over to the Portuguese and they also seized some of the ship's stores. After these had been offloaded, Vasco da Gama ordered his men to set fire to the *Miri*. Her crew and the pilgrims managed to put out the flames, but da Gama's men returned to torch the ship again. One Portuguese eyewitness described how the women waved their jewellery, offering it up in exchange for their lives, and held up their babies 'that we should have pity on their innocence'. Another Portuguese eyewitness gave the bare facts:

मालाबार तट पर नौकायन करते हुए, वास्को दा गामा के बेड़े ने मक्का से लौट रहे तीर्थयात्रियों को ले जा रहे जहाज 'मीरी' को रोक लिया। जब पुर्तगाली जहाज पर चढ़े, तो कुछ धनी व्यापारियों ने दा गामा से फिरौती का सौदा करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। कुछ कीमती सामान पुर्तगालियों को सौंप दिए गए और उन्होंने जहाज के कुछ भंडार भी जब्त कर लिए। इन सामानों को उतारने के बाद, वास्को दा गामा ने अपने आदमियों को 'मीरी' में आग लगाने का आदेश दिया। जहाज के चालक दल और तीर्थयात्रियों ने आग बुझाने में कामयाबी हासिल की, लेकिन दा गामा के आदमी जहाज को फिर से जलाने के लिए लौट आए। एक पुर्तगाली प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि कैसे महिलाओं ने अपने गहने लहराते हुए, अपनी जान बचाने के बदले में उन्हें भेंट करने की पेशकश की, और अपने बच्चों को यह कहकर ऊपर उठाया कि 'हमें उनकी मासूमियत पर दया आनी चाहिए'। एक अन्य पुर्तगाली प्रत्यक्षदर्शी ने तथ्य इस प्रकार बताए:

We took a ship from Mecca in which were 380 men and many women and children, and we took from it fully 12,000 ducats, with goods worth at least

another 10,000. And we burned the ship and all the people on board with gunpowder.

हमने मक्का से एक जहाज़ लिया जिसमें 380 पुरुष और कई महिलाएं और बच्चे सवार थे, और हमने उससे पूरे 12,000 डुकाट लूट लिए, साथ ही कम से कम 10,000 डुकाट मूल्य का सामान भी। और हमने बारूद से जहाज़ और उस पर सवार सभी लोगों को जला दिया।

The Portuguese fleet then anchored off Calicut. The Zamorin, remembering the damage Cabral had inflicted on his city and knowing what had happened to the *Miri*, sent a message offering peace. In reply, da Gama demanded compensation for the goods Cabral's men had lost and the expulsion of all the Arabian traders. The Zamorin replied, reasonably enough, that it was Calicut which had suffered the most and that the treasure from the *Miri* was worth far more than the goods that the Portuguese had lost. He ignored the demand to expel the many thousand Arabs. Da Gama then announced that, unless the Zamorin met his conditions, he would bombard Calicut the next day.

पुर्तगाली बेड़ा कालीकट के पास लंगर डालकर रुक गया। ज़मोरिन को काब्राल द्वारा अपने शहर को पहुँचाई गई क्षति और मीरी में हुई घटना की जानकारी थी, इसलिए उसने शांति का प्रस्ताव देते हुए एक संदेश भेजा। जवाब में, दा गामा ने काब्राल के सैनिकों द्वारा खोए गए माल के मुआवजे और सभी अरब व्यापारियों को निष्कासित करने की मांग की। ज़मोरिन ने तर्कसंगत जवाब दिया कि सबसे अधिक नुकसान कालीकट को हुआ था और मीरी से प्राप्त खजाना पुर्तगालियों द्वारा खोए गए माल से कहीं अधिक मूल्यवान था। उसने हजारों अरबों को निष्कासित करने की मांग को नजरअंदाज कर दिया। दा गामा ने घोषणा की कि यदि ज़मोरिन उसकी शर्तें नहीं मानता, तो वह अगले दिन कालीकट पर बमबारी करेगा।

The Portuguese had captured a number of small boats and their crews. At midday on 1 November 1502, they began to hang their prisoners. Thirty-four sailors were executed. As the dead men were taken down, their hands, feet and heads were cut off. These body parts were then piled on a boat, which was

floated into the harbour together with a message saying that the actual killers of Cabral's men could expect an even crueller death. The truncated bodies of these innocents were then thrown into the sea so that the tide would carry them ashore. The bombardment of Calicut then began.

पुर्तगालियों ने कई छोटी नावों और उनके चालक दल को पकड़ लिया था। 1 नवंबर 1502 को दोपहर में उन्होंने अपने कैदियों को फांसी देना शुरू कर दिया। चौंतीस नाविकों को मौत की सजा दी गई। मृतकों को नीचे उतारते समय उनके हाथ, पैर और सिर काट दिए गए। फिर इन अंगों को एक नाव पर लादकर बंदरगाह में बहा दिया गया। नाव के साथ एक संदेश भी था जिसमें लिखा था कि कैब्राल के आदमियों के असली हत्यारों को इससे भी क्रूर मौत का सामना करना पड़ेगा। इन निर्दोषों के कटे-फटे शरीरों को समुद्र में फेंक दिया गया ताकि ज्वार उन्हें किनारे तक ले आए। इसके बाद कालीकट पर बमबारी शुरू हो गई।

European ships of the early sixteenth century did not have heavy guns. Their barrels were forged from thin bars of wrought iron, bound with hoops. Such guns could not take a large charge of gunpowder, so their range was limited to about two hundred yards. The Zamorin, having already been bombarded by Cabral, had erected a stockade of palm tree trunks to protect the town. He had, however, very little artillery. Da Gama was able to take his ships in very close to the shore with impunity. They wrought great damage that day and the next. Da Gama then left six ships behind to blockade the port and sailed for Cochin.

सोलहवीं शताब्दी के आरंभिक यूरोपीय जहाजों में भारी तोपें नहीं होती थीं। उनकी बैरल पतली लोहे की छड़ों से बनी होती थीं, जिन्हें छल्लों से बांधा जाता था। ऐसी तोपों में बारूद का बड़ा भंडार नहीं भरा जा सकता था, इसलिए उनकी मारक क्षमता लगभग दो सौ गज तक सीमित थी। कैब्राल द्वारा पहले ही बमबारी किए जाने के बाद, ज़मोरिन ने शहर की रक्षा के लिए ताड़ के पेड़ों के तनों से एक किलेबंदी खड़ी कर दी थी। हालाँकि, उसके पास तोपखाना बहुत कम था। दा गामा बिना किसी रोक-टोक के अपने जहाजों को तट के बहुत करीब ले जाने में सक्षम था। उन्होंने उस दिन और अगले दिन भारी तबाही मचाई। इसके बाद दा गामा

ने बंदरगाह की घेराबंदी के लिए छह जहाज पीछे छोड़ दिए और कोचीन के लिए रवाना हो गया।

As da Gama departed, a ship arrived with a message from the Raja of Cannanore. It seemed that an Arab merchant had left the port without paying dues. Da Gama sent one of his ships to intercept the absconding merchant, who then paid what was owed, but cursed the king. The Portuguese then flogged him until he fell unconscious. He was then sent back to his ship with his mouth gagged and stuffed with excrement and bacon.

दा गामा के प्रस्थान करते ही, कन्ननोर के राजा का संदेश लेकर एक जहाज आया। ऐसा प्रतीत हुआ कि एक अरब व्यापारी बिना शुल्क चुकाए बंदरगाह से चला गया था। दा गामा ने अपने एक जहाज को उस भागते हुए व्यापारी को रोकने के लिए भेजा, जिसने बकाया राशि तो चुका दी, लेकिन राजा को अपशब्द कहे। इसके बाद पुर्तगालियों ने उसे तब तक कोड़े मारे जब तक वह बेहोश नहीं हो गया। फिर उसे मुंह पर पट्टी बांधकर और मल-भुट्टा व बेकन ठूंसकर उसके जहाज पर वापस भेज दिया गया।

At Cochin, Vasco da Gama went out of his way to establish good relations with the raja. The Muslim merchants, well aware of what had happened in Calicut, were hostile. Da Gama ingratiated himself with the Hindu ruler and further alienated the Muslims by saving a cow. Some Muslims had sold a cow for slaughter to some of the Portuguese. The Hindu raja, protested to da Gama. When the Muslims returned to sell another cow, da Gama arrested them and gave them up to the authorities. They were then executed.

कोचीन में, वास्को दा गामा ने राजा के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने के लिए हर संभव प्रयास किया। कालीकट में जो कुछ हुआ था, उससे भली-भांति परिचित मुस्लिम व्यापारी शत्रुतापूर्ण थे। दा गामा ने हिंदू शासक को प्रसन्न किया और एक गाय को बचाकर मुसलमानों को और भी नाराज कर दिया। कुछ मुसलमानों ने पुर्तगालियों को वध के लिए एक गाय बेच दी थी। हिंदू राजा ने दा गामा से इसका विरोध किया। जब मुसलमान दूसरी गाय बेचने के लिए

लौटे, तो दा गामा ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और अधिकारियों के हवाले कर दिया। बाद में उन्हें मृत्युदंड दे दिया गया।

Da Gama did not, however, confine his barbarities to the Muslims. While he was still at Cochin, a Hindu priest arrived with a message from the Zamorin of Calicut. After being burnt with red-hot embers, he confessed to being a spy. He then offered to commit suicide. Da Gama declined the offer, saying that he needed a messenger to take a reply to the Zamorin. The Brahmin was then sent back to Calicut. His lips had been cut off and his ears replaced with ears taken from one of the ship's dogs.

दा गामा ने अपनी क्रूरता केवल मुसलमानों तक ही सीमित नहीं रखी। जब वह कोचीन में ही था, तभी कालीकट के ज़मोरिन का संदेश लेकर एक हिंदू पुजारी वहाँ पहुँचा। धधकते अंगारों से जलाए जाने के बाद, उसने जासूस होने का कबूलनामा किया। फिर उसने आत्महत्या करने की पेशकश की। दा गामा ने यह कहते हुए उसकी पेशकश ठुकरा दी कि उसे ज़मोरिन को जवाब पहुँचाने के लिए एक संदेशवाहक की ज़रूरत है। इसके बाद उस ब्राह्मण को कालीकट वापस भेज दिया गया। उसके होंठ काट दिए गए थे और उसके कानों की जगह जहाज़ के एक कुत्ते के कान लगा दिए गए थे।

At Cochin the Portuguese managed to buy spices and repair their ships. They used Cochin as a base to collect spices from Quilon and other southern ports. They also went to Cannanore and came to an agreement with the ruler to use the port. Before Vasco da Gama finally left Cochin, he entered into a formal agreement with the raja to build a Portuguese factory. A factor was left behind – together with clerks, workmen and guards – with instructions to buy pepper for future expeditions.

कोचीन में पुर्तगालियों ने मसाले खरीदे और अपने जहाजों की मरम्मत करवाई। उन्होंने क्विलोन और अन्य दक्षिणी बंदरगाहों से मसाले इकट्ठा करने के लिए कोचीन को अपना अड्डा बनाया। वे कन्नूर भी गए और वहाँ के शासक से बंदरगाह के उपयोग के लिए समझौता किया।

वास्को दा गामा के कोचीन छोड़ने से पहले, उन्होंने राजा के साथ एक पुर्तगाली कारखाना बनाने का औपचारिक समझौता किया। एक फैक्टर को क्लर्कों, कामगारों और गार्डों के साथ वहाँ छोड़ दिया गया और उन्हें भविष्य के अभियानों के लिए काली मिर्च खरीदने का निर्देश दिया गया।

On the way north to collect ginger at Cannanore, Vasco da Gama's ships were attacked by a large fleet sent by the Zamorin of Calicut. This fleet had thirty-two large ships, each carrying several hundred men and a host of smaller boats. If the Zamorin's ships had managed to get alongside the Portuguese, they would have easily overwhelmed them. The heavier guns of the Portuguese, however, once again kept their enemy at bay. Many of the Zamorin's ships were sunk. Other ships were set on fire. They drifted into Calicut harbour to burn under the eyes of the Zamorin.

कन्नोर में अदरक इकट्ठा करने के लिए उत्तर की ओर जाते समय, वास्को दा गामा के जहाजों पर कालीकट के ज़मोरिन द्वारा भेजे गए एक विशाल बेड़े ने हमला कर दिया। इस बेड़े में बत्तीस बड़े जहाज थे, जिनमें से प्रत्येक में सैकड़ों सैनिक सवार थे, और कई छोटी नावें भी थीं। यदि ज़मोरिन के जहाज पुर्तगालियों के पास पहुँच जाते, तो वे उन्हें आसानी से हरा देते। लेकिन पुर्तगालियों की भारी तोपों ने एक बार फिर दुश्मन को रोके रखा। ज़मोरिन के कई जहाज डूब गए। अन्य जहाजों में आग लगा दी गई। वे बहकर कालीकट बंदरगाह में आ गिरे और ज़मोरिन की निगाहों के सामने जलते रहे।

Da Gama sailed on to Cannanore. There he loaded spices, and left behind more of his men to operate a factory and buy more spices for the future. He also left behind five ships under the command of his uncle, Vincente Sodré, to guard both the factory at Cannanore and that at Cochin. On 28 December 1502, Vasco da Gama left for Portugal.

दा गामा कन्नोर के लिए रवाना हुए। वहाँ उन्होंने मसाले लादे और अपने कुछ आदमियों को एक कारखाने के संचालन और भविष्य के लिए और मसाले खरीदने के लिए वहीं छोड़ दिया।

उन्होंने अपने चाचा विन्सेंट सोद्रे की कमान में पाँच जहाज भी वहीं छोड़ दिए, ताकि कन्नोर और कोचीन दोनों कारखानों की रक्षा की जा सके। 28 दिसंबर 1502 को वास्को दा गामा पुर्तगाल के लिए रवाना हुए।

Vasco da Gama would return briefly to India in 1524 as viceroy. He died after only three months and was buried in the church of Santo Antonio, later renamed after St Francis, in Cochin. His body was returned to Portugal in 1539.

वास्को दा गामा 1524 में वायसराय के रूप में थोड़े समय के लिए भारत लौटे। केवल तीन महीने बाद ही उनका निधन हो गया और उन्हें कोचीन के सैंटो एंटोनियो चर्च में दफनाया गया, जिसका नाम बाद में सेंट फ्रांसिस के नाम पर रखा गया। उनका पार्थिव शरीर 1539 में पुर्तगाल वापस लाया गया।

Two
दो
THE PORTUGUESE
पुर्तगाली
CONQUEST, HORTICULTURE, THE CHURCH AND THE INQUISITION
विजय, बागवानी, चर्च और धर्म जांच

The greater the number of fortresses you hold, the weaker will be your power: let all our forces be on the sea; because if we should not be powerful at sea (which may the Lord forbid) everything will at once be against us.

जितने अधिक किले तुम्हारे कब्जे में होंगे, तुम्हारी शक्ति उतनी ही कमजोर होगी: हमारी समस्त सेना समुद्र में होनी चाहिए; क्योंकि यदि हम समुद्र में शक्तिशाली नहीं हुए (भगवान न करे ऐसा हो), तो सब कुछ एक पल में हमारे विरुद्ध हो जाएगा।

Dom Francisco de Almeida to the King of Portugal, c. 1508

पुर्तगाल के राजा को डोम फ़्रांसिस्को डी अल्मेडा, सी. 1508

Soon after Vasco da Gama departed from India in 1502, his uncle Vincente Sodré sailed north, hoping to capture rich Arab ships. His fleet was caught in a storm off Arabia and he was drowned. The Zamorin of Calicut saw his opportunity. He ordered his nominal subject, the Raja of Cochin, to surrender the men da Gama had left behind at Cochin. The raja refused and war broke out. The Zamorin's army took Cochin and then burnt it. The Portuguese, and what was left of the raja's army, escaped to the nearby island of Vypin. Fortunately for them, a squadron of Portuguese ships under the command of Afonso de Albuquerque came to their relief. The raja then gave authority to the Portuguese to build a fort at Cochin. A square fort was constructed, made of double rows of palm trunks with earth rammed between. At each corner there was a bastion with cannons and the whole area

was surrounded by a moat. On 1 October 1503 a Franciscan monk christened the first European fort in India. It was named, in honour of the king of Portugal, Fort Manuel. Many other forts would follow, but first the Portuguese had to secure control of the Arabian Sea.

सन् 1502 में वास्को दा गामा के भारत से प्रस्थान करने के तुरंत बाद, उनके चाचा विन्सेंट सोद्रे धनी अरब जहाजों पर कब्जा करने की उम्मीद में उत्तर की ओर रवाना हुए। उनका बेड़ा अरब सागर के तट पर एक तूफान में फंस गया और वे डूब गए। कालीकट के ज़मोरिन ने इस अवसर को भांप लिया। उन्होंने अपने नाममात्र के प्रजाजन, कोचीन के राजा को आदेश दिया कि वे दा गामा द्वारा कोचीन में छोड़े गए सैनिकों को आत्मसमर्पण कर दें। राजा ने इनकार कर दिया और युद्ध छिड़ गया। ज़मोरिन की सेना ने कोचीन पर कब्जा कर लिया और फिर उसे जला दिया। पुर्तगाली और राजा की सेना के बचे हुए सैनिक पास के वाइपिन द्वीप पर भाग निकले। सौभाग्य से, अफोंसो डी अल्बुकर्क की कमान में पुर्तगाली जहाजों का एक बेड़ा उनकी सहायता के लिए आ गया। राजा ने फिर पुर्तगालियों को कोचीन में एक किला बनाने का अधिकार दिया। ताड़ के तनों की दोहरी पंक्तियों से बना एक वर्गाकार किला बनाया गया, जिसके बीच में मिट्टी भरी हुई थी। प्रत्येक कोने पर तोपों से सुसज्जित एक बुर्ज था और पूरा क्षेत्र एक खाई से घिरा हुआ था। 1 अक्टूबर 1503 को एक फ्रांसिस्कन भिक्षु ने भारत में पहले यूरोपीय किले का नामकरण किया। पुर्तगाल के राजा के सम्मान में इसका नाम फोर्ट मैनुअल रखा गया। इसके बाद कई अन्य किले भी बने, लेकिन पहले पुर्तगालियों को अरब सागर पर नियंत्रण हासिल करना था।

When the Portuguese first arrived in Malabar, neither the Arabs nor the Indians had powerful navies in the Indian Ocean. The Arabs came only to trade, not to conquer. The Indian rulers had large fleets of small ships, but these were for suppressing piracy, patrolling the shoreline and for

transporting armies. The ships were galleys. Sometimes they had auxiliary sails, but they relied on oars and were unsuited to the open sea.

जब पुर्तगाली पहली बार मालाबार पहुंचे, तब हिंद महासागर में न तो अरबों और न ही भारतीयों के पास कोई शक्तिशाली नौसेना थी। अरब तो केवल व्यापार के लिए आए थे, विजय प्राप्त करने के लिए नहीं। भारतीय शासकों के पास छोटे जहाजों के बड़े बेड़े थे, लेकिन इनका उपयोग समुद्री डाकुओं को रोकने, तटरेखा की निगरानी करने और सेनाओं को लाने-ले जाने के लिए किया जाता था। ये जहाज गैली थे। कभी-कभी इनमें सहायक पाल भी लगे होते थे, लेकिन ये मुख्य रूप से चप्पू पर चलते थे और खुले समुद्र के लिए उपयुक्त नहीं थे।

The arrival of Portuguese warships soon provoked an Arab response. The Egyptians had a fleet in the Red Sea. In 1507 it sailed into the Arabian Sea to do battle with the Portuguese. It headed for Diu, an island off Gujarat, whose governor, Malik Aiyaz – a Russian convert to Islam – welcomed them. There it joined forces with the ships of the Zamorin of Calicut. The combined fleet then headed south to engage the Portuguese. The Portuguese, under the command of the viceroy's son, Lourenco de Almeida, sailed north. The two fleets met off Chaul. The Portuguese were outfought and fled. The viceroy's son was killed.

पुर्तगाली युद्धपोतों के आगमन ने जल्द ही अरबों की प्रतिक्रिया को उकसाया। मिस्रियों का एक बेड़ा लाल सागर में तैनात था। 1507 में यह पुर्तगालियों से युद्ध करने के लिए अरब सागर में प्रवेश कर गया। यह गुजरात के पास स्थित दीव द्वीप की ओर बढ़ा, जहाँ के राज्यपाल मलिक ऐयाज़ - जो एक रूसी थे और इस्लाम धर्म अपना चुके थे - ने उनका स्वागत किया। वहाँ यह कालीकट के ज़मोरिन के जहाजों के साथ मिल गया। संयुक्त बेड़ा फिर पुर्तगालियों से युद्ध करने के लिए दक्षिण की ओर बढ़ा। पुर्तगाली, वायसराय के पुत्र लौरेंको डी अल्मेडा के नेतृत्व में, उत्तर की ओर रवाना हुए। दोनों बेड़े चौल के पास आमने-सामने आ गए। पुर्तगाली युद्ध में हार गए और भाग गए। वायसराय का पुत्र मारा गया।

The viceroy himself, Francisco de Almeida, had assumed office two years earlier. He was the first of the Portuguese to be given the pretentious title of

‘Viceroy of India’. He had been given total power over Portuguese affairs east of Africa, with the authority to make treaties and war. When told of the death of his son, he was reported to have said, ‘Those who have eaten the cockerel must eat the cock or pay the price.’ He collected all the ships he could and sailed north. On 3 February 1509 his ships met the Egyptian fleet at Diu. The governor of Diu, betraying his fellow Muslims, secretly sided with the Portuguese and deprived the Egyptian fleet of supplies. When battle commenced, the Portuguese artillery devastated the Zamorin’s galleys. The Egyptians, realizing that they could not defeat the Portuguese, turned tail and never returned. Thereafter, although they sometimes encountered resistance close to the Indian shoreline, the Portuguese ruled the high seas.

स्वयं वायसराय, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने दो वर्ष पूर्व पदभार ग्रहण किया था। वे पहले पुर्तगाली थे जिन्हें 'भारत के वायसराय' की प्रतिष्ठित उपाधि दी गई थी। उन्हें अफ्रीका के पूर्व में पुर्तगाली मामलों पर पूर्ण अधिकार दिया गया था, जिसमें संधियाँ करने और युद्ध करने का अधिकार भी शामिल था। अपने पुत्र की मृत्यु की सूचना मिलने पर उन्होंने कथित तौर पर कहा था, 'जिसने मुर्गा खाया है, उसे मुर्गे को भी खाना होगा, अन्यथा उसे कीमत चुकानी पड़ेगी।' उन्होंने जितने भी जहाज एकत्र कर सकते थे, उन्हें एकत्रित किया और उत्तर की ओर रवाना हुए। 3 फरवरी 1509 को उनके जहाज दीव में मिस्र के बेड़े से टकरा गए। दीव के गवर्नर ने अपने साथी मुसलमानों के साथ विश्वासघात करते हुए गुप्त रूप से पुर्तगालियों का साथ दिया और मिस्र के बेड़े को रसद से वंचित कर दिया। युद्ध शुरू होने पर, पुर्तगाली तोपखाने ने ज़मोरिन के जहाजों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। मिस्रियों ने यह महसूस करते हुए कि वे पुर्तगालियों को हरा नहीं सकते, पीछे हट गए और फिर कभी वापस नहीं लौटे। इसके बाद, यद्यपि उन्हें कभी-कभी भारतीय तटरेखा के निकट प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, पुर्तगालियों ने खुले समुद्र पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा।

Almeida sailed back to his base at Cochin. He had taken many captives. On the way south, these were executed in batches, dismembered and then their parts blown by cannon over the Muslim towns.

अलमेडा अपने अड्डे कोचीन लौट आया। उसने कई लोगों को बंदी बनाया था। दक्षिण की ओर जाते समय, उन्हें समूहों में मार डाला गया, उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और फिर तोपों से उनके टुकड़े मुस्लिम शहरों पर उड़ा दिए गए।

Francisco de Almeida, although a soldier, was acutely aware that Portuguese power came from its superior ships and their firepower. 'If you are strong in ships the commerce of the Indies is yours, and if you are not strong in ships, little will avail you any fortress on land.' He was a shrewd tactician and strategist. He took advice from a Hindu privateer, Timoja, who harassed Muslim shipping on behalf of the Raja of Honavar. This raja was himself a vassal of the king of Vijayanagar, who was the overlord of the huge Hindu empire, which took in almost all of India, south of the Rivers Krishna and Tungabhadra. Almeida saw that if he was conciliatory to the king of Vijayanagar, the two of them might divide the forces of the Muslim states to their mutual advantage. This policy was adopted and developed by Almeida's successor, Albuquerque.

फ्रांसिस्को डी अल्मेडा, हालांकि एक सैनिक थे, लेकिन वे इस बात से भलीभांति परिचित थे कि पुर्तगाली शक्ति उनके श्रेष्ठ जहाजों और उनकी मारक क्षमता से आती है। उन्होंने कहा, 'यदि आप जहाजों में मजबूत हैं, तो भारत का व्यापार आपका है, और यदि आप जहाजों में मजबूत नहीं हैं, तो जमीन पर बना कोई भी किला आपके किसी काम का नहीं।' वे एक चतुर रणनीतिकार थे। उन्होंने एक हिंदू समुद्री लुटेरे, तिमोजा से सलाह ली, जो होनवर के राजा की ओर से मुस्लिम जहाजों को परेशान करता था। यह राजा स्वयं विजयनगर के राजा का जागीरदार था, जो विशाल हिंदू साम्राज्य का अधिपति था, जिसका विस्तार कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण में लगभग पूरे भारत में था। अल्मेडा ने देखा कि यदि वे विजयनगर के राजा

के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करते हैं, तो वे दोनों मुस्लिम राज्यों की सेनाओं को आपस में विभाजित करके अपने लाभ के लिए उनका उपयोग कर सकते हैं। इस नीति को अल्मेडा के उत्तराधिकारी, अल्बुकर्क ने अपनाया और विकसित किया।

Afonso de Albuquerque, after a dispute with Almeida who refused to hand over power, assumed the grandiose title of governor of India in 1509. It was him, rather than Vasco da Gama, who was the true architect of Portuguese India. Upon taking office, he immediately began to plan the conquest of Goa.

अल्मेडा द्वारा सत्ता सौंपने से इनकार करने पर विवाद के बाद, अफोंसो डी अल्बुकर्क ने 1509 में भारत के गवर्नर का भव्य पदभार ग्रहण किया। वास्को दा गामा के बजाय, वही पुर्तगाली भारत के वास्तविक वास्तुकार थे। पदभार ग्रहण करते ही उन्होंने गोवा पर विजय प्राप्त करने की योजना बनाना शुरू कर दिया।

The name ‘Goa’ was derived from that a port in the south of the island of Tiswadi, Govapuri. When this harbour started to silt up in medieval times, a new port developed north of the island. This also became known as Goa, later as Old Goa. It had excellent deep-water access along the River Mandovi and was well sheltered from the monsoon. The river was stocked with crocodiles to deter illicit entry or escape. The island had changed hands several times between rival Hindu and Muslim dynasties during the fourteenth and fifteenth centuries. After 1470 it came under Muslim control and in 1510 it was ruled by the Bijapur sultan, Yusuf Adil Shah.

'गोवा' नाम तिसवाड़ी द्वीप के दक्षिण में स्थित गोवापुरी बंदरगाह से लिया गया है। मध्यकाल में जब यह बंदरगाह गाद से भर गया, तो द्वीप के उत्तर में एक नया बंदरगाह विकसित हुआ। इसे भी गोवा के नाम से जाना जाने लगा, बाद में यह पुराना गोवा कहलाया। मांडोवी नदी के किनारे इसकी गहरी जलधारा तक उत्कृष्ट पहुंच थी और यह मानसून से अच्छी तरह सुरक्षित

था। अवैध प्रवेश या पलायन को रोकने के लिए नदी में मगरमच्छ पाले गए थे। चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान प्रतिद्वंद्वी हिंदू और मुस्लिम राजवंशों के बीच इस द्वीप पर कई बार अधिकार बदले। 1470 के बाद यह मुस्लिम नियंत्रण में आ गया और 1510 में इस पर बीजापुर के सुल्तान यूसुफ आदिल शाह का शासन था।

Yusuf Adil Shah was a legendary figure. He was said to be the younger son of an Ottoman Emperor. When his father died, Yusuf's elder brother decided to remove any potential rivals and ordered that Yusuf be strangled. His mother substituted a slave and Yusuf was spirited away to Persia. From there, inspired by a vision, he took a ship to India. He became a slave soldier, rose to high office in the cavalry of the Bahmani emperor and, following the break-up of the Bahmani Empire, became the first king of Bijapur.

यूसुफ आदिल शाह एक महान व्यक्तित्व थे। कहा जाता है कि वे एक ओटोमन सम्राट के छोटे पुत्र थे। जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो यूसुफ के बड़े भाई ने संभावित प्रतिद्वंद्वियों को रास्ते से हटाने का फैसला किया और यूसुफ को गला घोंटकर मारने का आदेश दिया। उनकी माँ ने एक दास को उनकी जगह नियुक्त किया और यूसुफ को चुपके से फारस भेज दिया गया। वहाँ से, एक दिव्य दृष्टि से प्रेरित होकर, उन्होंने एक जहाज से भारत की यात्रा की। वे एक दास सैनिक बने, बहमनी सम्राट की घुड़सवार सेना में उच्च पद तक पहुँचे और बहमनी साम्राज्य के विघटन के बाद, बीजापुर के पहले राजा बने।

Albuquerque sailed north from Cochin to Goa early in 1510, with a fleet of twenty ships. At Honavar he rendezvoused with Timoja who commanded a number of galleys. Timoja also brought intelligence that Goa was defended by only 200 Turkish mercenaries.

सन् 1510 की शुरुआत में अल्बुकर्क बीस जहाजों के बेड़े के साथ कोचीन से उत्तर की ओर गोवा के लिए रवाना हुए। होनवार में उनकी मुलाकात तिमोजा से हुई, जो कई गैली जहाजों के कमांडर थे। तिमोजा ने यह जानकारी भी दी कि गोवा की रक्षा केवल 200 तुर्की भाड़े के सैनिक कर रहे थे।

In mid-February the combined fleet reached the mouth of the River Mandovi and attacked the fort at Panjim. There was little resistance. The garrison fled to Old Goa where the inhabitants decided to surrender. Albuquerque arrived in state, guarded by pikemen and wearing his finest armour. He was met by eight of the leading citizens who knelt and offered up the keys of the city. He then mounted a horse they provided and entered the city where he was showered with flowers. The remaining Turks fled and Albuquerque became ruler of Goa.

फरवरी के मध्य में संयुक्त बेड़ा मांडोवी नदी के मुहाने पर पहुँचा और पणजी के किले पर हमला कर दिया। वहाँ बहुत कम प्रतिरोध हुआ। किले की सेना भागकर पुराने गोवा चली गई, जहाँ के निवासियों ने आत्मसमर्पण करने का फैसला किया। अल्बुकर्क शाही ठाठ-बाठ के साथ, भालेधारी सैनिकों की सुरक्षा में और अपने सबसे उत्तम कवच में वहाँ पहुँचे। वहाँ आठ प्रमुख नागरिकों ने घुटने टेककर उनका स्वागत किया और शहर की चाबियाँ उन्हें सौंप दीं। इसके बाद वे उनके द्वारा दिए गए घोड़े पर सवार होकर शहर में प्रवेश कर गए, जहाँ उन पर फूलों की वर्षा की गई। शेष तुर्क भाग गए और अल्बुकर्क गोवा के शासक बन गए।

Two months later, Yusuf Adil Shah arrived with an army, which eventually numbered 60,000. The monsoon, which normally arrived in mid-June, was early. On the night of 15 May 1510, in heavy rain, Adil Shah's soldiers crossed from the mainland on rafts. The island was quickly taken, and the Portuguese became besieged in the fortress town of Old Goa. Within the fort some Muslims, sympathetic to Adil Shah, harassed the Portuguese. After a week of fighting, Albuquerque realized that he could not continue to resist and prepared to leave. First he massacred the Muslims of Old Goa. A few children were kept for conversion, a few rich men kept as hostages; a few women kept to become wives. All the rest were killed – men, women and children.

दो महीने बाद, यूसुफ आदिल शाह एक सेना के साथ पहुंचे, जिसकी संख्या अंततः 60,000 हो गई। मानसून, जो आमतौर पर जून के मध्य में आता था, इस बार जल्दी आ गया था। 15 मई 1510 की रात, भारी बारिश में, आदिल शाह के सैनिक मुख्य भूमि से नावों के सहारे द्वीप पार कर गए। द्वीप पर शीघ्र ही कब्जा कर लिया गया और पुर्तगाली पुराने गोवा के किले में घिर गए। किले के अंदर, आदिल शाह के प्रति सहानुभूति रखने वाले कुछ मुसलमानों ने पुर्तगालियों को परेशान किया। एक सप्ताह तक चले युद्ध के बाद, अल्बुकर्क को एहसास हुआ कि वह अब और प्रतिरोध नहीं कर सकता और उसने जाने की तैयारी कर ली। सबसे पहले उसने पुराने गोवा के मुसलमानों का नरसंहार किया। कुछ बच्चों को धर्म परिवर्तन के लिए रखा गया, कुछ धनी पुरुषों को बंधक बनाया गया; कुछ महिलाओं को पत्नियां बनाने के लिए रखा गया। बाकी सभी को मार डाला गया - पुरुष, महिलाएं और बच्चे।

The Portuguese, with their prisoners, managed to escape to their ships, but the ferocity of the monsoon made it impossible for them to cross the bar at the mouth of the Mandovi. They anchored off Panjim where they were raked with cannon fire from their own captured guns. Soon they were short of food. It is said that Adil Shah sent a boat, under a flag of truce that was loaded with food, and that the Portuguese rejected it with a mock banquet of their own food kept for the sick. Certainly, the Portuguese used some of their hostages to buy food, and certainly, they were reduced to eating rats. It was early August before the monsoon abated sufficiently for the fleet to sail away. Albuquerque was, however, determined to return.

पुर्तगाली अपने कैदियों के साथ किसी तरह अपने जहाजों तक पहुँचने में कामयाब रहे, लेकिन मानसून की भयंकर बारिश के कारण वे मांडोवी नदी के मुहाने पर बने रेत के टीले को पार नहीं कर पाए। उन्होंने पणजी के पास लंगर डाला, जहाँ उन पर उन्हीं की पकड़ी हुई तोपों से गोले दागे गए। जल्द ही उनके पास भोजन की कमी हो गई। कहा जाता है कि आदिल शाह ने शांति समझौते के झंडे के नीचे भोजन से लदी एक नाव भेजी, जिसे पुर्तगालियों ने अस्वीकार कर दिया और बीमारों के लिए रखे अपने भोजन का एक दिखावटी भोज आयोजित किया।

निश्चित रूप से, पुर्तगालियों ने भोजन खरीदने के लिए अपने कुछ बंधकों का इस्तेमाल किया, और निश्चित रूप से, वे चूहे खाने पर मजबूर हो गए। अगस्त की शुरुआत तक मानसून इतना शांत नहीं हुआ कि बेड़ा रवाना हो सके। हालाँकि, अल्बुकर्क वापस लौटने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

Eighty miles south of Goa, Albuquerque came upon some Portuguese ships. Overruling the protests of their commanders, he requisitioned many of these vessels. Eventually, he built up a fleet of twenty-eight ships, together with 1,700 Portuguese soldiers. Once again, Timoja joined him with a large number of galleys and Hindu soldiers. The combined fleet returned to Goa in November 1510.

गोवा से अस्सी मील दक्षिण में, अल्बुकर्क को कुछ पुर्तगाली जहाज मिले। उनके कमांडरों के विरोध को दरकिनार करते हुए, उन्होंने इनमें से कई जहाजों को अपने कब्जे में ले लिया। अंततः, उन्होंने 28 जहाजों और 1,700 पुर्तगाली सैनिकों का एक बेड़ा तैयार किया। एक बार फिर, तिमोजा बड़ी संख्या में गैली और हिंदू सैनिकों के साथ उनके साथ शामिल हो गए। संयुक्त बेड़ा नवंबर 1510 में गोवा लौट आया।

Meanwhile, Yusuf Adil Shah had died and been succeeded by his son, an infant king, Ismail Adil Shah. His huge army had withdrawn from Goa, leaving behind a garrison of 8,000 Persian and Turkish soldiers.

इसी बीच, यूसुफ आदिल शाह की मृत्यु हो गई और उनके पुत्र, शिशु राजा इस्माइल आदिल शाह ने उनका स्थान लिया। उनकी विशाल सेना गोवा से वापस लौट गई, और अपने पीछे 8,000 फारसी और तुर्की सैनिकों की एक टुकड़ी छोड़ गई।

On 25 November 1510, the Portuguese attacked. They first assaulted the arsenal between the River Mandovi and Old Goa where a large number of the defenders were trapped and killed. Then they scaled the fortress walls and descended into the town. It was a total rout. Hundreds of defending troops were put to the sword. The Portuguese then celebrated with a Catholic service

of thanksgiving. When the service was over, Albuquerque gave the order to kill all the remaining Muslims. It took three days to hunt them all down. Men, women and children were burnt alive as they prayed in their mosques. The final death toll was forty Portuguese and 6,000 Muslims.

25 नवंबर 1510 को पुर्तगालियों ने हमला किया। उन्होंने सबसे पहले मांडोवी नदी और ओल्ड गोवा के बीच स्थित शस्त्रागार पर आक्रमण किया, जहाँ बड़ी संख्या में रक्षक फँस गए और मारे गए। फिर वे किले की दीवारों पर चढ़कर शहर में घुस गए। यह एक पूर्ण हार थी। सैकड़ों रक्षक सैनिकों को तलवारों से मार डाला गया। इसके बाद पुर्तगालियों ने एक कैथोलिक धन्यवाद समारोह के साथ जश्न मनाया। समारोह समाप्त होने के बाद, अल्बुकर्क ने बचे हुए सभी मुसलमानों को मारने का आदेश दिया। उन सभी को पकड़ने में तीन दिन लगे। पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को उनकी मस्जिदों में प्रार्थना करते समय जिंदा जला दिया गया। अंततः मरने वालों की संख्या चालीस पुर्तगाली और 6,000 मुसलमान थी।

Over the next few months, Albuquerque rebuilt the city walls and started the construction of a new fort within. A hospital was endowed, a mint established and a small chapel built – dedicated to St Catherine on whose feast day Goa had been taken. Most of these buildings were constructed with stone taken from Muslim cemeteries. Much of the administration, including the police and collection of revenue, was leased out to a relative of the Raja of Honavar, the Hindu overlord of Timoja.

अगले कुछ महीनों में, अल्बुकर्क ने शहर की दीवारों का पुनर्निर्माण किया और भीतर एक नए किले का निर्माण शुरू किया। एक अस्पताल की स्थापना की गई, एक टकसाल बनाई गई और एक छोटा चैपल बनाया गया - जो संत कैथरीन को समर्पित था, जिनके पर्व के दिन गोवा पर विजय प्राप्त की गई थी। इनमें से अधिकांश इमारतें मुस्लिम कब्रिस्तानों से प्राप्त पत्थरों से बनाई गई थीं। पुलिस और राजस्व संग्रह सहित अधिकांश प्रशासनिक कार्य तिमोजा के हिंदू अधिपति, होनवर के राजा के एक रिश्तेदार को पट्टे पर दे दिए गए थे।

In April, leaving a strong garrison of Portuguese troops behind, Albuquerque sailed for the Far East. He captured Malacca and built a fortress there. Control of Malacca gave the Portuguese control of the eastern approaches to the Indian Ocean as well as much of the trade that came that way.

अप्रैल में, पुर्तगाली सैनिकों की एक मजबूत टुकड़ी को पीछे छोड़कर, अल्बुकर्क सुदूर पूर्व की ओर रवाना हो गया। उसने मलक्का पर कब्जा कर लिया और वहाँ एक किला बनवाया। मलक्का पर नियंत्रण से पुर्तगालियों को हिंद महासागर के पूर्वी मार्गों के साथ-साथ उस रास्ते से होने वाले अधिकांश व्यापार पर भी नियंत्रण मिल गया।

Albuquerque returned to India in February 1512 to learn that the armies of Adil Shah were once again besieging Goa. They had captured Banastarim, on the eastern side of the island, and built a fort to guard a ford that led from the mainland. The ford was protected on each side by rows of stakes driven into the river bed. From the fort, the Adil Shah army – 6,000 Turks and 3,000 others, together with heavy artillery – had crossed the island to lay siege to Old Goa. They had been joined by a number of Portuguese deserters, some skilled in the use of artillery. These forces were kept supplied from the mainland, through Banastarim. It was thought that the waterway leading to the sea was too shallow for Banastarim to be at risk of attack by Portuguese warships.

फरवरी 1512 में अल्बुकर्क भारत लौटे तो उन्हें पता चला कि आदिल शाह की सेनाएँ एक बार फिर गोवा को घेर रही हैं। उन्होंने द्वीप के पूर्वी हिस्से में स्थित बनस्तारिम पर कब्जा कर लिया था और मुख्य भूमि से आने वाले एक घाट की रक्षा के लिए एक किला बनाया था। घाट के दोनों ओर नदी तल में गाड़े गए खंभों की कतारें थीं। किले से आदिल शाह की सेना - 6,000 तुर्क और 3,000 अन्य सैनिक, भारी तोपखाने के साथ - द्वीप पार करके पुराने गोवा को घेरने के लिए आगे बढ़ी थी। उनके साथ कई पुर्तगाली भगोड़े भी शामिल हो गए थे, जिनमें से कुछ तोपखाने के संचालन में कुशल थे। इन सेनाओं को बनस्तारिम के रास्ते मुख्य भूमि से

रसद की आपूर्ति की जाती थी। ऐसा माना जाता था कि समुद्र की ओर जाने वाला जलमार्ग इतना उथला था कि बनस्तारिम पर पुर्तगाली युद्धपोतों के हमले का खतरा नहीं था।

Albuquerque arrived from Cochin with sixteen ships. He commandeered a small Indian boat and led five of his smaller ships up the shallow waterway to Banastarim. Under heavy cannon fire, they broke through the stakes that crossed the river at Banastarim and cut off the supply and escape route of the Adil Shah army. They anchored beneath the fort and commenced bombardment. Despite being peppered with arrows from above and raked with shot, the Portuguese managed to continue to bombard the fortress for eight days, and eventually silenced the Adil Shah artillery.

अल्बुकर्क सोलह जहाजों के साथ कोचीन से आया। उसने एक छोटी भारतीय नाव पर कब्ज़ा कर लिया और अपने पाँच छोटे जहाजों को उथले जलमार्ग से होते हुए बनस्तारिम तक ले गया। भारी तोपखाने की गोलाबारी के बीच, उन्होंने बनस्तारिम में नदी के ऊपर बने खंभों को तोड़ दिया और आदिल शाह की सेना के रसद और भागने के रास्ते को काट दिया। उन्होंने किले के नीचे लंगर डाला और बमबारी शुरू कर दी। ऊपर से तीरों की बौछार और गोलियों की मार झेलते हुए भी, पुर्तगाली आठ दिनों तक किले पर बमबारी करते रहे और अंततः आदिल शाह की तोपखाने को निष्क्रिय कर दिया।

In the meantime, the rest of Albuquerque's ships and men had gone to the aid of the garrison in Old Goa. This tipped the scales against the besiegers, who fled to the Banastarim fort. Once there, they were trapped between their pursuers from Old Goa and Albuquerque's ships at the ford. Nevertheless, Adil Shah had a huge army in comparison to the Portuguese and, while the Portuguese might have eventually captured the fort, it would have cost the lives of many of Albuquerque's men. Albuquerque decided, therefore, to permit the retreat across the ford of the Muslim army. He insisted, however, that the Portuguese deserters be surrendered, although he promised not to

execute them. He kept that promise, but cut off their noses, their ears, their right hands and their left thumbs.

इसी बीच, अल्बुकर्क के शेष जहाज और सैनिक ओल्ड गोवा में तैनात सेना की सहायता के लिए चले गए थे। इससे घेराबंदी करने वालों के खिलाफ स्थिति बिगड़ गई और वे बनस्तारिम किले की ओर भाग गए। वहाँ पहुँचकर वे ओल्ड गोवा से आए अपने पीछा करने वालों और अल्बुकर्क के जहाजों के बीच घाट पर फंस गए। फिर भी, आदिल शाह के पास पुर्तगालियों की तुलना में एक विशाल सेना थी और यद्यपि पुर्तगाली अंततः किले पर कब्जा कर लेते, लेकिन इसमें अल्बुकर्क के कई सैनिकों की जान चली जाती। इसलिए अल्बुकर्क ने मुस्लिम सेना को घाट पार करके पीछे हटने की अनुमति देने का फैसला किया। हालांकि, उन्होंने पुर्तगाली भगोड़ों को आत्मसमर्पण करने पर जोर दिया, हालांकि उन्होंने उन्हें फांसी न देने का वादा किया। उन्होंने अपना वादा निभाया, लेकिन उनकी नाक, कान, दाहिना हाथ और बायां अंगूठा काट दिया।

The conquest of Goa was the first European annexation of Indian territory since the invasion of Alexander the Great. It transformed Portuguese influence in the East. Goa was one of the finest harbours in the world, protected from storms and easily defensible. From this safe base the Portuguese ships, with their superior firepower, could range along the western Indian coast and dominate its trade. Other ships would be allowed on the high seas only with the permission of the Portuguese. The Portuguese would corner much of the trade in spices and in horses.

गोवा पर विजय सिकंदर महान के आक्रमण के बाद भारतीय क्षेत्र पर यूरोपीय संघ का पहला कब्ज़ा था। इसने पूर्व में पुर्तगाली प्रभाव को पूरी तरह बदल दिया। गोवा दुनिया के बेहतरीन बंदरगाहों में से एक था, जो तूफानों से सुरक्षित और आसानी से रक्षा करने योग्य था। इस सुरक्षित ठिकाने से पुर्तगाली जहाज, अपनी श्रेष्ठ मारक क्षमता के साथ, पश्चिमी भारतीय तट पर

गश्त कर सकते थे और इसके व्यापार पर अपना प्रभुत्व जमा सकते थे। अन्य जहाजों को पुर्तगालियों की अनुमति के बिना खुले समुद्र में जाने की अनुमति नहीं थी। पुर्तगालियों ने मसालों और घोड़ों के व्यापार के बड़े हिस्से पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया।

Warfare on the Indian mainland was dominated by cavalry. Horses were essential for the armies of the Indian rulers. Very few good horses, however, were bred in India and there was a large trade in Arab imports. Albuquerque saw his opportunity. He wrote to the king of Portugal:

भारतीय मुख्यभूमि पर युद्ध में घुड़सवार सेना का वर्चस्व था। भारतीय शासकों की सेनाओं के लिए घोड़े अनिवार्य थे। हालाँकि, भारत में बहुत कम अच्छे घोड़े पाले जाते थे और अरबों से आयातित घोड़ों का व्यापक व्यापार होता था। अल्बुकर्क ने इस अवसर को भांप लिया। उन्होंने पुर्तगाल के राजा को पत्र लिखा:

I have decided that all the horses of Persia and Arabia should be in your hands, for two reasons: one being the heavy duties that they pay, and secondly, that the King of Vijayanagar and those of the Deccan may recognise that victory depends on you for he who has the horses will defeat the other.

मैंने यह निर्णय लिया है कि फारस और अरब के सभी घोड़े आपके हाथों में होने चाहिए, इसके दो कारण हैं: पहला तो उन पर लगने वाला भारी कर, और दूसरा, ताकि विजयनगर के राजा और दक्कन के राजा यह समझ सकें कि जीत आप पर निर्भर करती है, क्योंकि जिसके पास घोड़े होंगे वही दूसरे को हराएगा।

Albuquerque gave instructions that all horses coming from Arabia and Persia should be offloaded at Goa. His ships intercepted those that carried horses and escorted them to the island. Those who voluntarily brought horses to be sold at Goa and those who purchased horses there were given customs concessions on their other cargoes. There was no import duty on horses, but a heavy tax on their export – a tax that eventually brought in over half the total revenue of Goa.

अल्बुकर्क ने निर्देश दिया कि अरब और फारस से आने वाले सभी घोड़ों को गोवा में उतारा जाए। उनके जहाजों ने घोड़ों से भरे जहाजों को रोककर उन्हें द्वीप तक पहुंचाया। जो लोग स्वेच्छा से गोवा में बेचने के लिए घोड़े लाए और जिन्होंने वहां घोड़े खरीदे, उन्हें उनके अन्य माल पर सीमा शुल्क में छूट दी गई। घोड़ों पर कोई आयात शुल्क नहीं था, लेकिन उनके निर्यात पर भारी कर लगता था - यह कर अंततः गोवा के कुल राजस्व के आधे से अधिक हिस्से के लिए जिम्मेदार था।

The king of Vijayanagar and Albuquerque's former enemy, Adil Shah, sent ambassadors to Goa. The southern Hindus and the northern Muslims were often at war with each other. Both offered friendship to the Portuguese and tried to secure a monopoly over the purchase of the horses at Goa. Albuquerque played one off against the other and sold horses to both.

विजयनगर के राजा और अल्बुकर्क के पूर्व शत्रु आदिल शाह ने गोवा में राजदूत भेजे। दक्षिणी हिंदू और उत्तरी मुसलमान अक्सर आपस में युद्धरत रहते थे। दोनों ने पुर्तगालियों को मित्रता का प्रस्ताव दिया और गोवा में घोड़ों की खरीद पर एकाधिकार प्राप्त करने का प्रयास किया। अल्बुकर्क ने एक को दूसरे के विरुद्ध इस्तेमाल करते हुए दोनों को घोड़े बेचे।

Having secured the financial and political future of Goa, Albuquerque was determined to transform a garrison of a few hundred troops into a self-perpetuating colony. Albuquerque was not married, but he had a son by an African mistress. He encouraged his men to marry the Muslim and Hindu women they had captured, and endowed these couples with property. Many women committed suicide rather than proceed with these marriages, which involved conversion to Christianity. Many others, however, accepted the offer of a less bleak life. These mixed marriages – which mostly involved the poorer Portuguese – produced a class that monopolized the minor offices of government. Outside the city of Old Goa, Albuquerque allowed the thirty village communities to continue to administer themselves much as before.

Preferment was given to Christians, but Hindus were allowed to continue their worship. The practice of sati, the burning of widows, was forbidden.

गोवा के आर्थिक और राजनीतिक भविष्य को सुरक्षित करने के बाद, अल्बुकर्क ने कुछ सौ सैनिकों की एक छोटी सी चौकी को एक आत्मनिर्भर उपनिवेश में बदलने का निश्चय किया। अल्बुकर्क अविवाहित थे, लेकिन उनकी एक अफ्रीकी प्रेमिका से एक पुत्र था। उन्होंने अपने सैनिकों को बंदी बनाई गई मुस्लिम और हिंदू महिलाओं से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया और इन दंपतियों को संपत्ति प्रदान की। कई महिलाओं ने इन विवाहों को स्वीकार करने के बजाय आत्महत्या कर ली, क्योंकि इनमें ईसाई धर्म में धर्मांतरण अनिवार्य था। हालांकि, कई अन्य महिलाओं ने कम निराशाजनक जीवन की इस पेशकश को स्वीकार कर लिया। इन मिश्रित विवाहों - जिनमें अधिकतर गरीब पुर्तगाली शामिल थे - ने एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जिसने सरकार के छोटे-मोटे पदों पर अपना एकाधिकार जमा लिया। पुराने गोवा शहर के बाहर, अल्बुकर्क ने तीस ग्राम समुदायों को पहले की तरह ही अपना प्रशासन जारी रखने की अनुमति दी। ईसाइयों को तरजीह दी गई, लेकिन हिंदुओं को अपनी पूजा-अर्चना जारी रखने की अनुमति दी गई। विधवाओं को जलाने की प्रथा, सती प्रथा, निषिद्ध कर दी गई।

Albuquerque was in his fifties – with a beard that reached down to his chest – but still fired by ambition. He made plans to divert the Nile to starve Egypt, to capture Alexandria and Suez; to burn Mecca. In 1513 he sailed for Aden, hoping to capture the fortress that guarded the entrance to the Red Sea. The operation was a disaster. The Portuguese suffered heavy losses.

अल्बुकर्क पचास वर्ष से अधिक आयु के थे – उनकी दाढ़ी छाती तक लंबी थी – लेकिन महत्वाकांक्षा से ओतप्रोत थे। उन्होंने मिस्र को भूखा मारने के लिए नील नदी का मार्ग बदलने, अलेक्जेंड्रिया और स्वेज पर कब्जा करने और मक्का को जलाने की योजना बनाई। 1513 में वे अदन के लिए रवाना हुए, इस उम्मीद में कि वे लाल सागर के प्रवेश द्वार की रक्षा करने वाले किले पर कब्जा कर लेंगे। यह अभियान पूरी तरह विफल रहा। पुर्तगालियों को भारी नुकसान उठाना पड़ा।

In 1515 Albuquerque sailed for Ormuz, an island city famous as a bazaar, which commanded the entrance to the Persian Gulf. Here, Albuquerque played the diplomat. A dynastic struggle was in progress. The king had been imprisoned by his nephew who had then assumed power. Fifteen princes, who might have had ambitions, had been rendered harmless by holding a red-hot bronze bowl to their eyes to make them blind. Albuquerque's arrival prompted the nephew to release his uncle. Albuquerque invited the nephew to negotiations and then assassinated him. The king was reinstated as a Portuguese puppet. Albuquerque then built a fort to control the trade between Persia and India. His health, however, had begun to fail. Wracked with dysentery, he decided to return to Goa.

1515 में अल्बुकर्क ओर्मुज़ के लिए रवाना हुए, जो एक प्रसिद्ध बाज़ार के रूप में जाना जाने वाला द्वीप शहर था और फारस की खाड़ी के प्रवेश द्वार पर स्थित था। यहाँ अल्बुकर्क ने कूटनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहाँ एक वंशवादी संघर्ष चल रहा था। राजा को उसके भतीजे ने कैद कर लिया था और फिर सत्ता हथिया ली थी। पंद्रह राजकुमार, जिनकी महत्वाकांक्षाएँ हो सकती थीं, उनकी आँखों पर लाल-गर्म पीतल का कटोरा रखकर उन्हें अंधा कर दिया गया था। अल्बुकर्क के आगमन से भतीजे ने अपने चाचा को रिहा कर दिया। अल्बुकर्क ने भतीजे को बातचीत के लिए आमंत्रित किया और फिर उसकी हत्या कर दी। राजा को पुर्तगाली कठपुतली के रूप में पुनः स्थापित किया गया। इसके बाद अल्बुकर्क ने फारस और भारत के बीच व्यापार को नियंत्रित करने के लिए एक किला बनवाया। हालाँकि, उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। पेचिश से पीड़ित होकर उन्होंने गोवा लौटने का फैसला किया।

On his return journey, Albuquerque overhauled a ship carrying a message from the king of Portugal ordering his replacement. Enemies in Lisbon had conspired to arrange his downfall. As the ship entered the River Mandovi,

Albuquerque rose from his sickbed to view Old Goa. As the ship came to anchor, he died.

वापसी यात्रा पर, अल्बुकर्क ने पुर्तगाल के राजा का संदेश लेकर आ रहे एक जहाज की मरम्मत करवाई, जिसमें उनके प्रतिस्थापन का आदेश था। लिस्बन में उनके शत्रुओं ने उनकी हत्या की साजिश रची थी। जैसे ही जहाज मांडोवी नदी में प्रवेश किया, अल्बुकर्क अपनी बीमारी की हालत में भी बिस्तर से उठकर ओल्ड गोवा को देखने गए। जैसे ही जहाज लंगर पर पहुँचा, उनकी मृत्यु हो गई।

Albuquerque was buried in the church of Our Lady of the Mount. The king of Portugal, who had already regretted and countermanded his decision to remove the viceroy, gave instructions that the body should remain in Goa as a talisman. It required the intervention of the Pope for the family to finally bring the bones back to Portugal in 1566.

अल्बुकर्क को आवर लेडी ऑफ द माउंट के गिरजाघर में दफनाया गया था। पुर्तगाल के राजा, जिन्हें वायसराय को पद से हटाने के अपने फैसले पर पछतावा था और उन्होंने इसे रद्द कर दिया था, ने निर्देश दिया कि शव को गोवा में एक शुभ प्रतीक के रूप में रखा जाए। अंततः 1566 में परिवार द्वारा अस्थियों को पुर्तगाल वापस लाने के लिए पोप के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ी।

Albuquerque's policy of being helpful to the Vijayanagar kings proved extremely useful to the Portuguese. Vijayanagar forced Adil Shah out of much of the mainland adjacent to Goa and then encouraged the Portuguese to occupy it. The Portuguese were then able, by backing one of the contestants for the throne of the Adil Shahs, to obtain a formal treaty giving them the territories of Bardez and Salcete. These acquisitions more than quadrupled the area of Goa.

विजयनगर के राजाओं के प्रति अल्बुकर्क की सहायक नीति पुर्तगालियों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई। विजयनगर ने आदिल शाह को गोवा से सटे अधिकांश भूभाग से खदेड़

दिया और फिर पुर्तगालियों को उस पर कब्जा करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद पुर्तगालियों ने आदिल शाह वंश के सिंहासन के दावेदारों में से एक का समर्थन करके एक औपचारिक संधि प्राप्त की, जिसके तहत उन्हें बारदेज़ और सालसेटे के क्षेत्र सौंप दिए गए। इन अधिग्रहणों से गोवा का क्षेत्रफल चार गुना से भी अधिक बढ़ गया।

The Catholic Church did all it could to aid the Portuguese conquest. It was common for Portuguese soldiers to be given communion together before they went into battle. They also received free indulgences from the church so that, if they were to die, their passage to heaven would be all the swifter. Although the spread of Christianity was supposedly one of the main aims of Portuguese policy in India, it was some years before it was given any priority. The first bishop arrived in Goa in 1538 and this signalled an end to the easy relationship between the Portuguese Christians and the Indian Hindus. In 1540, proselytization began in earnest with the destruction of all Hindu temples. The following year the Church expropriated all temple land.

कैथोलिक चर्च ने पुर्तगाली विजय में हर संभव सहायता प्रदान की। पुर्तगाली सैनिकों के लिए युद्ध में जाने से पहले एक साथ भोज करना आम बात थी। उन्हें चर्च से मुफ्त क्षमादान भी मिलता था ताकि उनकी मृत्यु होने पर उन्हें स्वर्ग का मार्ग शीघ्र मिल सके। हालाँकि भारत में पुर्तगाली नीति के मुख्य उद्देश्यों में से एक ईसाई धर्म का प्रसार माना जाता था, लेकिन इसे प्राथमिकता देने में कई साल लग गए। पहले बिशप का आगमन 1538 में गोवा में हुआ और इससे पुर्तगाली ईसाइयों और भारतीय हिंदुओं के बीच सहज संबंधों का अंत हो गया। 1540 में, सभी हिंदू मंदिरों को नष्ट करके धर्म परिवर्तन का अभियान ज़ोरों से शुरू हुआ। अगले वर्ष चर्च ने सभी मंदिर भूमि पर कब्ज़ा कर लिया।

In 1542, the first Jesuit arrived at Goa. Francis Xavier was a man of extraordinary charisma. In his ten years in India and the Far East, he made

many Christian converts. In one month he was said to have converted over 10,000 villagers in southern Malabar. In Goa he supervised mass conversions of hundreds in a single day. He reorganized the religious administration and schooling. His efforts were aided by Portuguese official discrimination against Hindus and the rewarding of converts, particularly those with influence. A huge programme of construction of religious buildings was inaugurated, with the construction and enlargement of many churches, monasteries and convents.

1542 में, पहले जेसुइट गोवा पहुँचे। फ्रांसिस जेवियर असाधारण करिश्माई व्यक्तित्व के धनी थे। भारत और सुदूर पूर्व में अपने दस वर्षों के दौरान, उन्होंने अनेकों लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया। कहा जाता है कि उन्होंने एक महीने में दक्षिणी मालाबार के 10,000 से अधिक ग्रामीणों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया। गोवा में उन्होंने एक ही दिन में सैकड़ों लोगों के सामूहिक धर्मांतरण का नेतृत्व किया। उन्होंने धार्मिक प्रशासन और शिक्षा व्यवस्था का पुनर्गठन किया। उनके प्रयासों को पुर्तगालियों द्वारा हिंदुओं के प्रति किए जाने वाले भेदभाव और धर्मांतरितों, विशेषकर प्रभावशाली लोगों को दिए जाने वाले पुरस्कारों से बल मिला। धार्मिक भवनों के निर्माण का एक विशाल कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसके तहत अनेक गिरजाघरों, मठों और कॉन्वेंटों का निर्माण और विस्तार किया गया।

Francis Xavier died off the coast of China in 1552. He was at first buried in Malacca. Following a rumour that his body was miraculously preserved, it was shipped back to Goa in 1554 and was eventually interned in the Basilica of Bom Jesus. It became an object of great veneration, particularly after Xavier's canonization in 1622. The body has been put on exposition many times over the years, with increasing frequency in recent times. It no longer seems to be defying decomposition and at various times parts have been removed – a toe was bitten off and taken away at the first exposition; the right arm was sent for by a pope; parts of a shoulder blade are in Cochin, Malacca and Macao; the

upper arm is in Japan; the internal organs have been distributed as relics; several other toes have been lost during the ritual kissing at expositions.

1552 में फ्रांसिस जेवियर का निधन चीन के तट पर हुआ था। उन्हें पहले मलक्का में दफनाया गया था। उनके शरीर के चमत्कारिक रूप से संरक्षित होने की अफवाह के बाद, 1554 में इसे वापस गोवा भेज दिया गया और अंततः बॉम जीसस बेसिलिका में रखा गया। 1622 में जेवियर के संत घोषित होने के बाद, यह शरीर अत्यंत श्रद्धा का पात्र बन गया। वर्षों से, शरीर को कई बार प्रदर्शनियों के लिए रखा गया है, और हाल के समय में इसकी आवृत्ति और भी बढ़ गई है। अब ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर का क्षय रुक नहीं रहा है और समय-समय पर इसके कुछ हिस्से हटा दिए गए हैं - पहली प्रदर्शनी में एक पैर की उंगली काट कर ले जाई गई थी; एक पोप ने उनकी दाहिनी भुजा मंगवाई थी; कंधे की हड्डी के कुछ हिस्से कोचीन, मलक्का और मकाऊ में हैं; ऊपरी भुजा जापान में है; आंतरिक अंगों को अवशेषों के रूप में वितरित किया गया है; प्रदर्शनियों में अनुष्ठानिक चुंबन के दौरान कई अन्य पैर की उंगलियां खो गई हैं।

Before Francis Xavier died, he asked the Pope to establish the Inquisition in Goa. It arrived in 1560 – a year after five men were publicly burnt alive for sodomy – and took over the old palace of the Adil Shahs. Although it only had authority over Christians – and non-Christians who were considered obstructive to Christianity – there was much work to do. Many Hindus had converted to Christianity and mass baptisms on the Feast of the Conversion of St Paul became a feature of life in Goa. Some Hindus, particularly from the oppressed lower castes, converted voluntarily. Some Hindus, since land could only be inherited by those who could prove they were the offspring of a Christian marriage, encouraged some of their family to convert. Other Hindus were converted by force. It has been recorded by Portuguese friars that, a few days before the mass baptisms, Jesuit priests would go to the Hindu quarter

with their slaves to seize Hindus. These victims would then have their lips smeared with beef. Having lost caste and become 'untouchables', they would have little option but to convert.

फ्रांसिस जेवियर की मृत्यु से पहले, उन्होंने पोप से गोवा में धर्म जांच आयोग (इनक्विजिशन) स्थापित करने का अनुरोध किया। यह आयोग 1560 में गोवा पहुंचा – समलैंगिकता के आरोप में पांच लोगों को सार्वजनिक रूप से जिंदा जलाए जाने के एक साल बाद – और आदिल शाहों के पुराने महल पर कब्जा कर लिया। हालांकि इसका अधिकार केवल ईसाइयों और उन गैर-ईसाइयों पर था जिन्हें ईसाई धर्म के लिए बाधक माना जाता था, फिर भी बहुत काम करना बाकी था। कई हिंदू ईसाई धर्म में परिवर्तित हो चुके थे और संत पॉल के धर्म परिवर्तन के पर्व पर सामूहिक बपतिस्मा गोवा के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया था। कुछ हिंदू, विशेषकर दबे-कुचले निम्न जातियों के लोग, स्वेच्छा से परिवर्तित हुए। कुछ हिंदू, क्योंकि भूमि केवल उन्हीं को विरासत में मिल सकती थी जो यह साबित कर सकें कि वे ईसाई विवाह की संतान हैं, अपने परिवार के कुछ सदस्यों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित करते थे। अन्य हिंदुओं को जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया गया। पुर्तगाली पादरियों ने दर्ज किया है कि सामूहिक बपतिस्मा से कुछ दिन पहले, जेसुइट पादरी अपने दासों के साथ हिंदू बस्ती में जाकर हिंदुओं को पकड़ लेते थे। फिर इन पीड़ितों के होंठों पर गोमांस मल दिया जाता था। जाति खोकर 'अछूत' बन जाने के बाद, उनके पास धर्म परिवर्तन के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता था।

Many of these converts to Christianity kept some of their old customs and beliefs. There were also converted Muslims and Jews. Not only was irregular worship forbidden by the Inquisition, but it also became an offence to retain non-Christian customs – to cook rice without salt, to refuse to eat pork, to arrange feasts at funerals, or to strew flowers at weddings. The Inquisition investigated 16,172 cases before it was abolished for the first time in 1774. It was revived in a modified, less draconian form, in 1778 before being finally abolished in 1812. Most of its records were destroyed – probably deliberately. It is not possible to calculate either how many 'heretics' were burnt at the

stake or the much greater number that died in the dungeons. It is certain, however, that the Inquisition in Goa destroyed the happiness of many thousand.

ईसाई धर्म अपनाने वाले कई लोगों ने अपनी पुरानी परंपराओं और मान्यताओं को बरकरार रखा। इनमें धर्मांतरित मुसलमान और यहूदी भी शामिल थे। धर्म-पूजा पर न केवल रोक लगा दी गई थी, बल्कि गैर-ईसाई रीति-रिवाजों को निभाना भी अपराध बन गया था – जैसे बिना नमक के चावल पकाना, सूअर का मांस न खाना, अंत्येष्टि में भोज आयोजित करना या शादियों में फूल चढ़ाना। धर्म-पूजा ने 1774 में पहली बार समाप्त होने से पहले 16,172 मामलों की जांच की। 1778 में इसे संशोधित, कम कठोर रूप में पुनर्जीवित किया गया और अंततः 1812 में समाप्त कर दिया गया। इसके अधिकांश अभिलेख नष्ट कर दिए गए – संभवतः जानबूझकर। यह अनुमान लगाना संभव नहीं है कि कितने 'विधर्मियों' को दांव पर जलाया गया या काल कोठरी में मरने वालों की संख्या इससे कहीं अधिक थी। हालांकि, यह निश्चित है कि गोवा में धर्म-पूजा ने हजारों लोगों के सुख को छीन लिया।

In 1674, Gabriel Dellon, a French doctor, was captured by the Inquisition at the Portuguese fort of Daman. The governor had asked Dellon to bleed his son. In order to do this, Dellon had asked the boy to remove an ivory figure of St Antony that had been attached to the boy's arm. The boy had refused, saying he needed the figure to prevent any mishap during the bleeding. Dellon had then unwisely upbraided the boy for believing in superstition. Dellon was arrested and transported to Goa for trial. He spent two years in prison being interrogated. Conditions were so bad that he attempted suicide. Eventually, he was sentenced to five years in the galleys and shipped off as a prisoner to Portugal. Through the intercession of a French physician to the queen, he was unshackled and released in 1677. He then wrote an extensive account of his ordeal in Goa:

1674 में, फ्रांसीसी चिकित्सक गैब्रियल डेलॉन को पुर्तगाल के दमन किले में धर्म जांच आयोग ने पकड़ लिया। गवर्नर ने डेलॉन को अपने बेटे का खून निकालने के लिए कहा था। इसके लिए, डेलॉन ने लड़के से उसकी बांह से बंधी संत एंटनी की हाथीदांत की मूर्ति हटाने को कहा। लड़के ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि खून निकालने के दौरान किसी भी दुर्घटना से बचने के लिए उसे मूर्ति की आवश्यकता है। तब डेलॉन ने अविवेकी रूप से लड़के को अंधविश्वास में विश्वास करने के लिए फटकारा। डेलॉन को गिरफ्तार कर मुकदमे के लिए गोवा भेज दिया गया। उन्होंने दो साल जेल में पूछताछ में बिताए। हालात इतने खराब थे कि उन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया। अंततः, उन्हें पांच साल के लिए जेल में रहने की सजा सुनाई गई और कैदी के रूप में पुर्तगाल भेज दिया गया। रानी के एक फ्रांसीसी चिकित्सक के हस्तक्षेप से, उन्हें 1677 में हथकड़ी से मुक्त कर रिहा कर दिया गया। फिर उन्होंने गोवा में अपने कष्टों का विस्तृत विवरण लिखा।

During the months of November and December, I every morning heard the cries of those to whom torture was administered, and which was inflicted so severely, that I have seen many persons of both sexes who have been crippled by it and, amongst others, the first companion allotted to me in my prison.

नवंबर और दिसंबर के महीनों के दौरान, मैं हर सुबह उन लोगों की चीखें सुनता था जिन्हें यातना दी जाती थी, और यह यातना इतनी गंभीर होती थी कि मैंने दोनों लिंगों के कई लोगों को इससे अपंग होते देखा है, और उनमें से एक वह पहला साथी भी था जिसे मेरी जेल में मेरे साथ रखा गया था।

No distinctions of rank, age, or sex are attended to in this tribunal. Every individual is treated with equal severity; and when the interest of the Inquisition requires it, all alike are tortured in almost perfect nudity.

इस न्यायाधिकरण में पद, आयु या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान रूप से कठोर व्यवहार किया जाता है; और जब धर्म जांच के हित में आवश्यक होता है, तो सभी को लगभग पूर्ण नग्न अवस्था में यातना दी जाती है।

Nor did the Inquisition restrict its activities to the living. Garcia d'Orta belonged to a Spanish family that had left for Portugal when Spain expelled the Jews. These Jews were forcibly baptized in Portugal and became known as 'New Christians'. D'Orta qualified as a physician and then moved to Goa in 1534. He was highly regarded and even given a lease over the island of Bombay, now Mumbai. His renowned book on Indian medicinal plants was printed at Goa in 1563. This volume is also famous among bibliophiles for having possibly the most typographical errors of any book. D'Orta died in 1568. Almost immediately the Inquisition moved against his family. His relatives were tortured. In 1569 his sister was burnt at the stake. In 1580, Garcia d'Orta's body was dug up and put on trial. He was convicted of not being a true Christian and his remains were burnt at an *auto-da-fé*., a ceremonial burning to death of those found guilty.

धर्म जांच आयोग ने अपनी गतिविधियों को केवल जीवित लोगों तक ही सीमित नहीं रखा। गार्सिया डी'ओर्टा एक स्पेनिश परिवार से थे जो स्पेन द्वारा यहूदियों को निष्कासित किए जाने पर पुर्तगाल चले गए थे। इन यहूदियों को पुर्तगाल में जबरन बपतिस्मा दिया गया और वे 'नए ईसाई' के रूप में जाने गए। डी'ओर्टा ने चिकित्सक के रूप में योग्यता प्राप्त की और फिर 1534 में गोवा चले गए। उनका बहुत सम्मान किया जाता था और उन्हें बॉम्बे द्वीप (अब मुंबई) का पट्टा भी दिया गया था। भारतीय औषधीय पौधों पर उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 1563 में गोवा में छपी थी। यह पुस्तक पुस्तक प्रेमियों के बीच संभवतः किसी भी पुस्तक की तुलना में सबसे अधिक टाइपोग्राफिकल त्रुटियों के लिए भी प्रसिद्ध है। डी'ओर्टा की मृत्यु 1568 में हुई। लगभग तुरंत ही धर्म जांच आयोग ने उनके परिवार के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी। उनके रिश्तेदारों को यातनाएं दी गईं। 1569 में उनकी बहन को दांव पर जला दिया गया। 1580 में, गार्सिया डी'ओर्टा के शव को कब्र से निकाला गया और उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हें सच्चा ईसाई न होने का दोषी ठहराया गया और उनके अवशेषों को ऑटो-डा-फे में जला दिया गया, जो दोषी पाए गए लोगों को जलाकर मार डालने की एक औपचारिक प्रथा है।

The extremes that the Portuguese priests went to in order to suppress Hindu ceremonies is well illustrated by what happened at Bassein, a fort north of Bombay, in 1564. It was the custom for the Hindus to gather at festivals and bathe in Bassein creek. To deter this, the Jesuits planted the entire length of the waterway with crosses. The worshipers then decamped to a nearby lake. But, urged on by the clergy, the captain of Bassein dispersed them with soldiers and cavalry. Furthermore, the lake temple and its idols were demolished. Not content even with that, the Jesuits had a cow killed and its blood sprinkled over the sacred lake.

हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों को दबाने के लिए पुर्तगाली पुजारियों द्वारा अपनाए गए अत्याचारों का स्पष्ट उदाहरण 1564 में बॉम्बे के उत्तर में स्थित बसईन किले में घटी घटना से मिलता है। हिंदुओं की यह प्रथा थी कि वे त्योहारों पर एकत्रित होकर बसईन नदी में स्नान करते थे। इसे रोकने के लिए, जेसुइट्स ने नदी के पूरे किनारे पर क्रॉस लगा दिए। इसके बाद श्रद्धालु पास की एक झील में चले गए। लेकिन पुजारियों के उकसावे पर, बसईन के सेनापति ने सैनिकों और घुड़सवारों के साथ उन्हें तितर-बितर कर दिया। इतना ही नहीं, झील मंदिर और उसकी मूर्तियों को भी ध्वस्त कर दिया गया। इतने पर भी संतुष्ट न होकर, जेसुइट्स ने एक गाय की हत्या करवाई और उसका खून पवित्र झील पर छिड़क दिया।

Despite the oppression, Goa remained largely populated by Indians: Christians and Hindus. Reputedly, 2,000 Portuguese a year came out to India. There was a proverb: 'Of the hundred who go out to India not even one returns.' Many did not even survive the journey out and mortality in India was dreadful. At the end of the sixteenth century, the population of Old Goa was about 75,000. Less than 2,000 of these were of Portuguese, European or mixed blood. Of course, this small group controlled all the power and the wealth. It has been

said that the British Empire in India was a form of outdoor relief for the upper classes and this was certainly true for the Portuguese. Those who came out to high administrative or ecclesiastical appointments arrived with a host of poor relations and followers who expected rich pickings. It was a favourite destination for the illegitimate sons of the aristocracy. Those who survived often did make their fortunes, for Goa was the hub of the Portuguese empire and accumulating money was easy.

दमन के बावजूद, गोवा में अधिकांश आबादी भारतीयों की ही रही: ईसाई और हिंदू। कहा जाता है कि हर साल 2,000 पुर्तगाली भारत आते थे। एक कहावत प्रचलित थी: 'भारत जाने वाले सौ लोगों में से एक भी वापस नहीं लौटता।' कई लोग तो यात्रा के दौरान ही मर जाते थे और भारत में मृत्यु दर बहुत अधिक थी। सोलहवीं शताब्दी के अंत में, पुराने गोवा की आबादी लगभग 75,000 थी। इनमें से 2,000 से भी कम लोग पुर्तगाली, यूरोपीय या मिश्रित नस्ल के थे। बेशक, इस छोटे समूह का ही सारा नियंत्रण सत्ता और धन पर था। कहा जाता है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य उच्च वर्गों के लिए एक तरह का बाहरी आराम था और यह बात पुर्तगालियों के लिए बिल्कुल सच थी। उच्च प्रशासनिक या धार्मिक पदों पर नियुक्त होने वाले लोग अपने साथ कई गरीब रिश्तेदार और अनुयायी लेकर आते थे, जो धन की भरपूर कमाई की उम्मीद करते थे। यह कुलीन वर्ग के नाजायज बेटों का पसंदीदा ठिकाना था। जो लोग बच जाते थे, वे अक्सर खूब धन कमाते थे, क्योंकि गोवा पुर्तगाली साम्राज्य का केंद्र था और धन अर्जित करना आसान था।

For the majority of the Portuguese who came out to India, however, life was far from easy. Great difficulties were encountered in finding enough men to crew the ships and man the army. Few respectable peasants or working men volunteered for a life where death was common and rewards uncertain. To find enough men for the overseas empire, convicts were allowed to work out their sentences in the colonial army; murderers imprisoned in Portugal were allowed to avoid execution by volunteering for banishment to the East. Wages

due to these and more regular volunteers was deferred until after they arrived in India, and then, often for many extra months. These penniless unfortunates became thieves and pirates in order to live. Many entered the private service of the administrators to become thugs or agents of bribery and corruption. In 1539, the viceroy wrote to the king that of 16,000 men on the payrolls only 2,000 were to be found on duty.

भारत आने वाले अधिकांश पुर्तगालियों के लिए जीवन आसान नहीं था। जहाजों के चालक दल और सेना के लिए पर्याप्त सैनिक जुटाने में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा। कुछ ही सम्मानित किसान या श्रमिक ऐसे जीवन के लिए स्वेच्छा से आगे आते थे जहाँ मृत्यु सर्वथा और पुरस्कार अनिश्चित थे। विदेशी साम्राज्य के लिए पर्याप्त सैनिक जुटाने के लिए, दोषियों को औपनिवेशिक सेना में अपनी सजा काटने की अनुमति दी गई; पुर्तगाल में कैद हत्यारों को पूर्व में निर्वासन के लिए स्वेच्छा से आगे आने पर फांसी से बचने की अनुमति दी गई। इन और अन्य नियमित स्वयंसेवकों का वेतन भारत पहुंचने के बाद तक स्थगित कर दिया गया, और फिर अक्सर कई अतिरिक्त महीनों तक। ये निर्धन दुर्भाग्यशाली लोग जीवन यापन के लिए चोर और समुद्री डाकू बन गए। कई लोग प्रशासकों की निजी सेवा में शामिल होकर गुंडे या रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के एजेंट बन गए। 1539 में, वायसराय ने राजा को लिखा कि वेतन सूची में शामिल 16,000 पुरुषों में से केवल 2,000 ही ड्यूटी पर पाए गए।

Very few Portuguese women came to India and fewer still that were respectable. The men took concubines – some of whom they married – and women slaves. Goa relied on a huge population of slaves. A relatively low-ranking Portuguese might have had twenty slaves, while a man of substance might have had hundreds. Women slaves were sold semi-naked at auctions and fetched more if they were virgins.

बहुत कम पुर्तगाली महिलाएं भारत आईं और उनमें से भी बहुत कम ही सम्मानित थीं। पुरुषों ने रखैलें रखीं - जिनमें से कुछ से उन्होंने शादी भी की - और महिला दासियां भी रखीं। गोवा में दासों की एक विशाल आबादी थी। एक अपेक्षाकृत निम्न श्रेणी के पुर्तगाली के पास बीस दास

हो सकते थे, जबकि एक धनी व्यक्ति के पास सैकड़ों दास हो सकते थे। महिला दासियों को नीलामी में अर्धनग्न अवस्था में बेचा जाता था और कुंवारी होने पर उनकी कीमत अधिक मिलती थी।

The Portuguese were the dominant power in the Indian Ocean for a century. The only major challenge came in 1538 from a Turkish fleet, which the Portuguese defeated. After the Vijayanagar Empire was overrun by the Muslims in 1565, the Muslim rulers united to attack the Portuguese forts. This culminated in a ten-month siege of Goa in 1570. The Portuguese survived and continued to control much of the Indian Ocean and much of the spice trade.

पुर्तगाली एक सदी तक हिंद महासागर में प्रमुख शक्ति रहे। उन्हें एकमात्र बड़ी चुनौती 1538 में तुर्की के बेड़े से मिली, जिसे पुर्तगालियों ने परास्त कर दिया। 1565 में मुसलमानों द्वारा विजयनगर साम्राज्य पर कब्जा करने के बाद, मुस्लिम शासकों ने पुर्तगाली किलों पर हमला करने के लिए एकजुट होकर आक्रमण किया। इसका परिणाम 1570 में गोवा की दस महीने लंबी घेराबंदी के रूप में सामने आया। पुर्तगाली बच गए और उन्होंने हिंद महासागर के अधिकांश भाग और मसालों के व्यापार पर अपना नियंत्रण बनाए रखा।

Portuguese mastery of the sea was enforced by the *cartaz*. This was a written permit allowing safe passage. In addition, the cartaz specified what route the ship should follow and what commodities could be carried. The Portuguese reserved certain monopolies, such as that on spices, to themselves. Some cargoes had to be offloaded at specific ports; horses, for example, had to be taken to Goa. Any ship without a cartaz, or found to be contravening its conditions, was liable to seizure and confiscation. To enforce the cartaz system, the Portuguese established a number of heavily armed fleets.

पुर्तगालियों का समुद्री प्रभुत्व कार्टाज़ द्वारा लागू किया जाता था। यह एक लिखित परमिट था जो सुरक्षित यात्रा की अनुमति देता था। इसके अलावा, कार्टाज़ में यह भी निर्दिष्ट होता था कि जहाज को किस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए और किन वस्तुओं का परिवहन किया जा

सकता है। पुर्तगालियों ने मसालों जैसे कुछ क्षेत्रों पर अपना एकाधिकार सुरक्षित रखा था। कुछ माल को विशिष्ट बंदरगाहों पर उतारना अनिवार्य था; उदाहरण के लिए, घोड़ों को गोवा ले जाना पड़ता था। कार्टाज़ के बिना कोई भी जहाज, या जो इसकी शर्तों का उल्लंघन करता पाया जाता था, उसे जब्त और ज़ब्त किया जा सकता था। कार्टाज़ प्रणाली को लागू करने के लिए, पुर्तगालियों ने कई भारी हथियारों से लैस बेड़ों की स्थापना की थी।

The strongest resistance to the Portuguese came from Calicut. After early efforts to effect a truce with the Portuguese, the Zamorins of Calicut became their greatest adversaries. In this, they were helped by a dynasty of able naval commanders, the Kunjali Marakkars. The Zamorins had originally hoped for help against the Portuguese from the Arabs who traded at Calicut. This had not materialized. In 1506, many of these Arab traders, fearful of the Portuguese, sold up the long-established businesses they had in the Zamorin's domain. As they embarked for Arabia at Pantalayini Kollam, a Portuguese fleet swooped down. The Portuguese captured a huge amount of gold. It is said that 2,000 Arabs were killed.

पुर्तगालियों का सबसे कड़ा प्रतिरोध कालीकट से हुआ। पुर्तगालियों के साथ संधि करने के शुरुआती प्रयासों के बाद, कालीकट के ज़मोरिन उनके सबसे बड़े शत्रु बन गए। इसमें उन्हें कुशल नौसैनिक कमांडरों के राजवंश, कुंजाली मराक्कर वंश का सहयोग प्राप्त था। ज़मोरिन ने शुरू में कालीकट में व्यापार करने वाले अरबों से पुर्तगालियों के विरुद्ध सहायता की आशा की थी। यह आशा साकार नहीं हुई। 1506 में, पुर्तगालियों के भय से, इनमें से कई अरब व्यापारियों ने ज़मोरिन के क्षेत्र में स्थापित अपने पुराने कारोबार बेच दिए। जब वे पंतलयिनी कोल्लम से अरब के लिए रवाना हो रहे थे, तभी पुर्तगाली बेड़े ने उन पर हमला कर दिया। पुर्तगालियों ने भारी मात्रा में सोना लूट लिया। कहा जाता है कि 2,000 अरब मारे गए थे।

The Kunjali Marakkars were Moplas, local Muslims, who had become rich merchants. Unlike the foreign Muslims, they were keen to resist the Portuguese. They offered their services to the Hindu Zamorin, became the admirals of his fleet and began to harass Portuguese shipping.

कुंजाली मराक्कर मोपला जनजाति के स्थानीय मुसलमान थे, जो धनी व्यापारी बन गए थे। विदेशी मुसलमानों के विपरीत, वे पुर्तगालियों का प्रतिरोध करने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने हिंदू ज़मोरिन को अपनी सेवाएं दीं, उनके बेड़े के एडमिरल बने और पुर्तगाली जहाजों को परेशान करना शुरू कर दिया।

The old Zamorin died. His successor was more sympathetic to the Portuguese, thinking he could come to an arrangement with them. He concluded a treaty with Albuquerque and allowed the Portuguese to build a fort at Calicut. All went well until the death of Albuquerque. The Portuguese then began to violate the terms of their treaty. They used force to obtain preference for their spice exports and they also seized some Indian vessels. In 1522, this Zamorin who was friendly to the Portuguese died. The new Zamorin instructed his navy to attack the Portuguese. The Kunjali Marakkars and in particular one of their captains, Kutti Ali, did this to great effect.

पुराने ज़मोरिन की मृत्यु हो गई। उनके उत्तराधिकारी पुर्तगालियों के प्रति अधिक सहानुभूति रखते थे और सोचते थे कि वे उनसे समझौता कर सकते हैं। उन्होंने अल्बुकर्क के साथ एक संधि की और पुर्तगालियों को कालीकट में एक किला बनाने की अनुमति दी। अल्बुकर्क की मृत्यु तक सब कुछ ठीक चल रहा था। फिर पुर्तगालियों ने संधि की शर्तों का उल्लंघन करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने मसालों के निर्यात में प्राथमिकता पाने के लिए बल का प्रयोग किया और कुछ भारतीय जहाजों को भी जब्त कर लिया। 1522 में, पुर्तगालियों के प्रति मित्रवत रहे इस ज़मोरिन की मृत्यु हो गई। नए ज़मोरिन ने अपनी नौसेना को पुर्तगालियों पर हमला करने का आदेश दिया। कुंजाली मराक्करों और विशेष रूप से उनके एक कप्तान, कुट्टी अली ने इस हमले को अंजाम दिया और यह बहुत प्रभावी साबित हुआ।

Realizing that they could not compete on equal terms with the Portuguese warships, the Zamorin's commanders built large numbers of small boats, rowed by thirty or forty men, to make guerrilla attacks. Bags of cotton were hung over the sides of the boats to give some protection from small arms fire. The heavy cannon of the Portuguese were designed to attack ships similar to their own and they found it difficult to pinpoint the smaller vessels. Even a successful hit only disabled one boat in a swarm. The Indians hid hundreds of these little boats along the Malabar Coast. They posted lookouts on vantage points to spot Portuguese shipping that came close to the shore. An elaborate signalling system was established to link these points with each other and with the flotillas of boats below. The Portuguese were particularly vulnerable when the winds dropped. The Indian boats would be rowed out at speed to the becalmed warships. They would send fire arrows into the enemy's sails, then board on all sides. The Portuguese would usually be heavily outnumbered and cut to pieces by the Indian swordsmen.

पुर्तगाली युद्धपोतों से बराबरी का मुकाबला न कर पाने की समझ के चलते, ज़मोरिन के कमांडरों ने बड़ी संख्या में छोटी नावें बनवाईं, जिन्हें तीस-चालीस लोग चप्पू से चलाते थे, ताकि गुरिल्ला हमले किए जा सकें। छोटी तोपों की गोलीबारी से कुछ हद तक बचाव के लिए नावों के किनारों पर रुई के बोरे लटकाए जाते थे। पुर्तगालियों की भारी तोपें उन्हीं के जैसे जहाजों पर हमला करने के लिए बनाई गई थीं, इसलिए उन्हें छोटे जहाजों को सटीक निशाना बनाना मुश्किल लगता था। यहाँ तक कि एक सफल निशाना भी झुंड में केवल एक नाव को ही निष्क्रिय कर पाता था। भारतीयों ने मालाबार तट के किनारे सैकड़ों छोटी नावें छिपा रखी थीं। उन्होंने तट के करीब आने वाले पुर्तगाली जहाजों पर नज़र रखने के लिए महत्वपूर्ण स्थानों पर पहरेदार तैनात किए थे। इन स्थानों को आपस में और नीचे मौजूद नावों के बेड़े से जोड़ने के लिए एक विस्तृत संकेत प्रणाली स्थापित की गई थी। हवा शांत होने पर पुर्तगाली विशेष रूप से असुरक्षित हो जाते थे। भारतीय नावें तेज़ी से शांत पड़े युद्धपोतों की ओर बढ़ती थीं। वे

दुश्मन के पालों पर आग के तीर दागते थे, फिर चारों ओर से उन पर चढ़ जाते थे। आम तौर पर पुर्तगाली सैनिक संख्या में बहुत कम होते थे और भारतीय तलवारबाजों द्वारा उन्हें टुकड़ों में काट दिया जाता था।

Sometimes the Indians were victorious in battle; sometimes the Portuguese. Neither side was able to gain ascendancy over the other. Meanwhile, considerable quantities of spices evaded the Portuguese blockade and made their way to Arabia and Europe.

कभी युद्ध में भारतीय विजयी होते थे, कभी पुर्तगाली। कोई भी पक्ष दूसरे पर प्रभुत्व हासिल नहीं कर सका। इसी बीच, मसालों की काफी मात्रा पुर्तगाली नाकाबंदी से बचकर अरब और यूरोप तक पहुँच गई।

The battles between the Portuguese and the Zamorin's admirals, the Marakkars, went on until the late sixteenth century. Towards the close of that century, however, relations between the Zamorins and the Marakkars deteriorated. A weak Zamorin tried to come to terms with the Portuguese and he allowed them to build a fort at Ponnani where the Marakkars were based. The Marakkars then moved their base to the north of Calicut. On a peninsula just inside the mouth of the River Kotta, they built a fortress from where they attacked Portuguese ships on both the western and the eastern coasts of India. However, Mohammed Kunjali Marakkar then overreached himself. He began to operate independently of the Zamorin and finally declared himself Raja of Kotta.

पुर्तगालियों और ज़मोरिन के एडमिरलों, मराक्करों के बीच युद्ध सोलहवीं शताब्दी के अंत तक जारी रहे। हालाँकि, उस शताब्दी के अंत तक, ज़मोरिन और मराक्करों के बीच संबंध बिगड़ने लगे। कमज़ोर ज़मोरिन ने पुर्तगालियों के साथ समझौता करने की कोशिश की और उन्हें पोन्नानी में एक किला बनाने की अनुमति दी, जहाँ मराक्कर अपना अड्डा बनाए हुए थे। इसके बाद मराक्करों ने अपना अड्डा कालीकट के उत्तर में स्थानांतरित कर दिया। कोट्टा नदी

के मुहाने के ठीक अंदर एक प्रायद्वीप पर, उन्होंने एक किला बनाया जहाँ से वे भारत के पश्चिमी और पूर्वी दोनों तटों पर पुर्तगाली जहाजों पर हमला करते थे। हालाँकि, मोहम्मद कुंजाली मराक्कर ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया। उन्होंने ज़मोरिन से स्वतंत्र रूप से काम करना शुरू कर दिया और अंततः खुद को कोट्टा का राजा घोषित कर दिया।

The Portuguese saw their opportunity and began negotiations with the Zamorin to launch a joint attack on Kotta. It is probable that, by entering into these negotiations, the Zamorin merely meant to frighten Marakkar into resuming allegiance. However, Marakkar decided instead to insult the Zamorin. He took an elephant from a royal stable and cut off its tail. The Zamorin then amassed an army to attack Kotta from the mainland while the Portuguese prepared an attack from the sea.

पुर्तगालियों ने अवसर देखकर ज़मोरिन के साथ कोट्टा पर संयुक्त आक्रमण की योजना पर बातचीत शुरू कर दी। संभवतः इन वार्ताओं के माध्यम से ज़मोरिन का उद्देश्य मराक्कर को डराकर पुनः पुर्तगाल के प्रति निष्ठा प्रकट करना था। हालांकि, मराक्कर ने इसके विपरीत ज़मोरिन का अपमान करने का निर्णय लिया। उसने शाही अस्तबल से एक हाथी लिया और उसकी पूंछ काट दी। इसके बाद ज़मोरिन ने मुख्य भूमि से कोट्टा पर आक्रमण करने के लिए एक सेना एकत्रित की, जबकि पुर्तगालियों ने समुद्र मार्ग से आक्रमण की तैयारी की।

It had been agreed that the joint attack would begin on 4 March 1599, just before dawn. The signal would be given from the top of a prominent landmark, the Iringal Rock, by a burning lance. For some reason, the man to whom this task had been assigned did this at midnight – five hours too early. In the ensuing confusion the Portuguese and the Zamorin suffered heavy losses and had to abandon their assault.

यह तय किया गया था कि संयुक्त हमला 4 मार्च 1599 को भोर से ठीक पहले शुरू होगा। एक प्रमुख स्थल, इरिंगल रॉक की चोटी से जलते हुए भाले से संकेत दिया जाना था। किसी कारणवश, जिसे यह कार्य सौंपा गया था, उसने यह काम आधी रात को किया - जो पाँच घंटे

पहले था। इसके परिणामस्वरूप मची अफरा-तफरी में पुर्तगालियों और ज़मोरिनों को भारी नुकसान हुआ और उन्हें अपना हमला छोड़ना पड़ा।

At the end of 1599, the Portuguese and the Zamorin returned to mount a fresh siege. The Portuguese had been reinforced by fresh recruits from Lisbon; the Zamorin had amassed 5,000 soldiers, 1,000 workmen, timber and fifteen elephants, plus some ships to guard the river. Meanwhile, a Portuguese sea blockade of Kotta had further weakened the defenders.

1599 के अंत में, पुर्तगाली और ज़मोरिन सेनाएँ एक बार फिर घेराबंदी करने के लिए लौट आईं। पुर्तगालियों को लिस्बन से नए सैनिकों की भर्ती से मजबूती मिली थी; ज़मोरिन सेना ने 5,000 सैनिक, 1,000 मजदूर, लकड़ी और पंद्रह हाथी, साथ ही नदी की रक्षा के लिए कुछ जहाज भी जुटा लिए थे। इस बीच, पुर्तगालियों द्वारा कोट्टा की समुद्री नाकाबंदी ने रक्षकों को और कमजोर कर दिया था।

Marakkar had ships in place to seal the mouth of the river, but the Portuguese, with the help of the Zamorin's men and elephants, dragged some ships overland into the river. Heavy cannon were installed on the riverbank to bombard the fort. The Portuguese managed to capture some of the fort's outworks and install themselves. Their artillery was then able to move forward to batter the fortress. It was an unequal battle. Marakkar was soon reduced to a few hundred men and decided to sue for peace.

मरक्कर ने नदी के मुहाने को बंद करने के लिए जहाज़ तैनात कर रखे थे, लेकिन पुर्तगालियों ने ज़मोरिन के आदमियों और हाथियों की मदद से कुछ जहाज़ों को नदी में खींच लिया। किले पर बमबारी करने के लिए नदी किनारे भारी तोपें लगाई गईं। पुर्तगाली किले की कुछ बाहरी दीवारों पर कब्ज़ा करने और वहाँ अपनी पकड़ बनाने में कामयाब रहे। इसके बाद उनकी तोपें किले पर हमला करने के लिए आगे बढ़ीं। यह एकतरफा लड़ाई थी। मरक्कर की सेना जल्द ही कुछ सौ सैनिकों तक सिमट गई और उन्होंने शांति समझौता करने का फैसला किया।

The Zamorin merely wanted Marakkar's surrender, but the Portuguese wanted his life. Marakkar knew this and was only prepared to give himself up to the Zamorin who had promised not to kill him and his men. Secretly, however, the Zamorin had agreed to allow the Portuguese to abduct Marakkar.

ज़मोरिन तो केवल मराक्कर का आत्मसमर्पण चाहते थे, लेकिन पुर्तगाली उसकी जान चाहते थे। मराक्कर यह बात जानते थे और केवल उन्हीं ज़मोरिन के सामने आत्मसमर्पण करने को तैयार थे जिन्होंने उन्हें और उनके आदमियों को न मारने का वादा किया था। हालांकि, गुप्त रूप से ज़मोरिन पुर्तगालियों को मराक्कर का अपहरण करने की अनुमति देने पर सहमत हो गए थे।

On 16 March 1600, Marakkar surrendered. The Portuguese and the Zamorin's men lined up on either side of the main gate. Four hundred men marched out between them and submitted to the Zamorin, who let them free. Then came Marakkar with a black cloth on his head and a sword with the point lowered in his hand. He went up to the Zamorin, presented him with the sword and fell at the ruler's feet. The Portuguese then grabbed Marakkar and began to take him away.

16 मार्च 1600 को मराक्कर ने आत्मसमर्पण कर दिया। पुर्तगाली और ज़मोरिन के सैनिक मुख्य द्वार के दोनों ओर कतार बनाकर खड़े हो गए। उनके बीच से चार सौ सैनिक बाहर निकले और ज़मोरिन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, जिसने उन्हें छोड़ दिया। तभी मराक्कर अपने सिर पर काला कपड़ा और हाथ में झुकी हुई तलवार लिए हुए आया। वह ज़मोरिन के पास गया, उसे तलवार भेंट की और उसके चरणों में गिर पड़ा। फिर पुर्तगालियों ने मराक्कर को पकड़ लिया और उसे ले जाने लगे।

The Zamorin's warriors were appalled at this treachery. A fracas ensued, but the Portuguese managed to hold on to their prize captive and forty of his

followers. Kotta was sacked and burnt. A week after the surrender, the Portuguese sailed for Goa with Marakkar and his men in chains.

ज़मोरिन के योद्धा इस विश्वासघात से स्तब्ध रह गए। झड़प हुई, लेकिन पुर्तगाली अपने बंदी और उसके चालीस साथियों को अपने कब्जे में रखने में कामयाब रहे। कोट्टा को लूटा और जला दिया गया। आत्मसमर्पण के एक सप्ताह बाद, पुर्तगाली मराक्कर और उसके आदमियों को जंजीरों में जकड़कर गोवा के लिए रवाना हो गए।

In Goa there were great celebrations. The victors were welcomed with gun salutes, together with 'drums and fifes, bagpipes and trumpets'. The first of the captives was landed and stoned to death. Marakkar was taken to the Tronco, the prison used by the Inquisition. At a show trial he was sentenced to death. A great crowd, presided over by the viceroy and the archbishop, came to see Marakkar executed. He was beheaded with an axe. The body was quartered, and then exhibited on the beaches. Then, 'his head was salted and conveyed to Cannanore, there to be stuck on a standard for a terror to the Moors.' Afterwards, all his surviving companions were executed.

गोवा में भव्य उत्सव मनाया गया। विजेताओं का स्वागत तोपों की सलामी के साथ-साथ ढोल, बांसुरी, बैगपाइप और तुरही की थापों से किया गया। पहले कैदी को तट पर उतारा गया और पत्थर मारकर उसकी हत्या कर दी गई। मराक्कर को ट्रोंको ले जाया गया, जो धर्म जांच आयोग द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली जेल थी। एक दिखावटी मुकदमे में उसे मौत की सजा सुनाई गई। वायसराय और आर्कबिशप की अध्यक्षता में एक विशाल भीड़ मराक्कर को फांसी पर चढ़ते देखने आई। कुल्हाड़ी से उसका सिर काट दिया गया। शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर समुद्र तटों पर प्रदर्शित किए गए। फिर, उसके सिर को नमक लगाकर कन्नूर ले जाया गया, जहाँ उसे मूरों के लिए भय का कारण बनने के लिए एक झंडे पर लगाया गया। इसके बाद, उसके सभी जीवित साथियों को भी मार डाला गया।

By combining with the Portuguese to defeat Marakkar, the Zamorin secured his own eclipse. The last great power to oppose the Portuguese on the coast of Malabar no longer had an effective navy.

पुर्तगालियों के साथ मिलकर मराक्कर को परास्त करके, ज़मोरिन ने स्वयं का पतन सुनिश्चित कर लिया। मालाबार तट पर पुर्तगालियों का विरोध करने वाली अंतिम महाशक्ति के पास अब कोई प्रभावी नौसेना नहीं रह गई थी।

During the sixteenth century, the Portuguese built an extraordinary number of factories and forts in India. These forts were there to protect the factories and enforce a monopoly on the purchase of spices and other designated goods. Many were huge and had large garrisons. Working in coordination with the Portuguese navy, these forts were able to monitor virtually all shipping arriving and departing from India's ports. They enforced the rule that all ships on the Indian Ocean must carry a Portuguese permit, a cartaz.

सोलहवीं शताब्दी के दौरान, पुर्तगालियों ने भारत में असाधारण संख्या में कारखाने और किले बनवाए। ये किले कारखानों की सुरक्षा और मसालों तथा अन्य निर्धारित वस्तुओं की खरीद पर एकाधिकार लागू करने के लिए बनाए गए थे। इनमें से कई किले विशाल थे और उनमें बड़ी संख्या में सैनिक तैनात थे। पुर्तगाली नौसेना के समन्वय से काम करते हुए, ये किले भारत के बंदरगाहों से आने-जाने वाले लगभग सभी जहाजों पर नज़र रख सकते थे। उन्होंने यह नियम लागू किया कि हिंद महासागर में चलने वाले सभी जहाजों के पास पुर्तगाली परमिट, कार्टाज़ होना अनिवार्य था।

After the construction of the small fort at Cochin in 1503, came others in rapid succession. There was, of course, a cluster of major forts in Goa. On the west coast there were also huge forts at Diu, Daman, Bassein, Chaul, Cannanore and Cranganore, plus a massive complex at Cochin. There were more forts on the

Coromandel Coast; others skirting the Bay of Bengal. All together, there were at least fifty major Portuguese forts in India and many other minor fortifications. Garrisoning these forts – and others in the Far East and Africa – as well as finding men for its ships, was not easy for a country such as Portugal, which had a population of only a million. Moreover, the Portuguese were ploughing many of their resources into the development of Brazil. Nevertheless, as long as Portugal could enforce its monopoly in the East, it was just possible to sustain the edifice. Any serious breach of that monopoly would bring disaster.

1503 में कोचीन में छोटे किले के निर्माण के बाद, एक के बाद एक कई किले बनाए गए। गोवा में तो कई बड़े किले थे ही। पश्चिमी तट पर दीव, दमन, बसईं, चौल, कन्नूर और क्रांगनोर में भी विशाल किले थे, साथ ही कोचीन में एक बड़ा किला परिसर था। कोरोमंडल तट पर भी कई किले थे; बंगाल की खाड़ी के किनारे भी कई किले थे। कुल मिलाकर, भारत में कम से कम पचास बड़े पुर्तगाली किले और कई अन्य छोटे किले थे। इन किलों – और सुदूर पूर्व और अफ्रीका के अन्य किलों – में सैनिकों की तैनाती करना और अपने जहाजों के लिए सैनिकों की व्यवस्था करना पुर्तगाल जैसे देश के लिए आसान नहीं था, जिसकी आबादी केवल दस लाख थी। इसके अलावा, पुर्तगाली अपने संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा ब्राजील के विकास में लगा रहे थे। फिर भी, जब तक पुर्तगाल पूर्व में अपना एकाधिकार बनाए रख सका, तब तक यह साम्राज्य कायम रह सका। इस एकाधिकार का कोई भी गंभीर उल्लंघन विनाशकारी साबित हो सकता था।

Despite its control of the high seas, the Portuguese failed to achieve total control over the spice trade. The merchants of Malabar found it advantageous to take some of the crop inland and have it transported on the backs of animals and men to the Middle East and Europe. Or they would move the spices clandestinely, well away from the closely monitored main ports in small boats up the western coast. Gradually, these new routes became very

significant. As a result, Venice partly recovered the trade it had lost to Portugal. The Portuguese, however, were still amassing wealth. Not only did they ship huge quantities of spices and other goods back to Portugal but, with their cartaz, they also levied a toll on the large trade between the territories which bordered the Indian Ocean. All this was set to change with the arrival of the Dutch and the British.

खुले समुद्र पर अपना नियंत्रण होने के बावजूद, पुर्तगाली मसालों के व्यापार पर पूर्ण नियंत्रण हासिल करने में असफल रहे। मालाबार के व्यापारियों ने कुछ फसल को अंतर्देशीय क्षेत्रों में ले जाकर उसे जानवरों और मनुष्यों की पीठ पर लादकर मध्य पूर्व और यूरोप तक पहुँचाना लाभदायक समझा। या फिर वे मसालों को गुप्त रूप से, कड़ी निगरानी वाले मुख्य बंदरगाहों से दूर, छोटी नावों में पश्चिमी तट के रास्ते ले जाते थे। धीरे-धीरे, ये नए मार्ग बहुत महत्वपूर्ण हो गए। परिणामस्वरूप, वेनिस ने पुर्तगाल से खोया हुआ अपना कुछ व्यापार वापस पा लिया। हालाँकि, पुर्तगाली अभी भी धन इकट्ठा कर रहे थे। वे न केवल भारी मात्रा में मसाले और अन्य सामान पुर्तगाल वापस भेजते थे, बल्कि अपने कार्टाज़ (कर) के माध्यम से हिंद महासागर से सटे क्षेत्रों के बीच होने वाले बड़े व्यापार पर कर भी लगाते थे। डचों और अंग्रेजों के आगमन के साथ यह सब बदलने वाला था।

Three
तीन
THE ENGLISH
अंग्रेज
VENTURE CAPITALISTS AND ADVENTURERS
वेंचर कैपिटलिस्ट और एडवेंचरर्स

If you will profit, seek it at sea and in quiet trade; for without controversy, it is an error to affect garrisons and land-wars in India.

यदि आप लाभ कमाना चाहते हैं, तो इसे समुद्र में और शांतिपूर्ण व्यापार में तलाशें; क्योंकि निर्विवाद रूप से, भारत में सैन्य छावनियां और जमीनी युद्ध स्थापित करना एक गलती है।

Sir Thomas Roe

सर थॉमस रो

Letter from the court of Emperor

सम्राट के दरबार से पत्र

Jahangir to the East India Company, 1616

जहांगीर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को 1616 में लिखा पत्र

An expedition to the Arctic seas was the unlikely precursor to the foundation of the English East India Company. The English economy had blossomed in the early sixteenth century with large exports of wool to continental Europe. There had been a rise in imports too, even from the East. These, however, had mostly been purchased from Italian merchants who had established Mediterranean and overland trade routes. The price of spices had fallen as the century progressed. Simultaneously, the market had grown in volume. No longer was pepper the preserve of the upper middle classes. The English warship, the *Mary Rose*, sank in 1545. When it was raised in 1982, it was found that most of those on board, even the poorly paid

ordinary sailors, possessed a small amount of pepper. In the middle of the sixteenth century, there was still a great deal of money to be made out of pepper and the other spices and riches of the East. Some London merchants were convinced that the time had come for England to seize a share of these profits.

आर्कटिक सागरों की एक यात्रा अप्रत्याशित रूप से इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नींव का कारण बनी। सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में, महाद्वीपीय यूरोप को ऊन के बड़े पैमाने पर निर्यात के साथ अंग्रेजी अर्थव्यवस्था फली-फूली थी। आयात में भी वृद्धि हुई थी, यहाँ तक कि पूर्व से भी। हालाँकि, ये आयात अधिकतर इतालवी व्यापारियों से किए जाते थे, जिन्होंने भूमध्यसागरीय और जमीनी व्यापार मार्ग स्थापित किए थे। सदी के आगे बढ़ने के साथ मसालों की कीमतें गिरती गईं। साथ ही, बाजार का आकार भी बढ़ता गया। काली मिर्च अब केवल उच्च मध्यम वर्ग की संपत्ति नहीं रह गई थी। अंग्रेजी युद्धपोत, मैरी रोज़, 1545 में डूब गया। जब इसे 1982 में निकाला गया, तो पाया गया कि जहाज पर सवार अधिकांश लोगों के पास, यहाँ तक कि कम वेतन पाने वाले साधारण नाविकों के पास भी, थोड़ी मात्रा में काली मिर्च थी। सोलहवीं शताब्दी के मध्य में, काली मिर्च और पूर्व के अन्य मसालों और संपदाओं से अभी भी बहुत पैसा कमाया जा सकता था। लंदन के कुछ व्यापारियों को विश्वास था कि इंग्लैंड के लिए इन लाभों में हिस्सा लेने का समय आ गया है।

In 1553 some of these merchants financed a fleet of three ships to find a passage around the north of Russia to the Indies. Voyages through such a passage would help avoid a confrontation with the Spanish and Portuguese who controlled the southern oceans. It was an extremely hazardous venture. All aboard two of the expedition's ships 'for lacke of knowledge were frozen to deathe'. Those on the third ship failed, of course, to find the non-existent route to the East. However, they did manage to reach the White Sea from where they travelled to Moscow and met the Tsar. He agreed to grant them trading rights throughout his empire.

1553 में, इनमें से कुछ व्यापारियों ने रूस के उत्तर से होकर इंडीज़ तक जाने का मार्ग खोजने के लिए तीन जहाजों के बेड़े को वित्त पोषित किया। इस मार्ग से यात्रा करने से दक्षिणी महासागरों पर नियंत्रण रखने वाले स्पेनिश और पुर्तगाली लोगों के साथ टकराव से बचने में मदद मिलती। यह एक अत्यंत जोखिम भरा अभियान था। अभियान के दो जहाजों पर सवार सभी लोग 'जानकारी की कमी के कारण ठंड से जम कर मर गए'। तीसरे जहाज पर सवार लोग, ज़ाहिर है, पूर्व की ओर जाने वाले उस मार्ग को खोजने में असफल रहे जो अस्तित्व में ही नहीं था। हालांकि, वे श्वेत सागर तक पहुँचने में कामयाब रहे, जहाँ से वे मॉस्को गए और ज़ार से मिले। ज़ार ने उन्हें अपने पूरे साम्राज्य में व्यापारिक अधिकार देने पर सहमति जताई।

In the previous centuries, the English merchants had operated under guilds and other associations. These had regulated their trade and behaviour. Within these set limits, however, the merchants had either traded on their own account or in partnership with others. They personally made the investment and then took the resulting profit or the loss. The merchants who financed the expedition to find a north-east passage were pioneering an entirely new English financial structure. It was to be an enterprise where the capital would be subscribed by its members, its profits distributed in proportion to their subscription and the business carried out in the name of a company. This new type of organization was considered necessary to raise the large capital investment required to set up trading posts in distant lands – a risky investment that might take several years to recoup. It also made it easier for investors to subscribe new capital as and when required, and to transfer their shares.

पिछली शताब्दियों में, अंग्रेज़ व्यापारी संघों और अन्य संगठनों के अंतर्गत व्यापार करते थे। इन संगठनों ने उनके व्यापार और व्यवहार को नियंत्रित किया था। इन निर्धारित सीमाओं के भीतर, व्यापारी या तो अपने खाते पर या दूसरों के साथ साझेदारी में व्यापार करते थे। वे स्वयं निवेश करते थे और फिर उससे होने वाले लाभ या हानि को स्वयं वहन करते थे। उत्तर-पूर्व

मार्ग की खोज के लिए अभियान को वित्तपोषित करने वाले व्यापारी एक बिल्कुल नई अंग्रेज़ी वित्तीय संरचना की शुरुआत कर रहे थे। यह एक ऐसा उद्यम था जिसमें पूंजी सदस्यों द्वारा लगाई जाती, लाभ उनके द्वारा लगाई गई राशि के अनुपात में वितरित किया जाता और व्यवसाय एक कंपनी के नाम पर चलाया जाता। इस नए प्रकार के संगठन को दूर देशों में व्यापारिक चौकियाँ स्थापित करने के लिए आवश्यक विशाल पूंजी निवेश जुटाने के लिए आवश्यक माना गया था - यह एक जोखिम भरा निवेश था जिसकी भरपाई में कई वर्ष लग सकते थे। इससे निवेशकों के लिए आवश्यकतानुसार नई पूंजी लगाना और अपने शेयर हस्तांतरित करना भी आसान हो गया।

The London merchants behind the expedition to the north-east had obtained the royal licence necessary for trading abroad, but formal incorporation had been delayed by the illness and death of King Edward VI. They had raised £6,000 in shares of £25 each to finance the three-ship enterprise. A charter was finally granted to a company of 199 men and two women 'marchants adventurers of England' in 1555. It became known as the Muscovy Company or the Russian Company. In appreciation for the risk being taken, the company was given a monopoly of trade with Russia and other markets it might open up. Just after it was incorporated, news came through of the successful meeting with the Tsar and the loss of the two ships. Obviously, more money would be needed to develop the business. Within ten years, the existing shareholders found themselves asked to take their stake up to £200 each. The company traded hesitantly at the beginning, successfully for many years, gradually declining, and only expired with the Russian Revolution of 1917.

उत्तर-पूर्व की यात्रा पर निकले लंदन के व्यापारियों ने विदेश में व्यापार करने के लिए आवश्यक शाही लाइसेंस प्राप्त कर लिया था, लेकिन राजा एडवर्ड VI की बीमारी और मृत्यु के कारण औपचारिक निगमन में देरी हो गई थी। उन्होंने तीन जहाजों के इस उद्यम को वित्तपोषित करने के लिए 25 पाउंड प्रति शेयर के हिसाब से 6,000 पाउंड जुटाए थे। अंततः

1555 में 199 पुरुषों और दो महिलाओं की एक कंपनी को 'इंग्लैंड के व्यापारी साहसी' के रूप में चार्टर प्रदान किया गया। यह कंपनी मस्कोवी कंपनी या रूसी कंपनी के नाम से जानी जाने लगी। जोखिम भरे कार्यों की सराहना करते हुए, कंपनी को रूस और अन्य बाजारों में व्यापार का एकाधिकार दिया गया, जिन्हें रूस खोल सकता था। निगमन के तुरंत बाद, ज़ार के साथ सफल मुलाकात और दो जहाजों के डूबने की खबर आई। जाहिर है, व्यवसाय को विकसित करने के लिए और अधिक धन की आवश्यकता थी। दस वर्षों के भीतर, मौजूदा शेयरधारकों को अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर 200 पाउंड प्रति शेयर करने के लिए कहा गया। कंपनी ने शुरुआत में हिचकिचाहट के साथ व्यापार किया, कई वर्षों तक सफलतापूर्वक चली, फिर धीरे-धीरे गिरावट आई और 1917 की रूसी क्रांति के साथ ही इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

In 1575 two London merchants sent out agents at their own expense to Constantinople. This resulted in the sultan of Turkey making a promise to open his markets to the English. There were negotiations between the sultan and the English queen, Elizabeth. In 1581 the Levant Company, similarly structured to the Russian Company, was granted a charter giving it a monopoly of trade with the Turkish Empire. Many of the richest London merchants subscribed its capital and the queen herself loaned the company 10,000 Ib weight of silver. From the start it was ‘very gainful’. The Levant Company soon had a huge business with Constantinople, Syria and Egypt. It became the most important conduit to England for the spices from the Far East and India.

1575 में लंदन के दो व्यापारियों ने अपने खर्च पर कांस्टेंटिनोपल में अपने एजेंट भेजे। इसके परिणामस्वरूप तुर्की के सुल्तान ने अंग्रेजों के लिए अपने बाज़ार खोलने का वादा किया। सुल्तान और इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ के बीच बातचीत हुई। 1581 में लेवेंट कंपनी, जिसका

ढांचा रूसी कंपनी के समान था, को एक चार्टर प्रदान किया गया जिससे उसे तुर्की साम्राज्य के साथ व्यापार का एकाधिकार मिल गया। लंदन के कई धनी व्यापारियों ने इसकी पूंजी में योगदान दिया और स्वयं रानी ने कंपनी को 10,000 पाउंड चांदी का ऋण दिया। शुरुआत से ही यह कंपनी 'बहुत लाभदायक' साबित हुई। लेवेंट कंपनी का कांस्टेंटिनोपल, सीरिया और मिस्र के साथ जल्द ही एक विशाल व्यापार स्थापित हो गया। यह सुदूर पूर्व और भारत से मसालों के लिए इंग्लैंड का सबसे महत्वपूर्ण मार्ग बन गई।

In 1587 Sir Francis Drake captured a Portuguese royal ship, the *San Felipe*, off the Azores. It was fully laden with goods from Goa. When it was offloaded at Plymouth, the cargo that was declared to Drake's financial backers was not particularly valuable – velvet and silk with some gold and jewels. However, rumours rapidly spread that 300,000 ducats in cash had also been taken and secretly spirited away. These rumours, possibly true, fanned English ambitions. (In order to simplify matters, 'English' is used sometimes when 'British' might be more appropriate. The East India Company was incorporated in England, but many of its employees came from elsewhere in the British Isles to seize the eastern riches of the Portuguese.)

1587 में सर फ्रांसिस ड्रेक ने अज़ोरेस के तट पर पुर्तगाली शाही जहाज सैन फेलिप पर कब्जा कर लिया। यह जहाज गोवा से लदे माल से भरा हुआ था। जब प्लायमाउथ में जहाज से माल उतारा गया, तो ड्रेक के वित्तीय समर्थकों को बताया गया माल कोई खास कीमती नहीं था – मखमल और रेशम के साथ कुछ सोना और रत्न। हालांकि, अफवाहें तेजी से फैल गईं कि 300,000 ड्यूकैट नकद भी ले लिए गए हैं और चुपके से कहीं और ले जाए गए हैं। ये अफवाहें, जो संभवतः सच थीं, ने अंग्रेजों की महत्वाकांक्षाओं को और भड़का दिया। (मामले को सरल बनाने के लिए, 'ब्रिटिश' शब्द का प्रयोग कभी-कभी वहां किया जाता है जहां 'अंग्रेज़' अधिक उपयुक्त होता। ईस्ट इंडिया कंपनी का निगमन इंग्लैंड में हुआ था, लेकिन इसके कई कर्मचारी ब्रिटिश द्वीपों के अन्य हिस्सों से पुर्तगालियों के पूर्वी धन पर कब्जा करने के लिए आए थे।)

The Crowns of Portugal and Spain had been united in 1580. When the English defeated the Spanish Armada in 1588, it was also seen as a victory against Portugal. If the English could defeat the Spanish navy, it was argued, they could challenge the supremacy of the Portuguese ships in the Indian Ocean and seize some of their trade.

1580 में पुर्तगाल और स्पेन के राजतंत्रों का एकीकरण हुआ था। जब अंग्रेजों ने 1588 में स्पेनिश नौसेना को हराया, तो इसे पुर्तगाल के विरुद्ध एक जीत के रूप में देखा गया। यह तर्क दिया गया कि यदि अंग्रेज स्पेनिश नौसेना को हरा सकते हैं, तो वे हिंद महासागर में पुर्तगाली जहाजों के वर्चस्व को चुनौती दे सकते हैं और उनके व्यापार का कुछ हिस्सा हथिया सकते हैं।

English ambitions had also been aroused from another, unlikely sources. Thomas Stephens, the son of a wealthy London merchant, had gone abroad and become a Jesuit priest. In 1579 he had gone from Lisbon to Goa. He became an outstanding scholar of the local language, Konkani, in which he composed a series of Christian epics. He also wrote back to his father about the life and riches of Goa. This excited an interest in India among the London merchants.

अंग्रेजों की महत्वाकांक्षाओं को एक अन्य, अप्रत्याशित स्रोत से भी बल मिला था। लंदन के एक धनी व्यापारी के पुत्र थॉमस स्टीफंस विदेश गए और जेसुइट पादरी बन गए। 1579 में वे लिस्बन से गोवा गए। वे स्थानीय भाषा कोंकणी के एक उत्कृष्ट विद्वान बन गए, जिसमें उन्होंने ईसाई महाकाव्यों की एक श्रृंखला की रचना की। उन्होंने अपने पिता को गोवा के जीवन और समृद्धि के बारे में भी लिखा। इससे लंदन के व्यापारियों में भारत के प्रति रुचि जागृत हुई।

Things did not start well for the English. A year after the victory over the Armada, some merchants, whose names have been lost but who were probably involved in the Levant trade, decided to finance an expedition

around the tip of Africa to India and the East. They petitioned successfully for a royal warrant and pleaded that 'Great benefitte will redound to our countree, as well as for the anoyinge of the Spaniards and Portingalls'. It was clear that they intended to act not only as traders but also as privateers.

अंग्रेजों के लिए शुरुआत अच्छी नहीं रही। आर्माडा पर विजय के एक साल बाद, कुछ व्यापारियों ने, जिनके नाम अब ज्ञात नहीं हैं, लेकिन जो संभवतः लेवांत व्यापार में शामिल थे, अफ्रीका के दक्षिणी छोर से होते हुए भारत और पूर्व की ओर एक अभियान को वित्तपोषित करने का निर्णय लिया। उन्होंने शाही वारंट के लिए सफलतापूर्वक याचिका दायर की और दलील दी कि 'इससे हमारे देश को बहुत लाभ होगा, साथ ही स्पेनियों और पुर्तगालियों को भी परेशान किया जा सकेगा।' यह स्पष्ट था कि उनका इरादा न केवल व्यापारियों के रूप में, बल्कि समुद्री लुटेरों के रूप में भी कार्य करने का था।

The *Edward Bonaventure*, the *Penelope* and the *Merchant Royal* left Plymouth in 1591. The fleet was becalmed for a month and by the time it reached the Cape many of the men had died or were severely ill with scurvy. The *Merchant Royal* was sent back to England laden with the sick. The two remaining ships, with 200 men on board, continued east. After only four days, they hit a storm and the *Penelope* sank with the loss of all on board, including the leader of the expedition, George Raymond. The remaining ship, the *Edward Bonaventure*, was commanded by James Lancaster. He was both a merchant and a sailor, and had commanded the ship against the Spanish Armada. East of the Comoro Islands, the *Edward Bonaventure* was struck by lightning. Four men were killed and many others injured. Finally, however, the ship reached port on the Malay Peninsula. Death, lightning and disease had so affected the crew that only twenty-two men were still fit. Nevertheless, Lancaster went to sea again and managed to capture three Portuguese ships loaded with pepper and other riches. With its booty, the *Edward Bonaventure* sailed back west. Lancaster

became very ill and when the ship reached Ceylon his crew mutinied. They insisted on immediately setting sail for England.

एडवर्ड बोनावेंचर, पेनेलोप और मर्चेंट रॉयल 1591 में प्लायमाउथ से रवाना हुए। बेड़ा एक महीने तक शांत समुद्र में फंसा रहा और जब तक वे केप पहुंचे, तब तक कई लोग मर चुके थे या स्कर्वी से गंभीर रूप से बीमार हो चुके थे। बीमारों से लदे मर्चेंट रॉयल को वापस इंग्लैंड भेज दिया गया। शेष दो जहाज, जिनमें 200 लोग सवार थे, पूर्व की ओर बढ़ते रहे। केवल चार दिनों के बाद, वे एक तूफान में फंस गए और पेनेलोप डूब गया, जिसमें अभियान के नेता जॉर्ज रेमंड सहित सभी लोग मारे गए। शेष जहाज, एडवर्ड बोनावेंचर, की कमान जेम्स लैंकास्टर के पास थी। वे एक व्यापारी और नाविक दोनों थे, और उन्होंने स्पेनिश आर्मडा के खिलाफ इस जहाज की कमान संभाली थी। कोमोरो द्वीप समूह के पूर्व में, एडवर्ड बोनावेंचर पर बिजली गिरी। चार लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। अंततः, जहाज मलय प्रायद्वीप के बंदरगाह पर पहुंच गया। मृत्यु, बिजली और बीमारी ने चालक दल को इतना प्रभावित किया था कि केवल बाईस लोग ही स्वस्थ बचे थे। फिर भी, लैंकेस्टर दोबारा समुद्र में गए और काली मिर्च और अन्य धन-संपत्ति से लदे तीन पुर्तगाली जहाजों पर कब्जा करने में सफल रहे। लूट के माल के साथ, एडवर्ड बोनावेंचर जहाज पश्चिम की ओर वापस रवाना हुआ। लैंकेस्टर बहुत बीमार पड़ गए और जब जहाज सीलोन पहुंचा तो उनके चालक दल ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने तुरंत इंग्लैंड के लिए रवाना होने की जिद की।

Ill fortune continued to dog the *Edward Bonaventure*. Strong winds blew it to the Caribbean where it lost its sails in a storm. Getting some canvas from a French ship, it tried to make for Newfoundland, but was blown back to the Caribbean. Then, while Lancaster and many of his crew were ashore on the island of Mona, the *Edward Bonaventure* was blown out to sea. There were only five men and a boy on board. They were attacked by Spaniards from Santo Domingo and the ship and all its booty were lost. Lancaster and his men managed to return to Europe on a French ship. The expedition had been a total disaster – two of the three ships had been lost and there was nothing to

show for it. It would be a while before English merchants financed another expedition to the East around the tip of Africa.

एडवर्ड बोनावेंचर का दुर्भाग्य पीछा नहीं छोड़ रहा था। तेज़ हवाओं ने उसे कैरिबियन सागर की ओर धकेल दिया, जहाँ एक तूफ़ान में उसके पाल टूट गए। एक फ्रांसीसी जहाज़ से कुछ पाल लेकर उसने न्यूफ़ाउंडलैंड जाने की कोशिश की, लेकिन वह वापस कैरिबियन सागर की ओर बह गया। फिर, जब लैंकास्टर और उसके कई साथी मोना द्वीप पर किनारे पर थे, तब एडवर्ड बोनावेंचर समुद्र में बह गया। जहाज़ पर केवल पाँच पुरुष और एक लड़का सवार थे। सैंटो डोमिंगो के स्पेनियों ने उन पर हमला कर दिया और जहाज़ और उसका सारा माल लूट लिया गया। लैंकास्टर और उसके साथी एक फ्रांसीसी जहाज़ से यूरोप लौटने में कामयाब रहे। यह अभियान पूरी तरह से विफल रहा – तीन में से दो जहाज़ डूब गए और कुछ भी हासिल नहीं हुआ। अफ़्रीका के दक्षिणी छोर के चारों ओर पूर्व की ओर एक और अभियान के लिए अंग्रेज़ी व्यापारियों द्वारा वित्तपोषण करने में काफ़ी समय लग गया।

The driving force behind the foundation of the East India Company was Thomas Smythe. He was one of the London merchants – a group of only two or three hundred – in foreign trade. His father was involved in the collection of customs duty, some said corruptly, which had left his son enormously rich. Significantly, Thomas Smythe was a member of both the Russian Company and the Levant Company. He had plans to colonize Virginia and had backed attempts to find a passage to the East around the north of the Americas. In 1599, or possibly earlier, Smythe began to plan an expedition to the East, going round the tip of Africa. He had probably achieved informal backing from his colleagues before the first recorded meeting of 22 September 1599. At this meeting, attended by the Lord Mayor of London, 101 merchants formally subscribed from £100 to £1,000 each. They promised £30,000 in total to equip

an expedition to the East Indies and to obtain the necessary charter for this from the queen.

ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति थॉमस स्माइथ थे। वे लंदन के उन चुनिंदा व्यापारियों में से एक थे, जिनकी संख्या केवल दो-तीन सौ थी और जो विदेशी व्यापार में लगे हुए थे। उनके पिता सीमा शुल्क वसूली में शामिल थे, कुछ लोगों का कहना था कि वे इसमें भ्रष्टाचार करते थे, जिसके कारण उनके बेटे थॉमस स्माइथ बहुत धनी हो गए थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि थॉमस स्माइथ रूसी कंपनी और लेवेंट कंपनी दोनों के सदस्य थे। उनकी योजना वर्जीनिया में उपनिवेश स्थापित करने की थी और उन्होंने उत्तरी अमेरिका के रास्ते पूर्व की ओर जाने के प्रयासों का समर्थन किया था। 1599 में, या संभवतः उससे पहले, स्माइथ ने अफ्रीका के दक्षिणी छोर से होते हुए पूर्व की ओर एक अभियान की योजना बनाना शुरू किया। 22 सितंबर 1599 को हुई पहली बैठक से पहले ही उन्हें अपने सहयोगियों का अनौपचारिक समर्थन मिल चुका था। लंदन के लॉर्ड मेयर की उपस्थिति में हुई इस बैठक में, 101 व्यापारियों ने औपचारिक रूप से 100 से 1,000 पाउंड तक का चंदा दिया। उन्होंने ईस्ट इंडीज के अभियान को तैयार करने और रानी से इसके लिए आवश्यक चार्टर प्राप्त करने के लिए कुल 30,000 पाउंड देने का वादा किया।

The prospect for the charter looked good at first. On 17 October 1599, however, a deputation was summoned to attend the Privy Council. They were told that negotiations for peace with Spain might be compromised by the expedition and that their application was suspended. Negotiations between England and Spain then broke down. The London merchants' cause was given impetus by the arrival in Holland of six Dutch ships from the East, laden with spices. In September 1600, the Council gave permission for the merchants to proceed with preparations as their privileges would soon be granted and their expedition would be allowed to depart. Four ships were bought and work commenced on refitting and provisioning them for the voyage. The merchants were keen to make up for lost time. A barrel of beer a day was supplied 'for

the better holding together of the workemen from running from ther worke to drinke'.

शुरुआत में चार्टर मिलने की संभावना अच्छी लग रही थी। हालाँकि, 17 अक्टूबर 1599 को, एक प्रतिनिधिमंडल को प्रिवी काउंसिल में बुलाया गया। उन्हें बताया गया कि इस अभियान से स्पेन के साथ शांति वार्ता प्रभावित हो सकती है और इसलिए उनका आवेदन स्थगित कर दिया गया। इसके बाद इंग्लैंड और स्पेन के बीच वार्ता टूट गई। पूर्वी दिशा से मसालों से लदे छह डच जहाजों के हॉलैंड पहुँचने से लंदन के व्यापारियों के आंदोलन को बल मिला। सितंबर 1600 में, काउंसिल ने व्यापारियों को तैयारी शुरू करने की अनुमति दे दी क्योंकि उनके विशेषाधिकार जल्द ही मिल जाएंगे और उनके अभियान को प्रस्थान करने की अनुमति दे दी जाएगी। चार जहाज खरीदे गए और यात्रा के लिए उनकी मरम्मत और रसद का काम शुरू किया गया। व्यापारी खोए हुए समय की भरपाई करने के लिए उत्सुक थे। 'कामगारों को काम छोड़कर शराब पीने जाने से रोकने के लिए' प्रतिदिन एक बैरल बीयर की आपूर्ति की जाती थी।

The charter of 'The Governor and Company of Merchants of London trading into the East Indies' was finally signed on 31 December 1600. The Company would be managed by a governor and twenty-four committees (directors). The charter gave the Company a monopoly over trade with the East Indies. It would be allowed to export bullion as well as goods – a rare privilege. It was emphasized that the Company was to restrict itself to trade and was not to attempt colonization or conquest. The Company's ships would be armed, but only for protection. This was in marked contrast to the practice of other European nations trading beyond Europe. It was this emphasis on peaceful trade that would, by the end of the century, make the Company more successful in India than its rivals.

'द गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज' के चार्टर पर अंततः 31 दिसंबर 1600 को हस्ताक्षर किए गए। कंपनी का प्रबंधन एक गवर्नर और चौबीस

समितियों (निदेशकों) द्वारा किया जाना था। चार्टर ने कंपनी को ईस्ट इंडीज के साथ व्यापार पर एकाधिकार प्रदान किया। इसे माल के साथ-साथ सोने का निर्यात करने की भी अनुमति दी गई - जो एक दुर्लभ विशेषाधिकार था। इस बात पर जोर दिया गया कि कंपनी को केवल व्यापार तक ही सीमित रहना है और उपनिवेशीकरण या विजय का प्रयास नहीं करना है। कंपनी के जहाज सशस्त्र होंगे, लेकिन केवल सुरक्षा के लिए। यह यूरोप से बाहर व्यापार करने वाले अन्य यूरोपीय देशों की प्रथा के बिल्कुल विपरीत था। शांतिपूर्ण व्यापार पर यही जोर, सदी के अंत तक, कंपनी को भारत में अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में अधिक सफल बना देगा।

Thomas Smythe became the first governor of the Company. He had also just become governor of both the Russian and Levant Companies. Smythe was rather grander than most of the merchants. He had been MP for Aylesbury and was master of a great city guild, the Haberdashers. His house was in Philpot Lane, near Fenchurch Street in London. It must have been large, since it is recorded that in 1619 a French envoy stayed there with his 120-strong retinue. It had a great hall, in which Smythe had commemorated his interest in finding a north-west passage to the East by hanging an Inuit canoe from the ceiling. In this hall the early meetings of the East India Company took place. It was from this house that sailors were recruited and paid; that the wives left behind went for assistance. He was popular at all levels of society and his seamen would often bring him back curiosities from their travels. The early sailors with the East India Company were given a share in the profits of the enterprise equivalent to two months' wages. When Thomas Smythe invested, others followed; when Thomas Smythe planned an expedition, seamen hastened to enlist.

थॉमस स्माइथ कंपनी के पहले गवर्नर बने। वे रूसी और लेवेंट कंपनियों के भी गवर्नर बन चुके थे। स्माइथ अधिकांश व्यापारियों से कहीं अधिक संभ्रांत थे। वे एल्सबरी से सांसद रह चुके थे और शहर के एक बड़े व्यापारिक संघ, हैबरडैशर्स के प्रमुख थे। उनका घर लंदन में

फेनचर्च स्ट्रीट के पास फिलपॉट लेन में था। यह घर काफी बड़ा रहा होगा, क्योंकि ऐसा दर्ज है कि 1619 में एक फ्रांसीसी दूत अपने 120 लोगों के दल के साथ वहाँ ठहरे थे। उनके घर में एक विशाल हॉल था, जिसमें स्माइथ ने पूर्व की ओर उत्तर-पश्चिम मार्ग खोजने में अपनी रुचि को दर्शाने के लिए छत से एक इनुइट डोंगी लटका रखी थी। इसी हॉल में ईस्ट इंडिया कंपनी की शुरुआती बैठकें होती थीं। इसी घर से नाविकों की भर्ती और वेतन दिया जाता था; और पीछे रह गई पत्नियाँ सहायता के लिए यहीं आती थीं। वे समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय थे और उनके नाविक अक्सर अपनी यात्राओं से उनके लिए अनोखी वस्तुएँ लाते थे। ईस्ट इंडिया कंपनी के शुरुआती नाविकों को उद्यम के मुनाफे में दो महीने के वेतन के बराबर हिस्सा दिया जाता था। जब थॉमस स्माइथ ने निवेश किया, तो अन्य लोगों ने भी उनका अनुसरण किया; जब थॉमस स्माइथ ने किसी अभियान की योजना बनाई, तो नाविक भर्ती होने के लिए उत्सुक हो गए।

The Company was administered in a very frugal manner from Smythe's house. He loaned the use of one of his own men to be part-time secretary. The only other member of staff was the beadle who carried the subscription book and advertised meetings. Purchasing the ships, provisioning them, recruiting their crews, supervising the accounts and conducting important correspondence was done by Thomas Smythe himself, or by the other subscribers to the Company. The London merchants were past masters at reducing overheads. They would also have had in mind that the Company's charter could be revoked by the Crown at only two years' notice and that, unless renewed, it would expire in 1615. The other threat hanging over the merchants was that discovery of a north-west route to the Indies, which many thought imminent, might undermine their endeavour.

कंपनी का संचालन स्माइथ के घर से अत्यंत मितव्ययी ढंग से किया जाता था। उन्होंने अपने एक व्यक्ति को अंशकालिक सचिव के रूप में नियुक्त किया था। कर्मचारियों में एकमात्र अन्य सदस्य चंदा-पुस्तिका रखने वाला सहायक था, जो चंदा-पुस्तिका रखता था और बैठकों की

सूचना देता था। जहाजों की खरीद, उनमें रसद की व्यवस्था, चालक दल की भर्ती, खातों की देखरेख और महत्वपूर्ण पत्राचार का कार्य स्वयं थॉमस स्माइथ या कंपनी के अन्य सदस्यों द्वारा किया जाता था। लंदन के व्यापारी खर्चों को कम करने में माहिर थे। उन्हें यह भी पता था कि कंपनी का चार्टर केवल दो वर्ष के पूर्व सूचना पर क्राउन द्वारा रद्द किया जा सकता है और यदि इसका नवीनीकरण नहीं किया गया, तो यह 1615 में समाप्त हो जाएगा। व्यापारियों पर मंडरा रहा दूसरा खतरा यह था कि इंडीज के लिए उत्तर-पश्चिम मार्ग की खोज, जिसे कई लोग आसन्न मानते थे, उनके प्रयासों को विफल कर सकती थी।

Thomas Smythe was careful to confine his activities largely to business. In Parliament he concentrated on trade matters. Although he was well regarded at court, he did not, as many others did, give out bribes or loans to the royal circle. He lived, however, in dangerous times. In February 1601, he was seen talking to the Earl of Essex. He was subsequently suspected of being implicated in Essex's abortive coup and was imprisoned in the Tower of London. He managed to extricate himself with only a heavy fine. It must have been wonderful to be knighted in 1603 by James I in that very same Tower. With a few small breaks, Sir Thomas Smythe continued as governor of the Company until 1621. Much of the credit for successfully steering the Company through its turbulent first years goes to him.

थॉमस स्माइथ ने अपनी गतिविधियों को मुख्य रूप से व्यापार तक ही सीमित रखने का पूरा ध्यान रखा। संसद में उन्होंने व्यापारिक मामलों पर ध्यान केंद्रित किया। हालाँकि दरबार में उनका काफी सम्मान था, फिर भी उन्होंने कई अन्य लोगों की तरह शाही परिवार को रिश्वत या ऋण नहीं दिया। हालाँकि, वे एक खतरनाक दौर में जी रहे थे। फरवरी 1601 में, उन्हें अर्ल ऑफ एसेक्स से बात करते हुए देखा गया। बाद में उन पर एसेक्स के असफल तख्तापलट में शामिल होने का संदेह हुआ और उन्हें लंदन टावर में कैद कर लिया गया। वे भारी जुर्माने के साथ खुद को छुड़ाने में कामयाब रहे। 1603 में उसी टावर में जेम्स प्रथम द्वारा नाइट की उपाधि प्राप्त करना उनके लिए एक अद्भुत अनुभव रहा होगा। कुछ छोटे-मोटे अंतरालों के

साथ, सर थॉमस स्माइथ 1621 तक कंपनी के गवर्नर के रूप में कार्यरत रहे। कंपनी को उसके अशांत प्रारंभिक वर्षों से सफलतापूर्वक निकालने का श्रेय काफी हद तक उन्हें ही जाता है।

James Lancaster – the man who had sailed to the Malay Peninsula in 1591 – was appointed to command the Company's first expedition to the East. Although his earlier voyage had been financially disastrous, he had gained much useful experience and information – information that had proved invaluable when making the case for the Company's charter. Moreover, he had put his own money into the Company as one of its subscribers. Those at court had tried to have a 'gentleman' put in command, but the London merchants had stood firm and successfully petitioned 'to sort ther busines with men of ther owne quality'.

जेम्स लैंकेस्टर - वह व्यक्ति जो 1591 में मलय प्रायद्वीप की यात्रा पर गया था - को कंपनी के पूर्व की ओर पहले अभियान का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया गया था। हालाँकि उनकी पिछली यात्रा आर्थिक रूप से विनाशकारी रही थी, उन्होंने बहुत उपयोगी अनुभव और जानकारी प्राप्त की थी - वह जानकारी जो कंपनी के चार्टर के लिए तर्क प्रस्तुत करते समय अमूल्य साबित हुई। इसके अलावा, उन्होंने कंपनी के एक सदस्य के रूप में अपना पैसा भी कंपनी में लगाया था। दरबारियों ने एक 'सज्जन' को कमान सौंपने की कोशिश की थी, लेकिन लंदन के व्यापारियों ने दृढ़ रुख अपनाया और सफलतापूर्वक याचिका दायर की कि 'अपने व्यवसाय को अपने ही योग्य व्यक्तियों के साथ निपटाया जाए'।

Initially, the Company had no permanent capital, as it had been agreed that each voyage would be subscribed for separately. Eventually, the bookkeeping for separate and overlapping voyages became too complicated and a more permanent system of subscription was adopted. It would be fifty years before

it became the genuine joint stock company it had originally pleaded for. The 101 first subscribers had grown to 218. Nevertheless, costs exceeded receipts and each subscriber became liable for 10 per cent more at first, and another 10 per cent afterwards. Some subscribers were slow in paying what they had promised and it took threats of imprisonment by the Privy Council to collect all the money. Eventually, the Company amassed over £68,000. This was a huge sum at a time when a skilled craftsman in London would be lucky to earn £10 a year. A sum of £40,000 was spent on purchasing the ships and provisioning them; £7,000 on goods to take out for sale or exchange; £21,000 on providing money for the purchase of goods in the East.

शुरुआत में, कंपनी के पास कोई स्थायी पूंजी नहीं थी, क्योंकि यह तय किया गया था कि प्रत्येक यात्रा के लिए अलग से सदस्यता ली जाएगी। अंततः, अलग-अलग और एक-दूसरे से जुड़ी यात्राओं का लेखा-जोखा बहुत जटिल हो गया और सदस्यता की एक अधिक स्थायी प्रणाली अपनाई गई। इसे वह वास्तविक संयुक्त स्टॉक कंपनी बनने में पचास साल लग गए जिसके लिए इसने मूल रूप से वकालत की थी। पहले 101 ग्राहकों की संख्या बढ़कर 218 हो गई थी। फिर भी, लागत प्राप्तियों से अधिक हो गई और प्रत्येक ग्राहक पहले 10 प्रतिशत और बाद में 10 प्रतिशत अधिक के लिए उत्तरदायी हो गया। कुछ ग्राहक अपने वादे के अनुसार भुगतान करने में देरी कर रहे थे और सभी धन की वसूली के लिए प्रिवी काउंसिल द्वारा कारावास की धमकी देनी पड़ी। अंततः, कंपनी ने 68,000 पाउंड से अधिक की राशि एकत्र की। यह उस समय एक बहुत बड़ी राशि थी जब लंदन में एक कुशल कारीगर के लिए साल में 10 पाउंड कमाना भी मुश्किल होता था। जहाजों की खरीद और उन्हें रसद से सुसज्जित करने पर 40,000 पाउंड खर्च किए गए; बिक्री या विनिमय के लिए माल ले जाने पर 7,000 पाउंड खर्च किए गए; पूर्वी क्षेत्र में सामान खरीदने के लिए धन उपलब्ध कराने पर 21,000 पाउंड का जुर्माना लगाया गया।

Accumulating the right money was a problem. Exporting English coin was illegal. The standard currency used in the East by the Portuguese and others

was Spanish, in particular the silver coins of eight rials – the ‘pieces of eight’ of pirate tales. England was still at war with Spain, so obtaining them directly was out of the question. Some were available from the hauls of English marauders, such as Sir Francis Drake. Others were obtainable on the continent. The Company gathered some of these by encouraging its members to pay their subscriptions in Spanish coin. However, there was still a substantial shortfall. The Company asked if the royal mint could perhaps manufacture some Spanish coins. Unsurprisingly, Queen Elizabeth was not keen on producing the coins of her enemy. Eventually, however, some coins were minted. Superficially, they resembled the Spanish coins. On one side was the royal coat of arms; on the other they were adorned with a portcullis. The experiment was not a success. As there were various forgeries of the Spanish coins about, people in the East proved reluctant to accept the new coinage. For its future expeditions, the Company ensured that somehow or other it found enough Spanish rials.

सही मात्रा में धन जुटाना एक समस्या थी। अंग्रेज़ी सिक्कों का निर्यात करना गैरकानूनी था। पुर्तगालियों और अन्य लोगों द्वारा पूर्व में इस्तेमाल की जाने वाली मानक मुद्रा स्पेनिश थी, विशेष रूप से आठ रियाल के चांदी के सिक्के - समुद्री डाकुओं की कहानियों के 'पीस ऑफ एट'। इंग्लैंड अभी भी स्पेन के साथ युद्ध में था, इसलिए उन्हें सीधे प्राप्त करना असंभव था। कुछ सिक्के सर फ्रांसिस ड्रेक जैसे अंग्रेज़ लुटेरों के खजाने से मिले। अन्य महाद्वीप से प्राप्त किए जा सकते थे। कंपनी ने अपने सदस्यों को स्पेनिश सिक्कों में सदस्यता शुल्क देने के लिए प्रोत्साहित करके इनमें से कुछ सिक्के जुटाए। हालांकि, फिर भी काफी कमी रह गई। कंपनी ने पूछा कि क्या शाही टकसाल कुछ स्पेनिश सिक्के बना सकती है। स्वाभाविक रूप से, महारानी एलिजाबेथ अपने शत्रु के सिक्के बनाने के लिए उत्सुक नहीं थीं। अंततः, कुछ सिक्के ढाले गए। देखने में वे स्पेनिश सिक्कों से मिलते-जुलते थे। एक तरफ शाही प्रतीक चिन्ह था; दूसरी तरफ एक पोर्टकुलिस (बंदरगाह का फाटक) बना हुआ था। यह प्रयोग सफल नहीं

हुआ। चूंकि स्पेनिश सिक्कों की कई नकली प्रतियां बाजार में थीं, इसलिए पूर्व के लोग नए सिक्कों को स्वीकार करने में अनिच्छुक साबित हुए। अपनी भावी यात्राओं के लिए, कंपनी ने यह सुनिश्चित किया कि उसे किसी न किसी तरह से पर्याप्त स्पेनिश रियाल मिल जाएं।

The four ships of the East India Company – and a supply ship that was subsequently discarded – sailed in 1601. All returned successfully from Sumatra and Java in 1603. Lancaster's own ship, the *Red Dragon*, which had been named *The Scourge of Malice* by its previous owner but had been renamed to reflect the peaceful intent of the expedition, lost very few men. Lancaster had dosed them against scurvy with lemon juice to great effect. It took nearly 200 years for this treatment, which would have saved countless lives, to be adopted by the Royal Navy. The other three ships lost over a third of their complement. Overall, the expedition was judged a resounding success. It brought back 500 tons of pepper. It had also captured the cargo of a large Portuguese ship loaded with riches from India. However, neither this expedition nor the one that followed actually went to India. The Indonesian archipelago, with its cloves and nutmeg as well as its pepper and cinnamon, was seen as a better source of profit.

ईस्ट इंडिया कंपनी के चार जहाज – और एक आपूर्ति जहाज जिसे बाद में छोड़ दिया गया – 1601 में रवाना हुए। सभी 1603 में सुमात्रा और जावा से सफलतापूर्वक लौट आए। लैंकेस्टर के अपने जहाज, रेड ड्रैगन, जिसका नाम उसके पिछले मालिक ने द स्कोर्ज ऑफ मैलिस रखा था, लेकिन अभियान के शांतिपूर्ण उद्देश्य को दर्शाने के लिए इसका नाम बदल दिया गया था, में बहुत कम लोगों की जान गई। लैंकेस्टर ने उन्हें नींबू के रस से स्कर्वी रोग से बचाने के लिए दवा दी थी, जिसका बहुत अच्छा असर हुआ। इस उपचार को, जिससे अनगिनत जानें बचाई जा सकती थीं, रॉयल नेवी द्वारा अपनाने में लगभग 200 साल लग गए। अन्य तीन जहाजों में एक तिहाई से अधिक लोगों की जान चली गई। कुल मिलाकर, इस अभियान को एक बड़ी सफलता माना गया। यह 500 टन काली मिर्च वापस लाया गया। इसने भारत से धन से लदे

एक बड़े पुर्तगाली जहाज के माल पर भी कब्जा कर लिया था। हालांकि, न तो यह अभियान और न ही इसके बाद वाला अभियान वास्तव में भारत गया। लौंग और जायफल के साथ-साथ काली मिर्च और दालचीनी के लिए प्रसिद्ध इंडोनेशियाई द्वीपसमूह को लाभ का एक बेहतर स्रोत माना गया।

India was finally selected as one of the destinations for the Company's third expedition. Its main task was to collect spices from the eastern islands, but it was also instructed to investigate the market for English woollen goods in exchange for spices at Aden. In addition, it was to assess the possibility of buying textiles in India to exchange for spices in the Far East. Its three ships left England in 1607. The *Consent* left early and caught the trade winds. The *Dragon*, captained by the expedition commander, William Keeling, and the *Hector*, captained by William Hawkins, missed the wind and lost six months as they were blown to Brazil and then back to West Africa. There, while they waited for a good wind to round the Cape, Keeling's men gave performances of *Hamlet* and *Richard II*. In the Indian Ocean, the winds for Aden were unfavourable. It was decided that the *Dragon* should go directly to the East and the *Hector* go to India.

अंततः भारत को कंपनी के तीसरे अभियान के गंतव्यों में से एक के रूप में चुना गया। इसका मुख्य कार्य पूर्वी द्वीपों से मसाले एकत्र करना था, लेकिन इसे अदन में मसालों के बदले अंग्रेजी ऊनी वस्तुओं के बाजार की जांच करने का भी निर्देश दिया गया था। इसके अतिरिक्त, इसे सुदूर पूर्व में मसालों के बदले भारत में वस्त्र खरीदने की संभावना का आकलन करना था। इसके तीन जहाज 1607 में इंग्लैंड से रवाना हुए। कंसेंट जहाज जल्दी रवाना हुआ और व्यापारिक हवाओं का लाभ उठाया। अभियान के कमांडर विलियम कीलिंग द्वारा संचालित ड्रैगन और विलियम हॉकिन्स द्वारा संचालित हेक्टर जहाज हवा का लाभ नहीं उठा पाए और

छह महीने बर्बाद कर दिए क्योंकि वे ब्राजील और फिर पश्चिम अफ्रीका वापस चले गए। वहां, केप के चारों ओर जाने के लिए अनुकूल हवा का इंतजार करते हुए, कीलिंग के आदमियों ने हैमलेट और रिचर्ड द्वितीय का प्रदर्शन किया। हिंद महासागर में, अदन के लिए हवाएँ अनुकूल नहीं थीं। यह निर्णय लिया गया कि ड्रैगन को सीधे पूर्व की ओर जाना चाहिए और हेक्टर को भारत जाना चाहिए।

Hawkins, whose background is not known with any certainty, investigated the trade potential of India with great zeal against formidable obstacles. He sailed the *Hector* to Surat, the largest of the Mughal ports, anchored offshore on 24 August 1608 and took rowing boats up river to the town. The administrator of Surat was in league with the Portuguese and seized the English goods. He also allowed the Portuguese to capture two of the English boats and send some of their crews to Goa as prisoners. The *Hector* sailed for the East, leaving only Hawkins and his companion, William Finch, behind. The two of them tried to get recompense for the seized goods and permission to trade, but without success. The Portuguese tried to kill them. Unbowed, William Hawkins then recruited a bodyguard of Pathans and travelled 700 miles to Agra to plead directly with the Mughal emperor.

हॉकिन्स, जिनके पृष्ठभूमि के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है, ने कई बाधाओं के बावजूद भारत की व्यापारिक संभावनाओं का बड़े उत्साह से अध्ययन किया। वे अपने जहाज हेक्टर से सूरत पहुंचे, जो मुगल साम्राज्य का सबसे बड़ा बंदरगाह था। उन्होंने 24 अगस्त 1608 को जहाज को तट से दूर लंगर डाला और फिर नावों से सूरत तक नदी के रास्ते गए। सूरत का प्रशासक पुर्तगालियों के साथ मिला हुआ था और उसने अंग्रेजों का माल जब्त कर लिया। उसने पुर्तगालियों को दो अंग्रेजी नौकाओं पर कब्जा करने और उनके कुछ चालक दल के सदस्यों को बंदी बनाकर गोवा भेजने की अनुमति भी दे दी। हेक्टर जहाज पूर्व की ओर रवाना हो गया, जिसमें केवल हॉकिन्स और उनके साथी विलियम फिंच ही पीछे रह गए। उन दोनों ने जब्त किए गए माल के मुआवजे और व्यापार की अनुमति प्राप्त करने का प्रयास

किया, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। पुर्तगालियों ने उन्हें जान से मारने की कोशिश की। विलियम हॉकिन्स ने हार नहीं मानी और पठान अंगरक्षकों की एक टुकड़ी को अपने साथ लेकर मुगल सम्राट से सीधे विनती करने के लिए 700 मील की यात्रा करके आगरा पहुंचे।

At the beginning of the seventeenth century, the Mughals controlled a huge portion of India. Their empire stretched from Persia in the west to Bengal in the east; from the Himalayas in the north to the River Godavari in the south. It was still expanding southwards. When Hawkins arrived at Agra, the Mughal throne had just been inherited by Akbar's son, Jahangir. The two men became very friendly and drank together. Jahangir found Hawkins an Armenian Christian wife and offered him a post at court. At first Hawkins was promised trading privileges at Surat. However, his position was later undermined by jealous Mughal officials and Portuguese priests, and finally by the arrival of some drunken English sailors from a wrecked Company ship, the *Ascension*, who had 'made themselves beasts and soe fell to lewd women that in shorte time manie fell sicke'.

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में, मुगलों का भारत के एक विशाल भाग पर शासन था। उनका साम्राज्य पश्चिम में फारस से लेकर पूर्व में बंगाल तक, उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक फैला हुआ था। यह दक्षिण की ओर भी विस्तार कर रहा था। जब हॉकिन्स आगरा पहुँचे, तब अकबर के पुत्र जहांगीर ने मुगल सिंहासन संभाला था। दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता हो गई और वे साथ में शराब पीते थे। जहांगीर ने हॉकिन्स के लिए एक अर्मेनियाई ईसाई पत्नी का चयन किया और उन्हें दरबार में एक पद की पेशकश की। प्रारंभ में हॉकिन्स को सूरत में व्यापारिक विशेषाधिकारों का वादा किया गया था। हालाँकि, बाद में ईर्ष्यालु मुगल अधिकारियों और पुर्तगाली पुजारियों द्वारा उनकी स्थिति को कमजोर कर दिया गया, और अंततः एक दुर्घटनाग्रस्त कंपनी जहाज, एसेंशन से कुछ नशे में धुत अंग्रेज नाविकों के आगमन से, जिन्होंने "खुद को जानवर बना लिया था और व्यभिचारी महिलाओं के साथ इस कदर संबंध स्थापित किए कि थोड़े ही समय में कई लोग बीमार पड़ गए"।

Hawkins was in Agra for over two years but left without any concessions for the Company. At Surat he met up with another English expedition, under the command of Sir Henry Middleton, which had also failed to open trade with India. Hawkins joined Middleton when he left for Java in February 1612. In the East, some five years after relinquishing his command, Hawkins met up with his old ship, the *Hector*. It was about to sail for England, together with the *Solomon* and the *Thomas*. Hawkins and his wife embarked on the *Thomas*. On the voyage home, illness erupted and most of the crew died. The ship limped home but William Hawkins died off Ireland.

हॉकिन्स दो साल से अधिक समय तक आगरा में रहे, लेकिन कंपनी को कोई रियायत दिए बिना ही वापस लौट गए। सूरत में उनकी मुलाकात सर हेनरी मिडलटन के नेतृत्व में एक अन्य अंग्रेजी अभियान दल से हुई, जो भारत के साथ व्यापार शुरू करने में असफल रहा था। हॉकिन्स फरवरी 1612 में मिडलटन के साथ जावा के लिए रवाना हुए। पूर्व में, कमान छोड़ने के लगभग पाँच साल बाद, हॉकिन्स की मुलाकात अपने पुराने जहाज, हेक्टर से हुई। यह जहाज सोलोमन और थॉमस के साथ इंग्लैंड के लिए रवाना होने वाला था। हॉकिन्स और उनकी पत्नी थॉमस जहाज पर सवार हुए। घर वापसी की यात्रा के दौरान, बीमारी फैल गई और चालक दल के अधिकांश सदस्य मर गए। जहाज किसी तरह पहुँच गया, लेकिन विलियम हॉकिन्स की आयरलैंड के तट पर मृत्यु हो गई।

Hawkins's Armenian wife subsequently married Gabriel Towerson, the captain of the *Hector*. The couple went back to India. When Towerson returned to England, she remained behind with her family and friends at Agra.

हॉकिन्स की अर्मेनियाई पत्नी ने बाद में हेक्टर के कप्तान गैब्रियल टावरसन से शादी कर ली। दंपति भारत लौट गए। जब टावरसन इंग्लैंड लौट गए, तो वह आगरा में अपने परिवार और दोस्तों के साथ रह गईं।

It took a display of English naval force to finally open trade with Surat – not against the Indians, but against the Portuguese. Thomas Best, commander of the Company's tenth expedition, sailed from Gravesend in February 1612 – the same month that Middleton and Hawkins had left Surat. His ship was the 600-ton *Dragon* and was accompanied by three smaller ships. They reached Surat in September. The Mughals seemed to be willing to reopen negotiations with the English. Best, keen to make an impression, landed together with a hundred of his soldiers, accompanied by drummers and trumpeters. A temporary firman, an official permission, was issued that allowed the English to trade for forty days. The emperor, they were told, might make this permanent, and they were invited to send a delegation to the court at Agra. Envoys were despatched, carrying a message from King James and loaded with presents. These included paintings of Venus and musical instruments. Some musicians also went to give tuition. One of them, Robert Trully, who played the cornet, became very popular with Jahangir. He stayed in India and converted to Islam. All seemed to be set fair until a Portuguese fleet arrived off Surat.

सूरत के साथ व्यापार शुरू करने के लिए अंग्रेज़ों को अपनी नौसेना की ज़बरदस्त शक्ति का प्रदर्शन करना पड़ा – यह व्यापार भारतीयों के विरुद्ध नहीं, बल्कि पुर्तगालियों के विरुद्ध था। कंपनी के दसवें अभियान के कमांडर थॉमस बेस्ट फरवरी 1612 में ग्रेवसेंड से रवाना हुए – उसी महीने जब मिडलटन और हॉकिन्स सूरत से निकले थे। उनका जहाज़ 600 टन का ड्रैगन था और उसके साथ तीन छोटे जहाज़ भी थे। वे सितंबर में सूरत पहुँचे। मुग़ल अंग्रेज़ों के साथ बातचीत फिर से शुरू करने के लिए तैयार लग रहे थे। बेस्ट, अपनी छाप छोड़ने के लिए उत्सुक थे, इसलिए वे अपने सौ सैनिकों के साथ, ढोल बजाने वालों और तुरही बजाने वालों को लेकर सूरत पहुँचे। एक अस्थायी फरमान, यानी आधिकारिक अनुमति जारी की गई, जिससे अंग्रेज़ों को चालीस दिनों तक व्यापार करने की अनुमति मिल गई। उन्हें बताया गया कि

सम्राट इसे स्थायी कर सकते हैं, और उन्हें आगरा के दरबार में एक प्रतिनिधिमंडल भेजने का निमंत्रण दिया गया। दूत भेजे गए, जिनमें राजा जेम्स का संदेश था और उपहारों से लदे हुए थे। इनमें वीनस के चित्र और वाद्य यंत्र शामिल थे। कुछ संगीतकार भी प्रशिक्षण देने के लिए गए। उनमें से एक, रॉबर्ट टूली, जो कॉर्नेट बजाते थे, जहांगीर के बीच बहुत लोकप्रिय हो गए। वह भारत में ही रुका और इस्लाम धर्म अपना लिया। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, तभी सूरत के तट पर पुर्तगाली बेड़ा आ पहुँचा।

Four Portuguese galleons and twenty-six frigates descended on Best's anchored fleet. However, though the English ships were smaller, they were better armed. More importantly, they were very easily manoeuvrable. The Portuguese relied on getting in close to grapple with the enemy. The English made quick forays, fired their broadsides, retreated, and then attacked again. Three of the Portuguese galleons were destroyed. The English then attacked another four Portuguese galleons that lay off the coast and forced them to flee. Seeing that the Portuguese were no longer masters of the ocean, on 7 January 1613 Emperor Jahangir confirmed that the English could trade from Surat. Furthermore, he allowed them to fortify their factory. Thomas Best left and much of the credit for the successful establishment of the factory should go to Thomas Aldworth, who stayed behind at his own request and became the Company's first president.

चार पुर्तगाली गैलियन और छब्बीस फ्रिगेट बेस्ट के लंगर डाले हुए बेड़े पर टूट पड़े। हालाँकि, अंग्रेज़ जहाज़ आकार में छोटे थे, लेकिन वे बेहतर हथियारों से लैस थे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे बहुत आसानी से पैंतरेबाज़ी कर सकते थे। पुर्तगाली दुश्मन से भिड़ने के लिए नज़दीकी आक्रमण पर निर्भर थे। अंग्रेज़ों ने तेज़ी से आक्रमण किया, तोपों की बौछार की, पीछे हटे और फिर से हमला किया। तीन पुर्तगाली गैलियन नष्ट हो गए। इसके बाद अंग्रेज़ों ने तट पर तैनात चार अन्य पुर्तगाली गैलियन पर हमला किया और उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया। यह देखकर कि पुर्तगाली अब समुद्र के स्वामी नहीं रहे, 7 जनवरी 1613 को सम्राट

जहांगीर ने पुष्टि की कि अंग्रेज़ सूरत से व्यापार कर सकते हैं। इसके अलावा, उन्होंने उन्हें अपने कारखाने को मजबूत करने की अनुमति दी। थॉमस बेस्ट चले गए और कारखाने की सफल स्थापना का श्रेय थॉमस एल्डवर्थ को जाता है, जो अपनी इच्छा से वहीं रुके रहे और कंपनी के पहले अध्यक्ष बने।

The Portuguese, however, had not yet been vanquished. In 1615 they attacked the English fleet at Surat. The English fought from the shallows, where the Portuguese galleons were at a disadvantage. It was said that 500 Portuguese men were killed and only five English before the Portuguese fled.

हालांकि, पुर्तगालियों को अभी तक पराजित नहीं किया गया था। 1615 में उन्होंने सूरत में अंग्रेजी बेड़े पर हमला किया। अंग्रेजों ने उथले पानी से लड़ाई लड़ी, जहां पुर्तगाली जहाज नुकसान में थे। कहा जाता है कि 500 पुर्तगाली सैनिक मारे गए और केवल पांच अंग्रेज मारे गए, जिसके बाद पुर्तगाली भाग गए।

Surat was not the Company's first trading post in India. Between 1608, when its first ship had arrived in Surat, and 1613, when it was given permission to establish a factory, there had been a success on the east coast. The Dutch had begun to trade there in 1606. Two disaffected Dutch traders approached the East India Company with a plan to establish an English presence there too. In 1611 the Company was granted permission for a factory at Masulipatam, a busy port on the Coromandel Coast in the Sultanate of Golconda. It became an important source for the Company's trade in textiles.

सूरत भारत में कंपनी की पहली व्यापारिक चौकी नहीं थी। 1608 में जब उसका पहला जहाज सूरत पहुंचा था और 1613 में जब उसे कारखाना स्थापित करने की अनुमति मिली थी, तब तक पूर्वी तट पर कंपनी को सफलता मिल चुकी थी। डचों ने 1606 में वहां व्यापार शुरू किया था। दो असंतुष्ट डच व्यापारियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी से संपर्क किया और वहां भी

अंग्रेजी उपस्थिति स्थापित करने की योजना रखी। 1611 में कंपनी को गोलकोंडा सल्तनत के कोरोमंडल तट पर स्थित एक व्यस्त बंदरगाह मसूलीपट्टनम में कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी गई। यह कंपनी के वस्त्र व्यापार का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया।

In 1615, William Keeling, the amateur producer of Shakespeare's plays, led a Company expedition to India and the East. Invested with the title of commander-in-chief, he was keen to expand the activities of the Company. He sailed down the coast of India, periodically exchanging fire with Portuguese ships. In March 1616, while off Cranganore, he was intercepted by an emissary of the Zamorin of Calicut. The Zamorin, who was preparing to attack the Portuguese fort at Cranganore, offered to give the Company trading rights at Calicut in exchange for assistance and an agreement was concluded. Keeling left behind four men and a twelve-year-old boy to establish a factory. They had a stock of trade goods – tin, lead, cloth and half a ton of an aromatic gum captured from the Portuguese. They also had a stock of gunpowder. One of the men was a gunner and he would show the Indians how to operate the small cannon Keeling had given to the Zamorin.

1615 में, शेक्सपियर के नाटकों के शौकिया निर्माता विलियम कीलिंग ने कंपनी के एक अभियान का नेतृत्व करते हुए भारत और पूर्वी भारत की यात्रा की। सेनापति का पद प्राप्त करने के बाद, वे कंपनी की गतिविधियों का विस्तार करने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने भारत के तट पर नौकायन किया और समय-समय पर पुर्तगाली जहाजों से मुठभेड़ की। मार्च 1616 में, क्रांगानोर के पास, कालीकट के ज़मोरिन के एक दूत ने उन्हें रोक लिया। क्रांगानोर में पुर्तगाली किले पर हमला करने की तैयारी कर रहे ज़मोरिन ने कंपनी को सहायता के बदले कालीकट में व्यापारिक अधिकार देने की पेशकश की और एक समझौता हो गया। कीलिंग ने एक कारखाना स्थापित करने के लिए चार आदमियों और एक बारह वर्षीय लड़के को पीछे

छोड़ दिया। उनके पास व्यापारिक सामान का भंडार था - टिन, सीसा, कपड़ा और पुर्तगालियों से जब्त किया गया आधा टन सुगंधित गोंद। उनके पास बारूद का भी भंडार था। उनमें से एक तोपची था और वह भारतीयों को उस छोटी तोप को चलाना सिखाएगा जो कीलिंग ने ज़मोरिन को दी थी।

The factory – the first English factory on the Malabar Coast – did not prosper. When Keeling sailed away, the Zamorin, disappointed with the amount of help he had received, failed to supply spices. A year later, when the fleet returned from the East, three of the men were taken away. A man and the boy were left behind to learn the language. The man soon died of dysentery; the boy, Edward Pearce, would, twenty-five years later, start the Company's trade at Basra.

यह कारखाना – मालाबार तट पर स्थित पहला अंग्रेजी कारखाना – फला-फूला नहीं। जब कीलिंग रवाना हुआ, तो ज़मोरिन, उसे मिली सहायता की मात्रा से निराश होकर, मसालों की आपूर्ति करने में विफल रहा। एक वर्ष बाद, जब बेड़ा पूर्व से लौटा, तो तीन लोगों को अपने साथ ले जाया गया। एक आदमी और एक लड़का भाषा सीखने के लिए पीछे रह गए। वह आदमी जल्द ही पेचिश से मर गया; लड़का, एडवर्ड पियर्स, पच्चीस वर्ष बाद बसरा में कंपनी का व्यापार शुरू करेगा।

While the English attacked the Portuguese at sea, other Portuguese were lobbying the Mughal emperor. He had provisionally agreed to ban trade with the English when an English ambassador who had travelled out with Keeling arrived at the Ajmer court.

जब अंग्रेज समुद्र में पुर्तगालियों पर हमला कर रहे थे, तब कुछ अन्य पुर्तगाली मुगल सम्राट से संपर्क साधने की कोशिश कर रहे थे। सम्राट ने अंग्रेजों के साथ व्यापार पर प्रतिबंध लगाने के

लिए अस्थायी रूप से सहमति दे दी थी, तभी कीलिंग के साथ यात्रा कर रहे एक अंग्रेज राजदूत अजमेर दरबार में पहुंचे।

Sir Thomas Roe had been sent out by James I, who had renewed the Company's charter on a more permanent basis in 1609, at the Company's expense to negotiate with Jahangir. Besides being active at court, Roe had business interests and was on the council of the Virginia Company. Both his grandfather and his uncle had been Lord Mayors of London. Roe arrived at the Mughal court at Ajmer in 1616. He had brought many presents, to the delight of the emperor. These included an English carriage, which Jahangir used and had copied. During Roe's three-year residence, the Company sent more gifts – including alcoholic beverages, which Jahangir was extremely fond of. Two English mastiffs became hugely popular with the emperor. One was extremely fierce and attracted Jahangir's admiration when it attacked an elephant. Jahangir gave each dog four servants – two to carry them around in palanquins; two to fan off flies. Meanwhile, the Portuguese offered more expensive gifts, including a ruby-like gemstone that weighed five ounces, to marginalize the English. Jahangir continued to allow the English to trade from Surat, but baulked at signing the formal treaty Roe desired. More depressing for Roe, the emperor also met a Dutch delegation and gave them equal rights to the English at Surat.

सर थॉमस रो को जेम्स प्रथम ने, जिन्होंने 1609 में कंपनी के चार्टर को स्थायी आधार पर नवीनीकृत किया था, कंपनी के खर्चे पर जहांगीर से बातचीत करने के लिए भेजा था। दरबार में सक्रिय रहने के अलावा, रो के व्यापारिक हित भी थे और वे वर्जीनिया कंपनी की परिषद में थे। उनके दादा और चाचा दोनों लंदन के लॉर्ड मेयर रह चुके थे। रो 1616 में अजमेर स्थित मुगल दरबार पहुंचे। वे अपने साथ कई उपहार लाए थे, जिनसे सम्राट बहुत प्रसन्न हुए। इनमें एक अंग्रेजी रथ भी शामिल था, जिसका उपयोग जहांगीर ने किया और उसकी नकल भी

बनवाई। रो के तीन साल के प्रवास के दौरान, कंपनी ने और भी उपहार भेजे - जिनमें मादक पेय भी शामिल थे, जो जहांगीर को बेहद पसंद थे। दो अंग्रेजी मास्टिफ़ कुत्ते सम्राट के बीच बहुत लोकप्रिय हो गए। उनमें से एक बेहद खूंखार था और जब उसने एक हाथी पर हमला किया तो जहांगीर ने उसकी प्रशंसा की। जहांगीर ने प्रत्येक कुत्ते को चार नौकर दिए - दो उन्हें पालकी में ले जाने के लिए; दो मक्खियों को भगाने के लिए। इस बीच, पुर्तगालियों ने अंग्रेजों को हाशिए पर धकेलने के लिए पांच औंस वजन का माणिक जैसा रत्न सहित अधिक महंगे उपहार भेंट किए। जहांगीर ने अंग्रेजों को सूरत से व्यापार करने की अनुमति देना जारी रखा, लेकिन रो द्वारा चाही गई औपचारिक संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। रो के लिए और भी निराशाजनक बात यह थी कि सम्राट ने डच प्रतिनिधिमंडल से भी मुलाकात की और उन्हें सूरत में अंग्रेजों के बराबर अधिकार दिए।

Despite his setbacks, Roe was a perceptive diplomat and was able to offer the Company much valuable advice. They should, he advised, only resort to force on the seas. He had seen the massive military strength of the Mughals as he accompanied Jahangir and 200,000 followers across India. He realized that the Company could not hope to challenge the Mughals on land. Roe pointed out that although the Portuguese had many soldiers and many forts, this had not resulted in their making large profits. Similarly, that the Dutch, who were bent on conquest, had found that the cost of their armed forces absorbed all their gains. Roe strongly advised ‘that if you will profit, seek it at sea, and in quiet trade; for without controversy, it is an error to affect garrisons and land-wars in India’. The Company heeded his advice and followed it to their advantage for most of the following century.

अपनी असफलताओं के बावजूद, रो एक कुशल कूटनीतिज्ञ थे और उन्होंने कंपनी को कई बहुमूल्य सलाह दीं। उन्होंने सुझाव दिया कि कंपनी को बल का प्रयोग केवल समुद्र में ही करना चाहिए। जहाँगीर और उनके 200,000 अनुयायियों के साथ भारत यात्रा के दौरान उन्होंने मुगलों की विशाल सैन्य शक्ति देखी थी। उन्हें यह अहसास था कि कंपनी ज़मीन पर

मुगलों को चुनौती देने की उम्मीद नहीं कर सकती। रो ने बताया कि यद्यपि पुर्तगालियों के पास कई सैनिक और कई किले थे, फिर भी उन्हें इससे कोई बड़ा लाभ नहीं हुआ। इसी प्रकार, डच, जो विजय प्राप्त करने पर तुले हुए थे, ने पाया कि उनकी सेनाओं की लागत उनके सभी लाभों को ग्रहण कर लेती है। रो ने दृढ़ता से सलाह दी कि 'यदि आप लाभ कमाना चाहते हैं, तो इसे समुद्र में और शांतिपूर्ण व्यापार के माध्यम से प्राप्त करें; क्योंकि बिना किसी विवाद के, भारत में सैन्य छावनियाँ और ज़मीनी युद्ध करना एक गलती है।' कंपनी ने उनकी सलाह मानी और अगली शताब्दी के अधिकांश समय तक इसका लाभ उठाया।

Four

चार

THE ENGLISH

अंग्रेज

SPLENDOUR AND DISEASE

वैभव और रोग

The English East India Company esteem it necessary, as well for the honour of the English nation, as facilitating of their traffick, to maintain their principal servants in India, not only in decency, but splendour.

इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी का मानना था कि अंग्रेजी राष्ट्र के सम्मान के साथ-साथ अपने व्यापार को सुगम बनाने के लिए भी भारत में अपने प्रमुख कर्मचारियों को न केवल शालीनता से, बल्कि वैभवपूर्ण तरीके से रखना आवश्यक है।

John Ovington

जॉन ओविंगटन

A Voyage to Surat in the Year 1689

सन् 1689 में सूरत की यात्रा

In London the East India Company's establishment had, of course, grown from the original one-and-a-half employees. Nevertheless, it was kept very modest, much of the work still being done by the Company's directors. The Company finally moved out of Sir Thomas Smythe's house in 1621. It then moved to its own premises in Crosby House in Bishopsgate, part of which it had already been using as a warehouse. However, when in 1638 the lease expired, it moved back into the private house of its governor.

लंदन में ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्यालय, ज़ाहिर है, शुरुआत में डेढ़ कर्मचारियों से बढ़कर काफी बड़ा हो चुका था। फिर भी, इसे बहुत ही सीमित रखा गया था, और अधिकांश काम कंपनी के निदेशकों द्वारा ही किया जाता था। कंपनी अंततः 1621 में सर थॉमस स्माइथ के घर

से निकलकर बिशप्सगेट के क्रॉस्बी हाउस में अपने निजी परिसर में चली गई, जिसका एक हिस्सा वह पहले से ही गोदाम के रूप में इस्तेमाल कर रही थी। हालांकि, 1638 में पट्टा समाप्त होने पर, कंपनी अपने गवर्नर के निजी घर में वापस चली गई।

The employees, in London and abroad, were governed by very strict and comprehensive rules. Every person, from the treasurer to the beadle, had his duties exactly described in the 'Lawes and Standing Orders' of 1621. Apart from describing what accounts and reports were required, it laid down instructions for the searching of staff that handled stock, the locking of hatches during the dinner break and it even directed the surgeon general to make sure that he cut everybody's hair once every forty days.

लंदन और विदेशों में कार्यरत कर्मचारियों पर अत्यंत सख्त और व्यापक नियम लागू थे। कोषाध्यक्ष से लेकर प्रबंधक तक, प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्यों का 1621 के 'नियम और स्थायी आदेश' में सटीक वर्णन किया गया था। इसमें न केवल आवश्यक खातों और रिपोर्टों का वर्णन था, बल्कि स्टॉक संभालने वाले कर्मचारियों की तलाशी, भोजन अवकाश के दौरान दरवाज़े बंद रखने के निर्देश भी थे, और यहाँ तक कि सर्जन जनरल को यह सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया गया था कि वह हर चालीस दिनों में एक बार सभी के बाल काटे।

Portuguese control of the Arabian Sea – the sea route that carried the trade between India and the markets of Arabia, Turkey and much of Europe – was finally destroyed at Ormuz, the fort at the mouth of the Persian Gulf that had been built by Albuquerque. The Company's factors at Surat had always been keen to open trade with Persia. In 1618 the first Persian silks exported from the Company's new trading posts in Shiraz and Isfahan reached Surat. In 1620 there was an inconclusive naval battle off the Persian coast between the English and the Portuguese. In 1621 the Shah of Persia, irritated by

Portuguese attempts to gain a monopoly over his country's exports, sent an army to dislodge the Portuguese at Ormuz. However, since Ormuz was an island and the Persians had no proper navy, this failed.

अरब सागर पर पुर्तगालियों का नियंत्रण – जो भारत और अरब, तुर्की तथा यूरोप के अधिकांश देशों के बाज़ारों के बीच व्यापार का मुख्य मार्ग था – अंततः ओर्मुज़ में समाप्त हो गया। ओर्मुज़ फारस की खाड़ी के मुहाने पर स्थित एक किला था जिसे अल्बुकर्क ने बनवाया था। सूरत में कंपनी के प्रतिनिधि हमेशा से फारस के साथ व्यापार शुरू करने के इच्छुक थे। 1618 में शिराज और इस्फ़हान में कंपनी की नई व्यापारिक चौकियों से निर्यात किया गया पहला फारसी रेशम सूरत पहुँचा। 1620 में फारसी तट पर अंग्रेजों और पुर्तगालियों के बीच एक अनिर्णायक नौसैनिक युद्ध हुआ। 1621 में फारस के शाह, अपने देश के निर्यात पर पुर्तगालियों के एकाधिकार प्राप्त करने के प्रयासों से नाराज़ होकर, ओर्मुज़ में पुर्तगालियों को खदेड़ने के लिए एक सेना भेजी। हालाँकि, ओर्मुज़ एक द्वीप था और फारसियों के पास कोई उचित नौसेना नहीं थी, इसलिए यह प्रयास विफल रहा।

A Company fleet of four ships, commanded by John Weddell, arrived off Ormuz at the end of 1621. Weddell had qualms about siding with a Muslim power against a Christian one, especially one that the English were supposed to be at peace with. Moreover, he had no authority to attack Ormuz. The Company in London was anxious to avoid expensive military adventures and had ordered its employees to confine their activities to profitable commerce. Not for the last time, their man on the spot ignored these strictures. Spurred on by promises of trading concessions for the Company and of booty for himself, Weddell 'resolved to invite our enymies to a banquet of fire flying bullits.'

1621 के अंत में जॉन वेडेल के नेतृत्व में चार जहाजों का एक बेड़ा ओर्मुज़ के तट पर पहुँचा। वेडेल एक ईसाई शक्ति के विरुद्ध एक मुस्लिम शक्ति का साथ देने को लेकर संशय में था, विशेषकर उस शक्ति का जिसके साथ अंग्रेजों का शांतिपूर्ण संबंध माना जाता था। इसके

अलावा, ओर्मुज़ पर हमला करने का उसे कोई अधिकार नहीं था। लंदन स्थित कंपनी महंगे सैन्य अभियानों से बचना चाहती थी और उसने अपने कर्मचारियों को लाभदायक व्यापार तक ही सीमित रहने का आदेश दिया था। यह आखिरी बार नहीं था जब मौके पर मौजूद उनके अधिकारी ने इन निर्देशों की अवहेलना की। कंपनी के लिए व्यापारिक रियायतों और खुद के लिए लूट के माल के वादों से प्रेरित होकर, वेडेल ने "अपने शत्रुओं को आग बरसाने वाली गोलियों की दावत देने का संकल्प लिया।"

First the English and Persians took Quism, a nearby island that the Portuguese used to obtain fresh water from. Weddell then ferried the Persians to Ormuz to besiege the fort. The English went into battle against the five Portuguese galleons, while the Persians mined the fort's walls. After two months of fighting and ravaged by disease, the Portuguese surrendered.

सबसे पहले अंग्रेजों और फारसियों ने पास के द्वीप क्विस्म पर कब्जा कर लिया, जहाँ से पुर्तगाली ताजे पानी का स्रोत लेते थे। इसके बाद वेडेल ने फारसियों को ओर्मुज द्वीप पर पहुँचाया ताकि वे किले को घेर सकें। अंग्रेजों ने पाँच पुर्तगाली गैलियन जहाजों से युद्ध किया, जबकि फारसियों ने किले की दीवारों में बारूदी सुरंगें बिछा दीं। दो महीने तक चले युद्ध और बीमारियों से बुरी तरह त्रस्त होने के बाद पुर्तगालियों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

For a few more years there were sporadic battles between the English – sometimes in alliance with the Dutch – and the Portuguese. However, the capture of Ormuz combined with Dutch victories over the Portuguese in the East had effectively brought the years of Portuguese rule over the Indian Ocean to an end. In 1633 the English and the Portuguese declared a truce, which opened up Goa and the other Portuguese bases to English merchants.

कुछ और वर्षों तक अंग्रेजों (कभी-कभी डचों के साथ गठबंधन में) और पुर्तगालियों के बीच छिटपुट युद्ध होते रहे। हालाँकि, ओर्मुज़ पर कब्ज़ा और पूर्व में पुर्तगालियों पर डचों की विजय ने हिंद महासागर पर पुर्तगाली शासन के वर्षों का प्रभावी रूप से अंत कर दिया। 1633 में

अंग्रेजों और पुर्तगालियों ने एक युद्धविराम की घोषणा की, जिससे गोवा और अन्य पुर्तगाली ठिकाने अंग्रेज व्यापारियों के लिए खुल गए।

There was, and still is, a perception in Europe that Mughal India was a land of plenty. The tales by travellers about the wealth of their rulers, about their chests of jewels and their marble palaces, obscured the reality that the vast majority of the population were poor people living in a badly managed economy. It was true that the Mughals had brought a measure of peace to their domains and that this had benefited the populace, but their system of governance was seriously flawed.

यूरोप में यह धारणा थी, और आज भी है, कि मुगलकालीन भारत एक समृद्ध देश था। यात्रियों द्वारा शासकों की संपत्ति, उनके रत्नों से भरे खजाने और संगमरमर के महलों के बारे में सुनाई गई कहानियों ने इस वास्तविकता को छिपा दिया कि अधिकांश आबादी गरीब थी और एक कुप्रबंधित अर्थव्यवस्था में जीवन यापन कर रही थी। यह सच था कि मुगलों ने अपने राज्य में कुछ हद तक शांति स्थापित की थी और इससे जनता को लाभ हुआ था, लेकिन उनकी शासन प्रणाली में गंभीर खामियां थीं।

The land of India usually belonged to the cultivator. He was entitled to sustenance from it, but only for the bare necessities of life and nothing more. All ‘surplus’ produce was subject to seizure by the government. This was effected by either taking the produce itself or a cash equivalent. In theory, one-third of the crop might be demanded. In practice, as a result of corruption or greed, the amount taken usually varied between one half and two-thirds. Most foreign travellers in Mughal India who have left us a record were appalled. As the Dutch senior factor, Francisco Pelsaert, reported in 1626:

भारत की भूमि आमतौर पर किसान की होती थी। उसे इससे जीविका प्राप्त करने का अधिकार था, लेकिन केवल जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए, इससे अधिक कुछ नहीं। सभी 'अतिरिक्त' उपज सरकार द्वारा जब्त की जा सकती थी। यह या तो उपज को स्वयं लेकर या उसके समतुल्य नकद लेकर किया जाता था। सैद्धांतिक रूप से, फसल का एक तिहाई हिस्सा मांगा जा सकता था। व्यवहार में, भ्रष्टाचार या लालच के कारण, ली गई मात्रा आमतौर पर आधे से दो तिहाई के बीच भिन्न होती थी। मुगल भारत में यात्रा करने वाले अधिकांश विदेशी यात्री, जिन्होंने हमें अपने रिकॉर्ड दिए हैं, इस स्थिति से भयभीत थे। जैसा कि डच वरिष्ठ अधिकारी, फ्रांसिस्को पेल्सेर्ट ने 1626 में रिपोर्ट किया था:

The land would give a plentiful, or even an extraordinary yield, if the peasants were not so cruelly and pitilessly oppressed; for villages which, owing to some small shortage of produce, are unable to pay the full amount of the revenue-farm, are made prize, so to speak, by their masters or governors, and wives and children sold, on a pretext of a charge of rebellion. The rich in their great superfluity and absolute power, and the utter subjection and poverty of the common people – poverty so great and miserable that the life of the people can be depicted or accurately described only as the home of stark want and bitter woe.

यदि किसानों पर इतना क्रूर और निर्दयी अत्याचार न होता, तो भूमि भरपूर, बल्कि असाधारण उपज देती; क्योंकि जिन गांवों में उपज की थोड़ी सी कमी के कारण कर की पूरी राशि अदा करने में असमर्थता होती है, उन्हें उनके स्वामी या शासक एक तरह से लूट का माल बना लेते हैं, और विद्रोह के आरोप में उनकी पत्नियों और बच्चों को बेच दिया जाता है। धनी लोग अपनी अपार संपत्ति और निरंकुश शक्ति में डूबे रहते हैं, जबकि आम लोग घोर गुलामी और गरीबी में जी रहे होते हैं – गरीबी इतनी भीषण और दयनीय है कि आम लोगों के जीवन को घोर अभाव और घोर पीड़ा के घर के रूप में ही चित्रित या सटीक रूप से वर्णित किया जा सकता है।

The income from some land went directly to the emperor. The revenue from most land, however, was used to reward a small class of nobles, officers and administrators in return for providing troops and service, with the income from a number of villages. To stop these men from forming any close bonds with the villagers, which might possibly lead to a rebellion, the ownership of these villages was regularly changed every two, three or four years. As a result there was no incentive for the receiver of the revenue to make any improvements to his villages or the land. Even worse, often they farmed out by auction the right to the revenue, which led to an even greater oppression by those who had secured the rights by high bids. Moreover, there was no incentive for the Mughal officials to invest their incomes in anything else that was productive since, when they died, their wealth could not be passed on to their families but it reverted to the emperor. With their money, the Mughals were great patrons of art and architecture, poetry and dance. However, except possibly under Akbar, they did virtually nothing to improve the economy of India or the life of its common people.

कुछ भूमि से होने वाली आय सीधे सम्राट के पास जाती थी। हालाँकि, अधिकांश भूमि से प्राप्त राजस्व का उपयोग सैनिकों और सेवाओं की आपूर्ति के बदले में कुछ चुनिंदा अमीरों, अधिकारियों और प्रशासकों को पुरस्कृत करने के लिए किया जाता था, साथ ही कुछ गाँवों से प्राप्त आय का भी उपयोग होता था। इन लोगों को ग्रामीणों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने से रोकने के लिए, जिससे विद्रोह की संभावना थी, इन गाँवों का स्वामित्व हर दो, तीन या चार साल में नियमित रूप से बदल दिया जाता था। परिणामस्वरूप, राजस्व प्राप्तकर्ता के पास अपने गाँवों या भूमि में कोई सुधार करने का कोई प्रोत्साहन नहीं था। इससे भी बुरी बात यह थी कि वे अक्सर राजस्व के अधिकार की नीलामी करते थे, जिससे ऊँची बोली लगाकर अधिकार प्राप्त करने वालों द्वारा और भी अधिक अत्याचार होता था। इसके अलावा, मुगल अधिकारियों के पास अपनी आय को किसी अन्य उत्पादक कार्य में निवेश करने का कोई

प्रोत्साहन नहीं था, क्योंकि उनकी मृत्यु के बाद उनकी संपत्ति उनके परिवारों को नहीं मिलती थी, बल्कि सम्राट के पास वापस चली जाती थी। अपने धन से, मुगलों ने कला और वास्तुकला, कविता और नृत्य को बहुत संरक्षण दिया। हालाँकि, संभवतः अकबर के शासनकाल को छोड़कर, उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था या आम लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिए वस्तुतः कुछ भी नहीं किया।

Probably the best account of life and work in the Company's service in India in the first half of the seventeenth century was written by Peter Mundy. Born in Cornwall, about 1596, he was the son of a pilchard merchant. He went to a local school; then when he was only twelve, his father sent him to France to learn the language. Three years later he became a 'cabin-boy', a type of apprentice, to a captain who travelled the Mediterranean visiting English factories. Subsequently, he spent four years in Spain as a factor and in learning the language. He then went for four years to Constantinople. He returned home overland in 1620 and began to write the observations and diaries he was to continue for the rest of his life. He was a competent draughtsman and made drawing of such people, animals, plants and buildings that took his fancy. In 1627:

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भारत में कंपनी की सेवा में जीवन और कार्य का सबसे अच्छा विवरण शायद पीटर मुंडी द्वारा लिखा गया था। लगभग 1596 में कॉर्नवाल में जन्मे, वे एक सार्डिन व्यापारी के पुत्र थे। उन्होंने एक स्थानीय स्कूल में पढ़ाई की; फिर जब वे केवल बारह वर्ष के थे, तो उनके पिता ने उन्हें भाषा सीखने के लिए फ्रांस भेज दिया। तीन साल बाद वे एक कप्तान के यहाँ प्रशिक्षु बन गए, जो भूमध्य सागर में अंग्रेजी कारखानों का दौरा करते थे। इसके बाद, उन्होंने स्पेन में एक फैक्टर के रूप में और भाषा सीखने में चार साल बिताए। फिर वे चार साल के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल गए। वे 1620 में सड़क मार्ग से घर लौटे और अपने

जीवन के शेष समय तक अपने अवलोकन और डायरी लिखना शुरू किया। वे एक कुशल चित्रकार थे और उन्होंने ऐसे लोगों, जानवरों, पौधों और इमारतों के चित्र बनाए जो उन्हें पसंद आए। 1627 में:

Desirous of imployment, as also to see forraigne Countries, I came to London againe, where I found entertainement of the honourable Company of English Merchants trading for East India, to proceed thither in their next shipps.

रोजगार की इच्छा के साथ-साथ विदेशी देशों को देखने की चाह में, मैं फिर से लंदन आया, जहाँ मुझे पूर्वी भारत के लिए व्यापार करने वाले अंग्रेजी व्यापारियों की सम्मानित कंपनी द्वारा उनके अगले जहाजों में वहाँ जाने के लिए स्वागत मिला।

He had been engaged for five years at an annual salary of £25 and arrived at Surat in September 1628. Just before he landed, a collection was held in aid of the Company's alms house for the old and maimed recently established at Poplar in east London. Mundy, happy to have survived the journey, generously donated £3. For the next two years, he was employed as a 'writer' – a clerk. In 1630 it was decided to transfer him to the Company's factory at Agra to be the accountant and second in command. Together with his junior John Yard, he left Surat on 11 November. For protection, as the route was famously beset by bandits, they joined the caravan of '150 persons and about 15 or 20 carts with some cammells' of a Persian travelling to Burhanpur. This route took them due east to Burhanpur, before striking almost north to Agra.

उन्हें पाँच वर्षों के लिए 25 पाउंड के वार्षिक वेतन पर नियुक्त किया गया था और वे सितंबर 1628 में सूरत पहुँचे। उनके उतरने से ठीक पहले, पूर्वी लंदन के पॉप्लर में हाल ही में स्थापित कंपनी के वृद्ध और विकलांगों के लिए बने भिक्षागृह के लिए चंदा इकट्ठा किया गया। मुंडी, यात्रा में सुरक्षित बच जाने से प्रसन्न होकर, उदारतापूर्वक 3 पाउंड दान किए। अगले दो वर्षों तक, उन्होंने एक 'राइटर' - एक क्लर्क - के रूप में काम किया। 1630 में, उन्हें कंपनी के आगरा स्थित कारखाने में लेखाकार और दूसरे सबसे बड़े अधिकारी के रूप में स्थानांतरित

करने का निर्णय लिया गया। अपने कनिष्ठ जॉन यार्ड के साथ, वे 11 नवंबर को सूरत से रवाना हुए। सुरक्षा के लिए, क्योंकि यह मार्ग डाकुओं से कुख्यात था, वे बुरहानपुर जा रहे एक फारसी व्यक्ति के '150 व्यक्तियों और लगभग 15 या 20 गाड़ियों, जिनमें कुछ ऊँट भी थे' के काफिले में शामिल हो गए। यह मार्ग उन्हें सीधे पूर्व की ओर बुरहानपुर ले गया, और फिर लगभग उत्तर की ओर आगरा की ओर मुड़ गया।

It was a time of terrible drought and famine. Close to Surat, some women were selling their children for twelve old pence or less. On the way to Nandurbar a few miles further on 'all the high way was strowed with dead people, our noses never free of the stinck of them, especially about townes; for they dragg them out by the heeles starke naked, of all ages and sexes, till they are out of the gates, and there they are lefte, soe that the way is halfe barred upp'. When they reached Nandurbar, they 'were much troubled to finde a room convenient for our little tent, by reason of the number of dead bodyes that lay scattered in and about the towne. Att last wee tooke up our lodginge amonge the tombes'.

यह भयंकर सूखे और अकाल का दौर था। सूरत के पास, कुछ औरतें अपने बच्चों को बारह पेंस या उससे भी कम में बेच रही थीं। नंदुरबार के रास्ते में कुछ मील आगे जाने पर, 'पूरा राजमार्ग लाशों से भरा पड़ा था, उनकी दुर्गंध से हमारी नाकें कभी नहीं बच पाती थीं, खासकर कस्बों के आसपास; क्योंकि वे उन्हें नंगा ही एड़ियों से घसीटते हुए शहर के फाटकों से बाहर तक ले जाते थे, और वहीं छोड़ देते थे, जिससे रास्ता आधा बंद हो जाता था।' जब वे नंदुरबार पहुँचे, तो 'शहर में और उसके आसपास बिखरी लाशों की संख्या के कारण हमें अपने छोटे से तंबू के लिए उपयुक्त जगह ढूंढने में बहुत परेशानी हुई। अंत में हमने कब्रों के बीच अपना ठिकाना बनाया।'

They stayed on in Nandurbar the next day, where they were assailed by a 'most noysome smell' that they eventually tracked down to a pit full or corpses. Mundy was shocked 'to see the poore people scrapeinge on the

dunghills for food, yea in the very excrement of beasts, as horse, oxen, etts, belonginge to travellers, for grain that perchance might come undigested from them.'

अगले दिन वे नंदुरबार में ही रुके, जहाँ उन्हें एक 'बेहद दुर्गंध' का सामना करना पड़ा, जिसका पता उन्होंने अंततः लाशों से भरे एक गड्ढे से लगाया। मुंडी यह देखकर दंग रह गए कि 'गरीब लोग भोजन के लिए गोबर के ढेरों पर, यहाँ तक कि यात्रियों के घोड़ों, बैलों आदि जैसे जानवरों के मल में भी अनाज की तलाश कर रहे थे, जो शायद उनसे बिना पचा हुआ निकल आए।'

When the caravan left the following day, it was joined along the way by many wanting to escape the famine – at least 1,700 people and 250 carts, together with oxen and buffaloes. When they reached Nimgul they found food for themselves and their horses, although the streets were full of the dead. On 27 November they reached Yaval, where there were fertile fields of sugar cane and fruit. Next day they were in Navi – 'Heere in the middle of the bazaree lay people new dead and others breathing their last with the food almost att their mouthes, yett dyed for want of it, they not haveinge wherewith to buy, nor the others so much pittie to spare them any without money'.

अगले दिन जब काफिला रवाना हुआ, तो रास्ते में अकाल से बचने की चाह रखने वाले कई लोग उससे जुड़ गए – कम से कम 1,700 लोग और 250 गाड़ियाँ, साथ ही बैल और भैंसें भी। जब वे निमगुल पहुँचे तो उन्हें अपने और अपने घोड़ों के लिए भोजन मिल गया, हालाँकि सड़कें मृतकों से भरी हुई थीं। 27 नवंबर को वे यवाल पहुँचे, जहाँ गन्ने और फलों के उपजाऊ खेत थे। अगले दिन वे नवी में थे – 'यहाँ बाज़ार के बीचोंबीच नए मरे हुए लोग और अन्य लोग अपनी अंतिम साँसें ले रहे थे, खाना लगभग उनके मुँह तक पहुँच चुका था, फिर भी वे भूख से मर रहे थे, उनके पास खरीदने के लिए कुछ नहीं था, और न ही दूसरों में इतनी दया थी कि वे उन्हें बिना पैसे के कुछ दे सकें।'

The caravan reached Burhanpur on 30 November. By then there was less sign of the famine. Mundy had been instructed to collect some money owed by the Raja of Bundi for a tapestry the Company had sold to him, but the raja was away. Mundy and Yard were now leaving the Persian's caravan behind. It took them several days to buy camels for their own journey onwards.

30 नवंबर को काफिला बुरहानपुर पहुंचा। तब तक अकाल के लक्षण काफी कम हो चुके थे। मुंडी को बूंदी के राजा से कंपनी द्वारा बेची गई एक टेपेस्ट्री के लिए बकाया राशि वसूलने का निर्देश दिया गया था, लेकिन राजा बाहर थे। मुंडी और यार्ड अब फारसी काफिले को पीछे छोड़ रहे थे। उन्हें अपनी आगे की यात्रा के लिए ऊंट खरीदने में कई दिन लग गए।

Mundy and his party left for Agra on 6 December. They had no trouble buying provisions and, despite having lost the Persian's protection, were not troubled by thieves. The fields were full of corn and they saw huge caravans of oxen, at least a mile-and-a-half long, taking provisions south to the Mughal armies.

मुंडी और उनके साथी 6 दिसंबर को आगरा के लिए रवाना हुए। उन्हें राशन खरीदने में कोई परेशानी नहीं हुई और फारसियों का संरक्षण खोने के बावजूद उन्हें चोरों से कोई दिक्कत नहीं हुई। खेत अनाज से भरे हुए थे और उन्होंने बैलों के विशाल काफिले देखे, जो कम से कम डेढ़ मील लंबे थे और मुगल सेनाओं के लिए राशन दक्षिण की ओर ले जा रहे थे।

On Christmas Day, a messenger arrived from the chief of the Company's factory at Agra with a letter inquiring about their welfare. For dinner – 'the cheifest dish boare the name of a peece of rostbeefe (because this day of all dayes it is most in request), but the trueth is, it was a peece of buffalo, both hard and tough, a sufficient tryall of our jawes and stomacks; but for our better digestion wee added a cupp of sack, of what was left us, and therewith remembring our friends'.

क्रिसमस के दिन, आगरा स्थित कंपनी के कारखाने के प्रमुख का एक संदेशवाहक पत्र लेकर आया, जिसमें उनके कुशल मंगल की सूचना दी गई थी। भोजन में – 'मुख्य व्यंजन का नाम

भुने हुए गोमांस का टुकड़ा था (क्योंकि इस दिन इसकी सबसे अधिक मांग होती है), लेकिन सच्चाई यह है कि यह भैंस का एक टुकड़ा था, जो कठोर और सख्त था, हमारे जबड़े और पेट के लिए पर्याप्त परीक्षा थी; लेकिन बेहतर पाचन के लिए हमने बचे हुए में से एक कप शराब भी पी ली, और इस तरह अपने मित्रों को याद किया।'

Next day they travelled on to Dongri. On the way, they met two Dutch merchants going to Surat with a caravan of 800 camels carrying saltpetre and indigo. Before the caravans passed in opposite directions, the Dutch gave them dinner. On 30 December Mundy reached Gwalior. He was greatly impressed with its massive fort and made a sketch. On 1 January 1631, the caravan crossed the Chambal River and safely navigated its famously bandit-ridden ravines – 'for there might lurke many thousand, and wee never the wiser'.

अगले दिन वे डोंगरी के लिए रवाना हुए। रास्ते में उनकी मुलाकात दो डच व्यापारियों से हुई जो 800 ऊंटों के काफिले के साथ सूरत जा रहे थे। ऊंटों के काफिले में सट्टा और नील लदा हुआ था। काफिले के अलग-अलग दिशाओं में जाने से पहले डचों ने उन्हें भोजन कराया। 30 दिसंबर को मुंडी ग्वालियर पहुंचे। वे वहां के विशाल किले से बहुत प्रभावित हुए और उसका एक रेखाचित्र बनाया। 1 जनवरी 1631 को काफिला चंबल नदी पार कर गया और उसके कुख्यात डाकुओं से भरे दर्रों से सुरक्षित निकल गया – "क्योंकि वहां हजारों डाकू छिपे हो सकते थे और हमें इसकी भनक तक नहीं लगती।"

On 3 January 1631, Peter Mundy and his companions finally reached Agra. The chief of the Company's factory, William Fremlen, and his colleague went out to meet him. Soon afterwards they were joined by the chief of the Dutch factory and they all went together to the emperor's garden. Mundy relaxed at the English house for the next two or three days, where he met with various Dutch merchants and also with an Italian and a Frenchman.

3 जनवरी 1631 को पीटर मुंडी और उनके साथी आखिरकार आगरा पहुँचे। कंपनी के कारखाने के प्रमुख विलियम फ्रेमलेन और उनके सहयोगी उनसे मिलने आए। कुछ ही देर बाद डच कारखाने के प्रमुख भी उनसे जुड़ गए और वे सब मिलकर सम्राट के बगीचे में गए। मुंडी ने अगले दो-तीन दिन अंग्रेज़ों के घर में आराम किया, जहाँ उनकी मुलाकात कई डच व्यापारियों के साथ-साथ एक इतालवी और एक फ्रांसीसी व्यक्ति से भी हुई।

Mundy calculated that on the eight-week journey he had covered 551 and a half miles. Having arrived safely, he wrote –'God's holy name be praised for our preservation to this place.'

मुंडी ने अनुमान लगाया कि आठ सप्ताह की यात्रा में उन्होंने साढ़े 551 मील की दूरी तय की थी। सुरक्षित पहुँचने पर उन्होंने लिखा, 'इस स्थान तक हमारी सुरक्षा के लिए ईश्वर के पवित्र नाम की स्तुति हो।'

We have no account of Mundy's first year in Agra. Towards the close of 1631 he went on a month-long expedition, north of Agra, to Koil and Shergarh to buy saltpetre, an ingredient of gunpowder and one of the Company's main exports, and indigo. At Koil, Mundy passed through a mango grove where the headless bodies of thieves hung upside down. The heads of the decapitated thieves were displayed in many small towers into which they had been cemented. Mundy made a sketch of these. Around the town there were also many bodies on stakes. He commented on the cruelties of the Mughal officials, who employ Hindus 'taking from them all they can gett by their labour, leavinge them nothinge but their badd mudd walled ill thatched howses, and a few cattle to till the ground, besides other misseries.'

आगरा में मुंडी के पहले वर्ष का कोई विवरण हमारे पास नहीं है। 1631 के अंत में, वे आगरा के उत्तर में कोइल और शेरगढ़ की एक महीने लंबी यात्रा पर गए, ताकि बारूद का एक घटक

और कंपनी के मुख्य निर्यातों में से एक, सॉल्टपीटर और नील खरीद सकें। कोइल में, मुंडी एक आम के बाग से गुज़रे जहाँ चोरों के सिर कटे शव उल्टे लटके हुए थे। कटे हुए चोरों के सिर कई छोटी मीनारों में सीमेंट से जड़े हुए प्रदर्शित किए गए थे। मुंडी ने इनका एक रेखाचित्र बनाया। शहर के चारों ओर भी कई शव खंभों पर लटके हुए थे। उन्होंने मुगल अधिकारियों की क्रूरता पर टिप्पणी की, जो हिंदुओं को काम पर लगाकर, उनकी मेहनत से सब कुछ छीन लेते थे, और उन्हें केवल मिट्टी की दीवारों वाले खराब छप्पर वाले घर और ज़मीन जोतने के लिए कुछ मवेशी ही देते थे, इसके अलावा और भी कई कष्ट देते थे।

Mundy took a short break from his business travels to see the River Ganges. As it was the dry season, it was only half a mile wide. He took a boat across but swam back. At Koil he weighed and packed up indigo. Then he proceeded to Shergarh to collect 400 bundles of saltpetre, before returning to Agra.

मुंडी ने व्यापारिक यात्राओं से कुछ समय निकालकर गंगा नदी को देखने का फैसला किया। शुष्क मौसम होने के कारण नदी केवल आधा मील चौड़ी थी। उन्होंने नाव से नदी पार की, लेकिन तैरकर वापस आ गए। कोइल में उन्होंने नील का वजन किया और उसे पैक किया। फिर वे शेरगढ़ गए और वहां से 400 बंडल सॉल्टपीटर इकट्ठा किया, जिसके बाद वे आगरा लौट आए।

At Agra, Mundy witnessed the construction of the Taj Mahal – 'this Kinge is now building a sepulchre for his late deceased Queen Tage Moholl. He intends it shall excell all other.'

आगरा में मुंडी ने ताजमहल का निर्माण देखा – 'यह राजा अपनी दिवंगत रानी ताजमहल के लिए एक मकबरा बनवा रहा है। उसका इरादा है कि यह अन्य सभी मकबरों से श्रेष्ठ होगा।'

In August 1632, Peter Mundy made another foray from Agra. This was a seven-week journey east to Patna. The Company had a surplus of mercury and vermilion at Agra that it was keen to dispose of. Mundy was of the opinion,

correctly as it turned out, that prices would not be better at Patna. He was also instructed to buy and sell cloth in the Patna region, but he doubted there would be sufficient time to do it profitably. Nevertheless, he welcomed the opportunity to see more of India.

अगस्त 1632 में, पीटर मुंडी ने आगरा से एक और यात्रा की। यह सात सप्ताह की पूर्व दिशा की ओर पटना की यात्रा थी। कंपनी के पास आगरा में पारा और सिंदूर का अधिशेष था जिसे वह बेचना चाहती थी। मुंडी का मानना था, जो बाद में सही साबित हुआ, कि पटना में कीमतें बेहतर नहीं होंगी। उन्हें पटना क्षेत्र में कपड़ा खरीदने और बेचने का भी निर्देश दिया गया था, लेकिन उन्हें संदेह था कि लाभप्रद रूप से इसे करने के लिए पर्याप्त समय होगा। फिर भी, उन्होंने भारत के और अधिक हिस्सों को देखने के इस अवसर का स्वागत किया।

From Agra, Mundy's eight ox carts followed a line just north of the River Jumna to Banaras. It was an area that had recently been plagued by bandits. These had been put down by a Mughal force of 20,000 foot soldiers and 12,000 horsemen. Many towns had been destroyed, their women and children enslaved and their men beheaded. Mundy saw another 200 towers into each of which had been cemented thirty or forty heads. At Ghatampur he was annoyed by the smoke from a fire being used to cook on by some of his Hindu carters. He took up a tent pin and threw it at their pot. Because his hand had indirectly defiled their food they gave the food to their oxen. Mundy had to hand them money to buy more. There were heavy rains and the poor road was pooled with water and badly pitted. Time after time the carts would get stuck. On the way they met with a caravan of 14,000 oxen carrying grain to Agra and then another of 20,000 oxen laden with sugar.

आगरा से मुंडी की आठ बैलगाड़ियाँ यमुना नदी के ठीक उत्तर में एक सीधी रेखा में बनारस की ओर चल पड़ीं। यह वह इलाका था जो हाल ही में डाकुओं से त्रस्त था। इन डाकुओं को मुगल सेना के 20,000 पैदल सैनिकों और 12,000 घुड़सवारों ने कुचल दिया था। कई शहर

तबाह हो गए थे, उनकी महिलाओं और बच्चों को गुलाम बना लिया गया था और उनके पुरुषों के सिर काट दिए गए थे। मुंडी ने लगभग 200 और मीनारें देखीं, जिनमें से प्रत्येक में तीस या चालीस सिर सीमेंट से जड़े हुए थे। घाटमपुर में, उनके कुछ हिंदू बैलगाड़ियों द्वारा खाना पकाने के लिए इस्तेमाल की जा रही आग से निकलने वाले धुएं से उन्हें चिढ़ हुई। उन्होंने एक तंबू की कील उठाई और उनके बर्तन पर फेंक दी। चूंकि उनके हाथ से अप्रत्यक्ष रूप से उनका खाना अपवित्र हो गया था, इसलिए उन्होंने वह खाना अपने बैलों को दे दिया। मुंडी को उन्हें और खाना खरीदने के लिए पैसे देने पड़े। भारी बारिश हो रही थी और खराब सड़क पानी से भरी हुई थी और बुरी तरह से गड्ढों में धंसी हुई थी। बार-बार गाड़ियाँ फंस जाती थीं। रास्ते में उनकी मुलाकात आगरा अनाज ले जा रहे 14,000 बैलों के एक काफिले से हुई और फिर चीनी से लदे 20,000 बैलों के एक अन्य काफिले से हुई।

At Allahabad, where the River Jumna had joined the Ganges, Mundy's eight carts had to wait for boats to cross the now three-quarter-mile wide river. Once they had crossed, there was a thunderstorm, which left them struggling knee-deep in water. Twice they were stopped by bandits and Mundy had to make a small payment to proceed. At Banaras, Mughal officials threatened to commandeer Mundy's carts. These too had to be bought off. Mundy then went ahead of his carts to find accommodation at Patna. The caravan arrived three days later, forty-four days after leaving Agra.

इलाहाबाद में, जहाँ यमुना नदी गंगा से मिलती थी, मुंडी के आठ रथों को अब तीन-चौथाई मील चौड़ी नदी पार करने के लिए नावों का इंतज़ार करना पड़ा। नदी पार करने के बाद, एक भयंकर तूफान आ गया, जिससे रथ घुटनों तक पानी में फंस गए। दो बार डाकुओं ने उन्हें रोका और मुंडी को आगे बढ़ने के लिए थोड़ी रकम देनी पड़ी। बनारस में, मुगल अधिकारियों ने मुंडी के रथों को ज़ब्त करने की धमकी दी। उन्हें भी रिश्वत देकर छुड़ाना पड़ा। इसके बाद मुंडी अपने रथों से आगे निकलकर पटना में ठहरने की जगह खोजने चले गए। आगरा से निकलने के चौवालीस दिन बाद, तीन दिन बाद उनका काफिला पटना पहुँचा।

Peter Mundy then set to business. As he had expected, he had little success. Finding the price of mercury and vermilion to be low he sent a messenger to Agra for instructions. Told to sell them at whatever he could get, he sold them at a loss. The cloth he acquired in the surrounding area was also sold at a loss. It eventually transpired that his superiors had sent him to the wrong place for the cloth and should have sent him to Samana, north of Agra. Mundy did, however, accumulate some information of future value to the Company. He made inquiries and compiled a list of ports on the Bengal coast. He also made a list of commodities at Patna that could be profitably exploited.

पीटर मुंडी ने फिर अपना काम शुरू किया। जैसा कि उन्होंने अनुमान लगाया था, उन्हें बहुत कम सफलता मिली। पारे और सिंदूर की कीमतें कम देखकर उन्होंने आगरा में निर्देश लेने के लिए एक दूत भेजा। उन्हें निर्देश दिया गया कि वे इन्हें जितनी भी कीमत मिले, बेच दें, लेकिन उन्होंने इन्हें घाटे में बेच दिया। आसपास के क्षेत्र से प्राप्त कपड़ा भी उन्होंने घाटे में बेच दिया। अंततः यह पता चला कि उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने उन्हें कपड़ा लेने के लिए गलत जगह भेजा था और उन्हें आगरा के उत्तर में स्थित समाना भेजना चाहिए था। हालांकि, मुंडी ने कंपनी के लिए भविष्य में उपयोगी कुछ जानकारी जुटा ली। उन्होंने पूछताछ की और बंगाल तट पर स्थित बंदरगाहों की एक सूची तैयार की। उन्होंने पटना में उन वस्तुओं की भी एक सूची बनाई जिनका लाभप्रद रूप से व्यापार किया जा सकता था।

On the return journey he found Banaras ravaged by an epidemic that had resulted in nine out of ten ‘dead or fledd’. Further on, the Mughals had been fighting rebels. The roads were guarded by soldiers and many towns had been destroyed. Mundy came across a mango orchard with fifty or sixty men’s heads hung up by a string through their nostrils. The towers he had seen earlier had been augmented by another sixty with thirty-five or forty heads apiece. At Etawah he saw these towers being built from a ‘great heape of heads lying by’. On 22 December, Mundy and his men reached Agra. It must

have been a grave disappointment to him to find that the caravan he was supposed to command had already left for Surat. This meant he would not catch one of the ships returning to England at the beginning of 1632. He would have to wait for another year.

वापसी यात्रा में उन्होंने बनारस को एक महामारी की चपेट में पाया, जिसमें दस में से नौ लोग या तो मर चुके थे या भाग गए थे। आगे मुगल विद्रोहियों से लड़ रहे थे। सड़कों पर सैनिकों का पहरा था और कई शहर नष्ट हो चुके थे। मुंडी को एक आम का बाग मिला, जिसमें पचास-साठ आदमियों के सिर उनकी नाक में रस्सी से लटकाए हुए थे। जिन मीनारों को उन्होंने पहले देखा था, उनमें साठ और मीनारें जोड़ दी गई थीं, जिनमें से प्रत्येक में पैंतीस-चालीस सिर लटके हुए थे। इटावा में उन्होंने देखा कि ये मीनारें 'आस-पास पड़े सिरों के एक बड़े ढेर' से बनाई जा रही थीं। 22 दिसंबर को मुंडी और उनके साथी आगरा पहुँचे। उन्हें यह जानकर बहुत निराशा हुई होगी कि जिस काफिले का नेतृत्व उन्हें करना था, वह पहले ही सूरत के लिए रवाना हो चुका था। इसका मतलब था कि वे 1632 की शुरुआत में इंग्लैंड लौटने वाले जहाजों में से किसी एक पर सवार नहीं हो पाएंगे। उन्हें एक और साल इंतजार करना पड़ेगा।

After two months in Agra, during which he saw the wedding festivities of two of the emperor's sons, Peter Mundy was placed in charge of the last caravan of the season to Surat. It consisted of 268 camels and 109 carts loaded with indigo and saltpetre and left on 25 February. The route was completely different to the one he had taken when coming – this time he was to go west to Marwar and then down south through Gujarat to Surat. It would be a three-month journey fraught with difficulties.

आगरा में दो महीने बिताने के बाद, जहाँ उन्होंने सम्राट के दो पुत्रों के विवाह समारोह देखे, पीटर मुंडी को सूरत जाने वाले उस मौसम के आखिरी काफिले का नेतृत्व सौंपा गया। इस काफिले में 268 ऊँट और नील तथा शोरा से लदी 109 गाड़ियाँ थीं, जो 25 फरवरी को रवाना

हुईं। यह मार्ग उनके आने के मार्ग से बिल्कुल अलग था – इस बार उन्हें पश्चिम में मारवाड़ जाना था और फिर दक्षिण की ओर गुजरात से होते हुए सूरत पहुँचना था। यह तीन महीने की कठिन यात्रा साबित होने वाली थी।

It began easily enough, for William Fremlen accompanied him for the first week. They joined together with the caravan of the arriving governor of Gujarat, which gave them protection but was difficult to keep pace with. Mundy was able to visit and marvel at the abandoned Mughal city of Fatehpur Sikri. By the side of the road near Bayana he saw the staked bodies of 300 rebels. Two of his carts then broke down, one in the river, and some of the indigo became damp. Fremlen returned to Agra, leaving Mundy on his own.

शुरुआत तो आसान रही, क्योंकि विलियम फ्रेमलेन पहले सप्ताह उनके साथ थे। वे गुजरात के आने वाले गवर्नर के काफिले में शामिल हो गए, जिससे उन्हें सुरक्षा तो मिली, लेकिन काफिले के साथ चलना मुश्किल हो गया। मुंडी को फतेहपुर सिकरी के वीरान मुगल शहर का दौरा करने और उसकी सुंदरता को निहारने का मौका मिला। बयाना के पास सड़क के किनारे उन्होंने 300 विद्रोहियों के शव देखे। फिर उनकी दो गाड़ियाँ खराब हो गईं, एक नदी में, और कुछ नील गीला हो गया। फ्रेमलेन आगरा लौट गए, मुंडी को वहीं छोड़कर।

After Fremlen left, Mundy had an awful time. His carts continually broke down and he was unable to keep up with the governor's caravan. One of his men was killed by thieves. The drivers of the carts and the camel men started a feud – 'draweing their swords and wounding each other'. Mundy mistook some customs men for thieves and after one was 'misused', one of Mundy's men was killed. As a penalty, Mundy also had to pay double the normal transit duty. The roads, which were often lined with dead men on stakes, were very poor. On 28 April, two factors from the Company's factory at Ahmadabad rode out to meet Mundy's caravan, which arrived in the city the next day.

फ्रेमलेन के जाने के बाद मुंडी का समय बहुत कठिन हो गया। उसकी गाड़ियाँ लगातार खराब होती रहीं और वह राज्यपाल के काफिले के साथ नहीं चल पा रहा था। उसके एक आदमी को चोरों ने मार डाला। गाड़ी चालकों और ऊँट चालकों के बीच झगड़ा शुरू हो गया – 'वे तलवारें निकालकर एक-दूसरे को घायल करने लगे'। मुंडी ने कुछ सीमा शुल्क अधिकारियों को चोर समझ लिया और उनमें से एक के साथ दुर्व्यवहार के बाद, मुंडी के एक आदमी की हत्या कर दी गई। जुर्माने के तौर पर, मुंडी को सामान्य पारगमन शुल्क से दुगुना शुल्क भी देना पड़ा। सड़कें बहुत खराब थीं, जिन पर अक्सर खंभों पर लाशें लटकी होती थीं। 28 अप्रैल को, अहमदाबाद स्थित कंपनी के कारखाने से दो फैक्टर मुंडी के काफिले से मिलने निकले, जो अगले दिन शहर पहुँचा।

Mundy spent two weeks in Ahmadabad. He was impressed by the bazaars and streets – 'very large, faire and comfortable' – but they had been depopulated by the recent famine. He met with the Company's three other English merchants and also with a Lieutenant Smith and fifteen Englishmen who had transported money from Surat to the factory. He was also introduced to a number of Dutch merchants. When he went to pay his compliments to the newly installed governor, a large sum was extorted from him for the brief period of protection his caravan had received when it had left Agra.

मुंडी ने अहमदाबाद में दो सप्ताह बिताए। वे वहाँ के बाज़ारों और गलियों से बहुत प्रभावित हुए – 'बहुत बड़े, सुंदर और आरामदायक' – लेकिन हाल ही में पड़े अकाल के कारण वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था। उनकी मुलाकात कंपनी के तीन अन्य अंग्रेज़ व्यापारियों से हुई और साथ ही लेफ्टिनेंट स्मिथ और पंद्रह अंग्रेज़ों से भी, जो सूरत से कारखाने तक पैसा पहुँचाने आए थे। उन्हें कई डच व्यापारियों से भी मिलवाया गया। जब वे नए नियुक्त गवर्नर को बधाई देने गए, तो आगरा से निकलते समय उनके काफिले को मिली थोड़ी सी सुरक्षा के लिए उनसे एक बड़ी रकम वसूल की गई।

Mundy left for Surat on 15 May. On the way to Baroda the caravan was stopped several times by armed bands and Mundy had to pay them off. At

Broach he met two Company officials, one of whom was the John Yard, whom he had originally set out with. The area had been devastated by famine and disease. Barely one person in ten was still alive.

मुंडी 15 मई को सूरत के लिए रवाना हुए। बड़ौदा जाते समय उनके काफिले को कई बार सशस्त्र गिरोहों ने रोका और मुंडी को उन्हें रिश्वत देनी पड़ी। ब्रोच में उनकी मुलाकात कंपनी के दो अधिकारियों से हुई, जिनमें से एक जॉन यार्ड थे, जिनके साथ वे शुरू में निकले थे। वह इलाका अकाल और बीमारी से तबाह हो चुका था। दस में से मुश्किल से एक ही व्यक्ति जीवित बचा था।

On 25 May 1633 Mundy entered Surat. What should have been a happy occasion for him must have been terrible. Of the twenty-one Englishmen he had left behind, only seven had survived. Of those seven, three more died soon afterwards. Business was almost at a standstill – 'there being scarce one man able to write or sett his hand to paper'.

25 मई 1633 को मुंडी सूरत में दाखिल हुए। उनके लिए जो एक खुशी का अवसर होना चाहिए था, वह निश्चित रूप से भयावह साबित हुआ। अपने पीछे छोड़े गए इक्कीस अंग्रेजों में से केवल सात ही जीवित बचे थे। उन सात में से तीन की भी जल्द ही मृत्यु हो गई। व्यापार लगभग ठप्प हो गया था - 'क्योंकि लिखने या कागज पर हाथ चलाने में सक्षम शायद ही कोई व्यक्ति बचा था'।

Peter Mundy stayed at Surat until early the following year. As there was such a shortage of staff, he spent most of that time supervising the loading and unloading of the Company's ships. He sailed for England on 1 February 1634. Mundy would return the next year in very different employment.

पीटर मुंडी अगले वर्ष की शुरुआत तक सूरत में ही रहे। कर्मचारियों की भारी कमी के कारण उन्होंने अपना अधिकांश समय कंपनी के जहाजों पर माल लादने और उतारने की देखरेख में बिताया। वे 1 फरवरी 1634 को इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। मुंडी अगले वर्ष एक बिल्कुल अलग नौकरी में वापस लौटे।

The truce with the Portuguese that had been effected in 1633 should have heralded an expansion of the Company's trade in India, but the Company became fully occupied in fighting off a threat from another rival – an English one.

1633 में पुर्तगालियों के साथ हुई संधि से भारत में कंपनी के व्यापार के विस्तार की उम्मीद थी, लेकिन कंपनी पूरी तरह से एक अन्य प्रतिद्वंद्वी - एक अंग्रेज प्रतिद्वंद्वी - से उत्पन्न खतरे से निपटने में व्यस्त हो गई।

The Company's troubles had begun in 1630 when the rains and harvest in western India had failed. The next year there was an exceptionally violent monsoon and much of the crop was carried away by flood. Typhoid was rampant. In May 1631, when Peter Mundy was in Agra, a Dutch merchant returned from a visit to the interior:

कंपनी की मुसीबतें 1630 में शुरू हुईं जब पश्चिमी भारत में बारिश और फसल खराब हो गई। अगले साल असाधारण रूप से भयंकर मानसून आया और बाढ़ में फसल का बड़ा हिस्सा बह गया। टाइफाइड का प्रकोप चरम पर था। मई 1631 में, जब पीटर मुंडी आगरा में थे, एक डच व्यापारी आंतरिक क्षेत्र की यात्रा से लौटा:

When we came to the city of Surat we could hardly see any living persons, where heretofore were thousands; and there is so great a stench of dead persons that the sound people that came into the town were with the smell infected, and at the corners of the street the dead lay twenty together, one upon another, nobody burying them. The mortality in this town is and hath been so great that there have died above 30,000 people.

जब हम सूरत शहर में आए तो हमें मुश्किल से ही कोई जीवित व्यक्ति दिखाई दिया, जबकि पहले यहाँ हजारों लोग रहते थे। यहाँ मृतकों की इतनी दुर्गंध फैली हुई थी कि स्वस्थ लोग भी उस दुर्गंध से संक्रमित हो गए। गलियों के कोनों पर बीस-बीस शव एक के ऊपर एक पड़े थे

और कोई उन्हें दफनाने नहीं आया था। इस शहर में मृत्यु दर इतनी अधिक है कि यहाँ 30,000 से अधिक लोग मर चुके हैं।

These calamities brought trade to a standstill. The Surat factory went into serious deficit. The finances of the Company had also been affected by a dramatic fall in the price of pepper as the competing powers stepped up exports to the European markets. There was a feeling in London that the Company was not making the best of its monopoly. In 1635, Charles I reneged on the promises in the Company's royal charter. He licensed an associate of Sir William Courten to:

इन आपदाओं के कारण व्यापार ठप्प हो गया। सूरत कारखाने को भारी घाटा हुआ। प्रतिस्पर्धी शक्तियों द्वारा यूरोपीय बाजारों में निर्यात बढ़ाने के कारण काली मिर्च की कीमतों में भारी गिरावट से कंपनी की वित्तीय स्थिति भी प्रभावित हुई थी। लंदन में यह धारणा थी कि कंपनी अपने एकाधिकार का पूरा लाभ नहीं उठा रही है। 1635 में, चार्ल्स प्रथम ने कंपनी के शाही चार्टर में किए गए वादों से मुकर गए। उन्होंने सर विलियम कोर्टेन के एक सहयोगी को लाइसेंस दिया:

Range the seas the all the world over to make prize of all such the treasures, merchandizes, goods, and commodities, which to his best abilities he shall be able to take of infidels, or any other prince, potentate or state not in league with us beyond the line equinoctial.

वह समस्त विश्व के समुद्रों में छानबीन करे और अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार विधर्मियों या किसी अन्य राजकुमार, शक्तिशाली शासक या राज्य से, जो विषुवतीय रेखा के पार हमारे साथ गठबंधन में न हो, सभी खजाने, व्यापारिक वस्तुएं और सामान लूट ले।

This was clear encouragement to piracy – piracy that could jeopardize the East India Company's relationships in Asia. It was also authorization to compete in the Company's markets. The Company protested vigorously but to no avail. Not only had Courten advanced large sums of money to Charles I, but

the king had also invested £10,000 of his own in the enterprise. The threat to the Company was particularly serious since Sir William Courten was an experienced shipowner who had made a vast fortune in Europe and the Americas.

यह समुद्री डकैती को स्पष्ट रूप से बढ़ावा था – ऐसी डकैती जिससे ईस्ट इंडिया कंपनी के एशिया में संबंध खतरे में पड़ सकते थे। यह कंपनी के बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति भी थी। कंपनी ने कड़ा विरोध किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। कोर्टेन ने न केवल चार्ल्स प्रथम को बड़ी रकम दी थी, बल्कि राजा ने भी इस उद्यम में अपने 10,000 पाउंड का निवेश किया था। कंपनी के लिए खतरा विशेष रूप से गंभीर था क्योंकि सर विलियम कोर्टेन एक अनुभवी जहाज मालिक थे जिन्होंने यूरोप और अमेरिका में अपार संपत्ति अर्जित की थी।

Courten's first expedition justified all the Company's fears. Two ships were despatched to Aden. One was wrecked, but the other, captained by William Cobbe who flew Royal Navy colours, captured two Indian ships. One of these ships belonged to a prominent merchant in Surat. In order to find what money was on board, they took the captain:

कोर्टेन के पहले अभियान ने कंपनी के सभी आशंकाओं को सही साबित कर दिया। अदन के लिए दो जहाज भेजे गए। एक जहाज डूब गया, लेकिन दूसरा जहाज, जिसका नेतृत्व रॉयल नेवी के झंडे वाले विलियम कोबे कर रहे थे, ने दो भारतीय जहाजों पर कब्जा कर लिया। इनमें से एक जहाज सूरत के एक प्रमुख व्यापारी का था। जहाज पर मौजूद धन का पता लगाने के लिए, उन्होंने कप्तान को बंदी बना लिया।

Bound both his hands and tied match to his fingers, which burnt them unto the bones; and then he confessed where the money laythen they burnt the nakhuda [captain], the boatswain, the merchants and the carpenters, until they were nearly dead, and confessed all they knew.

उसके दोनों हाथ बांध दिए और उंगलियों में माचिस बांध दी, जिससे उसकी हड्डियां तक जल गईं; फिर उसने कबूल किया कि पैसा कहां रखा था; फिर उन्होंने नखुदा (कप्तान), नाविक,

व्यापारियों और बढ़ई को तब तक जलाया जब तक वे लगभग मर नहीं गए, और उन्होंने वह सब कबूल कर लिया जो वे जानते थे।

This had serious repercussions for the Company in Surat. Their president was arrested by the governor and thrown into jail. He finally bought his way out. A Company ship managed to capture the pirate ship in the Comoros Islands. Some stolen money and jewels were recovered and returned to their owners. William Cobbe escaped and returned to England with £40,000, which was never recovered. Nevertheless, the Company's actions convinced the Mughal authorities that it was not responsible for the misdeeds and its privileges were reinstated.

सूरत में कंपनी को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़े। उनके अध्यक्ष को राज्यपाल ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। अंततः उन्होंने रिश्वत देकर अपना अधिकार छुड़ा लिया। कंपनी के एक जहाज ने कोमोरोस द्वीप समूह में समुद्री लुटेरों के जहाज को पकड़ लिया। कुछ लूटे गए पैसे और गहने बरामद कर उनके मालिकों को लौटा दिए गए। विलियम कोबे बच निकला और 40,000 पाउंड लेकर इंग्लैंड लौट गया, जो कभी बरामद नहीं हुआ। फिर भी, कंपनी की कार्रवाइयों ने मुगल अधिकारियों को आश्वस्त कर दिया कि वह इन कुकर्मों के लिए जिम्मेदार नहीं थी और उसके विशेषाधिकार बहाल कर दिए गए।

Courten then formed a new association, which received a royal warrant to trade in areas of the East controlled by Portugal. He recruited several able men who had been in the Company's service, but had become disaffected. The Courten Association bought four ships and two supply vessels and put them under the command of the hero of Ormuz, John Weddell. This fleet sailed for the East in April 1636. Sir William Courten died soon after and his son William took over as the head of the Association. The ships arrived in Goa in October.

इसके बाद कोर्टेन ने एक नया संगठन बनाया, जिसे पुर्तगाल के नियंत्रण वाले पूर्वी क्षेत्रों में व्यापार करने के लिए शाही अनुमति प्राप्त हुई। उन्होंने कंपनी की सेवा में रहे कई सक्षम

व्यक्तियों को भर्ती किया, जो असंतुष्ट हो गए थे। कोर्टेन संगठन ने चार जहाज और दो आपूर्ति पोत खरीदे और उन्हें ओर्मुज के वीर जॉन वेडेल के नेतृत्व में सौंप दिया। यह बेड़ा अप्रैल 1636 में पूर्व की ओर रवाना हुआ। सर विलियम कोर्टेन का जल्द ही निधन हो गया और उनके बेटे विलियम ने संगठन के प्रमुख का पदभार संभाला। जहाज अक्टूबर में गोवा पहुंचे।

One of Weddell's men was Peter Mundy. A year in England had been enough for him and he had joined the expedition less in the expectation of making money than for his love of travel. Mundy was somewhat obsessed with calculating the distances between the places he visited and usually recorded them in some detail. He later estimated that between 1611 and 1647 he had travelled 100,833 miles and 5 furlongs. Weddell and Mundy stayed in Goa for over three months 'finding nothing butt delaies, faire wordes and breach of promises'.

वेडेल के साथियों में से एक पीटर मुंडी थे। इंग्लैंड में एक साल उनके लिए काफी था और उन्होंने पैसे कमाने की उम्मीद से ज़्यादा यात्रा के अपने शौक के कारण इस अभियान में हिस्सा लिया था। मुंडी को अपने द्वारा देखी गई जगहों के बीच की दूरी की गणना करने का जुनून सवार था और वे आमतौर पर इसे विस्तार से दर्ज करते थे। बाद में उन्होंने अनुमान लगाया कि 1611 और 1647 के बीच उन्होंने 100,833 मील और 5 फर्लांग की यात्रा की थी। वेडेल और मुंडी तीन महीने से अधिक समय तक गोवा में रहे और उन्हें 'विलंब, मीठे वादे और वादों के उल्लंघन के अलावा कुछ नहीं मिला'।

Mundy had plenty of time to look at Goa. He was impressed by its streets, churches, castles and forts built when they were 'drawing all trade from all parts into their owne handes to their incredible benefitt'. But he could see that times were changing – 'their prosperous estate much abated by the coming of the English and Dutch.' The Dutch were currently blockading Goa. They had the better of a naval battle just before Weddell's expedition sailed south.

मुंडी के पास गोवा को देखने के लिए काफी समय था। वे वहाँ की सड़कों, गिरजाघरों, किलों और गढ़ों से बहुत प्रभावित हुए, जो उस समय बने थे जब गोवा "सभी क्षेत्रों से व्यापार को अपने हाथों में खींचकर अपना भरपूर लाभ कमा रहा था"। लेकिन उन्हें यह भी दिखाई दिया कि समय बदल रहा था - "अंग्रेजों और डचों के आगमन से उनकी समृद्ध स्थिति काफी हद तक कम हो गई थी"। डच उस समय गोवा की घेराबंदी कर रहे थे। वेडेल के अभियान के दक्षिण की ओर रवाना होने से ठीक पहले हुए नौसैनिक युद्ध में डचों ने जीत हासिल की थी।

In February 1637 Weddell landed at Bhatkal, between Goa and Mangalore, on the Malabar Coast. Peter Mundy and a colleague travelled inland for four days to Ikkeri to secure permission from the ruler to establish a factory at Bhatkal. With their mission accomplished, they returned to Bhatkal only to find that nearly eighty of their companions had died of fever. Surprisingly, fifteen men then volunteered to remain behind to establish the factory.

फरवरी 1637 में वेडेल मालाबार तट पर गोवा और मंगलौर के बीच स्थित भटकल में उतरे। पीटर मुंडी और उनके एक साथी भटकल में कारखाना स्थापित करने की अनुमति लेने के लिए चार दिनों तक इकेरी तक अंतर्देशीय यात्रा पर गए। अपना मिशन पूरा करने के बाद, वे भटकल लौटे तो पाया कि उनके लगभग अस्सी साथी बुखार से मर चुके थे। आश्चर्यजनक रूप से, पंद्रह लोगों ने कारखाना स्थापित करने के लिए वहीं रुकने की स्वेच्छा से पेशकश की।

Weddell sailed east to Sumatra where he set up another factory. He then sailed for Macao and Canton, becoming the first Englishman to trade directly with the Chinese. In March 1638 he returned to Bhatkal to find the factory deserted. Of the original fifteen men, eight had succumbed to disease. The second in command had murdered the chief factor and two other men, and then fled to Goa with the Association’s goods and money. Weddell re-established the Bhatkal factory. He sailed with two heavily laden ships from Cannanore for England in 1639. Both ships completely disappeared, presumed wrecked. Peter Mundy, with his usual luck, was on one of the other

ships. He survived, returned safely to England, and twenty years later, made another voyage to India.

वेडेल पूर्व की ओर सुमात्रा के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने एक और कारखाना स्थापित किया। इसके बाद वे मकाओ और कैंटन के लिए रवाना हुए और चीनियों के साथ सीधे व्यापार करने वाले पहले अंग्रेज बने। मार्च 1638 में वे भटकल लौटे तो कारखाना वीरान पाया। मूल पंद्रह लोगों में से आठ बीमारी से मर चुके थे। दूसरे नंबर के अधिकारी ने मुख्य फैक्टर और दो अन्य लोगों की हत्या कर दी थी और फिर एसोसिएशन के सामान और पैसे लेकर गोवा भाग गया था। वेडेल ने भटकल कारखाने को फिर से स्थापित किया। 1639 में वे दो भारी माल से लदे जहाजों के साथ कन्ननोर से इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। दोनों जहाज पूरी तरह से गायब हो गए, माना जाता है कि वे दुर्घटनाग्रस्त हो गए थे। पीटर मुंडी, अपने हमेशा के भाग्य से, दूसरे जहाजों में से एक पर थे। वे बच गए, सुरक्षित रूप से इंग्लैंड लौट आए और बीस साल बाद, भारत की एक और यात्रा की।

Later in 1639, the ruler of Bhatkal, under pressure from the Portuguese viceroy, withdrew his permission for the Association to trade. The factory, which had cost so many lives, had to be abandoned. The establishment was moved to a new site fifty miles south of Goa, at Karwar. The Association also began to trade a hundred miles north of Goa, at Rajapur. This last action particularly infuriated the East India Company's officials at Surat, for they had already started trading at Rajapur, and would now be in competition with the Association. They need not have worried, for the Courten Association was now in serious financial difficulties. The loss of Weddell's ships and their cargoes was a serious blow. Although some further expeditions were sent out to the East, the Association no longer had sufficient resources to trade effectively.

बाद में, 1639 में, पुर्तगाली वायसराय के दबाव में, भटकल के शासक ने एसोसिएशन को व्यापार करने की अनुमति वापस ले ली। जिस कारखाने में कई लोगों की जान गई थी, उसे

छोड़ना पड़ा। प्रतिष्ठान को गोवा से पचास मील दक्षिण में, कारवार में एक नए स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। एसोसिएशन ने गोवा से सौ मील उत्तर में, राजपुर में भी व्यापार शुरू किया। इस अंतिम कदम से सूरत में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी विशेष रूप से नाराज हो गए, क्योंकि वे पहले ही राजपुर में व्यापार शुरू कर चुके थे और अब एसोसिएशन के साथ प्रतिस्पर्धा में आ गए थे। उन्हें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि कोर्टेन एसोसिएशन अब गंभीर वित्तीय कठिनाइयों में था। वेडेल के जहाजों और उनके माल का नुकसान एक गंभीर झटका था। हालांकि पूर्व की ओर कुछ और अभियान भेजे गए, लेकिन एसोसिएशन के पास प्रभावी ढंग से व्यापार करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं थे।

In 1641 William Courten began negotiations to relinquish the Association's privileges in return for compensation from the East India Company. These negotiations dragged on for years without agreement. The Association's finances became even more precarious. It was rumoured the Association was minting counterfeit coins at a base in Madagascar. In 1649 – under a new management, for Courten had fled his creditors – the Association gave up the struggle and was amalgamated into the East India Company. It had been a disastrous enterprise, which had lost huge sums. Nevertheless, it had founded settlements on the west coast of India, settlements that could now be exploited by the East India Company.

1641 में विलियम कोर्टेन ने ईस्ट इंडिया कंपनी से मुआवजे के बदले एसोसिएशन के विशेषाधिकारों को छोड़ने के लिए बातचीत शुरू की। ये बातचीत वर्षों तक बिना किसी समझौते के चलती रही। एसोसिएशन की आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई। अफवाहें थीं कि एसोसिएशन मेडागास्कर में अपने अड्डे पर नकली सिक्के बना रहा था। 1649 में - कोर्टेन के अपने लेनदारों से भाग जाने के बाद, एक नए प्रबंधन के तहत - एसोसिएशन ने संघर्ष छोड़ दिया और ईस्ट इंडिया कंपनी में विलय हो गया। यह एक विनाशकारी उद्यम था, जिसमें भारी नुकसान हुआ था। फिर भी, इसने भारत के पश्चिमी तट पर बस्तियाँ स्थापित की थीं, जिनका अब ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शोषण किया जा सकता था।

There was a sequel to the closure at Bhatkal. Alexander Hamilton, who came out to India in 1688, and over the next thirty-five years commanded local ships and marines, wrote of an incident there. This story has never been satisfactorily corroborated but, as Hamilton is generally fairly reliable, it is difficult to imagine that it was entirely made up:

भटकल में हुई घेराबंदी के बाद एक और घटना घटी। अलेक्जेंडर हैमिल्टन, जो 1688 में भारत आए और अगले पैंतीस वर्षों तक स्थानीय जहाजों और नौसैनिकों की कमान संभाली, ने वहां हुई एक घटना का वर्णन किया। इस कहानी की कभी भी संतोषजनक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन चूंकि हैमिल्टन आमतौर पर काफी विश्वसनीय हैं, इसलिए यह मानना मुश्किल है कि यह पूरी तरह से मनगढ़ंत थी।

The English Company had a factory there: but about the year 1670 an English ship coming there to lade, had a fine English bulldog, which the chief of the factory begged of the captain. After the ship was gone, the factory, which consisted of eighteen persons, were going a hunting, and carrying the bulldog with them; and, passing through the town, the dog seized a cow devoted to a pagod [temple] and killed her. Upon which the priests raised a mob, who murdered the whole factory; but some natives, who were friends to the English, made a large grave, with an inscription, that this is the burial place of John Best, with seventeen other English men, who were sacrificed to the fury of a mad priesthood, and an enraged mob.

वहाँ अंग्रेज़ कंपनी का एक कारखाना था। लगभग सन् 1670 में माल लादने के लिए आए एक अंग्रेज़ जहाज़ में एक बढ़िया अंग्रेज़ बुलडॉग था, जिसे कारखाने के मुखिया ने कप्तान से माँग लिया। जहाज़ के जाने के बाद, कारखाने के अठारह लोग शिकार पर जा रहे थे और बुलडॉग को भी अपने साथ ले गए। शहर से गुज़रते समय, कुत्ते ने एक मंदिर में रखी गाय को पकड़ लिया और उसे मार डाला। इस पर पुजारियों ने भीड़ को भड़काया और पूरे कारखाने के लोगों की हत्या कर दी। लेकिन कुछ स्थानीय लोगों ने, जो अंग्रेज़ों के मित्र थे, एक बड़ी कब्र बनाई

और उस पर यह लिखवाया कि यह जॉन बेस्ट और सत्रह अन्य अंग्रेज़ों का दफ़न स्थान है, जिन्हें एक पागल पुरोहित वर्ग और क्रोधित भीड़ के प्रकोप का शिकार होना पड़ा।

Surat in the seventeenth century was a large town with perhaps 150,000 or 200,000 inhabitants. It lay on the banks of the River Tapi, ten miles from the sea. The lower reaches of the river, which rose 400 miles to the east, were heavily silted. At exceptionally high tides it was possible for large ships to sail up the river to the edge of the town. Normally, however, they had to anchor at a small port protected by a sandbar, which lay to the north of the Tapi's mouth – Swally Hole.

सत्रहवीं शताब्दी में सूरत एक बड़ा शहर था, जिसकी आबादी लगभग 150,000 या 200,000 थी। यह तापी नदी के किनारे, समुद्र से दस मील की दूरी पर स्थित था। नदी का निचला हिस्सा, जो पूर्व में 400 मील दूर से निकलता था, गाद से भरा हुआ था। असाधारण रूप से ऊंचे ज्वार के समय बड़े जहाज नदी में ऊपर की ओर शहर के किनारे तक जा सकते थे। हालांकि, सामान्यतः उन्हें तापी नदी के मुहाने के उत्तर में स्थित एक छोटे से बंदरगाह, स्वैली होल में लंगर डालना पड़ता था, जो एक रेतीले टीले से सुरक्षित था।

The dominant feature of the town was its fort. This had been built in 1540 to give protection against the Portuguese who had sacked Surat in 1530. It had high stone walls with a tower at each of its four corners. The river guarded one side and a ditch flooded with water from the river protected the other sides. There were streets of small shops, but most trade was carried out in the large open market situated close to the castle known as Castle Green.

शहर की सबसे प्रमुख विशेषता उसका किला था। इसका निर्माण 1540 में पुर्तगालियों से सुरक्षा के लिए किया गया था, जिन्होंने 1530 में सूरत को लूटा था। इसकी ऊंची पत्थर की दीवारें थीं और चारों कोनों पर एक-एक मीनार थी। एक तरफ नदी थी और दूसरी तरफ नदी

के पानी से भरी खाई थी। शहर में छोटी-छोटी दुकानों वाली गलियां थीं, लेकिन अधिकांश व्यापार किले के पास स्थित विशाल खुले बाजार में होता था, जिसे कैसल ग्रीन के नाम से जाना जाता था।

Surat had many impressive mosques. There were also a number of Jain shrines. Many of the Hindu temples, however, had been defaced by Muslim invaders. Visitors were impressed by a number of large gardens and parks, and especially by the Gopi tank, an artificial lake intersected by stone walkways. There were a small number of large residences, occupied by the Muslim officials and the principal merchants from all communities. Many of the affluent non-Muslim merchants, however, lived in simple houses so as to avoid extortion. The mass of the population lived in shacks. These were located in separate neighbourhoods divided by religion and occupation. Sanitation was appalling. Everywhere smelled of 'want of privies, and their making every door a dunghill'.

सूरत में कई भव्य मस्जिदें थीं। यहाँ कई जैन तीर्थस्थल भी थे। हालाँकि, कई हिंदू मंदिरों को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने विरूपित कर दिया था। आगंतुक कई बड़े उद्यानों और पार्कों से, और विशेष रूप से गोपी तालाब से प्रभावित होते थे, जो पत्थर के पगडंडियों से घिरा एक कृत्रिम तालाब था। यहाँ कुछ बड़े मकान थे, जिनमें मुस्लिम अधिकारी और सभी समुदायों के प्रमुख व्यापारी रहते थे। हालाँकि, कई धनी गैर-मुस्लिम व्यापारी जबरन वसूली से बचने के लिए साधारण घरों में रहते थे। अधिकांश आबादी झोपड़ियों में रहती थी। ये झोपड़ियाँ धर्म और व्यवसाय के आधार पर विभाजित अलग-अलग मोहल्लों में स्थित थीं। स्वच्छता की स्थिति दयनीय थी। हर जगह शौचालयों की कमी और हर दरवाजे को कूड़े का ढेर बनाने की दुर्गंध फैली हुई थी।

There were many slaves, mostly from Mozambique and Madagascar. Most were employed by wealthy Muslims, but the Europeans also owned a few slaves, either as servants or bodyguards.

वहाँ बहुत सारे गुलाम थे, जिनमें से अधिकतर मोज़ाम्बिक और मेडागास्कर से थे। इनमें से अधिकांश धनी मुसलमानों के यहाँ काम करते थे, लेकिन यूरोपीय लोगों के पास भी कुछ गुलाम थे, जो या तो नौकर के रूप में या अंगरक्षक के रूप में काम करते थे।

There are a number of descriptions of Surat and of English life there in the seventeenth century. A German diplomat, Johann Albrecht von Mandelslo, visited Surat in 1638. Life inside the Company's factory, Mandelslo wrote, was very disciplined:

सत्रहवीं शताब्दी में सूरत और वहाँ के अंग्रेज़ों के जीवन के कई विवरण मिलते हैं। एक जर्मन राजनयिक, जोहान अल्ब्रेक्ट वॉन मैंडेलस्लो ने 1638 में सूरत का दौरा किया था। मैंडेलस्लो ने लिखा कि कंपनी के कारखाने के अंदर का जीवन बहुत अनुशासित था।

The respect and deference which the other merchants have for the president was very remarkable, as also the order which was observed in all things, especially at Divine Service, which was said twice a day, in the morning at six, and at eight at night, and on Sundays thrice. No person in the house but had his particular function, and their certain hours, assigned them as well for work as recreation.

अन्य व्यापारियों का अध्यक्ष के प्रति आदर और सम्मान अत्यंत उल्लेखनीय था, साथ ही सभी कार्यों में, विशेष रूप से प्रार्थना सभा में, अनुशासन का पालन किया जाता था। प्रार्थना सभा दिन में दो बार, सुबह छह बजे और रात आठ बजे होती थी, और रविवार को तीन बार होती थी। सदन में हर व्यक्ति का अपना विशेष कार्य होता था, और उनके निश्चित समय के अनुसार उन्हें काम के साथ-साथ मनोरंजन का भी समय मिलता था।

During the day, tea was drunk; in the evenings, wine. On Friday evenings, however, those that were married met to drink to their absent wives' health – 'Some made their advantage of this meeting to get more than they could well carry away, though every man was at liberty to drink what he pleased, and to

mix the Sack as he thought fit, or to drink *Palepuntz*, which is a kind of drink consisting of *aqua vitae*, rose-water, juice of citrons and sugar.'

दिन में चाय पी जाती थी; शाम को शराब। हालाँकि, शुक्रवार की शाम को विवाहित पुरुष अपनी अनुपस्थित पत्नियों के स्वास्थ्य के लिए इकट्ठा होते थे और उनके लिए शराब पीते थे - 'कुछ लोग इस सभा का फायदा उठाकर अपनी क्षमता से अधिक शराब पी लेते थे, हालाँकि हर पुरुष को अपनी इच्छानुसार शराब पीने और अपनी पसंद के अनुसार सैक (शराब) बनाने या पालेपुंट्ज़ (एक प्रकार का पेय जिसमें एक्का विटे, गुलाब जल, नींबू का रस और चीनी होती है) पीने की स्वतंत्रता थी।'

The day started with prayers in the chapel. The gates of the factory would then be opened for business. From noon to 4 p.m. there would be a break for the factors to eat together and to rest. Business would then resume until 8 p.m., when the factors would return to the chapel for evening prayers. The gates were closed by 11 p.m., after which the rule that no one was allowed in or out was strictly enforced.

दिन की शुरुआत चैपल में प्रार्थना से होती थी। इसके बाद कारखाने के द्वार काम के लिए खोल दिए जाते थे। दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक कारखाने के कर्मचारी एक साथ भोजन करने और आराम करने के लिए अवकाश लेते थे। फिर शाम 8 बजे तक काम चलता रहता था, जिसके बाद कारखाने के कर्मचारी शाम की प्रार्थना के लिए चैपल लौट आते थे। रात 11 बजे तक द्वार बंद कर दिए जाते थे, जिसके बाद किसी को भी अंदर या बाहर जाने की अनुमति नहीं होती थी और इस नियम का सख्ती से पालन किया जाता था।

It can be imagined what a scandal was caused in 1649 when a factor, Joshua Blackwell, following the Company's Sunday morning prayers, went to the governor of Agra 'before whome hee most wickedly and desperately renounced his Christian faith and professed himself a Moore, was immediately circomsised, and is irrecoverably lost'. He, of course, left the Company's service. A year later, however, Blackwell repented and begged for forgiveness.

He made his way back to the Company at Surat where he was readmitted as a Christian. To avoid retribution by the Muslim population he was kept hidden and quickly sent back to England.

कल्पना की जा सकती है कि 1649 में कितना बड़ा घोटाला हुआ होगा जब जोशुआ ब्लैकवेल नामक एक एजेंट, कंपनी की रविवार की सुबह की प्रार्थना के बाद आगरा के गवर्नर के पास गया, जिसके सामने उसने अत्यंत दुष्टतापूर्वक और हताशा में अपने ईसाई धर्म का त्याग कर स्वयं को मुस्लिम घोषित कर दिया। उसे तुरंत खतना कर दिया गया और वह हमेशा के लिए खो गया। उसने कंपनी की सेवा छोड़ दी। हालांकि, एक साल बाद, ब्लैकवेल को पश्चाताप हुआ और उसने क्षमा मांगी। वह सूरत में कंपनी में वापस आ गया, जहां उसे ईसाई के रूप में पुनः भर्ती कर लिया गया। मुस्लिम आबादी द्वारा प्रतिशोध से बचने के लिए उसे छिपाकर रखा गया और तुरंत इंग्लैंड वापस भेज दिया गया।

Surat was the focus of numerous caravan routes that brought goods from its hinterland. Vast numbers of oxen, camels, donkeys and humans carried merchandise from the interiors of India. Moreover, numerous small ships and boats ferried commodities from the other ports on the western coast.

सूरत उन अनेक कारवां मार्गों का केंद्र था जो भीतरी इलाकों से सामान लाते थे। बड़ी संख्या में बैल, ऊंट, गधे और मनुष्य भारत के आंतरिक भागों से माल ढोते थे। इसके अलावा, कई छोटे जहाज और नावें पश्चिमी तट के अन्य बंदरगाहों से सामान लाते-ले जाते थे।

Surat was also a conduit for goods coming from the East and from Arabia. Goods from China and other countries in the East arrived via Java and Sumatra – porcelain, tea, sugar, copper, mercury, gold and ivory. From Arabia and Persia came drugs and coffee. Some spices were transhipped from Malabar, but the main business from India was in textiles. Gujarat produced huge quantities of silks and embroideries. Fine cloths also came from Agra and other northern districts, as well as from south India. The Company exported at least 50,000 pieces a year. There was also a lively trade in indigo,

precious stones and opium. The Company employed the services of a number of intermediaries. Some of these came from the trading communities of Armenians and Parsis who had long been important at Surat.

सूरत पूर्व और अरब से आने वाले सामानों के लिए एक मार्ग भी था। चीन और पूर्व के अन्य देशों से सामान जावा और सुमात्रा के रास्ते आता था – चीनी मिट्टी के बर्तन, चाय, चीनी, तांबा, पारा, सोना और हाथी दांत। अरब और फारस से औषधियाँ और कॉफी आती थी। मालाबार से कुछ मसाले भी आते थे, लेकिन भारत से मुख्य व्यापार वस्त्रों का था। गुजरात में भारी मात्रा में रेशम और कढ़ाई का उत्पादन होता था। आगरा और अन्य उत्तरी जिलों के साथ-साथ दक्षिण भारत से भी उत्तम वस्त्र आते थे। कंपनी प्रति वर्ष कम से कम 50,000 वस्त्रों का निर्यात करती थी। नील, कीमती पत्थरों और अफीम का भी अच्छा-खासा व्यापार होता था। कंपनी कई बिचौलियों की सेवाएं लेती थी। इनमें से कुछ अर्मेनियाई और पारसी व्यापारिक समुदायों से थे, जिनका सूरत में लंबे समय से महत्वपूर्ण स्थान था।

The Parsis had been in India for many centuries. They were descended from Zoroastrians who had left Persia after the rise of Islam. They are believed to have initially settled at Sanjan, about seventy miles south of Surat, in the eighth century. Later they migrated to other centres, including Broach and Surat. In the middle of the seventeenth century, they became prominent in commerce at Surat. A Parsi was the principal merchant of Broach and had ships trading along the coast and also to Basra. In 1650 the Company appointed his son, Hira Vora, as their broker at Surat. The Armenians had settled in India even earlier. Armenians had arrived with Alexander the Great. They reached the Malabar Coast in the eighth century from where they exported spices. In the seventeenth century the Mughal emperor had invited the Armenians to settle in Agra. They then spread to other Mughal towns and to Surat. The Company transacted major deals with them. Armenians were even placed in charge of the cargo on Company ships going to England.

पारसी कई सदियों से भारत में बसे हुए थे। वे उन पारसियों के वंशज थे जिन्होंने इस्लाम के उदय के बाद फारस छोड़ दिया था। माना जाता है कि वे सबसे पहले आठवीं शताब्दी में सूरत से लगभग सत्तर मील दक्षिण में स्थित संजन में बसे थे। बाद में वे ब्रोच और सूरत सहित अन्य केंद्रों में चले गए। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में, सूरत में उनका व्यापार प्रमुख हो गया। ब्रोच का प्रमुख व्यापारी एक पारसी था, जिसके जहाज तट के किनारे और बसरा तक व्यापार करते थे। 1650 में कंपनी ने उसके बेटे हीरा वोरा को सूरत में अपना दलाल नियुक्त किया। अर्मेनियाई लोग तो और भी पहले भारत में बस गए थे। अर्मेनियाई लोग सिकंदर महान के साथ आए थे। वे आठवीं शताब्दी में मालाबार तट पर पहुँचे, जहाँ से वे मसालों का निर्यात करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में मुगल सम्राट ने अर्मेनियाई लोगों को आगरा में बसने के लिए आमंत्रित किया था। फिर वे अन्य मुगल शहरों और सूरत में फैल गए। कंपनी ने उनके साथ बड़े सौदे किए। यहाँ तक कि इंग्लैंड जाने वाले कंपनी के जहाजों पर माल की ज़िम्मेदारी भी अर्मेनियाई लोगों को सौंपी गई थी।

Profits on international trade were enormous. Rather than ship goods directly back to Europe, it was much more profitable for the European companies to take merchandise, mainly textiles, to the Far East. They would sell them there and then buy goods to take either directly back to Europe, or to sell at Surat, where they would buy more stock to take on to Europe. It has been calculated that £100 worth of goods purchased at Surat might sell for £300 in the Far East, which might then be used to purchase merchandise that eventually sold for £900 in England.

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से भारी मुनाफा होता था। यूरोपीय कंपनियों के लिए माल को सीधे यूरोप वापस भेजने के बजाय, मुख्य रूप से वस्त्रों सहित अन्य सामान सुदूर पूर्व भेजना कहीं अधिक लाभदायक था। वे वहाँ माल बेचते और फिर उसे सीधे यूरोप वापस लाने के लिए या सूरत में बेचने के लिए खरीदते, जहाँ से वे यूरोप ले जाने के लिए और अधिक स्टॉक खरीदते। यह अनुमान लगाया गया है कि सूरत में खरीदा गया 100 पाउंड का सामान सुदूर पूर्व में 300

पाउंड में बिक सकता था, जिसका उपयोग ऐसे सामान खरीदने के लिए किया जा सकता था जो अंततः इंग्लैंड में 900 पाउंड में बिकता था।

The Dutch were the great rivals of the English at Surat. They maintained a factory of similar size and competed for trade. They had conquered much of the Indonesian archipelago and obtained a monopoly over their spices, which were much in demand at Surat. This gave them an advantage over the English throughout the seventeenth century and they made bigger profits. The French set up a factory in Surat in 1667. It never rivalled the English or the Dutch in size or profit. From the beginning it was wracked by internal disputes and extravagance, and it closed twenty-five years later.

सूरत में डच, अंग्रेजों के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी थे। उनका कारखाना लगभग समान आकार का था और वे व्यापार में उनसे प्रतिस्पर्धा करते थे। उन्होंने इंडोनेशियाई द्वीपसमूह के अधिकांश भाग पर विजय प्राप्त कर ली थी और वहाँ के मसालों पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था, जिनकी सूरत में बहुत मांग थी। इससे उन्हें सत्रहवीं शताब्दी के दौरान अंग्रेजों पर बढ़त मिली और उन्होंने अधिक लाभ कमाया। फ्रांसीसियों ने 1667 में सूरत में एक कारखाना स्थापित किया। यह आकार या लाभ के मामले में कभी भी अंग्रेजों या डचों के कारखाने के बराबर नहीं हो सका। शुरुआत से ही यह आंतरिक विवादों और फिजूलखर्ची से ग्रस्त रहा और पच्चीस साल बाद बंद हो गया।

There were Indian merchants at Surat who traded on an enormous scale. Some transacted more business in the seventeenth century than the European companies. Abdul Gafur was the most prominent of the Muslim merchants. In a single year he could send out twenty ships of 300 or 400 tons. As well as trading inside India, he conducted business in the Red Sea and the Far East.

सूरत में भारतीय व्यापारी थे जो बड़े पैमाने पर व्यापार करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में कुछ व्यापारियों का व्यापार यूरोपीय कंपनियों से भी अधिक था। अब्दुल गफूर मुस्लिम व्यापारियों

में सबसे प्रमुख थे। वे एक वर्ष में 300 या 400 टन के बीस जहाज भेज सकते थे। भारत के भीतर व्यापार करने के साथ-साथ वे लाल सागर और सुदूर पूर्व में भी व्यापार करते थे।

The most important businessman the East India Company dealt with was an Indian from the Jain community, Virji Vora. From about 1619 to 1675 this merchant and financier bought and sold huge quantities of merchandise. He exchanged gold and silver imported by the Company into local currency; he established a monopoly to buy the Company's imports of coral; he sold the Company spices and textiles from Malabar. He also became the Company's banker. In England it was believed that if large quantities of gold or silver were exported to buy foreign goods, the currency would be devalued. As a consequence bullion exports were closely controlled. As the Company's trade expanded it began to rely on loans from Virji Vora to finance its purchases. By 1669 the Company owed him and his associates Rs 400,000. Without his support their business would have collapsed. In addition to this, Vora also made private loans to the Company's men. This indebtedness enabled Vora to negotiate very favourable terms in his dealings with the Company itself and to make vast profits.

ईस्ट इंडिया कंपनी के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारियों में से एक जैन समुदाय के भारतीय नागरिक विरजी वोरा थे। लगभग 1619 से 1675 तक इस व्यापारी और वित्तपोषक ने भारी मात्रा में माल की खरीद-बिक्री की। उन्होंने कंपनी द्वारा आयातित सोने और चांदी को स्थानीय मुद्रा में बदला; उन्होंने कंपनी के लिए मूंगे के आयात पर एकाधिकार स्थापित किया; उन्होंने कंपनी को मालाबार से मसाले और वस्त्र बेचे। वे कंपनी के बैंकर भी बने। इंग्लैंड में यह मान्यता थी कि यदि विदेशी वस्तुओं की खरीद के लिए बड़ी मात्रा में सोना या चांदी निर्यात किया जाता है, तो मुद्रा का अवमूल्यन हो जाएगा। परिणामस्वरूप, सोने के निर्यात पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी। जैसे-जैसे कंपनी का व्यापार बढ़ा, वह अपनी खरीद के वित्तपोषण के लिए विरजी वोरा से लिए गए ऋणों पर निर्भर होने लगी। 1669 तक कंपनी पर उनका और

उनके सहयोगियों का 400,000 रुपये का ऋण था। उनके समर्थन के बिना उनका व्यवसाय ठप हो जाता। इसके अलावा, वोरा ने कंपनी के कर्मचारियों को निजी ऋण भी दिए। इस कर्ज ने वोरा को कंपनी के साथ अपने लेन-देन में बहुत अनुकूल शर्तों पर बातचीत करने और भारी मुनाफा कमाने में सक्षम बनाया।

The Company at Surat had set up a number of subsidiary trading posts – at Cambay, Broach, Baroda, Ahmadabad and Agra. From Agra the Company's men travelled as far as Lahore to make purchases. Normally, they used an Indian agent, a *gomasta*, as an intermediary. These were often wealthy moneylenders who advanced money to the weavers in return for their output. This, of course, gave them tremendous power to impose a monopoly and dictate the purchase price. As was to often happen in the future, the large purchases made for the European market did little to improve the standard of living of the artisans who manufactured the goods.

सूरत स्थित कंपनी ने कैम्बे, ब्रोच, बड़ौदा, अहमदाबाद और आगरा में कई सहायक व्यापारिक चौकियाँ स्थापित की थीं। आगरा से कंपनी के लोग खरीदारी के लिए लाहौर तक जाते थे। आम तौर पर वे एक भारतीय एजेंट, गोमस्ता, को मध्यस्थ के रूप में इस्तेमाल करते थे। ये अक्सर धनी साहूकार होते थे जो बुनकरों को उनके काम के बदले में ऋण देते थे। इससे उन्हें एकाधिकार स्थापित करने और खरीद मूल्य तय करने की अपार शक्ति प्राप्त हो जाती थी। जैसा कि भविष्य में अक्सर होता रहा, यूरोपीय बाज़ार के लिए की गई बड़ी खरीदारी से माल बनाने वाले कारीगरों के जीवन स्तर में कोई खास सुधार नहीं हुआ।

The Reverend John Ovington visited Surat in 1689 for two years and was the Company's chaplain. He left an informative and entertaining account of life in the Company's factory. The president and his factors lived in style. Their building – the latest in a series of tenancies – was leased from the emperor at a rent of £60 a year, but they were allowed to use most of this to improve the facilities. To avoid upsetting the Muslims, the chapel was kept plain and had

no religious images. The factory had accommodation for forty warehouses, extensive cellars, a pool and even a Turkish bath. Sumptuous communal meals were provided at Company expense with choice meats and generous quantities of Shiraz wine and arrack punch. There were cooks from England, Portugal and India 'for the gratification of every stomach'. The diners could also purchase European wines and English beer – both very popular. All the plates and drinking goblets were of solid silver.

रेवरेंड जॉन ओविंगटन ने 1689 में दो वर्षों के लिए सूरत का दौरा किया और कंपनी के चैपलिन रहे। उन्होंने कंपनी के कारखाने में जीवन का एक जानकारीपूर्ण और मनोरंजक विवरण लिखा। अध्यक्ष और उनके सहायक आलीशान जीवन जीते थे। उनका भवन - जो कई किरायेदारी में से नवीनतम था - सम्राट से 60 पाउंड प्रति वर्ष के किराए पर लिया गया था, लेकिन उन्हें इस राशि का अधिकांश भाग सुविधाओं में सुधार के लिए उपयोग करने की अनुमति थी। मुसलमानों को नाराज़ न करने के लिए, चैपल को सादा रखा गया था और उसमें कोई धार्मिक मूर्तियाँ नहीं थीं। कारखाने में चालीस गोदामों, विशाल तहखानों, एक पूल और यहाँ तक कि एक तुर्की स्नानघर के लिए भी जगह थी। कंपनी के खर्चे पर शानदार सामूहिक भोजन परोसा जाता था जिसमें उत्तम मांस और भरपूर मात्रा में शिराज वाइन और अराक पंच शामिल थे। 'हर किसी के पेट को तृप्त करने' के लिए इंग्लैंड, पुर्तगाल और भारत से रसोइये थे। भोजन करने वाले यूरोपीय वाइन और अंग्रेजी बीयर भी खरीद सकते थे - दोनों ही बहुत लोकप्रिय थे। सभी प्लेटें और पीने के गिलास ठोस चांदी के थे।

On Sundays and holidays, and when entertaining important Indian merchants or officials, the main meal was more elaborate, with as many as sixteen courses. There would be venison, peacock, hare and partridge; apricots, plums, cherries and pistachios. Toasts in European and Persian wines would be drunk to the king, the Company, the president, and then going around the table to everyone seated there. In the evening the factors would proceed to

the gardens against the river to ‘spend an hour or two with a bottle of wine, and cold collation’.

रविवार और छुट्टियों के दिनों में, और जब महत्वपूर्ण भारतीय व्यापारी या अधिकारी मेहमान बनकर आते थे, तो मुख्य भोजन अधिक भव्य होता था, जिसमें सोलह व्यंजन तक परोसे जाते थे। इसमें हिरण का मांस, मोर, खरगोश और तीतर; खुबानी, बेर, चेरी और पिस्ता शामिल होते थे। यूरोपीय और फ़ारसी शराब से राजा, कंपनी, अध्यक्ष के सम्मान में टोस्ट किया जाता था, और फिर मेज पर बैठे सभी लोगों के लिए बारी-बारी से टोस्ट किया जाता था। शाम को, एजेंट नदी के किनारे स्थित बगीचों में जाकर 'एक-दो घंटे शराब की बोतल और ठंडे नाश्ते के साथ बिताते' थे।

A similar, if simpler, collegiate life would have been observed at the Company’s other factories. Originally, the Company insisted on its merchants being single. Over the years this rule was relaxed, especially for the senior ones. Nevertheless, many remained bachelors, such as Francis Breton, president of the Company at Surat, 1644–49. There is a Latin inscription on his tomb that reads:

कंपनी के अन्य कारखानों में भी इसी तरह का, हालांकि सरल, कॉलेज जीवन देखने को मिलता था। शुरुआत में, कंपनी अपने व्यापारियों के अविवाहित होने पर जोर देती थी। समय के साथ, यह नियम शिथिल हो गया, खासकर वरिष्ठ व्यापारियों के लिए। फिर भी, कई लोग अविवाहित ही रहे, जैसे कि फ्रांसिस ब्रेटन, जो 1644-49 में सूरत में कंपनी के अध्यक्ष थे। उनकी समाधि पर एक लैटिन शिलालेख है जिस पर लिखा है:

Here lies Francis Breton, who, after he had discharged his duties with the greatest diligence and strictest integrity, went unmarried to the celestial nuptials, on July 21st, 1649.

यहां फ्रांसिस ब्रेटन लेटे हैं, जिन्होंने अत्यंत लगन और पूर्ण निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के बाद, 21 जुलाई, 1649 को अविवाहित रहते हुए स्वर्गवास किया।

Naturally, there were illicit liaisons with Indian women outside the factory. This was very much frowned upon in the early years. A chaplain, William Leske, had an affair with a sweeper woman in 1616. He also used a whip on some Indian brokers and was expelled. Later, however, it would become common for the Company's men, if not the clergy, to imitate their neighbours and maintain a zenana, a harem. Meanwhile, away from the watchful eyes of the Company's seniors in Surat, it was possible to taste prohibited pleasures. Johann Albrecht von Mandelslo went from Surat to Baroda. 'We went to the lodge belonging to the English where they made the greatest entertainment imaginable.' He was in German clothes rather than the local dress adopted by the English. The English sent for some local women, who wanted Mandelslo to take them off, 'but perceiving that I was unwilling to do it, and withal that I made some difficulty to accept of the profers they made to strip themselves naked, and to do anything I would expect from their sex and profession, they seemed to be very much troubled, and so went away'.

स्वाभाविक रूप से, कारखाने के बाहर भारतीय महिलाओं के साथ अवैध संबंध थे। शुरुआती वर्षों में इसे बहुत बुरा माना जाता था। 1616 में एक पादरी, विलियम लेस्के का एक सफाईकर्मी महिला के साथ प्रेम संबंध था। उन्होंने कुछ भारतीय दलालों पर कोड़े भी चलाए और उन्हें निष्कासित कर दिया गया। हालाँकि, बाद में कंपनी के पुरुषों, और शायद पादरियों के बीच भी, अपने पड़ोसियों की नकल करते हुए एक ज़नाना (हरम) रखना आम हो गया। इस बीच, सूरत में कंपनी के वरिष्ठों की निगरानी से दूर, वर्जित सुखों का आनंद लेना संभव था। जोहान अल्ब्रेक्ट वॉन मैंडेलस्लो सूरत से बड़ौदा गए। 'हम अंग्रेजों के लॉज में गए जहाँ उन्होंने ज़बरदस्त मनोरंजन का आयोजन किया।' उन्होंने अंग्रेजों द्वारा अपनाई गई स्थानीय पोशाक के बजाय जर्मन कपड़े पहने थे। अंग्रेजों ने कुछ स्थानीय महिलाओं को बुलवाया, जो चाहती थीं कि मैंडेलस्लो उन्हें अपने साथ ले जाए, 'लेकिन यह देखकर कि मैं ऐसा करने को तैयार नहीं था, और साथ ही मैंने उनके द्वारा खुद को नग्न करने और उनके लिंग और पेशे से जो कुछ भी

मैं उम्मीद करता, उसे करने के प्रस्तावों को स्वीकार करने में कुछ कठिनाई दिखाई, वे बहुत परेशान हुईं और इसलिए चली गईं।'

The first known ‘marriage’ of an Englishman in the Company’s service to an Indian was uncovered in 1626. John Leachland had arrived in Surat in 1615 as a purser’s mate and been taken on as a factor. He satisfactorily conducted business for the Company at various centres in Gujarat and further east. In 1626 the death of a child of his by a woman named Manya led to his liaison being discovered. The president and council of the Company at Surat entreated him to give the woman up. Leachland steadfastly refused, saying that he would prefer to be suspended rather than abandon her and left the Company’s service.

कंपनी की सेवा में कार्यरत एक अंग्रेज द्वारा एक भारतीय महिला से किए गए पहले ज्ञात 'विवाह' का खुलासा 1626 में हुआ। जॉन लीचलैंड 1615 में सूरत में एक सहायक के रूप में आए थे और उन्हें एक फैक्टर के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने गुजरात और उससे आगे पूर्व के विभिन्न केंद्रों में कंपनी के लिए सफलतापूर्वक कारोबार किया। 1626 में मान्या नामक महिला से उनके एक बच्चे की मृत्यु के कारण उनके इस संबंध का खुलासा हुआ। सूरत स्थित कंपनी के अध्यक्ष और परिषद ने उनसे उस महिला को छोड़ने की विनती की। लीचलैंड ने दृढ़ता से इनकार कर दिया और कहा कि वह उसे छोड़ने के बजाय निलंबित होना पसंद करेंगे और कंपनी की सेवा छोड़ दी।

In 1632, the Company, having lost many of its staff to disease, re-engaged Leachland. He was still with Manya and they had a daughter, Mary. Leachland commanded a caravan to Agra and returned safely to Surat, but died there in 1634. On his deathbed, he requested that his wages be given to his wife and daughter. He also asked the Company to ensure that the girl, who had been

baptized, be brought up as a Christian. The Company at Surat wrote to London recommending that Leachland's dying requests be granted and, meanwhile, gave the mother and daughter an allowance. London did not approve and the allowance had to be withdrawn.

1632 में, कंपनी ने अपने कई कर्मचारियों को बीमारी के कारण खो दिया था, इसलिए उसने लीचलैंड को फिर से नियुक्त किया। वह अभी भी मान्या के साथ थे और उनकी एक बेटी थी, मैरी। लीचलैंड ने आगरा के लिए एक कारवां का नेतृत्व किया और सुरक्षित रूप से सूरत लौट आए, लेकिन 1634 में वहीं उनकी मृत्यु हो गई। अपनी मृत्युशय्या पर, उन्होंने अनुरोध किया कि उनका वेतन उनकी पत्नी और बेटी को दिया जाए। उन्होंने कंपनी से यह भी सुनिश्चित करने का अनुरोध किया कि बपतिस्मा प्राप्त लड़की का पालन-पोषण ईसाई धर्म में किया जाए। सूरत स्थित कंपनी ने लंदन को पत्र लिखकर लीचलैंड की अंतिम इच्छाओं को पूरा करने की सिफारिश की और इस बीच, माता-पिता को भत्ता दिया। लंदन ने इसे स्वीकार नहीं किया और भत्ता वापस लेना पड़ा।

The Company's employees at Surat, however, continued to support the nine-year-old girl and her mother. An uncle in England tried to obtain custody of the child, but her mother refused to give her up. In 1643, when Mary was eighteen, her mother applied to the Company for permission for her to be married to William Appleton, a tailor at Surat. This ceremony was duly conducted by the Company's chaplain. Even after the marriage, the Company's employees at Surat continued to give charity. They also continued to plead with London for the release of John Leachland's unpaid wages.

सूरत में कंपनी के कर्मचारियों ने नौ वर्षीय बच्ची और उसकी माँ का समर्थन करना जारी रखा। इंग्लैंड में रहने वाले उसके चाचा ने बच्ची की देखरेख का अधिकार प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन उसकी माँ ने उसे सौंपने से इनकार कर दिया। 1643 में, जब मैरी अठारह वर्ष की हुई, तो उसकी माँ ने कंपनी से सूरत के एक दर्जी विलियम एपलटन से उसकी शादी की अनुमति मांगी। यह विवाह समारोह कंपनी के पादरी द्वारा विधिवत संपन्न

कराया गया। विवाह के बाद भी, सूरत में कंपनी के कर्मचारियों ने दान देना जारी रखा। उन्होंने जॉन लीचलैंड के बकाया वेतन के भुगतान के लिए लंदन से गुहार लगाना भी जारी रखा।

There were penalties for those who broke the rules of the Company at Surat. Failure to return before the gates were shut incurred a fine of £2; absence from prayers on a Sunday five shillings, or half that on a weekday; swearing one shilling; being drunk two shillings and six pence; for striking or abusing persons not in the Company's service 'three days imprisonment in irons'. These were severe penalties to a young man coming out to India at a salary of £20 a year. Gambling was a dangerous occupation for it could result in being sent back to England and being dismissed. Nevertheless, there were cases when men lost several years' salary playing cards or dice. One man lost £1,000 in a single night.

सूरत में कंपनी के नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए दंड निर्धारित थे। द्वार बंद होने से पहले वापस न लौटने पर 2 पाउंड का जुर्माना; रविवार को नमाज़ में अनुपस्थित रहने पर पाँच शिलिंग, या सप्ताह के दिनों में इसका आधा; गाली देने पर एक शिलिंग; नशे में होने पर दो शिलिंग और छह पेंस; कंपनी की सेवा में न होने वाले व्यक्तियों को मारने या गाली देने पर तीन दिन की कैद। ये दंड उन युवाओं के लिए बहुत कठोर थे जो सालाना 20 पाउंड के वेतन पर भारत आए थे। जुआ खेलना एक खतरनाक पेशा था क्योंकि इससे इंग्लैंड वापस भेजा जा सकता था और बर्खास्तगी हो सकती थी। फिर भी, ऐसे मामले भी थे जब लोगों ने ताश या पासे खेलते हुए कई वर्षों का वेतन गंवा दिया। एक व्यक्ति ने एक ही रात में 1,000 पाउंड गंवा दिए।

The Company's president at Surat in the mid-seventeenth century received a generous salary of £500, plus an even more generous allowance for entertainment. His colleagues received much less – from £150 to the

accountant down to £20 for the young ‘writers’. These salaries were only half that of their counterparts in London. It was understood, however, that they could make extra money on their own account. The Company tried to limit this by giving each man a fixed amount of free cargo space on its ships – as much as they could stuff into a chest four feet by eighteen inches by eighteen inches. But there were other opportunities for the Company’s men to enrich themselves. They could surreptitiously buy on their own account, using middlemen, and then sell on to the Company at an inflated price, or even sell to the Dutch or the Portuguese. The directors in London imposed fines on those it discovered who ‘devour the Company’s fruits’. Many of their men in India paid the fines and continued regardless.

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में सूरत स्थित कंपनी के अध्यक्ष को 500 पाउंड का अच्छा-खासा वेतन मिलता था, साथ ही मनोरंजन के लिए उससे भी अधिक भत्ता दिया जाता था। उनके सहयोगियों को बहुत कम वेतन मिलता था – लेखाकार को 150 पाउंड से लेकर युवा 'लेखकों' को 20 पाउंड तक। ये वेतन लंदन में उनके समकक्षों के वेतन का लगभग आधा था। हालांकि, यह माना जाता था कि वे अपने दम पर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। कंपनी ने प्रत्येक कर्मचारी को अपने जहाजों पर एक निश्चित मात्रा में मुफ्त माल ढुलाई स्थान देकर इसे सीमित करने का प्रयास किया – जितना वे चार फुट चौड़े, अठारह इंच लंबे और अठारह इंच चौड़े संदूक में भर सकते थे। लेकिन कंपनी के कर्मचारियों के पास खुद को समृद्ध करने के अन्य अवसर भी थे। वे बिचौलियों की मदद से चुपके से अपने दम पर सामान खरीद सकते थे और फिर उसे कंपनी को ऊंचे दामों पर बेच सकते थे, या यहां तक कि डचों या पुर्तगालियों को भी बेच सकते थे। लंदन स्थित निदेशकों ने उन लोगों पर जुर्माना लगाया जो कंपनी के लाभ का दुरुपयोग करते पाए गए। भारत में उनके कई कर्मचारियों ने जुर्माना अदा किया और फिर भी काम करते रहे।

The Company at Surat employed remarkably few Englishmen. In 1618 there were only six, and two of those were youths. By 1674 the total was still only

twenty-eight. Nevertheless, every effort was made to give the impression that the Company was a rich and powerful agent of a rich and powerful nation. When, for instance, the president and his entourage went on a picnic, they went in formal procession. Two large flags, bearing the cross of St George, led the way. Following the standard-bearers would be a troop of cavalry, their horses decked in velvet and silver. Forty or fifty foot guards then accompanied the palanquin of the president and his wife. Behind them, the members of the council and their wives rode in open coaches, drawn by milk-white oxen and accompanied by men with silver-topped staves. And behind them the coaches or horses of the factors, all dressed in their finery.

सूरत स्थित कंपनी में अंग्रेजों की संख्या बहुत कम थी। 1618 में केवल छह अंग्रेज थे, जिनमें से दो युवा थे। 1674 तक उनकी संख्या घटकर मात्र अट्ठाईस रह गई थी। फिर भी, यह दिखाने का हर संभव प्रयास किया जाता था कि कंपनी एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र की एक प्रभावशाली प्रतिनिधि है। उदाहरण के लिए, जब अध्यक्ष और उनके दल पिकनिक पर जाते थे, तो वे औपचारिक जुलूस में निकलते थे। सेंट जॉर्ज के क्रॉस वाले दो बड़े झंडे सबसे आगे चलते थे। झंडों के पीछे मखमल और चांदी से सजे घुड़सवारों का एक दस्ता होता था। फिर 40-50 पैदल सैनिक अध्यक्ष और उनकी पत्नी की पालकी के साथ चलते थे। उनके पीछे परिषद के सदस्य और उनकी पत्नियां दूध जैसे सफेद बैलों द्वारा खींची जाने वाली खुली गाड़ियों में सवार होते थे, जिनके साथ चांदी की नोक वाली लाठियां लिए हुए लोग होते थे। और उनके पीछे एजेंटों की गाड़ियां या घोड़े होते थे, जो सभी अपने उत्तम वस्त्रों में सजे होते थे।

The English, unlike the Portuguese, had no wish to become involved in military adventures. They wished merely to trade in peace. The Company deliberately employed men of the merchant class rather than aristocrats or gentry who might have been inclined to use arms. It was not, however, a

peaceful time, for the power of the Mughals in western India was being challenged by an audacious Hindu raja, Shivaji. This brilliant commander captured his first Mughal fort in 1647 and by 1660 had captured forty more. In 1661 he plundered the Company's factory at Rajapur. In 1664 he attacked Surat and destroyed most of the town. In 1670 he attacked Surat once again. On both of these occasions, the Company managed to avoid being overrun, but their trade was seriously affected. Meanwhile, the Company had acquired land at both Madras and Bombay. It was to those places that the Company would look to expand its activities.

पुर्तगालियों के विपरीत, अंग्रेजों की सैन्य अभियानों में शामिल होने की कोई इच्छा नहीं थी। वे केवल शांतिपूर्ण व्यापार करना चाहते थे। कंपनी ने जानबूझकर व्यापारी वर्ग के लोगों को नियुक्त किया, न कि अभिजात वर्ग या कुलीन वर्ग के लोगों को, जो हथियार उठाने के इच्छुक हो सकते थे। हालाँकि, यह शांतिपूर्ण समय नहीं था, क्योंकि पश्चिमी भारत में मुगलों की शक्ति को एक साहसी हिंदू राजा शिवाजी चुनौती दे रहे थे। इस प्रतिभाशाली सेनापति ने 1647 में अपना पहला मुगल किला जीता और 1660 तक चालीस और किले जीत लिए थे। 1661 में उन्होंने राजपुर स्थित कंपनी के कारखाने को लूटा। 1664 में उन्होंने सूरत पर हमला किया और शहर के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर दिया। 1670 में उन्होंने एक बार फिर सूरत पर हमला किया। इन दोनों ही मौकों पर कंपनी आक्रमण से बचने में कामयाब रही, लेकिन उनके व्यापार पर गंभीर असर पड़ा। इस बीच, कंपनी ने मद्रास और बंबई दोनों जगहों पर जमीन हासिल कर ली थी। कंपनी ने इन्हीं स्थानों पर अपनी गतिविधियों का विस्तार करने की योजना बनाई।

Five

पाँच

THE ENGLISH

अंग्रेज

RELIGIOUS FREEDOM AND PEACEFUL TRADE

धार्मिक स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण व्यापार

My endevours at present beeing to draw hither as many merchants (Banians as well as Moores and Persians) as possibly as I cann from Suratt, Cambaya, Ahmadavad, Boroach, Diu, Tahtah, etc., other places; unto whom His Majesty will but graunt liberty to buyld their pagados and mesquitas to exercise theyr religion publiquely in, noe doubt then but this will bee made a very famous and opulent port.

इस समय मेरा प्रयास सूरत, कंबया, अहमदाबाद, बोरौच, दीव, ताहताह आदि अन्य स्थानों से यथासंभव अधिक से अधिक व्यापारियों (बनियाई, मूर और फारसी) को यहाँ आकर्षित करना है; यदि महामहिम उन्हें अपने धार्मिक अनुष्ठानों के लिए सार्वजनिक रूप से अपने धार्मिक स्थल और मस्जिदें बनाने की अनुमति दे दें, तो निःसंदेह यह एक बहुत प्रसिद्ध और समृद्ध बंदरगाह बन जाएगा।

Henry Gary, secretary of Bombay to
Charles II's Secretary of State, 1665

हेनरी गैरी, बंबई के सचिव, चार्ल्स द्वितीय के राज्य सचिव, 1665

On the east coast of India, the Coromandel Coast, the Company had established itself in 1611 at Masulipatam. It had discovered, however, that the textiles most in demand were obtainable cheaper further south. In 1639 they received an invitation from the ruler of the area, Damarla Venkatappa Nayak, the Lord General of Carnatic, about Madraspatam village to trade from there. The ruler was to receive half the customs dues. Francis Day was able to

conclude an agreement to not only build a factory, but to fortify it against possible attack by the Portuguese or the Dutch. He chose a strip of sand at a point between the mouth of a river and the sea. It was three miles long and one mile wide. This was the first significant piece of land to be owned outright by the Company in India – for at Surat and other places they were merely tenants. It was not sovereign territory for it was held as fief of the ruler. Nevertheless, the Company was able to impose many of its own laws within the enclave. In 1647 the area was captured by the Sultan of Golconda who allowed the Company to carry on its operations undisturbed. The fort was about a hundred square yards, with a bastion at each corner. The first bastion was constructed in 1640, but completion of the fort, named Fort St George, took some years. The factory was in the centre.

भारत के पूर्वी तट, कोरोमंडल तट पर, कंपनी ने 1611 में मसूलीपट्टम में अपना प्रतिष्ठान स्थापित किया था। हालांकि, कंपनी को यह पता चला कि सबसे अधिक मांग वाले वस्त्र दक्षिण में सस्ते में उपलब्ध थे। 1639 में उन्हें क्षेत्र के शासक, कर्नाटक के लॉर्ड जनरल, दमरला वेंकटप्पा नायक से मद्रासपट्टम गांव के आसपास व्यापार करने का निमंत्रण मिला। सीमा शुल्क का आधा हिस्सा शासक को मिलना था। फ्रांसिस डे एक ऐसा समझौता करने में सफल रहे जिसके तहत न केवल एक कारखाना बनाया गया, बल्कि पुर्तगालियों या डचों के संभावित हमले से बचाव के लिए उसे मजबूत भी किया गया। उन्होंने एक नदी के मुहाने और समुद्र के बीच स्थित रेत की एक पट्टी का चयन किया। यह पट्टी तीन मील लंबी और एक मील चौड़ी थी। भारत में कंपनी द्वारा पूर्ण रूप से स्वामित्व वाली यह पहली महत्वपूर्ण भूमि थी - क्योंकि सूरत और अन्य स्थानों पर वे केवल किरायेदार थे। यह संप्रभु क्षेत्र नहीं था क्योंकि यह शासक की जागीर के रूप में था। फिर भी, कंपनी इस क्षेत्र में अपने कई कानून लागू करने में सक्षम थी। 1647 में इस क्षेत्र पर गोलकोंडा के सुल्तान ने कब्जा कर लिया और कंपनी को बिना किसी बाधा के अपना काम जारी रखने की अनुमति दी। किला लगभग सौ वर्ग गज का था, जिसके

प्रत्येक कोने पर एक बुर्ज था। पहला बुर्ज 1640 में बनाया गया था, लेकिन सेंट जॉर्ज किले के निर्माण में कई साल लग गए। कारखाना केंद्र में स्थित था।

The new settlement was immediately successful. It was staffed with about thirty-five English and an equal number of Indians. The Company actively pursued a policy of religious tolerance. Catholic Portuguese from nearby San Thomé were persuaded to settle around the fort with offers of employment. Other Portuguese from along the coast were given loans to build houses for themselves. Most important of all, several hundred families of Indian weavers immigrated. Together, these groups established the township that would come to be known as Madras, now Chennai.

नई बस्ती तुरंत सफल हो गई। इसमें लगभग पैंतीस अंग्रेज और उतने ही भारतीय कर्मचारी थे। कंपनी ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति को सक्रिय रूप से अपनाया। पास के सैन थोमे से आए कैथोलिक पुर्तगालियों को रोजगार के प्रस्ताव देकर किले के आसपास बसने के लिए राजी किया गया। तटवर्ती इलाकों से आए अन्य पुर्तगालियों को अपने लिए घर बनाने के लिए ऋण दिए गए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सैकड़ों भारतीय बुनकर परिवार आकर बस गए। इन समूहों ने मिलकर उस कस्बे की स्थापना की जो बाद में मद्रास (अब चेन्नई) के नाम से जाना गया।

The Company had originally divided its operations into two presidencies: Surat and Bantam. Surat controlled activities north of Goa; Bantam controlled those in the Far East and the rest of India. In 1652, following the seizure of most of its Far Eastern business by the Dutch, the Eastern Presidency was transferred to Madras.

कंपनी ने मूल रूप से अपने संचालन को दो प्रेसिडेंसी में विभाजित किया था: सूरत और बांतम। सूरत गोवा के उत्तर में गतिविधियों को नियंत्रित करता था; बांतम सुदूर पूर्व और शेष भारत में गतिविधियों को नियंत्रित करता था। 1652 में, डचों द्वारा इसके अधिकांश सुदूर पूर्वी व्यवसाय पर कब्ज़ा करने के बाद, पूर्वी प्रेसिडेंसी को मद्रास में स्थानांतरित कर दिया गया।

Madras grew apace. By 1670 there were 300 English, 3,000 Portuguese and perhaps 40,000 Indians. John Fryer, a surgeon with the Company, visited in 1673. He described an ‘English Town’ of clean streets lined with mansions, faced with Italian-style porticos and topped with battlements and terraces. The Indians lived outside, in the ‘Heathen Town’ with its long streets, bazaar and temple. The Company’s governor lived in style. He had a personal guard of 300 or 400 Indians, with another 1,500 in reserve. ‘He never goes abroad without fifes, drums, trumpets, and a flag with two balls in a red field; accompanied with his council and factors on horseback, with their ladies in palenkeens’. There were Company judges who were able to impose the death sentence, although not over the English. The Company had also established a mint for its own copper and gold coins.

मद्रास का तेज़ी से विकास हुआ। 1670 तक वहाँ 300 अंग्रेज, 3,000 पुर्तगाली और संभवतः 40,000 भारतीय थे। कंपनी के एक सर्जन जॉन फ्रायर ने 1673 में मद्रास का दौरा किया। उन्होंने इसे एक 'अंग्रेज़ी शहर' के रूप में वर्णित किया, जिसकी साफ-सुथरी सड़कों पर आलीशान घर बने थे, जिनमें इतालवी शैली के बरामदे थे और ऊपर प्राचीरें और छतें थीं। भारतीय बाहर, 'गैर-ईसाई शहर' में रहते थे, जिसकी लंबी सड़कें, बाज़ार और मंदिर थे। कंपनी का गवर्नर शान-शौकत से रहता था। उसके पास 300 या 400 भारतीयों का निजी अंगरक्षक दस्ता था, और 1,500 अतिरिक्त सैनिक आरक्षित थे। 'वह कभी भी बांसुरी, ढोल, तुरही और लाल रंग के मैदान में दो गोलों वाला झंडा लिए बिना बाहर नहीं जाता था; उसके साथ उसके सलाहकार और घुड़सवार अधिकारी होते थे, और उनकी पत्नियाँ पालकी में होती थीं।' कंपनी के न्यायाधीश थे जो मृत्युदंड देने में सक्षम थे, हालाँकि अंग्रेजों को यह अधिकार प्राप्त नहीं था। कंपनी ने अपने तांबे और सोने के सिक्कों के लिए एक टकसाल भी स्थापित की थी।

Madras had a reputation for loose morals and drunkenness. There were the usual strict rules debarring those housed within the fort from leaving at night

once the gates were closed. These did not stop the young Englishmen from exiting by the windows and scaling the walls. Charles Lockyer visited in 1704 and wrote of the soldiers in the New House – the 'scene of many a drunken frolick. Everyone keeps his boy; who, tho' not above ten years old, is procurer, and *vallet de chambre*.' In 1676 the Company's chaplain had written back to London:

मद्रास में अनैतिक आचरण और शराबखोरी की बदनामी थी। किले के अंदर रहने वालों के लिए रात में द्वार बंद होने के बाद बाहर निकलने पर रोक लगाने वाले सख्त नियम थे। लेकिन इन नियमों के बावजूद युवा अंग्रेज खिड़कियों से बाहर निकल जाते थे और दीवारों पर चढ़ जाते थे। चार्ल्स लॉकियर ने 1704 में दौरा किया और न्यू हाउस में सैनिकों के बारे में लिखा - 'यह कई शराबी मौज-मस्ती का अड्डा था। हर कोई अपना लड़का रखता था; जो दस साल से अधिक उम्र का न होते हुए भी दलाल और नौकर होता था।' 1676 में कंपनी के पादरी ने लंदन को पत्र लिखा था:

Your heads would be fountains of water, and eyes rivers of tears, did you really know how much God is dishonoured, his name blasphemed, religion reproached amongst the Gentiles, by the vicious life of many of your servants. Some come over under the notion of single persons and unmarried, who yet have their wives in England, and live here in adultery; and some on the other hand have come over as married of whom ther are strange suspicions they were never married. Others pride themselves in making others drink till they be insensible, and then strip them naked and in that posture cause them to be carried through the streets to their dwelling place.

अगर आपको सचमुच पता होता कि आपके कई सेवकों के दुराचारी जीवन से ईश्वर का कितना अपमान होता है, उनके नाम की कितनी निंदा होती है और गैर-यहूदियों के बीच धर्म की कितनी बदनामी होती है, तो आपके सिर जल के फव्वारे होते और आपकी आँखें आँसुओं की नदियाँ बहतीं। कुछ लोग अविवाहित होने का दिखावा करके आते हैं, जबकि उनकी

पत्नियाँ इंग्लैंड में होती हैं और वे यहाँ व्यभिचार में लिप्त रहते हैं; और कुछ लोग विवाहित होने का दिखावा करके आते हैं, जिनके बारे में संदेह है कि उनका कभी विवाह नहीं हुआ था। कुछ लोग दूसरों को तब तक शराब पिलाने में गर्व महसूस करते हैं जब तक वे बेहोश न हो जाएँ, फिर उन्हें नंगा करके उसी हालत में सड़कों से अपने घर ले जाते हैं।

The chaplain may have been slightly mollified when, four years later, the first English church to be completed in India was consecrated. Behaviour, however, seems not to have improved. The Company introduced a temperance rule:

चार साल बाद जब भारत में बनकर तैयार होने वाला पहला अंग्रेजी चर्च पवित्र किया गया, तो पादरी को शायद थोड़ी राहत मिली होगी। हालाँकि, व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ। कंपनी ने संयम का नियम लागू किया:

No one person shall be allowed to drink above a half a pint of arrack or brandy and one quart of wine at one time, under a penalty of one pagoda upon the housekeeper that supplied it, and twelve fanams upon every guest that exceeded that modest allowance.

किसी भी व्यक्ति को एक बार में आधा पाइंट अराक या ब्रांडी और एक क्वार्ट वाइन से अधिक पीने की अनुमति नहीं होगी, ऐसा न करने पर इसे उपलब्ध कराने वाले हाउसकीपर पर एक पगोडा का जुर्माना और उस मामूली सीमा से अधिक सेवन करने वाले प्रत्येक अतिथि पर बारह फनम का जुर्माना लगाया जाएगा।

At the end of the seventeenth century, the ‘English’ civilian population of Madras and the rest of the Coromandel Coast was estimated as to be 119 men and seventy-one women. Of the forty-seven ‘English’ wives, twenty-six were indeed English, but there were also fourteen Portuguese, four of mixed Portuguese and Indian blood, two French and one Georgian. The rest of the women consisted of fourteen widows and ten ‘single English young women’. Together with the soldiers the total ‘English’ population was still only about

400. The non-European population had, however, grown prodigiously. Lockyer estimated that by 1704 there were 300,000 in the ‘Black Town’.

सत्रहवीं शताब्दी के अंत में, मद्रास और कोरोमंडल तट के शेष भाग की 'अंग्रेज़' नागरिक आबादी लगभग 119 पुरुष और इकहत्तर महिलाएं थीं। सैंतालीस 'अंग्रेज़' पत्नियों में से छब्बीस वास्तव में अंग्रेज़ थीं, लेकिन चौदह पुर्तगाली, चार मिश्रित पुर्तगाली और भारतीय मूल की, दो फ्रांसीसी और एक जॉर्जियाई भी थीं। शेष महिलाओं में चौदह विधवाएँ और दस 'अविवाहित अंग्रेज़ युवतियाँ' शामिल थीं। सैनिकों को मिलाकर भी कुल 'अंग्रेज़' आबादी लगभग 400 ही थी। हालाँकि, गैर-यूरोपीय आबादी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी। लॉकियर का अनुमान था कि 1704 तक 'ब्लैक टाउन' में 300,000 लोग थे।

Slaves were commonplace in Madras. Not only were they kept by Company employees, but the Company itself purchased them for its own use. There was also a thriving export business. The accounts show that in the month of September 1687 no fewer than 665 slaves were exported.

मद्रास में दास प्रथा आम थी। न केवल कंपनी के कर्मचारी उन्हें रखते थे, बल्कि कंपनी स्वयं भी उन्हें अपने उपयोग के लिए खरीदती थी। इसके अलावा, दासों का निर्यात व्यापार भी खूब फल-फूल रहा था। खातों से पता चलता है कि सितंबर 1687 में कम से कम 665 दासों का निर्यात किया गया था।

In 1683 the Company wrote to Surat and Madras:

1683 में कंपनी ने सूरत और मद्रास को पत्र लिखा:

His Majesty hath required of us to send to India to provide him one male and two female blacks, but they must be dwarfs, and of the least size you can procure; the male to be about 17 years of age and the female about 14. We would have you, next to their littleness, to choose such as may have the best features, and to send them home upon any of our ships, giving the commander great charge to take care of their accommodation, and in particular of the female, that she be in no way abused in the voyage by any of the seamen.

महाराज ने हमें भारत से एक पुरुष और दो अश्वेत महिलाओं को भेजने का आदेश दिया है, लेकिन वे बौने होने चाहिए और उनका कद जितना संभव हो उतना छोटा होना चाहिए; पुरुष की आयु लगभग 17 वर्ष और महिला की आयु लगभग 14 वर्ष होनी चाहिए। हम चाहते हैं कि आप उनके छोटे कद को ध्यान में रखते हुए, सबसे सुंदर विशेषताओं वाले व्यक्तियों का चयन करें और उन्हें हमारे किसी भी जहाज पर घर भेजें, और कमांडर को उनके रहने-सहने का विशेष ध्यान रखने का निर्देश दें, विशेषकर महिला का, ताकि यात्रा के दौरान किसी भी नाविक द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार न हो।

Following the death of Charles II in 1685, the Company countermanded the order, which had been intended for the king's mistress, the Duchess of Portsmouth. She had prudently departed for France.

1685 में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के बाद, कंपनी ने उस आदेश को रद्द कर दिया, जो राजा की प्रेमिका, पोर्ट्समाउथ की डचेस के लिए था। वह समझदारी से फ्रांस के लिए रवाना हो गई थीं।

The Company's main export business from Madras was in textiles. It imported lead and tin. It comes as no surprise to learn that there was also a good market for imports of wine, beer in casks and bottles, cider, spirits and cherry brandy.

मद्रास से कंपनी का मुख्य निर्यात व्यवसाय वस्त्रों का था। यह सीसा और टिन का आयात करती थी। यह जानकर आश्चर्य नहीं होता कि शराब, पीपों और बोतलों में बीयर, साइडर, स्पिरिट और चेरी ब्रांडी के आयात के लिए भी अच्छा बाजार था।

Bombay was given to the English by the Portuguese. The Portuguese had first invaded the islands in 1509: 'Our men captured many cows and some blacks who were hiding among the bushes, and of whom the good were kept and the rest were killed'. Bombay was not, as it is now, the tip of a large island, but a group of seven islands. These would eventually be linked together by

causeways. The spaces around and between the islands would be filled in so as to more than double the original area of land. The islands had been ceded to Portugal in 1534 by the ruler of Gujarat in exchange for help against the invading Mughals. The Portuguese did very little with their acquisition. They destroyed a few temples and built a few churches. Later in the sixteenth century, Garcia d'Orta, whose dead body would be tried by the Inquisition, was given a lease over the main island where he built a manor house.

बंबई पुर्तगालियों द्वारा अंग्रेजों को दिया गया था। पुर्तगालियों ने पहली बार 1509 में द्वीपों पर आक्रमण किया था: 'हमारे सैनिकों ने कई गायों और झाड़ियों में छिपे कुछ अश्वेतों को पकड़ा, जिनमें से अच्छे लोगों को रखा गया और बाकी को मार डाला गया।' बंबई, जैसा कि अब है, एक बड़े द्वीप का सिरा नहीं था, बल्कि सात द्वीपों का एक समूह था। इन्हें बाद में पुलों द्वारा जोड़ा गया। द्वीपों के आसपास और बीच के स्थानों को भरकर भूमि का मूल क्षेत्रफल दोगुने से भी अधिक कर दिया गया। इन द्वीपों को 1534 में गुजरात के शासक ने आक्रमणकारी मुगलों के विरुद्ध सहायता के बदले पुर्तगाल को सौंप दिया था। पुर्तगालियों ने अपने अधिग्रहण के बाद बहुत कम काम किया। उन्होंने कुछ मंदिरों को नष्ट किया और कुछ गिरजाघर बनवाए। बाद में सोलहवीं शताब्दी में, गार्सिया डी'ओर्टा, जिनके मृत शरीर पर बाद में धर्म जांच आयोग द्वारा मुकदमा चलाया गया, को मुख्य द्वीप का पट्टा दिया गया, जहाँ उन्होंने एक हवेली बनवाई।

Charles II married Catherine of Braganza, daughter of the king of Portugal, in May 1662. The treaty of marriage, drawn up the year before, provided for the transfer of the port and island of Bombay to the English king. The English had some previous knowledge of the island. In 1626 an Anglo-Dutch fleet, pursuing some Portuguese ships, had received information that they were refitting at 'a hole called Bombay'. They hurried there only to find that the Portuguese ships had already departed. In revenge they 'left the great house,

which was both a warehouse, a friary, and a fort, all afire, burning with many other good houses'.

चार्ल्स द्वितीय ने मई 1662 में पुर्तगाल के राजा की पुत्री कैथरीन ऑफ ब्रागांज़ा से विवाह किया। विवाह संधि, जो एक वर्ष पूर्व तैयार की गई थी, में बॉम्बे बंदरगाह और द्वीप को अंग्रेज़ राजा को हस्तांतरित करने का प्रावधान था। अंग्रेजों को द्वीप के बारे में पहले से कुछ जानकारी थी। 1626 में, पुर्तगाली जहाजों का पीछा करते हुए एक एंग्लो-डच बेड़े को सूचना मिली कि वे 'बॉम्बे नामक एक बंदरगाह' पर मरम्मत कर रहे हैं। वे वहाँ शीघ्र पहुँचे, लेकिन पाया कि पुर्तगाली जहाज पहले ही जा चुके थे। प्रतिशोध में उन्होंने 'उस विशाल भवन को, जो एक गोदाम, एक मठ और एक किला तीनों था, आग लगा दी, और कई अन्य अच्छे भवनों को भी जला दिया'।

Charles II moved quickly. Two months before his marriage he sent out a fleet of five ships under the command of the Earl of Marlborough to gain possession. A farce then ensued. The Portuguese said that they would only deal with the commander of the English troops, Sir Abraham Shipman. Unfortunately, Marlborough had left Shipman behind in England. When he eventually arrived, the Portuguese found some defect in his commission. There was then a dispute as to which islands were a part of the dowry. Marlborough returned empty-handed and a diplomatic dispute ensued.

चार्ल्स द्वितीय ने तेज़ी से कदम उठाए। अपनी शादी से दो महीने पहले, उन्होंने अर्ल ऑफ मार्लबोरो की कमान में पाँच जहाजों का एक बेड़ा कब्ज़ा करने के लिए भेजा। इसके बाद एक हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो गई। पुर्तगालियों ने कहा कि वे केवल अंग्रेज़ सेना के कमांडर सर अब्राहम शिपमैन से ही बात करेंगे। दुर्भाग्य से, मार्लबोरो शिपमैन को इंग्लैंड में ही छोड़ आए थे। जब वे अंततः पहुँचे, तो पुर्तगालियों को उनके कमीशन में कुछ खामी मिली। फिर इस बात पर विवाद खड़ा हो गया कि दहेज में कौन से द्वीप शामिल होंगे। मार्लबोरो खाली हाथ लौट आए और एक राजनयिक विवाद शुरू हो गया।

The Hindus of Bombay were anxious for the English to succeed. Tired of Portuguese oppression and confident that the English would give them religious freedom, they sent a Brahmin priest to Surat and offered their support should the English decide to take Bombay by force.

बंबई के हिंदू अंग्रेजों की जीत को लेकर चिंतित थे। पुर्तगालियों के अत्याचार से तंग आकर और इस विश्वास के साथ कि अंग्रेज उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता देंगे, उन्होंने सूरत में एक ब्राह्मण पुजारी को भेजा और अंग्रेजों द्वारा बंबई पर बलपूर्वक कब्जा करने की स्थिति में अपना समर्थन देने की पेशकश की।

The viceroy at Goa, seeing the potential value of Bombay, was reluctant to hand it over and opened up a correspondence with the king of Portugal. Shipman moved his troops to Anjadip Island, just south of Goa, where 300 of them died of malnutrition and disease. Shipman also died. His commission was left in his will to his deputy, Humphrey Cooke. At first the Portuguese disputed the legality of this, but eventually agreed to deal with Cooke. There was a protracted wrangle over the islands near Bombay. Cooke finally secured six of these islands and the whole transfer was finally made on 18 February 1665.

गोवा के वायसराय ने बंबई के संभावित महत्व को देखते हुए इसे सौंपने में अनिच्छा दिखाई और पुर्तगाल के राजा के साथ पत्राचार शुरू किया। शिपमैन ने अपनी सेना को गोवा के ठीक दक्षिण में स्थित अंजदीप द्वीप पर भेजा, जहाँ कुपोषण और बीमारी से उनके 300 सैनिक मर गए। शिपमैन की भी मृत्यु हो गई। उन्होंने अपनी वसीयत में अपना कमीशन अपने डिप्टी हम्फ्री कुक को सौंप दिया। पहले तो पुर्तगालियों ने इसकी वैधता पर सवाल उठाया, लेकिन अंततः कुक के साथ समझौता करने के लिए सहमत हो गए। बंबई के पास के द्वीपों को लेकर लंबा विवाद चला। अंततः कुक ने इनमें से छह द्वीप हासिल कर लिए और 18 फरवरी 1665 को पूरा हस्तांतरण संपन्न हुआ।

Bombay was a disappointment. As Samuel Pepys wrote in his diary: '... but a poor place, and not really so as was described to our king'. There was a Government House that had some fortifications, a few defensive towers to repel pirates, some coconut plantations and a few houses and churches. There were some in the East India Company, however, who saw that Bombay had potential as a harbour. It was also a place, unlike Surat, where the Company would not be beholden to an Indian ruler. Charles II, seeing that Bombay had no revenue and was expensive to garrison, was happy to give it to the Company. He was further encouraged by a loan of £50,000. On 27 March 1668, Bombay was handed to the Company for an annual rent of £10.

बंबई निराशाजनक साबित हुआ। जैसा कि सैमुअल पेप्स ने अपनी डायरी में लिखा: '... एक साधारण सी जगह, और वास्तव में वैसी नहीं जैसी हमारे राजा को बताई गई थी।' वहाँ एक सरकारी भवन था जिसमें कुछ किलेबंदी, समुद्री लुटेरों को रोकने के लिए कुछ रक्षात्मक मीनारें, कुछ नारियल के बागान और कुछ घर और गिरजाघर थे। हालाँकि, ईस्ट इंडिया कंपनी में कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने बंबई में एक बंदरगाह के रूप में क्षमता देखी। सूरत के विपरीत, यह एक ऐसी जगह भी थी जहाँ कंपनी किसी भारतीय शासक के अधीन नहीं रहती। चार्ल्स द्वितीय ने देखा कि बंबई का कोई राजस्व नहीं था और वहाँ सैन्य तैनाती महंगी थी, इसलिए वे इसे कंपनी को देने के लिए तैयार हो गए। उन्हें 50,000 पाउंड के ऋण से और प्रोत्साहन मिला। 27 मार्च 1668 को, बंबई को 10 पाउंड के वार्षिक किराए पर कंपनी को सौंप दिया गया।

The following year Gerald Aungier became the Company's president at Surat and also governor of Bombay. He immediately began to develop the islands and for three years from 1672 lived permanently at Surat. He set up law courts and established a mint. He improved the fortifications and established an effective navy.

अगले वर्ष गेराल्ड औंगियर सूरत में कंपनी के अध्यक्ष और बंबई के राज्यपाल बने। उन्होंने तुरंत द्वीपों का विकास शुरू किया और 1672 से तीन वर्षों तक सूरत में स्थायी रूप से निवास किया। उन्होंने विधि न्यायालय स्थापित किए और एक टकसाल की स्थापना की। उन्होंने किलेबंदी में सुधार किया और एक प्रभावी नौसेना की स्थापना की।

From the beginning, the Company was keen to persuade Indians and foreigners from Surat to move to Bombay. A senior Company official at Bombay had written to Charles II's Secretary of State urging a policy of religious tolerance:

शुरू से ही, कंपनी सूरत के भारतीयों और विदेशियों को बंबई में बसने के लिए राजी करने को उत्सुक थी। बंबई में कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने चार्ल्स द्वितीय के राज्य सचिव को पत्र लिखकर धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाने का आग्रह किया था।

My endevours at present beeing to draw hither as many merchants (Banians as well as Moores and Persians) as possibly as I cann from Suratt, Cambaya, Ahmadavad, Boroach, Diu, Tahtah, etc., other places; unto whom His Majesty will but graunt liberty to buyld their pagados and mesquitas to exercise theyr religion publiquely in, noe doubt then but this will bee made a very famous and opulent port.

इस समय मेरा प्रयास सूरत, कंबया, अहमदाबाद, बोरौच, दीव, ताहताह आदि अन्य स्थानों से यथासंभव अधिक से अधिक व्यापारियों (बनियाई, मूर और फारसी) को यहाँ आकर्षित करना है; यदि महामहिम उन्हें अपने धार्मिक अनुष्ठानों के लिए सार्वजनिक रूप से अपने धार्मिक स्थल और मस्जिदें बनाने की अनुमति दे दें, तो निःसंदेह यह एक बहुत प्रसिद्ध और समृद्ध बंदरगाह बन जाएगा।

There were many Hindus, Jains, Parsis and Armenians inclined to leave Gujarat. Emperor Akbar had come to the Mughal throne in 1556. During his long reign many of the inequalities imposed on non-Muslims had been put right. He had brought religious tolerance and abolished the *jizya*, the hated

poll tax on non-Muslims. His benign reforms had largely continued under his successor, Jahangir. Shah Jahan succeeded him in 1627. At first he seemed to have followed in his father and grandfather's footsteps, but he gradually became more zealously Muslim. In 1632 he ordered the destruction of newly built Hindu temples. Nevertheless, there was still a good deal of religious tolerance in Mughal India. More toleration than in many Muslim countries; more than in most of the countries of Europe.

कई हिंदू, जैन, पारसी और अर्मेनियाई लोग गुजरात छोड़ने के इच्छुक थे। सम्राट अकबर 1556 में मुगल सिंहासन पर आसीन हुए। उनके लंबे शासनकाल में गैर-मुसलमानों पर थोपी गई कई असमानताओं को दूर किया गया। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और गैर-मुसलमानों पर लगाए जाने वाले घृणित कर, जजिया को समाप्त कर दिया। उनके उदार सुधारों को उनके उत्तराधिकारी जहांगीर के शासनकाल में भी काफी हद तक जारी रखा गया। शाहजहाँ 1627 में उनके उत्तराधिकारी बने। प्रारंभ में ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने अपने पिता और दादा के पदचिन्हों का अनुसरण किया है, लेकिन धीरे-धीरे वे और अधिक कट्टर मुस्लिम बन गए। 1632 में उन्होंने नवनिर्मित हिंदू मंदिरों को ध्वस्त करने का आदेश दिया। फिर भी, मुगल भारत में धार्मिक सहिष्णुता काफ़ी हद तक मौजूद थी। कई मुस्लिम देशों की तुलना में अधिक सहिष्णुता; यूरोप के अधिकांश देशों की तुलना में भी अधिक।

Shah Jahan's son, Aurangzeb, was a religious zealot. Unfortunately for the Gujaratis, in 1645 his father had appointed him governor of Gujarat. He made life difficult for non-Muslims and desecrated Surat's main Jain temple, which was turned into a mosque. In 1658 Aurangzeb was proclaimed emperor. He imprisoned his father and eldest brother, and had another brother beheaded whom he regarded as an infidel. His forefathers had forged alliances with the Hindu princes of Rajasthan. Aurangzeb attacked them and set off a chain of wars that would last until the end of his long life. He ruled for nearly fifty years, until 1707, and left his empire ruined. Moreover, he undid years of

religious tolerance and left a legacy of religious conflict that carries down to this day. He reimposed the hated jizya. Constant warfare and the high taxes to pay for them unsettled the majority Hindu population. In addition there was much oppression by Muslim local officials.

शाहजहाँ का पुत्र औरंगज़ेब एक कट्टरपंथी था। गुजरातियों के लिए दुर्भाग्यवश, 1645 में उसके पिता ने उसे गुजरात का राज्यपाल नियुक्त कर दिया। उसने गैर-मुसलमानों का जीवन कठिन बना दिया और सूरत के मुख्य जैन मंदिर को अपवित्र कर दिया, जिसे मस्जिद में बदल दिया गया। 1658 में औरंगज़ेब को सम्राट घोषित किया गया। उसने अपने पिता और बड़े भाई को कैद कर लिया और एक अन्य भाई का सिर कलम करवा दिया, जिसे वह काफ़िर मानता था। उसके पूर्वजों ने राजस्थान के हिंदू राजकुमारों के साथ गठबंधन किया था। औरंगज़ेब ने उन पर आक्रमण किया और युद्धों की एक ऐसी श्रृंखला शुरू कर दी जो उसके लंबे जीवन के अंत तक जारी रही। उसने लगभग पचास वर्षों तक, 1707 तक शासन किया और अपने साम्राज्य को बर्बाद कर दिया। इसके अलावा, उसने वर्षों की धार्मिक सहिष्णुता को नष्ट कर दिया और धार्मिक संघर्ष की एक ऐसी विरासत छोड़ी जो आज तक जारी है। उसने घृणित जजिया कर को फिर से लागू कर दिया। निरंतर युद्ध और उनके लिए चुकाए जाने वाले उच्च करों ने बहुसंख्यक हिंदू आबादी को अशांत कर दिया। इसके अलावा, मुस्लिम स्थानीय अधिकारियों द्वारा भी बहुत उत्पीड़न किया गया।

In 1667 the Company at Surat wrote to London that Aurangzeb's religious zeal 'hath greatly disturbed the whole kingdome'. He 'gives himselfe wholy upon the converting, or rather peverting, the Banians etc., and pulling down the places of their idolitrous worship, erecting muskeets [mosques] in their roome.' It added that if a Muslim were asked to repay a loan from a Hindu he would threaten to report him for insulting the Prophet and, if that happened, 'the poore man is forced to circumcission and made a Moore'. Naturally, this oppression by Aurangzeb encouraged non-Muslims to move to the sanctuary of Bombay.

1667 में सूरत स्थित कंपनी ने लंदन को पत्र लिखकर बताया कि औरंगज़ेब के धार्मिक उन्माद ने 'पूरे राज्य में अशांति फैला दी है'। वह 'बनियाई आदि को धर्म परिवर्तन कराने, या यों कहें कि उन्हें भ्रष्ट करने, और उनकी मूर्ति पूजा के स्थानों को ध्वस्त करके उनकी जगह मस्जिदें बनवाने में पूरी तरह से लगा हुआ है।' पत्र में आगे लिखा था कि यदि किसी मुसलमान से किसी हिंदू का ऋण चुकाने को कहा जाता, तो वह पैगंबर का अपमान करने की शिकायत करने की धमकी देता और ऐसा होने पर 'उस बेचारे को खतना कराने और मुग्ध बनाने के लिए मजबूर किया जाता।' स्वाभाविक रूप से, औरंगज़ेब के इस अत्याचार ने गैर-मुसलमानों को बंबई की शरण में जाने के लिए प्रेरित किया।

The Company's attempts to draw people from Surat to Bombay enraged Aurangzeb. His governor at Surat wrote to the Company to protest and he threatened the expulsion of the English from the Mughal Empire. The merchants of Surat were summoned one by one, and made to sign a declaration that they had not been approached by the Company. The most senior Armenian, Kawaka Minas, demurred and upon being pressed, produced an invitation to settle in Bombay signed by the deputy governor. The Company pretended it had nothing to do with it and that the Armenian had probably 'invited himself first'. This had severe repercussions on the business enterprises of Kawaka Minas and his community. When he wrote to the emperor to complain, he was 'beaten with slippers and staves until they had almost killed him'.

कंपनी द्वारा सूरत से लोगों को बंबई लाने के प्रयासों से औरंगज़ेब क्रोधित हो गया। सूरत में उसके गवर्नर ने कंपनी को पत्र लिखकर विरोध जताया और मुग़ल साम्राज्य से अंग्रेजों को निष्कासित करने की धमकी दी। सूरत के व्यापारियों को एक-एक करके बुलाया गया और उनसे एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करवाए गए जिसमें लिखा था कि कंपनी ने उनसे संपर्क नहीं किया था। सबसे वरिष्ठ अर्मेनियाई व्यापारी, कावाका मीनास ने आपत्ति जताई और दबाव डालने पर उन्होंने उप-गवर्नर द्वारा हस्ताक्षरित बंबई में बसने का निमंत्रण पत्र प्रस्तुत किया।

कंपनी ने यह जताने की कोशिश की कि उसका इससे कोई लेना-देना नहीं है और अर्मेनियाई ने शायद स्वयं ही निमंत्रण भेजा था। इसका कावाका मीनास और उनके समुदाय के व्यापारिक उद्यमों पर गंभीर प्रभाव पड़ा। जब उन्होंने सम्राट को शिकायत पत्र लिखा, तो उन्हें चप्पलों और लाठियों से तब तक पीटा गया जब तक कि वे लगभग मरणासन्न नहीं हो गए।

Nevertheless, the stability that ensued from Aungier's wise rule, together with the Company's policy of religious toleration, enabled him to attract many merchants of all religions to Bombay. Armenians came, as did the Parsis who were given permission to build a fire temple inside the fort. Importantly, many weavers came too. These came not only from Gujarat but also from the country south of Bombay, which had a long tradition of fine weaving. The income they generated enabled Aungier to put Bombay's finances in good order.

फिर भी, औंगियर के दूरदर्शी शासन से मिली स्थिरता और कंपनी की धार्मिक सहिष्णुता की नीति ने उन्हें बंबई में सभी धर्मों के कई व्यापारियों को आकर्षित करने में सक्षम बनाया। अर्मेनियाई लोग आए, साथ ही पारसी भी आए जिन्हें किले के अंदर अग्नि मंदिर बनाने की अनुमति दी गई थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि कई बुनकर भी आए। ये न केवल गुजरात से बल्कि बंबई के दक्षिण में स्थित ग्रामीण इलाकों से भी आए, जहाँ उत्तम बुनाई की एक लंबी परंपरा थी। उनकी आय से औंगियर बंबई की आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करने में सक्षम हुए।

Less successfully, Aungier arranged for some English women to be sent out. He was mainly concerned to prevent the English from forming relationships with women who had Portuguese blood and who would then convert their men or their children to Catholicism. Some of the women sent out from England soon found husbands for, as the Reverend John Ovington later noted, 'a modish garb and mien is all that is expected from any women that pass thither, who are many times match'd to the chief merchants upon the place,

and advance thereby their condition to a very happy pitch'. However, as might have been expected, not all of these women were well behaved and they were instructed to 'apply themselves to a more sober and Christian conversation otherwise the sentence is this that they shall be confined totally of their liberty to goe abroad and fed with bread and water till they are embarked on board ship for England'. The experiment was soon terminated.

औंगियर ने कुछ अंग्रेज़ महिलाओं को बाहर भेजने की व्यवस्था की, जो कम सफल रही। उनका मुख्य उद्देश्य अंग्रेज़ों को पुर्तगाली मूल की महिलाओं से संबंध बनाने से रोकना था, क्योंकि वे महिलाएं अपने पतियों या बच्चों को कैथोलिक धर्म में परिवर्तित कर सकती थीं। इंग्लैंड से भेजी गई कुछ महिलाओं को जल्द ही पति मिल गए, क्योंकि जैसा कि रेवरेंड जॉन ओविंगटन ने बाद में कहा, 'वहाँ जाने वाली महिलाओं से केवल फैशनेबल पहनावे और व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। अक्सर उनकी शादी वहाँ के प्रमुख व्यापारियों से कर दी जाती है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति काफी बेहतर हो जाती है।' हालांकि, जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी, इन सभी महिलाओं का व्यवहार अच्छा नहीं था और उन्हें निर्देश दिया गया कि 'वे अधिक संयमित और ईसाई आचरण अपनाएं, अन्यथा उन्हें विदेश जाने की पूरी स्वतंत्रता से वंचित कर दिया जाएगा और जब तक वे इंग्लैंड जाने वाले जहाज पर सवार नहीं हो जातीं, तब तक उन्हें रोटी और पानी दिया जाएगा।' यह प्रयोग जल्द ही समाप्त हो गया।

Most of the English had slaves. Some were Africans acquired from Arab traders and some were Indians. It was the fashion to own young slaves from Malabar – the women to have girls and the men to have boys.

अधिकांश अंग्रेजों के पास गुलाम थे। इनमें से कुछ अरब व्यापारियों से खरीदे गए अफ्रीकी थे और कुछ भारतीय। मालाबार से युवा गुलामों को रखना एक चलन था – महिलाओं के लिए लड़कियां और पुरुषों के लिए लड़के।

The Company's courts administered justice in Bombay. The sentences were severe. Whipping was the usual punishment – either at the pillory or behind a cart. This might be augmented by time in prison or work on the sea defences.

Even when the punishment was over, the stigma could remain for all to see, since the culprit's cheeks were often branded. Both men and women were whipped. Normally, mindful of the biblical injunction 'forty stripes he may give him and not exceed', the maximum number of lashes was thirty-nine. Those found guilty of witchcraft were also severely punished. A woman who was accused of using charmed rice to cure the sick was given eleven lashes. In 1671 a man was discovered with a teat on his arm and accused of being a wizard. Found guilty by a jury, he was handed over to the military to be hung. The soldiers felt he should experience a 'greater terror', and burnt him. They recorded their surprise 'that when he lay in the midst of so great a fire one of his arms quite burnt off yet notwithstanding his great knot of hair on his head, and his clout betwixt his legs was entire though they perfectly flamed above an hour together.'

बंबई में कंपनी की अदालतों द्वारा न्याय दिया जाता था। सजाएँ कठोर थीं। कोड़े मारना आम सजा थी – या तो खंभे पर खड़ा करके या गाड़ी के पीछे बांधकर। इसके अलावा कारावास या समुद्री सुरक्षा कार्यों में काम करने की सजा भी दी जा सकती थी। सजा पूरी होने के बाद भी कलंक सबके सामने बना रहता था, क्योंकि अपराधी के गालों पर अक्सर दाग लगा दिया जाता था। पुरुषों और महिलाओं दोनों को कोड़े मारे जाते थे। आमतौर पर, बाइबल के आदेश 'चालीस कोड़े मारे जा सकते हैं, इससे अधिक नहीं' को ध्यान में रखते हुए, कोड़ों की अधिकतम संख्या उनतीस थी। जादू टोना के दोषी पाए जाने वालों को भी कड़ी सजा दी जाती थी। एक महिला पर बीमारों को ठीक करने के लिए जादुई चावल का उपयोग करने का आरोप लगाया गया था और उसे ग्यारह कोड़े मारे गए थे। 1671 में एक व्यक्ति के हाथ पर स्तन का निशान पाया गया और उस पर जादूगर होने का आरोप लगाया गया। जूरी द्वारा दोषी पाए जाने पर, उसे फांसी देने के लिए सेना के हवाले कर दिया गया। सैनिकों को लगा कि उसे 'और भी भयानक' अनुभव करना चाहिए, इसलिए उन्होंने उसे जला दिया। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि 'जब वह इतनी भीषण आग के बीच पड़ा था, तब भी उसकी एक भुजा पूरी

तरह जल गई थी, जबकि उसके सिर पर बालों का बड़ा गुच्छा और उसके पैरों के बीच का कपड़ा पूरी तरह से सुरक्षित था, हालांकि वे एक घंटे से अधिक समय तक लगातार पूरी तरह से जलते रहे।'

As the population of Bombay expanded, Aungier oversaw a programme of reclaiming the marshes and building new houses. He planned and laid out his 'city, which by God's assistance, is intended to be built'. By the time of his death in 1677 the population of Bombay had expanded tremendously. Some estimates put it as high as 60,000.

जैसे-जैसे बंबई की जनसंख्या बढ़ती गई, औंगियर ने दलदली भूमि को सुधारने और नए मकान बनाने के कार्यक्रम की देखरेख की। उन्होंने अपने उस शहर की योजना बनाई और उसका खाका तैयार किया, जिसे ईश्वर की कृपा से बनाया जाना था। 1677 में उनकी मृत्यु के समय तक बंबई की जनसंख्या में जबरदस्त वृद्धि हो चुकी थी। कुछ अनुमानों के अनुसार यह संख्या 60,000 तक पहुँच गई थी।

The East India Company had its own army in India and this often made up much of the population of its settlements. Until it became more professional in the middle of the eighteenth century, it was not an impressive fighting force.

ईस्ट इंडिया कंपनी की भारत में अपनी सेना थी और अक्सर यही सेना उसकी बस्तियों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा होती थी। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जब तक यह अधिक पेशेवर नहीं बन गई, तब तक यह कोई प्रभावशाली युद्ध शक्ति नहीं थी।

From the beginning, the Company had maintained a guard at its factories, but these were in territories over which Indians had sovereignty, such as Surat, and where the Indians had their own armies. The first real Company army was probably at Madras, on the east coast. At that fort, from about 1642, the

Company maintained a small garrison of English and Indian soldiers. These were principally for protection against attack by the Portuguese or Dutch.

आरंभ से ही कंपनी ने अपने कारखानों में सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखी थी, लेकिन ये कारखाने उन क्षेत्रों में स्थित थे जिन पर भारतीयों का प्रभुत्व था, जैसे सूरत, और जहाँ भारतीयों की अपनी सेनाएँ थीं। कंपनी की पहली वास्तविक सेना संभवतः पूर्वी तट पर स्थित मद्रास में थी। उस किले में, लगभग 1642 से, कंपनी ने अंग्रेज़ और भारतीय सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी तैनात रखी थी। यह मुख्य रूप से पुर्तगालियों या डचों के हमलों से सुरक्षा के लिए थी।

On the west coast, a separate army developed from the troops Charles II had sent out to secure Bombay. When the king transferred the island to the Company, he stipulated that the Company should maintain at its own expense three companies of infantry. Initially, this force was composed of the remnants of the royal army but soon, as disease took its toll, it was filled with Portuguese, French and Indians. Many of these soldiers were Indian Christians with Portuguese blood, known as topas*ses*.

पश्चिमी तट पर, चार्ल्स द्वितीय द्वारा बंबई की सुरक्षा के लिए भेजे गए सैनिकों से एक अलग सेना का गठन किया गया। जब राजा ने द्वीप को कंपनी को सौंप दिया, तो उन्होंने यह शर्त रखी कि कंपनी अपने खर्च पर पैदल सेना की तीन कंपनियों का रखरखाव करेगी। प्रारंभ में, इस सेना में शाही सेना के बचे हुए सैनिक शामिल थे, लेकिन जल्द ही, बीमारी के प्रकोप के कारण, इसमें पुर्तगाली, फ्रांसीसी और भारतीय सैनिक शामिल हो गए। इनमें से कई सैनिक पुर्तगाली मूल के भारतीय ईसाई थे, जिन्हें 'टोपास' के नाम से जाना जाता था।

Life as a soldier was hard. Disease was rife. The First Bombay European Regiment of Foot lost 100 men – about half their strength – from October 1675 to February 1676. The Company supplied their soldiers with regular English army coats – not ideal for the climate. Soldiers had to pay for these, but the Company complained that soldiers' deaths often left it out of pocket. Discipline was harsh. The usual punishment for insubordination was thirty-

nine lashes. Sometimes, men were made to ‘run the gauntlet’, which involved running naked between rows of fellow soldiers and being whipped or beaten. In one extraordinary case, Sergeant Thomas Cross and Corporal John Powle were made to throw dice on a drum under the gallows. The loser was to die. Powle lost, but two priests begged the Company’s president to show mercy and he was exiled. Not surprisingly, it was difficult to find recruits, especially Europeans. The Company had to take on runaway sailors, deserters from foreign armies and prisoners of war. They did not make good soldiers.

सैनिक जीवन कठिन था। बीमारियाँ बहुत फैली हुई थीं। बॉम्बे की पहली यूरोपीय पैदल सेना रेजिमेंट ने अक्टूबर 1675 से फरवरी 1676 के बीच अपने लगभग आधे सैनिक खो दिए, यानी 100 सैनिक। कंपनी अपने सैनिकों को नियमित अंग्रेज़ी सेना के कोट देती थी, जो वहाँ की जलवायु के लिए उपयुक्त नहीं थे। सैनिकों को इनके लिए भुगतान करना पड़ता था, लेकिन कंपनी शिकायत करती थी कि सैनिकों की मृत्यु के कारण अक्सर उसे नुकसान उठाना पड़ता था। अनुशासन बहुत कठोर था। अवज्ञा की सामान्य सज़ा 39 कोड़े थे। कभी-कभी सैनिकों को 'रन द गांटलेट' के लिए मजबूर किया जाता था, जिसमें उन्हें साथी सैनिकों की पंक्तियों के बीच नग्न दौड़ना पड़ता था और कोड़े या मार खानी पड़ती थी। एक असाधारण मामले में, सार्जेंट थॉमस क्रॉस और कॉर्पोरल जॉन पाउल को फाँसी के नीचे एक ढोल पर पासा फेंकने के लिए कहा गया। हारने वाले को मौत की सज़ा दी जानी थी। पाउल हार गया, लेकिन दो पादरियों ने कंपनी के अध्यक्ष से दया दिखाने की विनती की और उसे निर्वासित कर दिया गया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि रंगरूटों, विशेष रूप से यूरोपीय लोगों को भर्ती करना मुश्किल था। कंपनी को भगोड़े नाविकों, विदेशी सेनाओं से भागे सैनिकों और युद्धबंदियों को भर्ती करना पड़ता था। वे अच्छे सैनिक नहीं बन पाए।

Two years after Aungier’s death, Bombay suffered a series of setbacks and the population plummeted. The Mughal emperor, Aurangzeb, was still at war with

the Maratha king, Shivaji. The Marathas had developed a considerable navy and Aurangzeb had enlisted the help of the Siddis of Janjira – a small independent state with many warships. Both sides tried to obtain the help of the Company against the other. The Marathas took over Khanderi Island at the entrance to Bombay harbour. When the Company asked the Siddis to remove Shivaji's men, they used the opportunity to take the nearby island of Underi for themselves. They left Shivaji's troops in control of Khanderi but, as a consolation, they brought the Company a basket of Maratha heads. The capture of the islands and the continual warfare between the two navies made the seas unsafe for trade.

औंगियर की मृत्यु के दो वर्ष बाद, बंबई को कई झटकों का सामना करना पड़ा और जनसंख्या में भारी गिरावट आई। मुगल सम्राट औरंगजेब मराठा बादशाह शिवाजी के साथ युद्ध में उलझा हुआ था। मराठों ने एक मजबूत नौसेना विकसित कर ली थी और औरंगजेब ने जंजीरा के सिद्दी शासकों की मदद ली थी – जंजीरा एक छोटा स्वतंत्र राज्य था जिसके पास कई युद्धपोत थे। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ कंपनी की मदद लेने की कोशिश की। मराठों ने बंबई बंदरगाह के प्रवेश द्वार पर स्थित खंडेरी द्वीप पर कब्जा कर लिया। जब कंपनी ने सिद्दी शासकों को शिवाजी के सैनिकों को हटाने के लिए कहा, तो उन्होंने इस अवसर का लाभ उठाकर पास के उंदेरी द्वीप पर कब्जा कर लिया। उन्होंने खंडेरी द्वीप पर शिवाजी के सैनिकों का नियंत्रण बनाए रखा, लेकिन सांत्वना के तौर पर कंपनी को मराठा सैनिकों के सिरों से भरी एक टोकरी भेंट की। द्वीपों पर कब्जा और दोनों नौसेनाओं के बीच लगातार युद्ध के कारण समुद्र व्यापार के लिए असुरक्षित हो गया था।

The Company had its own ships. It had leased a dock at Deptford from 1607. As it was too expensive to buy ships on the open market, it started to build ships in 1609. In 1614 it purchased a dock at Blackwall, which could take

ships of a deeper draught and tonnage. It set up foundries to make chains, anchors and nails; a spinning house to make a cord for rigging. It prepared its own salted beef and pork for the voyages from animals that were killed in the Company's own slaughterhouse. Gunpowder was often in short supply and difficult to find on the open market. Accordingly, the Company set up a plant of its own to manufacture this essential commodity for its ships' cannon. Building and repairing the Company's ships and these ancillary activities employed a workforce of 500. The Company also employed up to 2,500 seamen. However, temporary financial difficulties led to Deptford being sold in 1644 and Blackwall being put up for sale in 1650. From 1639 onwards the Company chartered ships to carry its cargoes. Many ships were owned by members of the Company, but many were not. They were often built specially for trade with the East – continually rechartered, so that they spent their entire lives in the service of the Company. All of them operated under the strict control of the Company and utilized the privilege in its charter that they be armed.

कंपनी के पास अपने स्वयं के जहाज थे। इसने 1607 से डेप्टफोर्ड में एक गोदी पट्टे पर ली थी। खुले बाजार से जहाज खरीदना बहुत महंगा होने के कारण, इसने 1609 में जहाज बनाना शुरू किया। 1614 में इसने ब्लैकवॉल में एक गोदी खरीदी, जो अधिक गहरे ड्राफ्ट और टन भार वाले जहाजों को संभाल सकती थी। इसने जंजीरें, लंगर और कीलें बनाने के लिए फाउंड्री स्थापित कीं; रस्सियों को बांधने के लिए एक कताई घर स्थापित किया। कंपनी अपने स्वयं के वधशाला में मारे गए जानवरों से नमकीन गोमांस और सूअर का मांस तैयार करती थी। बारूद की अक्सर कमी रहती थी और खुले बाजार में इसे ढूंढना मुश्किल था। इसलिए, कंपनी ने अपने जहाजों की तोपों के लिए इस आवश्यक वस्तु के निर्माण के लिए अपना एक कारखाना स्थापित किया। कंपनी के जहाजों के निर्माण और मरम्मत तथा इन सहायक गतिविधियों में 500 कर्मचारियों का कार्यबल कार्यरत था। कंपनी ने 2,500 तक नाविकों को

भी रोजगार दिया था। हालांकि, अस्थायी वित्तीय कठिनाइयों के कारण 1644 में डेप्टफोर्ड को बेच दिया गया और 1650 में ब्लैकवॉल को बिक्री के लिए रखा गया। 1639 से कंपनी ने अपने माल परिवहन के लिए जहाजों को किराए पर लेना शुरू कर दिया। कई जहाज कंपनी के सदस्यों के स्वामित्व में थे, लेकिन कई अन्य सदस्यों के स्वामित्व में भी थे। ये जहाज अक्सर पूर्व के साथ व्यापार के लिए विशेष रूप से बनाए जाते थे - इनका लगातार पुनर्किराया होता रहता था, इसलिए इन्होंने अपना पूरा जीवन कंपनी की सेवा में बिताया। ये सभी जहाज कंपनी के सख्त नियंत्रण में संचालित होते थे और कंपनी के चार्टर में निहित विशेषाधिकार का उपयोग करते थे जिसके तहत इन्हें सशस्त्र रखा जा सकता था।

The ships were generally much smaller than the lumbering Portuguese carracks of 1,500 tons or more. Nevertheless, they were some of the biggest ships operated by the English and bigger than most sent to the Caribbean or North America. They ranged in size from 100 to 1,000 tons – the size of the nineteenth century *Cutty Sark* now moored at Greenwich – but typically they were from 300 to 600 tons. A 100-ton ship might have a crew of only thirty; a 600 ton ship perhaps 150. These crews were bigger than strictly necessary for the efficient management of the ships, but it was considered prudent to allow extra men for the expected deaths by disease. Smaller ships might have ten cannons; larger ones forty. The journey to or from India should have taken about six months if the winds were favourable. There would also be six months in India waiting for the wind to turn. So if all went well a round voyage might take eighteen months. However, many voyages took much longer. Departing at the right time of year to make the best of the trade winds was absolutely crucial. As one Portuguese captain observed about leaving for the East from Lisbon: ‘The last day of February is time enough, but the first day of March is late.’

ये जहाज आम तौर पर पुर्तगाल के 1,500 टन या उससे अधिक के भारी-भरकम जहाजों की तुलना में काफी छोटे होते थे। फिर भी, ये अंग्रेजों द्वारा संचालित सबसे बड़े जहाजों में से कुछ थे और कैरिबियन या उत्तरी अमेरिका भेजे गए अधिकांश जहाजों से बड़े थे। इनका आकार 100 से 1,000 टन तक होता था - उन्नीसवीं सदी के कटी सार्क के आकार का, जो अब ग्रीनविच में खड़ा है - लेकिन आमतौर पर इनका वजन 300 से 600 टन होता था। 100 टन के जहाज में केवल तीस लोगों का दल हो सकता था; 600 टन के जहाज में शायद 150। जहाजों के कुशल प्रबंधन के लिए ये दल आवश्यकता से अधिक थे, लेकिन बीमारी से होने वाली संभावित मौतों को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त लोगों को रखना समझदारी माना जाता था। छोटे जहाजों में दस तोपें हो सकती थीं; बड़े जहाजों में चालीस। यदि हवाएँ अनुकूल हों तो भारत आने-जाने में लगभग छह महीने लगते थे। भारत में हवा के रुख बदलने का इंतजार करने में भी छह महीने लगते थे। इसलिए यदि सब कुछ ठीक रहा तो एक गोल यात्रा में अठारह महीने लग सकते थे। हालांकि, कई यात्राओं में इससे कहीं अधिक समय लगता था। व्यापारिक हवाओं का सर्वोत्तम लाभ उठाने के लिए वर्ष के सही समय पर प्रस्थान करना अत्यंत महत्वपूर्ण था। लिस्बन से पूर्व की ओर प्रस्थान करने के बारे में एक पुर्तगाली कप्तान ने कहा था: 'फरवरी का अंतिम दिन पर्याप्त समय है, लेकिन मार्च का पहला दिन देर हो जाती है।'

Finding crews for the ships was not always easy. In the early days of the Company under Sir Thomas Smythe, his excellent reputation and the relatively infrequent voyages posed fewer problems. However, even under his stewardship things were often difficult. The Anglo-Dutch wars of 1618–19 in the Far East cost the Company many ships and their crews. England always had an advantage over Portugal in that its population was five million as against the one million of Portugal. Later in the century, however, with many sailors being needed for the Americas and the Caribbean, good men were hard to come by. The problem became bigger in times of war, when the Royal Navy was desperate to recruit. The Company complained bitterly when the navy’s

press gangs invaded Company premises and took away sailors waiting to enlist on its voyages.

जहाजों के लिए चालक दल जुटाना हमेशा आसान नहीं था। सर थॉमस स्माइथ के नेतृत्व में कंपनी के शुरुआती दिनों में, उनकी उत्कृष्ट प्रतिष्ठा और अपेक्षाकृत कम समुद्री यात्राओं के कारण समस्याएँ कम थीं। हालाँकि, उनके नेतृत्व में भी परिस्थितियाँ अक्सर कठिन थीं। सुदूर पूर्व में 1618-19 के एंग्लो-डच युद्धों में कंपनी को कई जहाज और उनके चालक दल खोने पड़े। इंग्लैंड को पुर्तगाल पर हमेशा यह लाभ रहा कि उसकी जनसंख्या पाँच मिलियन थी जबकि पुर्तगाल की जनसंख्या एक मिलियन थी। हालाँकि, सदी के उत्तरार्ध में, अमेरिका और कैरिबियाई सागरों के लिए कई नाविकों की आवश्यकता होने पर, अच्छे नाविक मिलना मुश्किल हो गया। युद्ध के समय यह समस्या और भी बढ़ गई, जब शाही नौसेना भर्ती के लिए बेताब थी। कंपनी ने तब कड़ा विरोध किया जब नौसेना के जबरन भर्ती दल कंपनी परिसर में घुस गए और समुद्री यात्राओं पर भर्ती होने के लिए प्रतीक्षा कर रहे नाविकों को अपने साथ ले गए।

A happy ship needed to be well fed. The ships were stocked for a round voyage of eighteen months. Some fresh produce might last a week or two out of England or India, but for the majority of the voyage foods that would keep well were required. The mainstays were salted or pickled beef and pork, dried fish, dried peas and beans, and ship's biscuits. The meat allowance was very generous, at a pound and a half a day. Biscuits were an important item too, with each man receiving about a pound of them each day. The ingredient varied slightly – those on Richard the Lionheart's fleet in 1190 were made with barley, rye and bean flour – but basically consisted of flour, water and salt, mixed into a stiff dough and baked for about thirty minutes. Contrary to popular myth, they kept well and weevil-free if properly stored. At the National Maritime Museum at Greenwich there is one dating from 1784.

एक खुशहाल जहाज के लिए पर्याप्त भोजन होना आवश्यक था। जहाजों में अठारह महीने की यात्रा के लिए पर्याप्त सामान भरा रहता था। इंग्लैंड या भारत से आने वाला कुछ ताजा सामान एक या दो सप्ताह तक चल सकता था, लेकिन यात्रा के अधिकांश समय के लिए ऐसे खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती थी जो लंबे समय तक खराब न हों। मुख्य खाद्य पदार्थों में नमकीन या अचार वाला गोमांस और सूअर का मांस, सूखी मछली, सूखे मटर और फलियाँ, और जहाज के बिस्कुट शामिल थे। मांस का भत्ता काफी उदार था, डेढ़ पाउंड प्रतिदिन। बिस्कुट भी एक महत्वपूर्ण वस्तु थे, प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन लगभग एक पाउंड बिस्कुट मिलते थे। सामग्री में थोड़ा बहुत अंतर होता था - 1190 में रिचर्ड द लायनहार्ट के बेड़े में बिस्कुट जौ, राई और फलियों के आटे से बने थे - लेकिन मूल रूप से इनमें आटा, पानी और नमक मिलाकर एक सख्त आटा गूँथा जाता था और लगभग तीस मिनट तक पकाया जाता था। प्रचलित धारणा के विपरीत, यदि इन्हें ठीक से संग्रहित किया जाए तो ये लंबे समय तक खराब नहीं होते थे और इनमें कीड़े नहीं लगते थे। ग्रीनविच स्थित राष्ट्रीय समुद्री संग्रहालय में 1784 का एक बिस्कुट मौजूद है।

For an eighteen-month voyage, the amount of food to be stocked was prodigious. For a Company crew of 150 in 1607 there were thirty-four tons of biscuits, six tons of salt beef, twelve tons of pickled beef and sixteen tons of pickled pork. They carried lemon juice to ward off scurvy. Alcohol was deemed essential too. There were thirty-eight tons of beer, forty tons of cider, 4,500 gallons of wine and 150 gallons of spirits. Understandably, the Company instructed its officers to keep to the daily quota of food and drink, which could well be desperately needed in the future, and not waste it in ‘riot and feasting’.

अठारह महीने की समुद्री यात्रा के लिए, भोजन का भंडार बहुत अधिक था। 1607 में 150 लोगों के दल के लिए चौंतीस टन बिस्कुट, छह टन नमकीन गोमांस, बारह टन अचार वाला गोमांस और सोलह टन अचार वाला सूअर का मांस था। वे स्कर्वी से बचाव के लिए नींबू का रस भी साथ रखते थे। शराब को भी आवश्यक माना जाता था। अड़तीस टन बीयर, चालीस टन साइडर, 4,500 गैलन वाइन और 150 गैलन स्पिरिट थी। स्वाभाविक रूप से, दल ने अपने

अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे भोजन और पेय के दैनिक कोटे का पालन करें, जिसकी भविष्य में बहुत आवश्यकता पड़ सकती है, और इसे 'दंगा और दावत' में बर्बाद न करें।

The London insurance market for shipping in the seventeenth century was surprisingly sophisticated. From 1629 the Company regularly insured its ships and their cargoes against loss. It also became common to insure against the possibility of an expedition not returning with its cargo within a specified time, typically two years. A premium of 5 per cent of the sum insured was normal, but this increased in times of war. In 1653 the Company decided to no longer insure itself and leave its individual shareholders to make their own insurance arrangements. For about £5, a shareholder would protect his £100 stake.

सत्रहवीं शताब्दी में लंदन का जहाजरानी बीमा बाजार आश्चर्यजनक रूप से उन्नत था। 1629 से कंपनी नियमित रूप से अपने जहाजों और उनके माल का नुकसान से बचाव के लिए बीमा करवाती थी। यह भी आम बात हो गई थी कि किसी अभियान के एक निश्चित समय (आमतौर पर दो वर्ष) के भीतर माल के साथ वापस न लौटने की संभावना के लिए बीमा कराया जाए। बीमा राशि का 5 प्रतिशत प्रीमियम सामान्य था, लेकिन युद्ध के समय यह बढ़ जाता था। 1653 में कंपनी ने स्वयं का बीमा न कराने का निर्णय लिया और अपने व्यक्तिगत शेयरधारकों को अपनी बीमा व्यवस्था स्वयं करने की छूट दे दी। लगभग £5 में, एक शेयरधारक अपने £100 के हिस्से की सुरक्षा करवा सकता था।

A good idea of life on the Company's ships can be obtained from the journal of Edward Barlow. Born near Manchester in 1642, Barlow grew up in a deprived household. His father was a poorly paid worker on the land and had six children. Barlow did odd jobs as a boy, on the land and in the coal pits. This enabled him to buy clothes to replace the rags that had previously prevented

him from attending church. He left school at thirteen, after a very rudimentary education, for an apprenticeship in the bleaching of textiles. This he found uncongenial. He then decided, 'I had as good to go seek my fortune abroad as live at home, always in want and working hard for very small gains.' Through a relative's friend, he managed to gain a new apprenticeship, this time to the chief master's mate of a Royal Navy ship, the *Naseby*. He was serving on the *Naseby* when it brought back Charles II at the Restoration. He worked on other warships until 1662 and then moved to the merchant navy. He travelled to Portugal, Spain and Brazil. For several years he swapped employment between royal and merchant ships.

कंपनी के जहाजों पर जीवन कैसा था, इसका अच्छा अंदाजा एडवर्ड बार्लो की डायरी से लगाया जा सकता है। 1642 में मैनचेस्टर के पास जन्मे बार्लो एक गरीब परिवार में पले-बढ़े। उनके पिता खेत में कम वेतन पाने वाले मजदूर थे और उनके छह बच्चे थे। बार्लो ने बचपन में खेतों और कोयले की खानों में छोटे-मोटे काम किए। इससे उन्हें कपड़े खरीदने में मदद मिली, जो उन फटे-पुराने कपड़ों की जगह ले सके जिनके कारण वे पहले चर्च नहीं जा पाते थे। तेरह साल की उम्र में उन्होंने बहुत ही साधारण शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्कूल छोड़ दिया और वस्त्रों की ब्लीचिंग का काम सीखने लगे। लेकिन उन्हें यह काम पसंद नहीं आया। तब उन्होंने फैसला किया, 'घर पर हमेशा अभाव में रहने और बहुत कम कमाई के लिए कड़ी मेहनत करने से बेहतर है कि मैं विदेश जाकर अपनी किस्मत आजमाऊं।' एक रिश्तेदार के दोस्त के जरिए उन्हें एक नया काम मिल गया, इस बार रॉयल नेवी के जहाज नैस्बी के चीफ मास्टर मेट के रूप में। जब नैस्बी जहाज ने राजशाही के बाद चार्ल्स द्वितीय को वापस लाया, तब वे उसी जहाज पर तैनात थे। उन्होंने 1662 तक अन्य युद्धपोतों पर काम किया और फिर व्यापारी नौसेना में चले गए। उन्होंने पुर्तगाल, स्पेन और ब्राजील की यात्रा की। कई वर्षों तक उन्होंने शाही और व्यापारिक जहाजों के बीच काम किया।

In 1672, on his second voyage for the Company, Barlow went to Java and Taiwan. Unbeknown to him, war had been declared between England and the

Dutch Republic. Barlow's ship, the *Experiment*, was intercepted by a Dutch fleet and he was taken to the Dutch stronghold of Batavia on Java. He was confined there for a year. To occupy his time, he began to draw and write up a journal of his earlier voyages. Thereafter he kept up this journal of his travels until the end of his career. He was an extremely good draftsman. There are 127 coloured drawings in his manuscript – now at the National Maritime Museum at Greenwich. They are beautiful miniatures with highly accurate depictions of the ships portrayed, together with details of their armaments, rigging and flags. There are convincing action scenes with added vignettes of topography, fish, birds and animals. In addition there are fifty-five pencilled outlines of ports and coastlines – again highly accurate. The manuscript, full of details of work and personal life, has 225,000 words. The story of his first voyage for the Company – when he travelled to Bombay, Surat, Goa and the Malabar Coast – is a graphic account of a seaman's life in the seventeenth century.

1672 में, कंपनी के लिए अपनी दूसरी समुद्री यात्रा पर, बार्लो जावा और ताइवान गए। उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि इंग्लैंड और डच गणराज्य के बीच युद्ध की घोषणा हो चुकी थी। बार्लो के जहाज, एक्सपेरिमेंट को डच बेड़े ने रोक लिया और उन्हें जावा स्थित डच गढ़ बटाविया ले जाया गया। उन्हें वहाँ एक साल तक कैद रखा गया। समय बिताने के लिए, उन्होंने अपने पहले की यात्राओं के चित्र बनाना और डायरी लिखना शुरू किया। इसके बाद उन्होंने अपने करियर के अंत तक अपनी यात्राओं की यह डायरी जारी रखी। वे एक अत्यंत कुशल चित्रकार थे। उनकी पांडुलिपि में 127 रंगीन चित्र हैं - जो अब ग्रीनविच के राष्ट्रीय समुद्री संग्रहालय में हैं। ये सुंदर लघु चित्र हैं जिनमें चित्रित जहाजों का अत्यंत सटीक चित्रण है, साथ ही उनके हथियारों, रस्सियों और झंडों का विवरण भी है। इनमें स्थलाकृति, मछलियों, पक्षियों और जानवरों के छोटे-छोटे चित्रों के साथ वास्तविक युद्ध दृश्य दर्शाए गए हैं। इसके अतिरिक्त, बंदरगाहों और तटरेखाओं की 55 पेंसिल से खींची गई रूपरेखाएँ भी हैं - जो

अत्यंत सटीक हैं। कार्य और निजी जीवन के विस्तृत विवरणों से भरी इस पांडुलिपि में 225,000 शब्द हैं। कंपनी के लिए उनकी पहली समुद्री यात्रा - जब उन्होंने बंबई, सूरत, गोवा और मालाबार तट की यात्रा की - का वर्णन सत्रहवीं शताब्दी के एक नाविक के जीवन का सजीव चित्रण है।

Barlow made his first visit to the East as an ordinary seaman aboard the same *Experiment*. It was a 250-ton ship, with a crew of sixty and armed with twenty-two cannons, bound for India. It left England, together with two other Company ships, in March 1670 and arrived at Bombay in September that year. There were some women on board who had come out to join their husbands in the Company's service. To their great distress, several discovered that their husbands were already dead.

बार्लो ने अपनी पहली पूर्वी यात्रा एक साधारण नाविक के रूप में उसी एक्सपेरिमेंट नामक जहाज पर की थी। यह 250 टन का जहाज था, जिसमें साठ लोगों का दल था और बाईस तोपें लगी हुई थीं। यह जहाज भारत के लिए रवाना हुआ था। कंपनी के दो अन्य जहाजों के साथ यह जहाज मार्च 1670 में इंग्लैंड से रवाना हुआ और उसी वर्ष सितंबर में बॉम्बे पहुंचा। जहाज पर कुछ महिलाएं भी थीं जो कंपनी की सेवा में अपने पतियों से मिलने आई थीं। उन्हें यह जानकर गहरा दुख हुआ कि उनके पति पहले ही मर चुके थे।

The *Experiment* took a few days to offload some of its cargo. Barlow noted that most of the people inside the fort were Indian Muslims or Portuguese – the Portuguese being paid the same as the English. He also described the 'strangely attired' Indians (presumably Hindus or Jains) outside the fort. Although they 'worship all manner of images, and the sun and the moon, yet they live very peaceable under the English, enjoying all their old customs and privileges'.

प्रयोग के दौरान कुछ सामान उतारने में कुछ दिन लग गए। बारलो ने बताया कि किले के अंदर अधिकांश लोग भारतीय मुसलमान या पुर्तगाली थे – पुर्तगालियों को अंग्रेजों के बराबर

ही वेतन मिलता था। उन्होंने किले के बाहर अजीबोगरीब वेशभूषा वाले भारतीयों (संभवतः हिंदू या जैन) का भी वर्णन किया। हालाँकि वे "सभी प्रकार की मूर्तियों, सूर्य और चंद्रमा की पूजा करते हैं, फिर भी वे अंग्रेजों के अधीन बहुत शांति से रहते हैं और अपने सभी पुराने रीति-रिवाजों और विशेषाधिकारों का आनंद लेते हैं।"

A week later the *Experiment* discharged the rest of its cargo at Swally, near Surat. The shore was lined with the booths and tents of the local merchants. One of these merchants was engaged by each of the crew to purchase what they had brought to India and to sell them what they would carry home. He described them as wearing long white gowns, tied around the middle with a sash, and wearing turbans on their shaved heads. 'Very cunning and subtle people in all their dealings … There is none of them that marries out of his own sect, neither will they eat anything which hath had life in it, nor kill the least thing, that is, neither a louse or anything that lives. They will neither eat nor drink with any stranger or other but of their own religion or sect. They are all buyers and sellers, and many of them are very rich, and they are apt to learn any language. Their children of six and seven years of age can speak English.'

एक सप्ताह बाद, एक्सपेरिमेंट जहाज ने सूरत के पास स्वाल्ली में अपना शेष माल उतारा। तट पर स्थानीय व्यापारियों के स्टॉल और तंबू लगे हुए थे। चालक दल के प्रत्येक सदस्य ने इनमें से एक व्यापारी को भारत में लाया गया सामान खरीदने और घर ले जाने वाला सामान बेचने के लिए नियुक्त किया था। उसने उनका वर्णन करते हुए बताया कि वे लंबे सफेद गाउन पहनते थे, जो कमर पर कमरबंद से बंधे होते थे, और मुंडे हुए सिर पर पगड़ी बांधे रहते थे। 'वे अपने सभी लेन-देन में बहुत चालाक और धूर्त लोग हैं... उनमें से कोई भी अपने संप्रदाय से बाहर विवाह नहीं करता, न ही वे किसी जीवित प्राणी को खाते हैं, न ही किसी जीव को मारते हैं, यानी न तो जूं को और न ही किसी जीवित प्राणी को। वे अपने धर्म या संप्रदाय के अलावा किसी अजनबी या अन्य व्यक्ति के साथ न तो खाते हैं और न ही पीते हैं। वे सभी खरीदार और

विक्रेता हैं, और उनमें से कई बहुत धनी हैं, और वे कोई भी भाषा सीखने में सक्षम हैं। उनके छह और सात साल के बच्चे अंग्रेजी बोल सकते हैं।'

The *Experiment* then sailed south to Goa. Barlow noted that although it had few commodities of its own, Goa's position and deep harbour made it a convenient place for trade. But, he added, since the Dutch had captured many of the Portuguese bases, there was little business being transacted. A laden ship went back to Portugal only every two or three years.

इसके बाद एक्सपेरिमेंट जहाज दक्षिण की ओर गोवा के लिए रवाना हुआ। बार्लो ने बताया कि हालांकि गोवा में खुद की वस्तुएं कम थीं, लेकिन इसकी भौगोलिक स्थिति और गहरे बंदरगाह के कारण यह व्यापार के लिए एक सुविधाजनक स्थान था। हालांकि, उन्होंने आगे कहा कि चूंकि डचों ने पुर्तगाल के कई ठिकानों पर कब्जा कर लिया था, इसलिए वहां व्यापार बहुत कम हो रहा था। माल से लदा जहाज दो-तीन साल में एक बार ही पुर्तगाल लौटता था।

After leaving Goa, the *Experiment* continued down the coast to the Company's factory at Karwar, where it dropped off money and letters from England. Three days further south, it went up an estuary to the recently established Company base of Valapattanam. Some lead was offloaded for the Company to use in exchange for spices. Barlow bought some coconuts to take home to England as curiosities. He also wrote that the local people would not sell them cows, but that for a small sum 'you may buy their children'. One of the ship's men jumped into the water and disappeared, presumed to have been taken by crocodiles.

गोवा छोड़ने के बाद, यह प्रयोग तटीय मार्ग से होते हुए कारवार स्थित कंपनी के कारखाने तक पहुँचा, जहाँ इसने इंग्लैंड से आए पैसे और पत्र उतारे। तीन दिन दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, यह एक नदी के मुहाने से होते हुए कंपनी के नवस्थापित अड्डे वलापट्टनम पहुँचा। कंपनी के उपयोग के लिए मसालों के बदले कुछ सीसा उतारा गया। बार्लो ने कुछ नारियल खरीदे जिन्हें वह यादगार वस्तु के रूप में इंग्लैंड ले गए। उन्होंने यह भी लिखा कि स्थानीय लोग उन्हें गायें

नहीं बेचते, लेकिन थोड़ी सी रकम देकर 'आप उनके बच्चे खरीद सकते हैं'। जहाज का एक आदमी पानी में कूद गया और लापता हो गया, माना जाता है कि उसे मगरमच्छों ने पकड़ लिया था।

From Valapattanam the *Experiment* went south to Tanur and Ponnani in Kerala to load the pepper that had been bought by the Company's factors. At first the Indians were wary of them, thinking they were Dutch – 'for there are few in all East India of the country people but are fearful of them and cannot abide or love any of them, having been so abused and their goods taken from them in so many places'. The *Experiment* was hit by an unseasonable storm. Barlow, being highly superstitious and distrustful of foreign religions, imagined this was the result of the inhabitants 'offering up as sacrifice one of their sons or daughters to their God, the Devil, and that Hellish Fiend, being offended at something, caused him to raise such a horrible tempest'.

वलपट्टनम से एक्सपेरिमेंट कंपनी के एजेंटों द्वारा खरीदी गई काली मिर्च को लादने के लिए दक्षिण की ओर केरल के तनूर और पोन्नानी गया। शुरू में भारतीय उनसे सावधान थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि वे डच हैं – 'पूरे पूर्वी भारत में ऐसे बहुत कम लोग हैं जो उनसे डरते नहीं हैं और उनमें से किसी को भी बर्दाश्त या प्यार नहीं करते, क्योंकि कई जगहों पर उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया है और उनका सामान छीन लिया गया है'। एक्सपेरिमेंट अचानक आए एक भयंकर तूफान की चपेट में आ गया। बारलो, जो अत्यधिक अंधविश्वासी और विदेशी धर्मों पर अविश्वास करने वाला था, ने सोचा कि यह निवासियों द्वारा 'अपने बेटे या बेटी को अपने देवता, शैतान को बलि चढ़ाने' का परिणाम था, और उस शैतान ने किसी बात से नाराज होकर ऐसा भयानक तूफान खड़ा कर दिया।

Coming back north, the *Experiment* called in at Calicut 'a few scattering houses, being destroyed by wars'. Prostitutes were available cheaply. Barlow was more shocked to see both men and women, some of the women heavily pregnant, wearing only a loincloth. They collected a Company factor who

wanted to go to Valapattanam. They also took on board three Dutchmen who were deserters from the Dutch East India Company at Cochin. At Valapattanam they dropped the factor off and took on board the man he was replacing to carry him up to Karwar.

उत्तर की ओर लौटते हुए, एक्सपेरिमेंट जहाज कालीकट में रुका, जहाँ 'युद्धों से तबाह हो चुके कुछ घर' थे। वहाँ वेश्याएँ सस्ते में उपलब्ध थीं। बारलो यह देखकर और भी हैरान रह गया कि पुरुष और महिलाएँ, जिनमें से कुछ गर्भवती थीं, केवल एक लंगोटी पहने हुए थे। उन्होंने कंपनी के एक एजेंट को अपने साथ लिया जो वलापट्टनम जाना चाहता था। उन्होंने तीन डच लोगों को भी अपने साथ लिया जो कोचीन में डच ईस्ट इंडिया कंपनी से भाग गए थे। वलापट्टनम में उन्होंने एजेंट को उतार दिया और उसकी जगह लेने वाले व्यक्ति को कारवार तक ले जाने के लिए अपने साथ ले लिया।

At Bombay the *Experiment* stopped to let off some Indian traders from Surat who had travelled down the coast with them. They also put the Dutchmen ashore, since they were fearful of being taken to Surat where the Dutch East India Company might capture them.

बॉम्बे में, जहाज़ कुछ भारतीय व्यापारियों को उतारने के लिए रुका, जो सूरत से उनके साथ तट के किनारे यात्रा करके आए थे। उन्होंने डच व्यापारियों को भी किनारे पर उतारा, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उन्हें सूरत न ले जाया जाए, जहाँ डच ईस्ट इंडिया कंपनी उन्हें पकड़ लेगी।

It took five or six days, against the wind, to go from Bombay to Surat. The whole journey, from Surat almost to the tip of India and back, had taken two months. Some of the pepper was offloaded and replaced with other cargo for England. Barlow made a small investment in stock to sell in England on his own behalf. The *Experiment* went back to Bombay where it picked up some passengers before it finally departed for England. They bought some hens and

pigs, unavailable at Surat, for their voyage home. On 15 January 1671, Barlow watched India disappear from sight.

बंबई से सूरत तक हवा के विपरीत दिशा में जाने में पाँच या छह दिन लगे। सूरत से भारत के लगभग दक्षिणी छोर तक और वापस आने की पूरी यात्रा में दो महीने लगे। कुछ काली मिर्च उतारकर उसकी जगह इंग्लैंड के लिए दूसरा माल लादा गया। बार्लो ने अपने नाम पर इंग्लैंड में बेचने के लिए कुछ शेयर खरीदे। एक्सपेरिमेंट जहाज बंबई वापस लौटा, जहाँ उसने इंग्लैंड के लिए रवाना होने से पहले कुछ यात्रियों को लिया। उन्होंने सूरत में अनुपलब्ध मुर्गियाँ और सूअर खरीदे, जो उनके घर वापसी की यात्रा के लिए उपयुक्त थे। 15 जनवरी 1671 को बार्लो ने भारत को अपनी आँखों से ओझल होते देखा।

Accompanied by two other Company ships, the *Experiment* reached Mauritius in February. Further south, they ran into very heavy weather, which almost capsized the ship. The hold was filled with water five feet deep. They had to cut away one mast and some of their sails to upright the ship. The hens and pigs were swept away. The winds eased and they rounded the Cape. They made for St Helena, where the Company had a small fort. They stopped for ten or twelve days to make some repairs and take on provisions. Eight days later they were at Ascension Island, where they stopped to capture turtles to eat. These came ashore at night to lay their eggs, when they could be turned on their backs to stop them escaping. Barlow recorded that they weighed three or four hundred pounds and could be kept alive for three or four weeks on board ship, before being eaten or turned into soup. They also killed some sea birds, ‘so tame that you may kill as many as you please with a stick or stone’.

कंपनी के दो अन्य जहाजों के साथ, एक्सपेरिमेंट जहाज फरवरी में मॉरीशस पहुंचा। आगे दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, वे बेहद खराब मौसम में फंस गए, जिससे जहाज लगभग पलट गया। जहाज का निचला हिस्सा पांच फीट गहरे पानी से भर गया था। जहाज को सीधा करने के लिए उन्हें एक मस्तूल और कुछ पाल काटने पड़े। मुर्गियां और सूअर बह गए। हवा शांत

हुई और वे केप के चारों ओर घूमे। वे सेंट हेलेना की ओर बढ़े, जहां कंपनी का एक छोटा किला था। उन्होंने कुछ मरम्मत करने और राशन लेने के लिए दस या बारह दिन का ठहराव किया। आठ दिन बाद वे एसेंशन द्वीप पर पहुंचे, जहां वे खाने के लिए कछुए पकड़ने के लिए रुके। ये कछुए रात में अंडे देने के लिए किनारे पर आते थे, जब उन्हें भागने से रोकने के लिए उनकी पीठ के बल पलटा जा सकता था। बार्लो ने दर्ज किया कि उनका वजन तीन या चार सौ पाउंड था और उन्हें खाने या सूप बनाने से पहले तीन या चार सप्ताह तक जहाज पर जीवित रखा जा सकता था। उन्होंने कुछ समुद्री पक्षियों को भी मारा, 'जो इतने पालतू थे कि आप उन्हें छड़ी या पत्थर से अपनी इच्छानुसार मार सकते थे'।

From Ascension they were delayed by poor winds. They spoke to a French ship and learnt that everyone in Europe was at peace with each other except with the Turks, and with an English ship going to Barbados from whom they learnt that an attempt had been made to steal the king's crown from the Tower of London. Eventually they sighted Cornwall. A few days later, after a six-month voyage, they went up the Thames to Blackwall.

एसेन्शन से निकलने में उन्हें खराब हवाओं के कारण देरी हुई। उन्होंने एक फ्रांसीसी जहाज से बात की और जाना कि तुर्कों को छोड़कर यूरोप में सभी देश आपस में शांति बनाए हुए हैं। उन्होंने बारबाडोस जा रहे एक अंग्रेजी जहाज से भी बात की, जिससे उन्हें पता चला कि लंदन टावर से राजा का मुकुट चुराने का प्रयास किया गया था। अंततः उन्हें कॉर्नवाल दिखाई दिया। कुछ दिनों बाद, छह महीने की यात्रा के बाद, वे टेम्स नदी के ऊपर ब्लैकवॉल की ओर बढ़े।

The *Experiment* and her two accompanying ships had each been carrying two or three spotted deer. These were a present from the Company's president at Surat to Charles II. Some had died during the stormy voyage. When the flotilla reached Blackwall, the surviving animals were taken away by the Keeper of St James's Park.

एक्सपेरिमेंट और उसके साथ चल रहे दो जहाजों में से प्रत्येक पर दो या तीन चित्तीदार हिरण सवार थे। ये कंपनी के सूरत स्थित अध्यक्ष द्वारा चार्ल्स द्वितीय को उपहार स्वरूप दिए गए थे।

तूफानी यात्रा के दौरान कुछ हिरण मर गए थे। जब बेड़ा ब्लैकवॉल पहुंचा, तो बचे हुए जानवरों को सेंट जेम्स पार्क के रक्षक द्वारा ले जाया गया।

Between 1670 and 1703 Edward Barlow made nine voyages to India and the East. He rose to be chief mate. He often recorded his disappointment at not being made captain. He was probably not an easy man to get along with. In 1683 he had a fight with the captain of his ship when at Sumatra. He was put ashore and had to work his passage back to England. In 1692, whilst in India, he had severely caned a seaman for insubordination. The man had subsequently died. On the ship's return to England, his widow engaged a lawyer. Some of the dead man's shipmates supported her and, to avoid going before the courts, Barlow had to give her the huge sum of £50.

1670 और 1703 के बीच एडवर्ड बार्लो ने भारत और पूर्वी देशों की नौ यात्राएँ कीं। वे मुख्य नाविक के पद तक पहुँचे। कप्तान न बनाए जाने पर वे अक्सर अपनी निराशा व्यक्त करते थे। शायद उनके साथ तालमेल बिठाना आसान नहीं था। 1683 में सुमात्रा में उनका अपने जहाज के कप्तान से झगड़ा हो गया। उन्हें किनारे पर उतार दिया गया और उन्हें काम करके इंग्लैंड वापस लौटना पड़ा। 1692 में, भारत में रहते हुए, उन्होंने अनुशासनहीनता के लिए एक नाविक को बुरी तरह पीटा था। बाद में उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई। जहाज के इंग्लैंड लौटने पर, उसकी विधवा ने एक वकील नियुक्त किया। मृतक के कुछ साथियों ने विधवा का समर्थन किया और अदालती कार्यवाही से बचने के लिए, बार्लो को उसे भारी भरकम रकम £50 देनी पड़ी।

Barlow showed his better side when writing of his family. He was married in 1678 to the maidservant of a friend in London. Both were poor but 'had I married another woman with a thousand pounds, I could never have met with one more deserving my love and respect'. Two days after the marriage, however, he sailed for Jamaica. While he was away, his wife was caught in a house fire and miscarried. In 1695 their youngest child died of consumption.

‘She was about three-and-a-half old, and a fine hopeful child, our griefs being multiplied, one grief followed another. But blessed be the name of the Lord, who then out of six had left us two children for it has been a sickly time in and about London, and smallpox very rife, of which distemper my child had her first illness.’

अपने परिवार के बारे में लिखते समय बार्लो ने अपना सकारात्मक पक्ष दिखाया। उनका विवाह 1678 में लंदन में एक मित्र की नौकरानी से हुआ था। दोनों गरीब थे, लेकिन 'अगर मैंने किसी और अमीर औरत से भी शादी की होती, तो भी मुझे अपने प्यार और सम्मान के लिए उससे ज़्यादा योग्य कोई नहीं मिलती।' हालांकि, शादी के दो दिन बाद ही वे जमैका के लिए रवाना हो गए। उनके जाने के दौरान, उनकी पत्नी घर में आग लगने की घटना में फंस गईं और उनका गर्भपात हो गया। 1695 में उनकी सबसे छोटी संतान की तपेदिक से मृत्यु हो गई। 'वह लगभग साढ़े तीन साल की थी और एक प्यारी, आशावान बच्ची थी। हमारे दुख बढ़ते ही जा रहे थे, एक के बाद एक। लेकिन प्रभु का नाम धन्य हो, जिन्होंने छह बच्चों में से हमें दो ही बच्चे दिए, क्योंकि लंदन और उसके आसपास के इलाकों में बीमारी का दौर चल रहा था और चेचक बहुत फैली हुई थी, जिससे मेरी बच्ची को सबसे पहले परेशानी हुई।'

In 1705, Barlow was finally made the captain of an East Indiaman. Under his command, the *Liampo* left Portsmouth for the Red Sea. Before Barlow left, ‘it being a long voyage and many accidents and changes may happen and knowing all men are mortal and death certain’, he made his will, leaving everything to his wife and children. Off the Mozambique coast his ship was lost. Fortunately, his journal was not on board.

1705 में, बार्लो को अंततः एक ईस्ट इंडियामैन जहाज का कप्तान बनाया गया। उनके नेतृत्व में, लियाम्पो जहाज पोर्ट्समाउथ से लाल सागर के लिए रवाना हुआ। रवाना होने से पहले, बार्लो ने अपनी वसीयत बनाई, जिसमें उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपनी पत्नी और बच्चों के नाम कर दी, क्योंकि 'यह एक लंबी यात्रा थी और इसमें कई दुर्घटनाएँ और परिवर्तन हो सकते

थे, और यह जानते हुए कि सभी मनुष्य नश्वर हैं और मृत्यु निश्चित है'। मोज़ाम्बिक तट के पास उनका जहाज डूब गया। सौभाग्य से, उनकी डायरी जहाज पर नहीं थी।

Over the years, many animals and birds travelled from India to England on the Company's ships. Most were presents to the monarch. In 1619 Sir Thomas Roe brought home two antelopes for James II. In 1631 John Weddell presented Charles I with a leopard and the queen with a cage of birds. At the Restoration, Charles II laid out St James's Park as a sanctuary for deer and constructed aviaries on Birdcage Walk. The public were given access to it for the first time. In 1661 some antelopes, pelicans and parrots were despatched from Madras for the park. In 1671 a caracal, a species of lynx, was sent to London. In 1676 two sarus cranes were well received at court – their extraordinarily loud voice when alarmed had made them useful as sentinels. Some animals were brought privately to England. In 1684 a rhinoceros was sold by some East Indies merchants for over £2,000. In 1513 a rhinoceros had been sent from India to the king of Portugal. It was this animal, somewhat different to the African rhinoceros, which featured in the famous engraving by Dürer. In 1694 one of the ships accompanying Edward Barlow on his voyage back from Madras carried a tiger.

इन वर्षों में, कई जानवर और पक्षी कंपनी के जहाजों पर भारत से इंग्लैंड गए। इनमें से अधिकांश सम्राट को भेंट किए गए थे। 1619 में सर थॉमस रो जेम्स द्वितीय के लिए दो मृग लाए। 1631 में जॉन वेडेल ने चार्ल्स प्रथम को एक तेंदुआ और रानी को पक्षियों का एक पिंजरा भेंट किया। पुनर्स्थापना के समय, चार्ल्स द्वितीय ने सेंट जेम्स पार्क को हिरणों के लिए एक अभयारण्य के रूप में स्थापित किया और बर्डकेज वॉक पर पक्षीशालाएँ बनवाईं। पहली बार आम जनता को यहाँ आने की अनुमति दी गई। 1661 में कुछ मृग, पेलिकन और तोते मद्रास

से पार्क के लिए भेजे गए। 1671 में एक काराकल, जो लिंक्स की एक प्रजाति है, लंदन भेजा गया। 1676 में दो सारस सारस का दरबार में स्वागत किया गया - खतरे के समय उनकी असाधारण रूप से तेज़ आवाज़ ने उन्हें प्रहरी के रूप में उपयोगी बना दिया था। कुछ जानवरों को निजी तौर पर इंग्लैंड लाया गया था। 1684 में पूर्वी इंडीज के कुछ व्यापारियों ने एक गैंडे को 2,000 पाउंड से अधिक में बेचा था। 1513 में भारत से पुर्तगाल के राजा को एक गैंडा भेजा गया था। यह वही जानवर था, जो अफ्रीकी गैंडे से कुछ अलग था, जिसे ड्यूरर की प्रसिद्ध नक्काशी में दर्शाया गया था। 1694 में मद्रास से लौटते समय एडवर्ड बार्लो के साथ यात्रा कर रहे जहाजों में से एक में एक बाघ भी था।

As well as East Indiamen, the Company also used locally built ships in India. At Surat they either bought, or had specially built, vessels ‘of 100 or 200 tons with roomy holds’ carrying eight or ten small cannons for use against the ‘Malabar pirates’. There were good shipyards in Surat, Broach and several smaller places. From 1635, after the conclusion of peace with Portugal, the Company also bought ships from the Portuguese or had them made in their fine shipyards. By 1640 the Company had a fleet of ships to carry cargos from other Indian ports to Surat for onward transmission to England. When the Company acquired Bombay they ordered that an armed vessel be kept in the harbour to protect shipping. A shipbuilder was sent out from London to supervise the Company’s shipyards. Its first ships in India had used local crews. Soon afterwards, however, the Company had asked London for seasoned sailors who, it argued, would be more effective in fighting pirates.

ईस्ट इंडियामैन जहाजों के अलावा, कंपनी ने भारत में स्थानीय स्तर पर निर्मित जहाजों का भी उपयोग किया। सूरत में उन्होंने '100 या 200 टन के विशाल मालवाहक जहाज' खरीदे या विशेष रूप से बनवाए, जिनमें 'मालाबार समुद्री लुटेरों' के खिलाफ इस्तेमाल के लिए आठ या

दस छोटी तोपें लगी होती थीं। सूरत, ब्रोच और कई छोटे स्थानों पर अच्छे जहाज निर्माण कारखाने थे। 1635 में पुर्तगाल के साथ शांति संधि के बाद, कंपनी ने पुर्तगालियों से भी जहाज खरीदे या उन्हें उनके बेहतरीन जहाज निर्माण कारखानों में बनवाया। 1640 तक कंपनी के पास अन्य भारतीय बंदरगाहों से सूरत तक माल ले जाने और आगे इंग्लैंड भेजने के लिए जहाजों का एक बेड़ा था। जब कंपनी ने बंबई पर कब्जा किया, तो उन्होंने बंदरगाह में जहाजों की सुरक्षा के लिए एक सशस्त्र जहाज रखने का आदेश दिया। कंपनी के जहाज निर्माण कारखानों की देखरेख के लिए लंदन से एक जहाज निर्माता को भेजा गया। भारत में उसके पहले जहाजों में स्थानीय चालक दल का उपयोग किया गया था। हालांकि, इसके तुरंत बाद, कंपनी ने लंदन से अनुभवी नाविकों की मांग की, जिनके बारे में उसका तर्क था कि वे समुद्री लुटेरों से लड़ने में अधिक प्रभावी होंगे।

The seas around India were plagued by piracy. Pirates had operated off the western coast from time immemorial. Pliny, writing in the first century AD, observed that there was an annual voyage to India ‘with cohorts of archers on board the ships; on account of the pirates who infest those seas’. Marco Polo wrote about them in the thirteenth century. Ibn Batuta described a meeting with a pirate chief on the Malabar Coast in 1342. The opening up of the western seas to Europeans gave piracy a major boost. There were pirates from Arabia and from India itself, but the most dangerous pirates were European. Charles I had licensed various ships to capture vessels and the goods of any nation not friendly to England. Captain Quail had captured a vessel from Malabar. Captain Cobbe had taken two ships in the Red Sea, which had resulted in the Mughals imprisoning the Company’s servants. Sir William Courten’s enterprises, often bordering on piracy, had caused similar difficulties for the Company.

भारत के आसपास के समुद्र समुद्री डाकुओं से त्रस्त थे। पश्चिमी तट पर समुद्री डाकू प्राचीन काल से ही सक्रिय थे। पहली शताब्दी ईस्वी में लिखते हुए प्लिनी ने उल्लेख किया कि समुद्री

डाकुओं के आतंक के कारण हर साल भारत की यात्रा होती थी, जिसमें जहाजों पर तीरंदाजों की टुकड़ियां होती थीं। मार्को पोलो ने तेरहवीं शताब्दी में इनके बारे में लिखा था। इब्न बतूता ने 1342 में मालाबार तट पर एक समुद्री डाकू सरदार से हुई मुलाकात का वर्णन किया है। पश्चिमी समुद्रों के यूरोपियों के लिए खुलने से समुद्री डाकुओं को काफी बढ़ावा मिला। अरब और भारत दोनों से समुद्री डाकू थे, लेकिन सबसे खतरनाक समुद्री डाकू यूरोपीय थे। चार्ल्स प्रथम ने कई जहाजों को इंग्लैंड के प्रति शत्रुता रखने वाले किसी भी राष्ट्र के जहाजों और सामानों को लूटने का लाइसेंस दिया था। कैप्टन क्रेल ने मालाबार से एक जहाज पर कब्जा कर लिया था। कैप्टन कोबे ने लाल सागर में दो जहाजों पर कब्जा कर लिया था, जिसके परिणामस्वरूप मुगलों ने कंपनी के कर्मचारियों को कैद कर लिया था। सर विलियम कोर्टेन के कारनामे, जो अक्सर समुद्री डकैती की सीमा तक पहुँच जाते थे, ने कंपनी के लिए इसी तरह की मुश्किलें खड़ी कर दी थीं।

The execution of Charles I brought this phase of English piracy to an end. After the restoration of the monarchy, the English were preoccupied with the riches they could seize from the Spanish in the New World. In the 1680s the European pirates returned to plunder the Indian trade. In 1687 an English pirate raided a Portuguese outpost in the Persian Gulf, and an English marauder took ships in the Red Sea. The *Charming Mary*, an Irish pirate ship, was seen off Tellicherry. By 1689 the Company reported that it was being 'pestered with pirates'. Two Armenian-owned ships carrying large sums of gold were then captured – one south of Goa and the other just off Bombay. In 1691 a ship with Rs 900,000 on board was taken at Surat. The Mughal authorities stopped all English trade until it was shown that the Danes were to blame.

चार्ल्स प्रथम के निष्पादन के साथ ही अंग्रेजी समुद्री डकैती का यह दौर समाप्त हो गया। राजशाही की बहाली के बाद, अंग्रेज नई दुनिया में स्पेनियों से लूटे जा सकने वाले धन पर ध्यान केंद्रित करने लगे। 1680 के दशक में यूरोपीय समुद्री लुटेरे भारतीय व्यापार को लूटने

के लिए लौट आए। 1687 में एक अंग्रेज समुद्री लुटेरे ने फारस की खाड़ी में पुर्तगाली चौकी पर हमला किया, और एक अंग्रेज लुटेरे ने लाल सागर में जहाजों को लूटा। आयरिश समुद्री लुटेरों का जहाज 'चार्मिंग मैरी' टेलिचेरी के पास देखा गया। 1689 तक कंपनी ने बताया कि उसे 'समुद्री लुटेरों से लगातार परेशानी' हो रही है। इसके बाद भारी मात्रा में सोने से लदे दो अर्मेनियाई स्वामित्व वाले जहाजों को पकड़ लिया गया - एक गोवा के दक्षिण में और दूसरा बॉम्बे के पास। 1691 में सूरत में 9 लाख रुपये से लदे एक जहाज को लूट लिया गया। मुगल अधिकारियों ने सभी अंग्रेजी व्यापार को तब तक रोक दिया जब तक यह साबित नहीं हो गया कि इसके लिए डेनिश लोग जिम्मेदार थे।

The most successful of all the European pirates, however, were English. Henry Every, also known as John Avery, turned to piracy in 1694. Born near Plymouth, he had served as an officer in the Royal Navy before becoming master of a merchant ship. He then became first mate of a ship on hire to the Spanish government, which was supposed to intercept French smugglers off Peru. The crews' wages went into arrears and Every led a revolt. The captain was seized, together with those who would not join the rebels, and put ashore. Henry Every and his men then set sail for Africa on *Charles the Second*, which they renamed the *Fancy*. It had forty-six guns and 150 men. Off the coast of Africa, they plundered and burnt five ships – two Danish and three English.

हालाँकि, सभी यूरोपीय समुद्री डाकुओं में सबसे सफल अंग्रेज थे। हेनरी एवरी, जिन्हें जॉन एवरी के नाम से भी जाना जाता था, ने 1694 में समुद्री डकैती शुरू की। प्लायमाउथ के पास जन्मे, उन्होंने एक व्यापारी जहाज के कप्तान बनने से पहले शाही नौसेना में एक अधिकारी के रूप में सेवा की थी। फिर वे स्पेनिश सरकार के लिए किराए पर लिए गए एक जहाज के प्रथम-कप्तान बने, जिसे पेरू के तट पर फ्रांसीसी तस्करों को रोकना था। चालक दल का वेतन बकाया हो गया और एवरी ने विद्रोह का नेतृत्व किया। कप्तान को, विद्रोहियों का साथ न देने वालों के साथ, पकड़ लिया गया और तट पर छोड़ दिया गया। हेनरी एवरी और उनके साथियों ने फिर चार्ल्स द्वितीय नामक जहाज पर अफ्रीका के लिए प्रस्थान किया, जिसका नाम

उन्होंने बदलकर फैंसी रख दिया था। इसमें छियालीस तोपें और 150 आदमी थे। अफ्रीका के तट पर, उन्होंने पाँच जहाजों - दो डेनिश और तीन अंग्रेजी - को लूटा और जला दिया।

Henry Every established a base in Madagascar, famously a haven for pirates, and conveniently situated between Africa and India. Off the Horn of Africa he captured the *Futteh Mahmood*, which belonged to a prominent merchant of Surat. Later he sailed down towards Bombay and took Emperor Aurangzeb's own ship, the *Gunj Suwaie*. It was an amazing feat, for the *Gunj Suwaie* had eighty guns and 400 men with muskets. She was returning from the Red Sea with some female pilgrims, together with gold and silver worth Rs 5,200,000. For a whole week Henry Every and his crew ransacked the ship as they searched for treasure. The women were assaulted. Several of them committed suicide by jumping into the sea or by knifing themselves. The plundered ship was then left to drift.

हेनरी एवरी ने मेडागास्कर में अपना अड्डा स्थापित किया, जो समुद्री लुटेरों के लिए एक कुख्यात पनाहगाह था और अफ्रीका और भारत के बीच सुविधाजनक रूप से स्थित था। अफ्रीका के हॉर्न के पास उन्होंने सूरत के एक प्रमुख व्यापारी के जहाज़, फुट्तेह महमूद पर कब्ज़ा कर लिया। बाद में वे बॉम्बे की ओर बढ़े और सम्राट औरंगज़ेब के जहाज़, गुंज सुवाई पर कब्ज़ा कर लिया। यह एक अद्भुत कारनामा था, क्योंकि गुंज सुवाई में अस्सी तोपें और 400 सैनिक थे। यह जहाज़ लाल सागर से कुछ महिला तीर्थयात्रियों के साथ-साथ 5,200,000 रुपये मूल्य का सोना और चांदी लेकर लौट रहा था। हेनरी एवरी और उनके दल ने पूरे एक सप्ताह तक खजाने की तलाश में जहाज़ को लूटा। महिलाओं पर अत्याचार किया गया। उनमें से कई ने समुद्र में कूदकर या चाकू मारकर आत्महत्या कर ली। लूटे गए जहाज़ को फिर समुद्र में बहने के लिए छोड़ दिया गया।

Emperor Aurangzeb, enraged by this insult, directed his anger towards the Company. The Siddi army marched on Bombay. The president of the Company

at Surat and sixty-two of his men were arrested, put in irons, and kept as prisoners for nearly a year.

इस अपमान से क्रोधित सम्राट औरंगजेब ने अपना क्रोध कंपनी की ओर मोड़ा। सिद्दी सेना ने बंबई पर आक्रमण किया। सूरत स्थित कंपनी के अध्यक्ष और उनके 62 सैनिकों को गिरफ्तार कर हथकड़ी पहना दी गई और लगभग एक वर्ष तक बंदी बनाकर रखा गया।

In a mere six months Henry Every made his fortune in Indian seas and decided to retire. He sailed for the Bahamas, where he paid off his crew. He was believed to have returned to England. There are, however, no authentic records of what became of him, only fantastic rumours. Six of his crew were tried at the Old Bailey and given long jail sentences. Henry Every completely disappeared. He was immortalized in ballads, and in a play – *The Successful Pyrate*.

महज छह महीनों में हेनरी एवरी ने भारतीय समुद्री क्षेत्र में खूब धन-दौलत कमाई और सेवानिवृत्त होने का फैसला किया। वह बहामास के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने अपने दल को भुगतान कर दिया। माना जाता है कि वह इंग्लैंड लौट गए थे। हालांकि, उनके बारे में कोई प्रामाणिक रिकॉर्ड नहीं है, केवल मनगढ़ंत अफवाहें ही हैं। उनके दल के छह सदस्यों पर ओल्ड बेली में मुकदमा चलाया गया और उन्हें लंबी जेल की सजा सुनाई गई। हेनरी एवरी पूरी तरह से गायब हो गए। उन्हें लोकगीतों और एक नाटक - 'द सक्सेसफुल पाइरेट' - में अमर कर दिया गया।

Tales of Every's wealth drew many more Europeans into Indian piracy. Some baulked at attacking fellow Europeans, but saw little wrong in robbing Asians. Others were not so scrupulous – the Company estimated that its losses from piracy at Surat alone were a million pounds. Such was the temptation that even the Company's own crews were liable to turn pirates. A Company ship, the *Mocha*, which was going from Bombay to China was captured by

mutineers. They killed the captain, renamed the ship the *Defence*, and for three years brought more terror to the Indian Ocean.

एवरी की दौलत की कहानियों ने कई और यूरोपीय लोगों को भारतीय समुद्री डकैती की ओर आकर्षित किया। कुछ लोग साथी यूरोपीय लोगों पर हमला करने से हिचकिचाते थे, लेकिन एशियाई लोगों को लूटने में उन्हें कोई बुराई नज़र नहीं आती थी। वहीं कुछ लोग इतने संशयवादी नहीं थे – कंपनी का अनुमान था कि अकेले सूरत में समुद्री डकैती से उसे दस लाख पाउंड का नुकसान हुआ था। लालच इतना प्रबल था कि कंपनी के अपने ही दल के सदस्य भी समुद्री डाकू बन सकते थे। कंपनी का एक जहाज, मोचा, जो बंबई से चीन जा रहा था, विद्रोहियों के कब्जे में आ गया। उन्होंने कप्तान की हत्या कर दी, जहाज का नाम बदलकर डिफेंस रख दिया और तीन साल तक हिंद महासागर में आतंक मचाए रखा।

Captain Kidd was perhaps the most notorious of all the English pirates, as much for the political implications of his actions as for the scale of his operations. The Company had asked the head of the Admiralty, Lord Orford, to send a naval force to India to put down the pirates. This he refused to do but, together with the Lord Chancellor, Lord Sommers, and the governor of New York, Lord Bellomont, he formed a syndicate to send a privateer against the French and the pirates of the Americas. The *Adventure Galley* – a thirty-gunned sailing ship that also had about thirty oars – was fitted out and put under the command of Captain Kidd. He sailed for New York where he took on more men. Then, totally ignoring the rampant piracy in the Americas, he set sail for Africa and the Indian Ocean.

कैप्टन किड शायद सभी अंग्रेज़ समुद्री डाकुओं में सबसे कुख्यात था, अपने कार्यों के राजनीतिक निहितार्थों और अपने अभियानों के पैमाने दोनों के कारण। कंपनी ने एडमिरल्टी के प्रमुख, लॉर्ड ऑरफोर्ड से भारत में समुद्री डाकुओं को दबाने के लिए एक नौसैनिक बल भेजने का अनुरोध किया था। उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया, लेकिन लॉर्ड चांसलर, लॉर्ड सोमर्स और न्यूयॉर्क के गवर्नर, लॉर्ड बेलमोंट के साथ मिलकर उन्होंने फ्रांसीसियों और

अमेरिका के समुद्री डाकुओं के खिलाफ एक निजी पोत भेजने के लिए एक संघ बनाया। एडवेंचर गैली - तीस तोपों वाला एक पाल पोत जिसमें लगभग तीस चप्पू भी थे - को तैयार किया गया और कैप्टन किड की कमान में सौंप दिया गया। वह न्यूयॉर्क के लिए रवाना हुआ जहाँ उसने और अधिक लोगों को अपने साथ लिया। फिर, अमेरिका में व्याप्त समुद्री डकैती को पूरी तरह से अनदेखा करते हुए, वह अफ्रीका और हिंद महासागर के लिए रवाना हो गया।

At Mocha, the *Adventure Galley* opened fire on an Indian merchant ship, but fled when an East India Company frigate, which had been sent to protect the Indian fleet, appeared. On 29 August 1697, just north of Bombay, Kidd captured a small merchant ship from Surat. He took the English master, Thomas Parker, prisoner and forced him to pilot the *Adventure Galley*. They sailed into Karwar for supplies, flying the English flag, but the people there had already been warned. John Harvey, chief of the Company's factory there, demanded the release of Parker, but Kidd denied all knowledge of him. Before he departed, some of Kidd's crew deserted and informed on him. He then sailed for Calicut, but received no assistance there. He did manage, however, to capture a small Dutch vessel.

मोचा में, एडवेंचर गैली ने एक भारतीय व्यापारी जहाज पर गोलीबारी की, लेकिन जब भारतीय बेड़े की रक्षा के लिए भेजा गया ईस्ट इंडिया कंपनी का एक फ्रिगेट वहाँ पहुँचा, तो वह भाग गया। 29 अगस्त 1697 को, बॉम्बे के ठीक उत्तर में, किड ने सूरत से आ रहे एक छोटे व्यापारी जहाज पर कब्जा कर लिया। उसने अंग्रेज कप्तान थॉमस पार्कर को बंदी बना लिया और उसे एडवेंचर गैली का संचालन करने के लिए मजबूर किया। वे अंग्रेजी झंडा फहराते हुए आपूर्ति लेने के लिए कारवार गए, लेकिन वहाँ के लोगों को पहले ही चेतावनी मिल चुकी थी। वहाँ कंपनी के कारखाने के प्रमुख जॉन हार्वे ने पार्कर की रिहाई की मांग की, लेकिन किड ने उसके बारे में किसी भी जानकारी से इनकार कर दिया। उसके जाने से पहले, किड के कुछ चालक दल के सदस्यों ने उसका साथ छोड़ दिया और उसके बारे में जानकारी दे दी। फिर

वह कालीकट के लिए रवाना हुआ, लेकिन वहाँ उसे कोई सहायता नहीं मिली। हालाँकि, वह एक छोटे डच जहाज पर कब्जा करने में सफल रहा।

Early in 1698, Kidd captured the *Quedah Merchant*, travelling from Surat to Bengal. It had an English captain, but was owned by local Armenian merchants. The loss of its valuable cargo resulted in a demand for compensation by the Mughal authorities, both for the *Quedah Merchant* and for the other piracies. Eventually, the demands were dropped, but the European companies had to agree to make good any future losses. The Europeans at Surat then took joint action to suppress piracy – the Dutch would guard the Red Sea and the pilgrims en route to Mecca; the French would guard the Persian Gulf; the English would guard the southern seas.

सन् 1698 की शुरुआत में, किड ने सूरत से बंगाल जा रहे क़ैदा व्यापारी जहाज़ पर कब्ज़ा कर लिया। जहाज़ का कप्तान अंग्रेज़ था, लेकिन उस पर स्थानीय अर्मेनियाई व्यापारियों का मालिकाना हक था। जहाज़ के बहुमूल्य माल के नुकसान के परिणामस्वरूप मुग़ल अधिकारियों ने क़ैदा व्यापारी जहाज़ और अन्य समुद्री डकैती के लिए मुआवज़े की मांग की। अंततः, मुआवज़े की मांग वापस ले ली गई, लेकिन यूरोपीय कंपनियों को भविष्य में होने वाले किसी भी नुकसान की भरपाई करने के लिए सहमत होना पड़ा। सूरत में यूरोपीय लोगों ने फिर समुद्री डकैती को दबाने के लिए संयुक्त कार्रवाई की - डच लाल सागर और मक्का जाने वाले तीर्थयात्रियों की रक्षा करेंगे; फ्रांसीसी फारस की खाड़ी की रक्षा करेंगे; अंग्रेज दक्षिणी समुद्रों की रक्षा करेंगे।

In England the actions of Captain Kidd caused a furore. His financiers were leading Whig politicians and, although Kidd had misled them, the opposition were in full cry. In India, meanwhile, Kidd was joined by others. He eventually had five ships wreaking havoc along the south-western coast.

इंग्लैंड में कैप्टन किड के कारनामों ने हंगामा मचा दिया। उनके वित्तपोषक प्रमुख व्हिग राजनेता थे और यद्यपि किड ने उन्हें गुमराह किया था, विपक्ष ने जमकर विरोध जताया। इसी

बीच, भारत में किड का साथ अन्य लोगों ने भी दे दिया। अंततः उनके पाँच जहाज दक्षिण-पश्चिमी तट पर तबाही मचाते रहे।

Having made his fortune, Kidd abandoned the *Adventure Galley*, which had become unseaworthy, and made for New York in the *Quedah Merchant*. He thought that he could, with some judicious presents, smooth matters over with the governor, Lord Bellomont – one of his original backers. There was, however, too much at stake politically for Bellomont to be accommodating. Kidd was arrested and sent to London. He was tried at the Old Bailey and found guilty of murder and piracy. In 1701, Captain Kidd and six of his crew were hanged at Execution Dock. His assets were seized by the government and used to purchase the land for Greenwich Hospital.

अपनी संपत्ति अर्जित करने के बाद, किड ने एडवेंचर गैली को, जो समुद्र में चलने लायक नहीं रह गई थी, छोड़ दिया और क्यूडा मर्चेंट नामक जहाज से न्यूयॉर्क के लिए रवाना हो गया। उसे लगा कि कुछ सोच-समझकर दिए गए उपहारों से वह गवर्नर लॉर्ड बेलमोंट - जो उसके शुरुआती समर्थकों में से एक थे - के साथ मामले को सुलझा सकता है। हालांकि, बेलमोंट के लिए राजनीतिक रूप से बहुत कुछ दांव पर लगा था, इसलिए वह समझौता करने को तैयार नहीं थे। किड को गिरफ्तार कर लंदन भेज दिया गया। ओल्ड बेली में उन पर मुकदमा चला और उन्हें हत्या और समुद्री डकैती का दोषी पाया गया। 1701 में, कैप्टन किड और उनके छह साथियों को एक्जीक्यूशन डॉक पर फांसी दे दी गई। उनकी संपत्ति सरकार द्वारा जब्त कर ली गई और उसका उपयोग ग्रीनविच अस्पताल के लिए जमीन खरीदने में किया गया।

Kidd's activities prompted Parliament to pass new laws against piracy. Previously, pirates had to be brought to England for trial; now they could be tried anywhere by a court of seven lay persons. One of these had to be someone senior, such as the chief of a Company factory. These courts could impose the death penalty on both pirates and on those who assisted them. Four Royal Navy warships were sent to the Indian Ocean. Free pardons were

offered to pirates who surrendered. These measures gradually brought the activities of European pirates on Indian seas under some control.

किड की गतिविधियों ने संसद को समुद्री डकैती के खिलाफ नए कानून पारित करने के लिए प्रेरित किया। पहले, समुद्री लुटेरों को मुकदमे के लिए इंग्लैंड लाया जाता था; अब उन पर सात आम लोगों की अदालत में कहीं भी मुकदमा चलाया जा सकता था। इनमें से एक वरिष्ठ व्यक्ति होना अनिवार्य था, जैसे कि किसी कंपनी के कारखाने का प्रमुख। ये अदालतें समुद्री लुटेरों और उनकी सहायता करने वालों दोनों को मृत्युदंड दे सकती थीं। रॉयल नेवी के चार युद्धपोत हिंद महासागर में भेजे गए। आत्मसमर्पण करने वाले समुद्री लुटेरों को मुफ्त क्षमादान की पेशकश की गई। इन उपायों से धीरे-धीरे हिंद महासागर में यूरोपीय समुद्री लुटेरों की गतिविधियों पर कुछ हद तक नियंत्रण स्थापित हुआ।

The Company's difficulties were magnified by the appointment in 1682 of John Child as president of Surat and governor of Bombay. Child, under pressure from London, embarked on a programme of cost cutting. He drastically cut expenditure on the garrison at Bombay. He not only economized on stores and munitions, but he also cut military and naval pay. This prompted a revolt, which was joined and then led by the commandant of the Company's garrison and navy, Richard Keigwin, whose own salary had been drastically reduced. The rebels declared the island under the protection of Charles II, and elected Keigwin as governor. John Child came from Surat to Bombay to negotiate, but the rebels refused to yield. Meanwhile, independent English merchants took advantage of the Company's loss of authority to trade on their own account.

सन् 1682 में जॉन चाइल्ड को सूरत का अध्यक्ष और बंबई का राज्यपाल नियुक्त किए जाने से कंपनी की मुश्किलें और बढ़ गईं। लंदन के दबाव में आकर चाइल्ड ने खर्च में कटौती का

कार्यक्रम शुरू किया। उन्होंने बंबई में तैनात सैन्य टुकड़ी पर होने वाले खर्च में भारी कटौती की। उन्होंने न केवल भंडार और गोला-बारूद में कटौती की, बल्कि सैन्य और नौसैनिक वेतन में भी कटौती की। इससे विद्रोह भड़क उठा, जिसमें कंपनी की सैन्य टुकड़ी और नौसेना के कमांडर रिचर्ड कीगविन ने भी भाग लिया और फिर उसका नेतृत्व किया। कीगविन का अपना वेतन भी काफी कम कर दिया गया था। विद्रोहियों ने द्वीप को चार्ल्स द्वितीय के संरक्षण में घोषित कर दिया और कीगविन को राज्यपाल चुना। जॉन चाइल्ड बातचीत के लिए सूरत से बंबई आए, लेकिन विद्रोहियों ने झुकने से इनकार कर दिया। इस बीच, स्वतंत्र अंग्रेज व्यापारियों ने कंपनी के अधिकार खोने का फायदा उठाकर अपना व्यापार शुरू कर दिया।

The rebellion was finally settled when Keigwin surrendered to the king's representative in return for a free pardon for himself and for the rebels. The highly popular Keigwin was given a public farewell dinner, accompanied by gun salutes to the king, the queen and to each member of the royal family.

अंततः विद्रोह तब समाप्त हुआ जब कीगविन ने अपने और विद्रोहियों के लिए क्षमादान के बदले राजा के प्रतिनिधि के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। अत्यधिक लोकप्रिय कीगविन को सार्वजनिक विदाई भोज दिया गया, जिसमें राजा, रानी और शाही परिवार के प्रत्येक सदस्य को तोपों की सलामी दी गई।

Bombay was returned to the Company. Surat – twice devastated by Shivaji and no longer considered safe – was in decline. Moreover, the Company at Surat were at the mercy of their landlords, the Mughals, whereas Bombay was sovereign English territory. It was decided, therefore, to move the Company's headquarters from Surat to Bombay. Child relocated to Bombay where he continued to cut expenditure and clamp down on his employees' private trade. Meanwhile, he lived in luxury and was loathed.

बंबई को कंपनी को वापस सौंप दिया गया। सूरत, जो शिवाजी के आक्रमण से दो बार तबाह हो चुका था और अब सुरक्षित नहीं माना जाता था, पतन की ओर अग्रसर था। इसके अलावा, सूरत में कंपनी अपने जमींदारों, मुगलों की दया पर निर्भर थी, जबकि बंबई अंग्रेजों का संप्रभु

क्षेत्र था। इसलिए, कंपनी के मुख्यालय को सूरत से बंबई स्थानांतरित करने का निर्णय लिया गया। चाइल्ड बंबई चले गए, जहाँ उन्होंने खर्चों में कटौती जारी रखी और अपने कर्मचारियों के निजी व्यापार पर अंकुश लगाया। इस बीच, वे विलासितापूर्ण जीवन जीते रहे और लोगों द्वारा तिरस्कृत किए जाते रहे।

Puffed up by being made captain general, admiral, commander-in-chief of all the Company's forces, director general of mercantile affairs and being made a baronet, Sir John Child then completely overreached himself. Angered by some private traders doing business, he presented a long list of grievances to the Mughal governor at Surat. Receiving no reply, Child threatened retaliation. The enraged governor seized the Company's goods in Surat, imprisoned the Company's factors and offered a reward for Sir John Child, dead or alive. Child then raised the stakes by seizing dozens of Mughal merchant ships. These were taken to Bombay where their cargoes were confiscated. Child wrote to London, where he had the backing of the governor: 'Wee think of nothing less now than goeing briskly to worke and letting the Mogull and all his hungry courtiers know and feel the force of your armes.'

सर जॉन चाइल्ड को कप्तान जनरल, एडमिरल, कंपनी की सभी सेनाओं का कमांडर-इन-चीफ, व्यापारिक मामलों का महानिदेशक और बैरोनेट की उपाधि मिलने से उनका अहंकार चरम पर पहुँच गया। कुछ निजी व्यापारियों द्वारा व्यापार करने से नाराज़ होकर उन्होंने सूरत के मुगल गवर्नर के समक्ष शिकायतों की एक लंबी सूची प्रस्तुत की। कोई जवाब न मिलने पर चाइल्ड ने प्रतिशोध की धमकी दी। क्रोधित गवर्नर ने सूरत में कंपनी का माल ज़ब्त कर लिया, कंपनी के एजेंटों को कैद कर लिया और सर जॉन चाइल्ड को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर इनाम की घोषणा कर दी। इसके बाद चाइल्ड ने दर्जनों मुगल व्यापारी जहाजों को ज़ब्त करके स्थिति को और गंभीर बना दिया। इन जहाजों को बंबई ले जाया गया जहाँ उनका माल ज़ब्त कर लिया गया। चाइल्ड ने लंदन को पत्र लिखा, जहाँ उन्हें गवर्नर का समर्थन प्राप्त था: 'अब

हम पूरी तेज़ी से काम पर लगने और मुगलों और उनके सभी लालची दरबारियों को अपनी ताकत का एहसास कराने के अलावा और कुछ नहीं सोच सकते।'

Not only did Child launch an attack on the Mughals, but he also captured a fleet of ships carrying supplies to the Siddis of Janjira.

चिल्ड ने न केवल मुगलों पर हमला किया, बल्कि उसने जंजीरा के सिद्दी समुदाय को आपूर्ति ले जा रहे जहाजों के एक बेड़े पर भी कब्जा कर लिया।

The Siddis of Janjira were Africans. They were usually described as being from Abyssinia or Ethiopia, but given their prowess as sailors, it seems more likely that they were from the coastal areas of the Horn of Africa, from what is now Somalia and Eritrea. Many from that part of Africa came to India, either as slaves or as mercenaries. Several rose to high ranks in the armies of the Muslim rulers. The name Siddis may be a corruption of the Muslim title of respect, Sayyid.

जंजीरा के सिद्दी लोग अफ़्रीकी थे। उन्हें आमतौर पर अबीसीनियाई या इथियोपिया का निवासी बताया जाता था, लेकिन नाविक के रूप में उनकी दक्षता को देखते हुए, यह अधिक संभावना है कि वे अफ़्रीका के हॉर्न के तटीय क्षेत्रों, यानी वर्तमान सोमालिया और इरिट्रिया से आए थे। अफ़्रीका के उस हिस्से से कई लोग भारत आए, या तो गुलाम के रूप में या भाड़े के सैनिकों के रूप में। कई लोग मुस्लिम शासकों की सेनाओं में उच्च पदों तक पहुँचे। सिद्दी नाम मुस्लिम सम्मानसूचक उपाधि, सैय्यद का बिगड़ा हुआ रूप हो सकता है।

There are several stories as to how the Siddis came to Janjira. Most accounts place the event as occuring towards the close of the fifteenth century. Most accounts also agree that there was already a fort built by the native Kolis on the island and that the Siddis were in the service of the Sultan of Ahmadnagar. Some stories describe a long siege, but the most romantic story describes trickery. In this, one Perim Khan and other Siddis came to Janjira dressed as merchants. They received permission from the Koli captain of the island to

unload a shipment of large boxes said to contain silk and wine. They then plied their hosts with the wine until they were incapable, opened the other boxes, which contained soldiers, and took the fort.

सिद्दी वंश के जंजीरा पहुंचने के बारे में कई कहानियां प्रचलित हैं। अधिकांश विवरणों के अनुसार यह घटना पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में घटी थी। अधिकांश विवरणों में इस बात पर सहमति है कि द्वीप पर मूल निवासी कोलियों द्वारा निर्मित एक किला पहले से ही मौजूद था और सिद्दी वंश अहमदनगर के सुल्तान की सेवा में था। कुछ कहानियों में लंबी घेराबंदी का वर्णन है, लेकिन सबसे रोमांचक कहानी छल-कपट की है। इस कहानी के अनुसार, पेरीम खान और अन्य सिद्दी वंश के लोग व्यापारियों के वेश में जंजीरा पहुंचे। उन्होंने द्वीप के कोली सेनापति से रेशम और शराब से भरे बड़े बक्सों को उतारने की अनुमति प्राप्त की। फिर उन्होंने अपने मेजबानों को इतनी शराब पिलाई कि वे बेहाल हो गए। इसके बाद उन्होंने अन्य बक्से खोले, जिनमें सैनिक थे, और किले पर कब्जा कर लिया।

Whatever the truth, the Siddis had turned Janjira into a formidable fortress. They had also built up a powerful navy. When Ahmadnagar fell to the Mughals they put their services at the disposal of the new power, the Adil Shahs of Bijapur. They received little help from Bijapur when Shivaji attacked Janjira; so they then transferred their allegiance to the Mughal emperor, Aurangzeb. He gave them Rs 400,000 a year to maintain their fleet and gave their leader the high title of Yakoot Khan. He and his successors became the admirals of a Mughal navy. They had also built up a large army.

सच्चाई चाहे जो भी हो, सिद्दी वंश ने जंजीरा को एक दुर्जेय किले में बदल दिया था। उन्होंने एक शक्तिशाली नौसेना भी तैयार कर ली थी। जब अहमदनगर मुगलों के हाथों में आ गया, तो उन्होंने अपनी सेवाएं बीजापुर के आदिल शाहों को सौंप दीं। शिवाजी द्वारा जंजीरा पर आक्रमण के समय उन्हें बीजापुर से बहुत कम सहायता मिली; इसलिए उन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब के प्रति निष्ठा बदल ली। औरंगजेब ने उन्हें अपने बेड़े के रखरखाव के लिए प्रति वर्ष 400,000 रुपये दिए और उनके नेता को याकूत खान की उपाधि प्रदान की। वह और उनके

उत्तराधिकारी मुगल नौसेना के एडमिरल बन गए। उन्होंने एक विशाल सेना भी तैयार कर ली थी।

Urged to show restraint by one of his own captains, Sir John Child declared that if the Siddi came to Bombay he ‘would blow him off again with the wind of his bum’.

अपने ही एक कप्तान द्वारा संयम बरतने के लिए प्रेरित किए जाने पर, सर जॉन चाइल्ड ने घोषणा की कि यदि सिद्दी बॉम्बे आया तो वह उसे 'अपनी पीठ की हवा से फिर से उड़ा देंगे'।

In February 1689 the Siddis arrived. They landed just north of Bombay’s town and castle with an army of 20,000 men. The English had only a tenth of that number and they were commanded by a Captain Pean, whom a Scottish observer described as ‘a fellow as well made for running as any I ever saw’. The Siddis soon occupied the island and began to lay siege to the English in their castle. A number of the Company’s soldiers, probably with grievances against Child, defected to the enemy. They advised the Siddis as to how the walls of the fort could be undermined. Although the Company’s ships did manage to bring in some provisions, supplies began to run low. Meanwhile, the Siddis increased their army to 40,000.

फरवरी 1689 में सिद्दी पहुंचे। वे 20,000 सैनिकों की सेना के साथ बंबई शहर और किले के ठीक उत्तर में उतरे। अंग्रेजों के पास उनकी संख्या का केवल दसवां हिस्सा था और उनका नेतृत्व कैप्टन पीन कर रहे थे, जिनके बारे में एक स्कॉटिश पर्यवेक्षक ने कहा था कि 'वे दौड़ने में इतने माहिर थे जितने मैंने कभी नहीं देखे।' सिद्दी जल्द ही द्वीप पर कब्जा कर लिया और अंग्रेजों के किले को घेर लिया। कंपनी के कई सैनिक, संभवतः चाइल्ड के खिलाफ शिकायतों के कारण, दुश्मन के पाले में चले गए। उन्होंने सिद्दी को किले की दीवारों को कमजोर करने के तरीके बताए। हालांकि कंपनी के जहाजों ने कुछ रसद लाने में कामयाबी हासिल की, लेकिन आपूर्ति कम होने लगी। इस बीच, सिद्दी ने अपनी सेना को बढ़ाकर 40,000 कर लिया।

The English bowed to the inevitable. Emissaries were sent to the emperor to ask for mercy. In February 1690 Aurangzeb relented:

अंग्रेजों ने अपरिहार्य स्थिति को स्वीकार कर लिया। सम्राट से दया की भीख मांगने के लिए दूत भेजे गए। फरवरी 1690 में औरंगजेब नरम पड़ गया:

All the English having made a most humble submissive petition, that the crimes they have done may be pardoned, that they would present the Emperor with a fine of 150,000 rupees and out of his princely condescension agrees that the merchants' goods be returned, the town flourish, and they follow their trade as in former times, and Mr Child, who did the disgrace, be turned out and expelled.

सभी अंग्रेजों ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि उनके द्वारा किए गए अपराधों को क्षमा कर दिया जाए, वे सम्राट को 150,000 रुपये का जुर्माना अदा करेंगे, और सम्राट की कृपा से व्यापारियों का माल वापस करने, शहर को समृद्ध बनाने और उन्हें पहले की तरह अपना व्यापार जारी रखने की अनुमति दी गई, और श्री चाइल्ड, जिसने यह कलंक लगाया था, को निष्कासित कर दिया जाए।

Rather conveniently, before this message reached Bombay, Sir John Child died.

संयोगवश, यह संदेश बॉम्बे पहुंचने से पहले ही सर जॉन चाइल्ड का निधन हो गया।

The restoration of the Company's privileges by the Mughals did not immediately result in the restoration of its fortunes. Bombay went into decline. The English population had dramatically decreased during the conflict – from 700 or 800 to only sixty – and it failed to recover for many years. There were two main reasons for this – the competition from English trading outside the Company's control and disease.

मुगलों द्वारा कंपनी के विशेषाधिकारों की बहाली से कंपनी की समृद्धि में तुरंत सुधार नहीं हुआ। बंबई का पतन शुरू हो गया। संघर्ष के दौरान अंग्रेजी आबादी में भारी कमी आई थी – 700 या 800 से घटकर मात्र साठ रह गई थी – और कई वर्षों तक यह स्थिति सुधर नहीं पाई। इसके दो मुख्य कारण थे – कंपनी के नियंत्रण से बाहर अंग्रेजी व्यापार से प्रतिस्पर्धा और बीमारी।

Bombay had a terrible reputation for disease and mortality. In all the Company's outposts, gluttony, excessive drinking and venereal disease took their toll, but Bombay seemed especially unhealthy. John Fryer, a doctor in the service of the East India Company, visited Bombay in 1673. He was impressed with the pomp that surrounded the Company's president:

बंबई में बीमारी और मृत्यु दर की भयानक बदनामी थी। कंपनी की सभी चौकियों में, अत्यधिक भोजन, शराबखोरी और यौन रोगों का बोलबाला था, लेकिन बंबई विशेष रूप से अस्वस्थ प्रतीत होता था। ईस्ट इंडिया कंपनी में कार्यरत एक चिकित्सक जॉन फ्रायर ने 1673 में बंबई का दौरा किया। वे कंपनी के अध्यक्ष के ठाठ-बाठ से प्रभावित हुए:

At meals he has his trumpets usher in his courses, and soft musick at the table: if he move out of his chamber the silver staves wait on him; if down stairs, the guard receive him; if he go abroad, the Bandarines and Moors under two standards march before him.

भोजन के समय, वह अपने व्यंजनों की शुरुआत तुरही की थाप से करवाता है, और मेज पर मधुर संगीत बजता है: यदि वह अपने कमरे से बाहर निकलता है, तो चांदी की छड़ें उसका स्वागत करती हैं; यदि वह नीचे जाता है, तो रक्षक उसका स्वागत करते हैं; यदि वह बाहर जाता है, तो दो झंडों के साथ बंदरीन और मूर उसके आगे-आगे मार्च करते हैं।

Fryer, however, had no wish to stay:

हालांकि, फ्रायर की वहां रुकने की कोई इच्छा नहीं थी:

But for all this gallantry, I reckon they walk but in charnel-houses, the climate being extremely unhealthy whence follows fluxes, dropsy, scurvy, barbiers

(which is an enervating the whole body being neither able to use hands or feet) gout, stone, malignant and putrid fevers, which are endemial diseases: among the worst of these, fool rack [arrack]and foul women may be reckoned.

लेकिन इस सारी बहादुरी के बावजूद, मुझे लगता है कि वे केवल मुर्दाघरों में ही चल रहे हैं, क्योंकि वहाँ का मौसम अत्यंत अस्वस्थ है, जिससे दस्त, जलोदर, स्कर्वी, बार्बियर (जो पूरे शरीर को कमजोर कर देता है और व्यक्ति न तो हाथ-पैर चला पाता है), गठिया, पथरी, घातक और सड़न वाले बुखार जैसी स्थानिक बीमारियाँ फैलती हैं: इनमें से सबसे बुरी बीमारियों में कुटिल पीड़ा और अपवित्र स्त्रियाँ शामिल हैं।

Similarly the Reverend John Ovington, who visited Bombay in 1690, declined an offer to become the minister, citing:

इसी प्रकार, 1690 में बॉम्बे का दौरा करने वाले रेवरेंड जॉन ओविंगटन ने मंत्री बनने के प्रस्ताव को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया:

My predecessors, one of whom was interred a fortnight before this time, and three or four more had been buried the preceding years: which common fatality has created a proverb among the English there that *two mussouns are the age of man*.

मेरे पूर्वज, जिनमें से एक को इस समय से दो सप्ताह पहले दफनाया गया था, और तीन या चार अन्य को पिछले वर्षों में दफनाया गया था: इस आम दुर्भाग्य ने वहां के अंग्रेजों के बीच एक कहावत को जन्म दिया है कि दो मुसून एक आदमी की उम्र होती है।

Ovington was wise to be nervous. Twenty-four Europeans had arrived on his ship in May; by the time he left in the September, twenty had died.

ओविंगटन का घबराया हुआ होना बुद्धिमानी थी। मई में उनके जहाज पर चौबीस यूरोपीय लोग आए थे; सितंबर में उनके रवाना होने तक उनमें से बीस की मौत हो चुकी थी।

Despite the spectre of death, many of the English failed to make wills. When they died intestate the Company sold their effects. The lists of contents make a fascinating read. Some of the effects of one Ambrose Thompson, presumably a doctor, give a glimpse into Bombay life and death in 1701:

मृत्यु के भय के बावजूद, कई अंग्रेज वसीयत बनाने में असफल रहे। जब उनकी बिना वसीयत बनाए मृत्यु हुई, तो कंपनी ने उनकी संपत्ति बेच दी। संपत्ति की सूचियाँ पढ़ना बेहद रोचक है। संभवतः एक डॉक्टर, एम्ब्रोस थॉम्पसन की कुछ संपत्तियाँ 1701 में बॉम्बे के जीवन और मृत्यु की एक झलक प्रस्तुत करती हैं।

A box of medicines and instruments

दवाओं और उपकरणों का एक डिब्बा

A pair of pistols

पिस्तौलों की एक जोड़ी

9 waistcoats

9 जैकेट

A pallenqueen

एक पलेनक्वीन

3 wiggs

3 विग

28 neck cloths

28 गले के वस्त्र

18 shirts

18 शर्ट

A parcel of stockings

मोजों का एक पार्सल

1 microscope

1 सूक्ष्मदर्शी

A bible

एक बाइबिल

A slave boy

एक गुलाम लड़का

A carboy of Portuguese wine

पुर्तगाली शराब से भरा एक बड़ा बर्तन

48 gallons of Clarrett

48 गैलन क्लेरेट

The slave boy sold for about the same amount as the parcel of stockings and somewhat less than the waistcoats.

उस गुलाम लड़के को लगभग उतनी ही कीमत में बेचा गया जितनी कीमत में मोजों का पार्सल बेचा गया था और जैकेटों की तुलना में कुछ कम कीमत में।

Six

छह

THE PORTUGUESE

पुर्तगाली

TERROR, LUXURY AND DECAY

आतंक, विलासिता और पतन

At the beginning of the sixteenth century, Gujarat was probably the most important trading centre in India. Broach, at the mouth of the great River Narmada, was its principal port and market. From there, goods were despatched to the Indian interior, southern and western India, Arabia, Central Asia, Europe and to the Far East. At the beginning of the century, much of the pepper and other spices of the Malabar Coast, and from the Far East, had been taken north to Gujarat for sale. When the Portuguese took control of the spice trade in Malabar and the East, and shipped directly to Europe, Gujarat's trade suffered. Nevertheless, with its access to the routes into northern India and Arabia, Gujarat was still a major business centre.

सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में, गुजरात संभवतः भारत का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। महान नर्मदा नदी के मुहाने पर स्थित ब्रोच इसका प्रमुख बंदरगाह और बाज़ार था। यहाँ से माल भारत के आंतरिक भागों, दक्षिण और पश्चिम भारत, अरब, मध्य एशिया, यूरोप और सुदूर पूर्व भेजा जाता था। शताब्दी के आरंभ में, मालाबार तट और सुदूर पूर्व से प्राप्त अधिकांश काली मिर्च और अन्य मसाले उत्तर की ओर गुजरात में बिक्री के लिए भेजे जाते थे। जब पुर्तगालियों ने मालाबार और पूर्व में मसाला व्यापार पर नियंत्रण कर लिया और सीधे यूरोप को माल भेजना शुरू किया, तो गुजरात के व्यापार को नुकसान हुआ। फिर भी, उत्तरी भारत और अरब के मार्गों तक पहुँच होने के कारण, गुजरात एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र बना रहा।

The Gujaratis were considerable shipowners. Moreover, the Gujarati merchants regularly travelled on business to Arabia and the Far East. In other parts of India where trade was mostly in the hands of Hindu merchants, these were inhibited by the Hindu prohibition on 'crossing the black sea'. Hindus who did travel were liable to be ruined by being expelled from their caste. In Gujarat, not only were there many Muslims who were, of course, free to travel, but also many well-off Hindus who had converted to Jainism. To become a Jain was perfectly acceptable to most Hindus since they regarded the Jains as a Hindu sect. Moreover, they were much admired for their belief in the sanctity of all life. Naturally, adhering to such a belief meant the Jains were unable to indulge in warfare, a common occupation of upper-caste Hindus. The Jains were free to focus their energies on moneylending, banking and trade. Moreover, their religion had no restrictions on travel, so they were able to conduct business abroad. Both the Jains and the Muslims established themselves as major overseas traders.

गुजराती लोग बड़े जहाज मालिक थे। इसके अलावा, गुजराती व्यापारी नियमित रूप से व्यापार के सिलसिले में अरब और सुदूर पूर्व की यात्रा करते थे। भारत के अन्य हिस्सों में, जहाँ व्यापार मुख्य रूप से हिंदू व्यापारियों के हाथों में था, वहाँ 'काला सागर पार करने' पर हिंदू धर्म के प्रतिबंध के कारण उन्हें परेशानी होती थी। यात्रा करने वाले हिंदुओं को अपनी जाति से निष्कासित किए जाने का खतरा रहता था। गुजरात में न केवल कई मुसलमान थे, जिन्हें यात्रा करने की पूरी स्वतंत्रता थी, बल्कि कई संपन्न हिंदू भी थे जिन्होंने जैन धर्म अपना लिया था। जैन धर्म अपनाना अधिकांश हिंदुओं को स्वीकार्य था, क्योंकि वे जैनों को हिंदू धर्म का ही एक हिस्सा मानते थे। इसके अलावा, जैन सभी जीवों की पवित्रता में विश्वास रखते थे और उनकी बहुत प्रशंसा की जाती थी। स्वाभाविक रूप से, इस विश्वास का पालन करने के कारण जैन युद्ध में शामिल नहीं हो सकते थे, जो उच्च जाति के हिंदुओं का एक आम पेशा था। जैन साहूकारी, बैंकिंग और व्यापार पर अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए स्वतंत्र थे। इसके

अलावा, उनके धर्म में यात्रा पर कोई प्रतिबंध नहीं था, इसलिए वे विदेशों में व्यापार करने में सक्षम थे। जैन और मुसलमान दोनों ने ही खुद को प्रमुख विदेशी व्यापारियों के रूप में स्थापित किया।

The Portuguese, having secured domination over Malabar, wanted to gain control over Gujarat too. Their first opportunity came in 1533, when the Mughals attacked Gujarat. In 1534 the ruler of Gujarat entered into a pact with the Portuguese to resist the Mughals. In return for their help, he gave them the district of Bassein and its dependencies, including the islands that would eventually become Bombay. The Portuguese greatly strengthened the existing fort at Bassein and built many more. Two years later, they managed to obtain the island fort of Diu. The Gujaratis tried to reclaim Diu in 1538 and again in 1546. The later siege was an epic battle. The governor of India (later viceroy), João de Castro, commanded the Portuguese relief. From Bassein, he sent one of his commanders on a preliminary foray to intercept any ships taking supplies to the enemy. This he did with great savagery. The mutilated bodies of the men he killed were cast into the mouths of the rivers so that they would drift up to the towns as a warning of Portuguese vengeance. When the commander returned to Bassein, the yardarms of his ships were decorated with the hanging bodies of sixty Muslims.

मालाबार पर प्रभुत्व स्थापित करने के बाद, पुर्तगालियों ने गुजरात पर भी नियंत्रण हासिल करना चाहा। उन्हें पहला अवसर 1533 में मिला, जब मुगलों ने गुजरात पर आक्रमण किया। 1534 में गुजरात के शासक ने मुगलों का प्रतिरोध करने के लिए पुर्तगालियों के साथ एक समझौता किया। उनकी सहायता के बदले में, उन्होंने उन्हें बसईन जिला और उसके अधीन क्षेत्र दे दिए, जिनमें वे द्वीप भी शामिल थे जो बाद में बंबई कहलाए। पुर्तगालियों ने बसईन में मौजूदा किले को बहुत मजबूत किया और कई और किले बनवाए। दो साल बाद, वे दीव द्वीप किले पर कब्जा करने में सफल रहे। गुजरातियों ने 1538 और फिर 1546 में दीव को पुनः

प्राप्त करने का प्रयास किया। बाद की घेराबंदी एक भीषण युद्ध थी। भारत के गवर्नर (बाद में वायसराय) जोआओ डी कास्त्रो ने पुर्तगाली राहत दल का नेतृत्व किया। बसईन से, उन्होंने अपने एक सेनापति को दुश्मन को आपूर्ति ले जा रहे किसी भी जहाज को रोकने के लिए प्रारंभिक अभियान पर भेजा। उन्होंने यह कार्य बड़ी क्रूरता से किया। उसने जिन लोगों को मारा था, उनके क्षत-विक्षत शवों को नदियों के मुहानों में फेंक दिया ताकि वे बहकर शहरों तक पहुँचें और पुर्तगालियों के प्रतिशोध की चेतावनी दें। जब सेनापति बस्सीन लौटा, तो उसके जहाजों के अग्रभागों पर साठ मुसलमानों के लटके हुए शव सजे हुए थे।

It needed all the naval and military resources of the Portuguese to raise this siege of Diu, which could well have terminated their attempts at domination, but they prevailed and massively extended the fortifications. The reprisals after the second siege of Diu were savage. The governor told the king of Portugal that he had sent a commander with twenty ships to:

दीव की घेराबंदी तोड़ने के लिए पुर्तगालियों को अपने सभी नौसैनिक और सैन्य संसाधनों का इस्तेमाल करना पड़ा, जिससे उनके प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयास समाप्त हो सकते थे, लेकिन वे सफल रहे और उन्होंने किलेबंदी का व्यापक विस्तार किया। दीव की दूसरी घेराबंदी के बाद की जवाबी कार्रवाई क्रूर थी। गवर्नर ने पुर्तगाल के राजा को बताया कि उसने बीस जहाजों के साथ एक सेनापति को भेजा है:

Burn and destroy the whole coast, in which he very well showed his diligence and gallantry, because he caused more destruction of the coast than was ever done before, or ever dreamt of, destroying every place from Daman up to Broach, so that there was no memory left of them, and he butchered everyone he captured without showing mercy to a living thing. He burnt twenty large ships and one hundred and fifty small ones and the town squares were covered in bodies, which caused great astonishment and fear in all Gujarat.

उसने पूरे तट को जलाकर नष्ट कर दिया, जिसमें उसने अपनी तत्परता और वीरता का बखूबी प्रदर्शन किया। उसने तट पर इतना विनाश किया जितना पहले कभी नहीं हुआ था, न ही कभी

कल्पना की जा सकती थी। उसने दमन से लेकर ब्रोच तक हर जगह को तबाह कर दिया, यहाँ तक कि उनका कोई निशान भी नहीं बचा। उसने पकड़े गए हर व्यक्ति को बेरहमी से मार डाला। उसने बीस बड़े जहाज और डेढ़ सौ छोटे जहाज जला दिए, और शहर के चौक लाशों से भर गए, जिससे पूरे गुजरात में अचंभा और भय का माहौल छा गया।

At Gogha, the Portuguese heaped up the bodies of those they had killed in the temples. They then cut the throats of cows and defiled the temples by sprinkling them with the blood.

गोघा में, पुर्तगालियों ने अपने द्वारा मारे गए लोगों के शवों को मंदिरों में ढेर कर दिया। फिर उन्होंने गायों के गले काट दिए और उनके खून को मंदिरों पर छिड़ककर उन्हें अपवित्र कर दिया।

In 1559, again as a result of a temporary alliance with a ruler of Gujarat, the Portuguese acquired the port of Daman. This they also heavily fortified. From these strongholds, the Portuguese set about the subjugation of Gujarat. The Portuguese were well aware that they could never actually conquer Gujarat. The population of Portugal was only about one million, which severely limited the number of troops that could be despatched. Moreover, Brazil had become a drain on manpower. Many soldiers that were despatched to India died on the seas of scurvy or in storms. Those that did survive were subsequently depleted by tropical diseases. Unable to capture and hold large swathes of Gujarat, the Portuguese mounted a war of terror.

1559 में, गुजरात के एक शासक के साथ अस्थायी गठबंधन के परिणामस्वरूप, पुर्तगालियों ने दमन बंदरगाह पर कब्जा कर लिया। उन्होंने इसे भी भारी किलेबंदी से मजबूत बना दिया। इन गढ़ों से पुर्तगालियों ने गुजरात को अपने अधीन करने का अभियान शुरू किया। पुर्तगाली भली-भांति जानते थे कि वे गुजरात को पूरी तरह से जीत नहीं सकते। पुर्तगाल की जनसंख्या लगभग दस लाख ही थी, जिससे भेजी जा सकने वाली सेना की संख्या बहुत सीमित हो गई थी। इसके अलावा, ब्राजील से भी सैनिकों की भारी कमी हो रही थी। भारत भेजे गए कई सैनिक

समुद्र में स्कर्वी रोग या तूफानों में मारे गए। जो बच गए, वे भी बाद में उष्णकटिबंधीय रोगों से कमजोर हो गए। गुजरात के बड़े भूभाग पर कब्जा करने और उसे अपने नियंत्रण में रखने में असमर्थ होने पर, पुर्तगालियों ने आतंक का युद्ध छेड़ दिया।

The slaughter started in Portuguese territory, where many of the Muslim traders were put to the sword. The Portuguese then went to Magdala (a town largely populated by people from the Horn of Africa, of which there were many in Gujarat), close to Surat, and set it on fire. They killed all the inhabitants except one man. He was left to live, with his hands cut off, to tell others of the atrocity. Hansot, close to Broach, was set on fire too. In Diu, they attacked the city adjacent to their fort. Many coastal towns were destroyed, including Una, Mahua, Gogha and the major port of Gandhar. Somnath was attacked and many of its famous temples and mosques destroyed.

पुर्तगाली क्षेत्र में नरसंहार शुरू हुआ, जहाँ कई मुस्लिम व्यापारियों को तलवार से मार डाला गया। इसके बाद पुर्तगाली सूरत के पास स्थित मगदला (एक ऐसा शहर जहाँ मुख्य रूप से अफ्रीका के हॉर्न क्षेत्र के लोग बसे हुए थे, जिनमें से कई गुजरात में भी थे) गए और उसे आग लगा दी। उन्होंने एक व्यक्ति को छोड़कर सभी निवासियों को मार डाला। उस व्यक्ति को जीवित छोड़ दिया गया, उसके हाथ काट दिए गए, ताकि वह दूसरों को इस अत्याचार के बारे में बता सके। ब्रोच के पास स्थित हंसोट को भी आग लगा दी गई। दीव में, उन्होंने अपने किले से सटे शहर पर हमला किया। ऊना, महुआ, गोघा और प्रमुख बंदरगाह गांधार सहित कई तटीय शहर नष्ट कर दिए गए। सोमनाथ पर हमला किया गया और उसके कई प्रसिद्ध मंदिर और मस्जिदें नष्ट कर दी गईं।

Finally, a Portuguese expedition was sent to Broach, whose soldiers were absent. The Portuguese arrived by ship in the night to begin the slaughter. Once they had killed all those who had come out on to the streets, they set fire to the houses and burnt those hiding within – ‘the nobility and the people, the gardens and the houses, were reduced to ashes’.

अंततः, पुर्तगालियों का एक अभियान ब्रोच भेजा गया, जहाँ सैनिक अनुपस्थित थे। पुर्तगाली रात में जहाज से पहुँचे और नरसंहार शुरू कर दिया। सड़कों पर निकले सभी लोगों को मारने के बाद, उन्होंने घरों में आग लगा दी और अंदर छिपे लोगों को जलाकर राख कर दिया - 'कुलीन वर्ग और आम लोग, बगीचे और घर, सब राख हो गए'।

These actions had the desired effect. The Gujarati merchants, the Vaniyas, were famously pragmatic. Their conciliatory behaviour, even when savagely provoked, was well illustrated by the Gujarati proverbs – 'the Vaniya is ready for compromise'; 'the Vaniya always changes allegiance according to circumstance'; 'the Vaniya will not commit himself to anything'. Accordingly, the Gujarati merchants meekly took a Portuguese cartaz for their voyages and meekly paid at Diu the Portuguese levy on all imports and exports into and from Gujarat. Diu became the biggest financial contributor, after Goa, to the exchequer of the Portuguese state in India.

इन कार्रवाइयों का वांछित परिणाम निकला। गुजराती व्यापारी, जिन्हें वाणिया कहा जाता था, अपनी व्यावहारिकता के लिए प्रसिद्ध थे। उनका सुलहप्रिय व्यवहार, यहाँ तक कि उग्र रूप से उकसाए जाने पर भी, गुजराती कहावतों में स्पष्ट रूप से झलकता है – 'वानिया समझौता करने को तैयार रहता है'; 'वानिया परिस्थितियों के अनुसार अपनी निष्ठा बदलता रहता है'; 'वानिया किसी भी बात के लिए प्रतिबद्ध नहीं होता'। तदनुसार, गुजराती व्यापारियों ने विनम्रतापूर्वक अपनी यात्राओं के लिए पुर्तगाली कर स्वीकार किया और दीव में गुजरात से आने-जाने वाले सभी आयात और निर्यात पर पुर्तगाली कर का भुगतान किया। गोवा के बाद, दीव भारत में पुर्तगाली राज्य के खजाने में सबसे बड़ा वित्तीय योगदानकर्ता बन गया।

The pragmatism of the Gujarati merchants eventually paid dividends. Portuguese officials and the commanders of Portuguese ships were keen to conduct business on their own account, even though this was frowned upon by their government. They were strictly forbidden to deal in spices, which were the preserve of the crown, but Gujarat had much else to tempt them

with. Gujarati cloth, sold willingly by the Gujaratis to their oppressors, became the staple of this private Portuguese trade. Even more pragmatically, several Gujarati merchants set up business in Goa itself. They became wealthy. Gujarati goods found their way to Goa and from there to Portugal. The Gujaratis in Goa even loaned the Portuguese governor money when it was urgently needed.

गुजराती व्यापारियों की व्यावहारिक सोच अंततः फलदायी साबित हुई। पुर्तगाली अधिकारी और पुर्तगाली जहाजों के कमांडर अपने निजी कारोबार करने के लिए उत्सुक थे, भले ही उनकी सरकार इसे अनुचित मानती थी। उन्हें मसालों का व्यापार करने की सख्त मनाही थी, क्योंकि मसाले केवल राजशाही के अधिकार क्षेत्र में थे, लेकिन गुजरात में उन्हें लुभाने के लिए और भी बहुत कुछ था। गुजराती कपड़ा, जिसे गुजराती लोग स्वेच्छा से अपने उत्पीड़कों को बेचते थे, पुर्तगाली निजी व्यापार का मुख्य आधार बन गया। इससे भी अधिक व्यावहारिक रूप से, कई गुजराती व्यापारियों ने गोवा में ही अपना कारोबार स्थापित किया। वे समृद्ध हो गए। गुजराती सामान गोवा और वहां से पुर्तगाल तक पहुंचने लगा। गोवा में रहने वाले गुजरातियों ने पुर्तगाली गवर्नर को जरूरत पड़ने पर ऋण भी दिया।

The Portuguese also opened up trade into the Bay of Bengal. This, again, was mostly unofficial business, for the sea was lawless, outside Portuguese control and full of pirates. Despite these dangers, the lure of the fine textiles of Bengal proved irresistible. The captains of Portuguese ships and colluding officials bought large quantities of textile to sell to the Far East and Europe on their own account. They traded mainly at Chittagong and Hooghly. Hooghly grew into a substantial town, with monasteries and churches. The Muslim authorities were often affronted by Catholic places of worship – more so than by the austere Protestant Dutch and English – because of their statues and

images. Nevertheless, nothing was done for a while. However, when the Portuguese decided to entrench further, a petition from the local authorities to Shah Jahan complained that they 'had mounted their fort with cannons, and had grown insolent and oppressive'. Retribution followed.

पुर्तगालियों ने बंगाल की खाड़ी में भी व्यापार शुरू किया। यह व्यापार भी अधिकतर अनौपचारिक था, क्योंकि समुद्र में कानून व्यवस्था नहीं थी, पुर्तगालियों का इस पर कोई नियंत्रण नहीं था और यह समुद्री लुटेरों से भरा हुआ था। इन खतरों के बावजूद, बंगाल के उत्तम वस्त्रों का आकर्षण अप्रतिरोध्य साबित हुआ। पुर्तगाली जहाजों के कप्तानों और उनके साथ मिलीभगत करने वाले अधिकारियों ने सुदूर पूर्व और यूरोप में अपने लाभ के लिए बड़ी मात्रा में वस्त्र खरीदे। उनका मुख्य व्यापार चटगांव और हुगली में होता था। हुगली एक विकसित शहर बन गया, जिसमें मठ और गिरजाघर थे। मुस्लिम अधिकारी अक्सर कैथोलिक पूजा स्थलों से नाराज होते थे - कठोर प्रोटेस्टेंट डच और अंग्रेजों की तुलना में कहीं अधिक - क्योंकि उनमें मूर्तियां और प्रतिमाएं थीं। फिर भी, कुछ समय तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। हालांकि, जब पुर्तगालियों ने अपने प्रभाव को और मजबूत करने का फैसला किया, तो स्थानीय अधिकारियों ने शाहजहाँ को एक याचिका भेजी जिसमें शिकायत की गई कि उन्होंने 'अपने किले पर तोपें लगा दी हैं और वे उद्दंड और दमनकारी हो गए हैं'। इसके बाद प्रतिशोध लिया गया।

In 1632 the governor of Bengal barricaded the river below Hooghly with boats to cut off the Portuguese. He then had mines placed under their fort. When one of these was exploded, it caused massive damage to the fortifications and a great number of Portuguese soldiers were killed. Some Portuguese escaped but about 4,000 were taken captive, many of them women and children. They were marched to faraway Agra, a journey that took nearly a year. Shah Jahan then explained how much better their lot would be if they converted to Islam. Most did. They were found jobs or taken into harems. Those who refused to convert were whipped and imprisoned.

1632 में बंगाल के गवर्नर ने पुर्तगालियों को रोकने के लिए हुगली नदी के नीचे नावों से नदी को घेर लिया। फिर उन्होंने उनके किले के नीचे बारूदी सुरंगें बिछाईं। जब इनमें से एक सुरंग फटी, तो किलेबंदी को भारी नुकसान पहुंचा और बड़ी संख्या में पुर्तगाली सैनिक मारे गए। कुछ पुर्तगाली भाग निकले, लेकिन लगभग 4,000 को बंदी बना लिया गया, जिनमें से कई महिलाएं और बच्चे थे। उन्हें दूर आगरा ले जाया गया, इस यात्रा में लगभग एक साल लग गया। शाहजहाँ ने उन्हें समझाया कि यदि वे इस्लाम धर्म अपना लें तो उनका जीवन कितना बेहतर हो जाएगा। अधिकांश ने इस्लाम धर्म अपना लिया। उन्हें नौकरियां दी गईं या हरम में रखा गया। जिन्होंने धर्म परिवर्तन करने से इनकार किया, उन्हें कोड़े मारे गए और कैद कर लिया गया।

The Portuguese were expelled from all of Bengal. They had overreached themselves by challenging the Mughals. A few years before, the Portuguese might have exacted revenge. They might have mounted a blockage of the Bengal ports or bombarded the coastal towns. However, they were much weaker than at the turn of the nineteenth century. The arrival of the Dutch and the British had taken away much of their trade. The drain on their resources by having to maintain so many fortresses in a hostile environment was taking its toll. The Portuguese state in India was running a financial deficit.

पुर्तगालियों को पूरे बंगाल से खदेड़ दिया गया। मुगलों को चुनौती देकर उन्होंने अपनी हद पार कर दी थी। कुछ साल पहले, पुर्तगाली बदला ले सकते थे। वे बंगाल के बंदरगाहों की नाकाबंदी कर सकते थे या तटीय शहरों पर बमबारी कर सकते थे। लेकिन उन्नीसवीं सदी की शुरुआत की तुलना में वे काफी कमजोर हो चुके थे। डचों और अंग्रेजों के आगमन ने उनके व्यापार का एक बड़ा हिस्सा छीन लिया था। शत्रुतापूर्ण वातावरण में इतने सारे किले बनाए रखने के कारण उनके संसाधनों पर भारी दबाव पड़ रहा था, जिसका असर अब दिखने लगा था। भारत में पुर्तगाली राज्य आर्थिक घाटे में चल रहा था।

The one great contribution the Portuguese made to India was to bring in the useful plants of the Americas. An extraordinary number of the fruits and vegetables that the Indians tend to regard as indigenous in fact came from South and Central America. Some of these arrived relatively recently – probably via other European countries – such as the tomatoes and potatoes. Others, however, arrived in the sixteenth and early seventeenth centuries and were almost certainly brought in by the Portuguese. These included pineapples, custard apples, papaya, prickly pears, guavas, passion fruit, cashew nuts and groundnuts, cassava and maize. Most surprisingly, chillies, such a feature of the present Indian diet, also came from South America. The first known reference to them as being in India was in 1604.

पुर्तगालियों का भारत में एक बड़ा योगदान अमेरिका के उपयोगी पौधों को लाना था। भारतीय जिन फलों और सब्जियों को अपना स्वदेशी मानते हैं, उनमें से एक बड़ी संख्या वास्तव में दक्षिण और मध्य अमेरिका से आई थी। इनमें से कुछ अपेक्षाकृत हाल ही में आईं - संभवतः अन्य यूरोपीय देशों के रास्ते - जैसे टमाटर और आलू। हालांकि, अन्य सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में आईं और लगभग निश्चित रूप से पुर्तगालियों द्वारा ही लाई गई थीं। इनमें अनानास, सीताफल, पपीता, कैक्टस, अमरूद, पैशन फ्रूट, काजू और मूंगफली, कसावा और मक्का शामिल हैं। सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि मिर्च, जो वर्तमान भारतीय आहार का एक अभिन्न अंग है, वह भी दक्षिण अमेरिका से आई थी। भारत में मिर्च के होने का पहला ज्ञात उल्लेख 1604 में मिलता है।

The Portuguese were keen horticulturists, and early travellers often remarked on their gardens. Garcia d'Orta not only grew Indian medicinal plants in Goa but also many other fruits and flowers. In 1563 he wrote of the mangosteen, from South-East Asia, that it was 'one of the most delicious fruit they have in those regions. I myself planted some of these in my own garden.' Grafting, although known in India in ancient times, was given impetus by the

Portuguese. It enabled much faster development of new varieties. In particular, they developed new and famous varieties of mangoes, such as the alphonso, which soon spread across India.

पुर्तगाली लोग बागवानी के शौकीन थे और शुरुआती यात्रियों ने अक्सर उनके बगीचों की प्रशंसा की थी। गार्सिया डी'ओर्टा ने गोवा में न केवल भारतीय औषधीय पौधे उगाए, बल्कि कई अन्य फल और फूल भी उगाए। 1563 में उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया के मैंगोस्टीन के बारे में लिखा कि यह 'उन क्षेत्रों में मिलने वाले सबसे स्वादिष्ट फलों में से एक है। मैंने स्वयं अपने बगीचे में इनमें से कुछ पौधे लगाए हैं।' ग्राफ्टिंग, हालांकि प्राचीन काल से भारत में ज्ञात थी, पुर्तगालियों द्वारा इसे बढ़ावा दिया गया। इससे नई किस्मों का विकास बहुत तेजी से संभव हुआ। विशेष रूप से, उन्होंने आम की नई और प्रसिद्ध किस्में विकसित कीं, जैसे कि अल्फोंसो, जो जल्द ही पूरे भारत में फैल गई।

On the debit side, the Portuguese brought in tobacco. Around 1604, one of Akbar’s courtiers chanced upon some tobacco, which he bought and gave to the emperor and his nobles. From the court, its use spread. However, it suffered a temporary decline when Akbar’s successor, Jahangir, issued an edict in 1617. ‘As the smoking of tobacco has taken a very bad effect upon the health and mind of many persons, I order that no one should practice this habit.’

नकारात्मक पक्ष यह था कि पुर्तगालियों ने तंबाकू का आयात किया। लगभग 1604 में, अकबर के एक दरबारी को संयोगवश कुछ तंबाकू मिल गया, जिसे उसने खरीदकर सम्राट और उनके सरदारों को दे दिया। दरबार से इसका उपयोग फैल गया। हालांकि, अकबर के उत्तराधिकारी जहांगीर द्वारा 1617 में एक फरमान जारी करने के बाद इसमें अस्थायी गिरावट आई। फरमान में लिखा था, 'चूंकि तंबाकू पीने से कई लोगों के स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है, इसलिए मैं आदेश देता हूं कि कोई भी इस आदत का पालन न करे।'

The most commonly cultivated flower in today's India is the marigold. It adorns almost every deity and ancestral photograph in temple, shop, home or office. This plant was native to Mexico. The Portuguese probably introduced it to India for their own religious ceremonies.

आज के भारत में सबसे अधिक उगाया जाने वाला फूल गेंदा है। यह मंदिर, दुकान, घर या दफ्तर में लगभग हर देवी-देवता और पूर्वजों की तस्वीर की शोभा बढ़ाता है। यह पौधा मूल रूप से मेक्सिको का है। संभवतः पुर्तगालियों ने इसे अपने धार्मिक अनुष्ठानों के लिए भारत में लाया था।

Three accounts of life in Portuguese India during the seventeenth century give a good idea of how all changed. They were by French travellers – Francois Pyrard, Jean-Baptiste Tavernier and Abbé Carré. Pyrard was in Portuguese India from 1608 to 1610; Tavernier visited Goa in 1641 and again in 1648; Carré was in India from 1672 to 1674. Life for the Portuguese in India altered dramatically over those years.

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान पुर्तगाली भारत में जीवन के तीन वृत्तांत इस बात का अच्छा अंदाजा देते हैं कि कैसे सब कुछ बदल गया। ये वृत्तांत फ्रांसीसी यात्रियों - फ्रांकोइस पायर्ड, जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर और अब्बे कैरे द्वारा लिखे गए थे। पायर्ड 1608 से 1610 तक पुर्तगाली भारत में रहे; टैवर्नियर ने 1641 और फिर 1648 में गोवा का दौरा किया; कैरे 1672 से 1674 तक भारत में रहे। इन वर्षों में भारत में पुर्तगालियों के जीवन में नाटकीय परिवर्तन आया।

Remarkably little is known about Francois Pyrard's early life. He came from Laval in northern France. Some businessmen from there and from Saint-Malo decided to set up a company to follow the Dutch and the English to the East. Two ships were commissioned and young Pyrard left with them from Saint-Malo in 1601, possibly as a purser. Storms delayed the expedition and it took

over a year to reach the Maldives. As Pyrard's ship approached the islands, the captain was ill below decks, the first and second mate were drunk and the watch was asleep. The ship struck a reef. Forty of the crew managed to get ashore with some of the ship's silver. The Maldivians arrested them, beat them, confiscated their silver and refused them food so that they were reduced to eating grass and rats. Many of them died. Twelve men escaped and stole a ship, which they managed to sail to Quilon on the Malabar Coast. The Portuguese seized them and consigned them to the galleys after which they were never heard of again.

फ्रांकोइस पायर्ड के प्रारंभिक जीवन के बारे में आश्चर्यजनक रूप से बहुत कम जानकारी है। वे उत्तरी फ्रांस के लावल से आए थे। वहाँ और सेंट-मालो के कुछ व्यापारियों ने डचों और अंग्रेजों का अनुसरण करते हुए पूर्व की ओर जाने के लिए एक कंपनी स्थापित करने का निर्णय लिया। दो जहाजों को काम पर लगाया गया और युवा पायर्ड 1601 में सेंट-मालो से उनके साथ रवाना हुए, संभवतः एक सहायक के रूप में। तूफानों ने अभियान में देरी की और मालदीव पहुँचने में एक वर्ष से अधिक समय लग गया। जब पायर्ड का जहाज द्वीपों के पास पहुँचा, तो कप्तान डेक के नीचे बीमार था, प्रथम और द्वितीय साथी नशे में थे और पहरेदार सो रहा था। जहाज एक चट्टान से टकरा गया। चालक दल के चालीस सदस्य जहाज की कुछ चांदी के साथ किनारे पर पहुँचने में सफल रहे। मालदीवियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, पीटा, उनकी चांदी जब्त कर ली और उन्हें भोजन देने से इनकार कर दिया, जिससे वे घास और चूहे खाने को मजबूर हो गए। उनमें से कई की मृत्यु हो गई। बारह लोग भाग निकले और एक जहाज चुरा लिया, जिसे वे मालाबार तट पर क्विलोन तक ले जाने में सफल रहे। पुर्तगालियों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें गैली में डाल दिया, जिसके बाद उनके बारे में फिर कभी कुछ पता नहीं चला।

On the islands, Pyrard set about learning the local language. He then managed to ingratiate himself with the sultan and lived tolerably comfortably for five years. In 1607 the islands were invaded by some Bengalis, looking for

Pyrard's ship's cannon. They rescued Pyrard and his three surviving companions and took them to Chittagong. From there the Frenchmen took a ship to Calicut, hoping to meet up with the Dutch. The Indians received them warmly since they were also enemies of the Portuguese. However, just outside Calicut, Pyrard and two of his companions were kidnapped by some Portuguese. They were taken as prisoners to Cochin where they were incarcerated in a prison so crowded that it was impossible to sleep lying down. They were then sent by ship to Goa. On board, a cable snapped and Pyrard was badly injured.

द्वीपों पर पहुँचकर पायर्ड ने स्थानीय भाषा सीखना शुरू किया। फिर वह सुल्तान का विश्वास जीतने में कामयाब रहा और पाँच साल तक आराम से जीवन व्यतीत किया। 1607 में कुछ बंगाली पायर्ड के जहाज की तोप की तलाश में द्वीपों पर आ गए। उन्होंने पायर्ड और उसके तीन बचे हुए साथियों को बचाया और उन्हें चटगांव ले गए। वहाँ से फ्रांसीसी लोग डचों से मिलने की उम्मीद में एक जहाज से कालीकट गए। भारतीयों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया क्योंकि वे भी पुर्तगालियों के दुश्मन थे। हालाँकि, कालीकट के ठीक बाहर, पायर्ड और उसके दो साथियों को कुछ पुर्तगालियों ने अगवा कर लिया। उन्हें कैदी बनाकर कोचीन ले जाया गया जहाँ उन्हें एक ऐसी तंग जेल में रखा गया कि लेटना भी नामुमकिन था। फिर उन्हें जहाज से गोवा भेजा गया। जहाज पर एक रस्सी टूट गई और पायर्ड बुरी तरह घायल हो गया।

When Pyrard finally arrived in Goa in 1608, he was very ill and still shackled in irons. The chains were removed but Pyrard was too weak to walk. He was carried to the Royal Hospital. Pyrard was extremely impressed by the facilities. The hospital had been founded by Albuquerque and been generously supported by kings and viceroys. It was under the supervision of the Jesuits and was governed by elaborate rules. It only admitted European single men – mostly soldiers. There were 1,500 beds and Pyrard was soon tucked into one:

जब पायर्ड अंततः 1608 में गोवा पहुंचे, तो वे बहुत बीमार थे और अभी भी जंजीरों में जकड़े हुए थे। जंजीरें हटा दी गईं, लेकिन पायर्ड चलने के लिए बहुत कमजोर थे। उन्हें शाही अस्पताल ले जाया गया। पायर्ड वहां की सुविधाओं से बेहद प्रभावित हुए। अस्पताल की स्थापना अल्बुकर्क ने की थी और राजाओं और वायसराय द्वारा इसे उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की गई थी। यह जेसुइट्स की देखरेख में था और विस्तृत नियमों द्वारा संचालित था। इसमें केवल यूरोपीय अविवाहित पुरुषों - अधिकतर सैनिकों - को ही भर्ती किया जाता था। वहां 1,500 बिस्तर थे और पायर्ड को जल्द ही एक बिस्तर पर भर्ती कर दिया गया।

Beautifully shaped, and lacquered with red varnish; some are chequered and some gilded; the sacking is of cotton, and the pillows of white calico filled with cotton; the mattresses and coverlets are of silk or cotton, adorned with different patterns and colours, the sheets, etc., are of very fine white cotton. Then came a barber, who shaved all our hair off; then an attendant brought water and washed us all over, and gave us drawers, a white shirt, a cap, and slippers, and also placed beside us a fan and an earthen ware bottle of water for drinking, and a chamber-pot, besides a towel and handkerchief, which were changed every three hours.

सुंदर ढंग से बने हुए, लाल वार्निश से लेपित; कुछ चेकदार और कुछ सुनहरे रंग के; बोरी सूती और तकिए सफेद कैलिको के, जिनमें सूती भराई थी; गद्दे और चादरें रेशम या सूती थीं, जिन पर विभिन्न पैटर्न और रंग बने हुए थे; चादरें आदि बहुत ही महीन सफेद सूती थीं। फिर एक नाई आया, जिसने हमारे सारे बाल मुंडवा दिए; फिर एक सेवक पानी लाया और हमें पूरी तरह से धोया, और हमें अंडरवियर, एक सफेद कमीज, एक टोपी और चप्पलें दीं, और हमारे पास एक पंखा और पीने के पानी की एक मिट्टी की बोतल, एक शौचालय, साथ ही एक तौलिया और एक रुमाल भी रखा, जिन्हें हर तीन घंटे में बदला जाता था।

There were Indian servants always present and a Portuguese superintendent visited every hour. For supper that first day Pyrard had a ‘large fowl roasted,

with some dessert' served on Chinese porcelain. It was no wonder Pyrard thought himself in the finest hospital in the world.

वहाँ हमेशा भारतीय नौकर मौजूद रहते थे और एक पुर्तगाली अधीक्षक हर घंटे दौरा करता था। पहले दिन रात के खाने में पायर्ड को चीनी मिट्टी के बर्तनों में 'भुना हुआ बड़ा मुर्गा और कुछ मिठाई' परोसी गई। इसमें कोई आश्चर्य नहीं था कि पायर्ड खुद को दुनिया के सबसे बेहतरीन अस्पताल में समझ रहा था।

In fact, despite the luxury of the accommodation and the solicitousness of the doctors, the Royal Hospital had a terrible reputation for mortality. There was something wrong with its management of disease and injury. A recent despatch to the king had reported that at least 300 or 400 men between the ages of eighteen and thirty died there every year. It has been calculated that 25,000 soldiers alone died there in the seventeenth century.

दरअसल, आलीशान आवास और डॉक्टरों की तत्परता के बावजूद, शाही अस्पताल में मृत्यु दर बहुत अधिक थी। बीमारियों और चोटों के प्रबंधन में कुछ गड़बड़ी थी। राजा को भेजी गई एक हालिया रिपोर्ट में बताया गया था कि अठारह से तीस वर्ष की आयु के कम से कम 300 या 400 पुरुष हर साल वहाँ मर जाते थे। अनुमान है कि सत्रहवीं शताब्दी में अकेले वहाँ 25,000 सैनिक मारे गए थे।

Nevertheless, three weeks later Pyrard was feeling better. He was persuaded, however, to remain in the hospital until his sick companion had also recovered. This was just as well since, unbeknown to him, he was to be rearrested when discharged.

फिर भी, तीन सप्ताह बाद पायर्ड की तबीयत बेहतर हो गई। हालांकि, उन्हें अस्पताल में तब तक रहने के लिए राजी किया गया जब तक कि उनका बीमार साथी भी ठीक नहीं हो जाता। यह अच्छा ही हुआ क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि अस्पताल से छुट्टी मिलते ही उन्हें दोबारा गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

On leaving the hospital, Pyrard was taken to the prison appropriately known as the *Salle*, which he described as, 'the most foul and filthy place in the world … where all the galley slaves and other sorts of vile people are cast pell-mell in a stinking air, sometimes two or three hundred or more'. Fortunately for him, there was a private room kept for Christians. Fortunately for him also, a month later he was able to get a message to a French Jesuit who managed to have a plea made on Pyrard's behalf to the viceroy. At first the viceroy considered executing Pyrard and his companion, for they had disobeyed the law against the French travelling to the Portuguese East. After a month, however, they were released without charge. Having no money, Pyrard then managed to enlist as a soldier. Over the next two years he was mostly in Goa but he also travelled with his fellow soldiers to Gujarat, south India and Ceylon.

अस्पताल से छुट्टी मिलने पर पायर्ड को उस जेल में ले जाया गया जिसे 'साले' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने इसे 'दुनिया की सबसे गंदी और मैली जगह... जहाँ सभी दास और अन्य नीच किस्म के लोगों को बदबूदार हवा में बेतरतीब ढंग से ठूंस दिया जाता है, कभी-कभी दो-तीन सौ या उससे भी अधिक' बताया। सौभाग्य से, वहाँ ईसाइयों के लिए एक अलग कमरा था। एक महीने बाद, वे एक फ्रांसीसी जेसुइट को संदेश भेजने में सफल रहे, जिसने वायसराय से पायर्ड की ओर से पैरवी करवाई। पहले तो वायसराय ने पायर्ड और उनके साथी को फाँसी देने पर विचार किया, क्योंकि उन्होंने पुर्तगाली पूर्व की यात्रा करने वाले फ्रांसीसियों के खिलाफ कानून का उल्लंघन किया था। हालाँकि, एक महीने बाद, उन्हें बिना किसी आरोप के रिहा कर दिया गया। पैसे न होने के कारण, पायर्ड ने किसी तरह सैनिक के रूप में भर्ती होने का प्रबंध किया। अगले दो वर्षों में वे ज्यादातर गोवा में रहे, लेकिन उन्होंने अपने साथी सैनिकों के साथ गुजरात, दक्षिण भारत और श्रीलंका की यात्रा भी की।

Pyrard was well positioned to write a full account of life in Goa. The soldiers were in the lower strata of European society, but they continually visited the

houses of the upper-class Portuguese where, as was the custom, they were given free food and drink. He wrote:

पायर्ड गोवा में जीवन का संपूर्ण विवरण लिखने के लिए उपयुक्त स्थिति में थे। सैनिक यूरोपीय समाज के निचले तबके से थे, लेकिन वे लगातार उच्च वर्ग के पुर्तगालियों के घरों में जाते थे, जहाँ प्रथा के अनुसार उन्हें मुफ्त भोजन और पेय दिया जाता था। उन्होंने लिखा:

I have been often astonished how in so few years the Portuguese managed to construct so many superb buildings, churches, monasteries, palaces, forts and other edifices built in the European style; also at the good order regulation, and police they have established, and the power they have acquired, everything being as well maintained and observed as at Lisbon itself.

मैं अक्सर इस बात से चकित होता रहा हूँ कि पुर्तगालियों ने इतने कम वर्षों में यूरोपीय शैली में इतनी सारी शानदार इमारतें, गिरजाघर, मठ, महल, किले और अन्य भवन कैसे बना लिए; साथ ही उन्होंने जो सुव्यवस्था, नियमन और पुलिस व्यवस्था स्थापित की है, और जो शक्ति उन्होंने प्राप्त की है, वह सब कुछ लिस्बन की तरह ही सुव्यवस्थित और अनुशासित है।

Pyrard wrote of the shops of the jewellers, goldsmiths, lapidaries, carpet weavers, silk merchants and money changers. He pointed out that, although the Portuguese had many enemies in India who refused to trade directly, merchandise often arrived at Goa through the conduit of friendly merchants. There were horses from Persia and Arabia. Also there were the auctions of 'numbers of slaves, whom they drive there as we do horses'. There were female slaves whose attraction was that they could play musical instruments, embroider or make sweets and preserves. And others that were virgins, for they 'deem it no sin to have intercourse with their slaves'.

पायर्ड ने जौहरियों, सुनारों, रत्न तराशने वालों, कालीन बुनकरों, रेशम व्यापारियों और मुद्रा विनिमय करने वालों की दुकानों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि यद्यपि पुर्तगालियों के भारत में कई शत्रु थे जो सीधे व्यापार करने से इनकार करते थे, फिर भी माल अक्सर मित्र

व्यापारियों के माध्यम से गोवा पहुँचता था। वहाँ फारस और अरब से घोड़े लाए जाते थे। साथ ही, 'कई दासों की नीलामी भी होती थी, जिन्हें वे घोड़ों की तरह ही वहाँ लाते थे'। वहाँ महिला दासियाँ भी थीं, जिनकी खासियत यह थी कि वे वाद्य यंत्र बजा सकती थीं, कढ़ाई कर सकती थीं या मिठाई और मुरब्बे बना सकती थीं। और कुछ कुंवारी भी थीं, क्योंकि वे 'अपने दासों के साथ यौन संबंध बनाना पाप नहीं समझते थे'।

The Portuguese gentry travelled on horses caparisoned with silk embroidery, enriched with gold, silver and pearls. Stirrups were of silver gilt and the bridles set with precious stones. The Portuguese women travelled in palanquins hooded in silk or leather, carried by four slaves and followed by pages and female slaves all dressed in silk. When they went to church they dressed in all their finery – gowns of silk embroidered with gold and silver; crepe veils from head to foot. On their feet they wore slip-on pattens, the upper parts covered with pearls and gems. The cork soles were six inches high and so unstable that the women had to be assisted into church by the men. It could take them a quarter of an hour to cover the forty or fifty paces to their pews.

पुर्तगाली कुलीन लोग रेशम की कढ़ाई से सजे, सोने, चांदी और मोतियों से अलंकृत घोड़ों पर यात्रा करते थे। रकाब चांदी से मढ़े होते थे और लगाम कीमती पत्थरों से जड़ी होती थी। पुर्तगाली महिलाएं रेशम या चमड़े से ढकी पालकी में यात्रा करती थीं, जिसे चार दास उठाते थे और उनके पीछे रेशमी वस्त्र पहने सेवक और महिला दास चलती थीं। जब वे चर्च जाती थीं, तो वे अपने पूरे वैभव से सजती थीं - सोने और चांदी की कढ़ाई वाले रेशमी गाउन; सिर से पैर तक क्रेप के घूंघट। पैरों में वे स्लिप-ऑन पैटन पहनती थीं, जिनके ऊपरी हिस्से मोतियों और रत्नों से ढके होते थे। कॉर्क के तलवे छह इंच ऊंचे और इतने अस्थिर होते थे कि महिलाओं को चर्च में प्रवेश करने में पुरुषों की सहायता लेनी पड़ती थी। उन्हें अपनी सीट तक चालीस या पचास कदम चलने में पंद्रह मिनट लग जाते थे।

For entertainment there was horse riding and martial arts, picnics and music, but no dancing. There were authorized gambling houses where men played cards and dice, drank, ate and slept. Others played chess and draughts, skittles and bowls.

मनोरंजन के लिए घुड़सवारी और मार्शल आर्ट, पिकनिक और संगीत की व्यवस्था थी, लेकिन नृत्य की कोई सुविधा नहीं थी। कुछ अधिकृत जुआघर भी थे जहाँ पुरुष ताश और पासा खेलते थे, शराब पीते थे, खाना खाते थे और सोते थे। अन्य लोग शतरंज और करतूत, ताश और बॉलिंग खेलते थे।

The soldiers were a rough lot. Some had been exiled from Portugal's prisons for serious crimes and could not return to Portugal until they had served their time. For others, a passage back and an allowance was only granted after eight years' service in the army. Most of those who came out were under no obligation to join the army, but would receive no pay until they took up soldierly employment. In theory, they were free to return to Portugal whenever they wished. Since, however, it was the custom to give them full rations on the passage out but only water on the return voyage, this resulted in many of them never leaving India. These unemployed, unpaid soldiers caused much trouble. It was dangerous to walk in the town after 9 p.m. since bands of them would rob and, if necessary, murder their victims. In the evenings there would be an illegal market for stolen goods, sometimes with as many as 500 vendors. The government of Goa tried to mitigate this disorder by offering a small allowance to those soldiers who were prepared to decamp to other fort towns, but with no great success. Pyrard estimated that there were sometimes as many as 5,000 Portuguese soldiers in Goa.

ये सैनिक काफी कठोर स्वभाव के थे। कुछ को पुर्तगाल की जेलों से गंभीर अपराधों के लिए निर्वासित किया गया था और वे अपनी सजा पूरी किए बिना पुर्तगाल वापस नहीं लौट सकते

थे। अन्य सैनिकों को सेना में आठ साल की सेवा के बाद ही वापसी का टिकट और भत्ता मिलता था। इनमें से अधिकांश सैनिकों पर सेना में भर्ती होने का कोई दायित्व नहीं था, लेकिन उन्हें सैनिक सेवा शुरू करने तक कोई वेतन नहीं मिलता था। सैद्धांतिक रूप से, वे जब चाहें पुर्तगाल लौट सकते थे। हालांकि, यह प्रथा थी कि उन्हें जाते समय पूरा राशन दिया जाता था, लेकिन वापसी यात्रा पर केवल पानी दिया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप उनमें से कई कभी भारत नहीं छोड़ पाए। इन बेरोजगार, अवैतनिक सैनिकों ने काफी परेशानी खड़ी की। रात 9 बजे के बाद शहर में घूमना खतरनाक था, क्योंकि उनके गिरोह लूटपाट करते थे और जरूरत पड़ने पर अपने पीड़ितों की हत्या भी कर देते थे। शाम को चोरी के सामान का अवैध बाजार लगता था, जिसमें कभी-कभी 500 विक्रेता तक होते थे। गोवा सरकार ने अन्य किला कस्बों में जाने के इच्छुक सैनिकों को थोड़ा भत्ता देकर इस अव्यवस्था को कम करने का प्रयास किया, लेकिन इसमें कोई खास सफलता नहीं मिली। पायर्ड का अनुमान था कि गोवा में कभी-कभी 5,000 तक पुर्तगाली सैनिक मौजूद होते थे।

Pyrard’s fellow soldiers either lived with a woman or shared a lodging with a few colleagues. Those who shared were often supported by married women or widows. They dined freely at the aristocrats’ mansions. Despite their often dubious origins, the soldiers put on a great show of being gentlemen. ‘All the poor Indians they despise, as though they would trample them under their feet. So the Indians were all amazed when we told them these fellows were sons of porters, cobblers, drawers of water and other vile craftsmen.’ Often they did not have enough fine clothes to promenade in, so they would go out to make a show and then return to hand over their clothes so that the next person could leave the house.

पायर्ड के साथी सैनिक या तो किसी महिला के साथ रहते थे या कुछ साथियों के साथ एक ही कमरे में ठहरते थे। जो लोग एक ही कमरे में रहते थे, उन्हें अक्सर विवाहित महिलाएं या विधवाएं सहारा देती थीं। वे रईसों की हवेलियों में खुलकर भोजन करते थे। अपनी संदिग्ध पृष्ठभूमि के बावजूद, सैनिक बड़े ही सजग और सभ्य होने का दिखावा करते थे। 'वे सभी बेचारे

भारतीयों को तुच्छ समझते थे, मानो उन्हें अपने पैरों तले रौंद देंगे। इसलिए जब हमने भारतीयों को बताया कि ये लोग कुली, मोची, पानी भरने वालों और अन्य नीच कारीगरों के बेटे हैं, तो वे सब चकित रह गए।' अक्सर उनके पास घूमने-फिरने के लिए पर्याप्त अच्छे कपड़े नहीं होते थे, इसलिए वे दिखावा करने के लिए बाहर जाते और फिर वापस आकर अपने कपड़े सौंप देते ताकि अगला व्यक्ति घर से निकल सके।

Pyrard gave very little personal information about his own actions in his accounts on Goa. Nevertheless, he seemed inordinately interested in the habits of the women whose dress and behaviour he described at length – taking 'their ease in their smocks or bajus, which are more transparent and fine than the most delicate crape of these parts; so that their skin shows beneath as clearly as if they had nothing on; more than that, they expose the bosom to such an extent that one can see quite down to the waist'. He wrote that 'the women at Goa are exceedingly lewd, so amorous and so addicted to fleshy pleasures, that when they find the smallest opportunity, they fail not to use it'. He described how they used their servants and slaves to make assignations, even drugging their husbands so as to take their pleasure without risk. The viceroys would take any pretty woman they wanted, if necessary first sending their husbands away on official expeditions.

पायर्ड ने गोवा के अपने वृत्तांतों में अपने निजी कार्यों के बारे में बहुत कम जानकारी दी। फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें उन महिलाओं की आदतों में अत्यधिक रुचि थी जिनके पहनावे और व्यवहार का उन्होंने विस्तार से वर्णन किया – "वे अपनी फ्रॉक या बाजु में सहज महसूस करती थीं, जो यहाँ के सबसे नाजुक क्रेप से भी अधिक पारदर्शी और महीन होती थीं; जिससे उनकी त्वचा इतनी स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी मानो उन्होंने कुछ पहना ही न हो; इतना ही नहीं, वे अपने सीने को इस हद तक खुला रखती थीं कि कमर तक देखा जा सकता था।" उन्होंने लिखा कि "गोवा की महिलाएं बेहद कामुक, इतनी वासनापूर्ण और शारीरिक सुखों की इतनी आदी होती हैं कि जब उन्हें जरा सा भी मौका मिलता है, तो वे उसका लाभ

उठाने से नहीं चूकतीं।" उन्होंने वर्णन किया कि कैसे वे अपने नौकरों और दासों का इस्तेमाल गुप्त मुलाकातों के लिए करती थीं, यहाँ तक कि अपने पतियों को भी नशीली दवाएँ देकर बिना किसी जोखिम के अपनी इच्छा पूरी करती थीं। वायसराय अपनी मनचाही किसी भी सुंदर महिला को ले जाते थे, यदि आवश्यक हो तो पहले उनके पतियों को आधिकारिक अभियानों पर भेज देते थे।

As the office of the viceroy was used as a way of rewarding the king's friends, viceroys were frequently changed. This gave them only two or three years to make their fortunes. They did this with great rapacity. Much was given to them by the captains and governors who only held office at the viceroy's pleasure. Jobs and permits were sold to the highest bidders. In their final year the viceroys would make a tour of their forts with many ships, seizing all they could to take with them back to Portugal.

क्योंकि वायसराय का पद राजा के मित्रों को पुरस्कृत करने का एक साधन था, इसलिए वायसराय अक्सर बदलते रहते थे। इससे उन्हें अपनी संपत्ति बनाने के लिए केवल दो या तीन वर्ष का समय मिलता था। वे बड़ी लालच से ऐसा करते थे। उन्हें उन सेनापतियों और गवर्नरों से बहुत कुछ मिलता था जो केवल वायसराय की इच्छा पर ही पद धारण करते थे। नौकरियाँ और परमिट सबसे अधिक बोली लगाने वालों को बेच दिए जाते थे। अपने अंतिम वर्ष में वायसराय कई जहाजों के साथ अपने किलों का दौरा करते थे और पुर्तगाल वापस ले जाने के लिए जितना कुछ भी लूट सकते थे, लूट लेते थे।

Even in that first decade of the seventeenth century – the first decade of the Dutch and English challenge – Pyrard noted that things were beginning to change. Not only were the Portuguese no longer the masters of the sea, but their monopoly was also disappearing. The competition from the Dutch and English was driving up the buying price of commodities in Asia to four or five times their previous level. Moreover, the competition was driving the selling price in Europe of these commodities down. Nevertheless, several huge ships

left Goa every year for Portugal. All were the king's ships – for trade with the East was still in the hands of the Crown. These were massive ships – several times the size of those of the Dutch and English – of up to 2,000 tons, with 1,000 or more a board. However, many of these ships were lost, either to the Dutch or in storms. This was due to both the unwieldiness of the ships and to the lack of professionalism among the officers. Many of these had given bribes to secure their appointment; others had been appointed purely as a reward.

सत्रहवीं शताब्दी के पहले दशक में भी – डच और अंग्रेज़ों की चुनौती के पहले दशक में – पायर्ड ने देखा कि हालात बदलने लगे थे। पुर्तगाली न केवल समुद्र के स्वामी नहीं रह गए थे, बल्कि उनका एकाधिकार भी समाप्त हो रहा था। डच और अंग्रेज़ों की प्रतिस्पर्धा के कारण एशिया में वस्तुओं की क्रय शक्ति चार-पाँच गुना बढ़ गई थी। इसके अलावा, यूरोप में इन वस्तुओं की विक्रय शक्ति कम हो रही थी। फिर भी, हर साल गोवा से पुर्तगाल के लिए कई विशाल जहाज़ रवाना होते थे। ये सभी राजा के जहाज़ थे – क्योंकि पूर्व के साथ व्यापार अभी भी राजशाही के हाथ में था। ये विशाल जहाज़ थे – डच और अंग्रेज़ों के जहाज़ों से कई गुना बड़े – 2,000 टन तक के, जिनमें 1,000 या उससे अधिक लोग सवार होते थे। हालांकि, इनमें से कई जहाज़ या तो डचों के हाथों या तूफ़ानों में नष्ट हो गए। इसका कारण जहाज़ों का भारी-भरकम होना और अधिकारियों में पेशेवर दक्षता की कमी थी। इनमें से कई ने अपनी नियुक्ति सुरक्षित करने के लिए रिश्वत दी थी; अन्य को केवल इनाम के तौर पर नियुक्त किया गया था।

In 1609 an edict arrived from the king to the viceroy commanding him to expel any Dutch, English or French, in case they were spies. Pyrard managed to get a free passage on a carrack going to Brazil. He must have been well regarded because he received farewell sums of money from the viceroy, the archbishop and other men of substance. Unfortunately, his pocket was then picked and his purse stolen. His companions helped him out and he eventually sailed in February 1610. From Brazil he took a Flemish ship to Spain, landed near Vigo, and then made the pilgrimage to Santiago de Compostela, which he

had vowed to do if he ever safely returned to Europe. Finally, he took a ship from Corunna to La Rochelle. Francois Pyrard arrived back at his hometown of Lavel, nearly ten years after his departure, in February 1611. It is said he took to drink.

1609 में राजा की ओर से वायसराय को एक फरमान मिला जिसमें उन्हें किसी भी डच, अंग्रेज या फ्रांसीसी को देश से निकालने का आदेश दिया गया था, क्योंकि उन्हें शक था कि वे जासूस हो सकते हैं। पायर्ड किसी तरह ब्राजील जाने वाले एक जहाज पर मुफ्त यात्रा पाने में कामयाब रहे। उनका काफी सम्मान रहा होगा क्योंकि उन्हें वायसराय, आर्कबिशप और अन्य प्रभावशाली लोगों से विदाई के तौर पर बड़ी रकम मिली थी। दुर्भाग्य से, उनकी जेब कट गई और उनका पर्स चोरी हो गया। उनके साथियों ने उनकी मदद की और आखिरकार वे फरवरी 1610 में रवाना हुए। ब्राजील से उन्होंने एक फ्लेमिश जहाज से स्पेन की यात्रा की, विगो के पास उतरे और फिर सैंटियागो डी कॉम्पोस्टेला की तीर्थयात्रा की, जिसकी उन्होंने यूरोप लौटने पर करने की प्रतिज्ञा की थी। अंत में, उन्होंने कोरूना से ला रोशेल के लिए एक जहाज लिया। फ्रांकोइस पायर्ड अपनी यात्रा के लगभग दस साल बाद, फरवरी 1611 में अपने गृहनगर लावेल वापस लौटे। कहा जाता है कि उन्होंने शराब पीना शुरू कर दिया था।

Jean-Baptiste Tavernier was born in Paris in 1605, where his father was a merchant. He travelled widely in Europe as a very young man and learnt several languages. In 1631 he went off to the Levant and Persia. Tavernier's main business was in precious stones and pearls. He presented himself as a gentleman trader rather than as a common merchant. This opened many doors for him and on later voyages he was able to sell jewels to both the Shah of Persia and Emperor Aurangzeb. In 1638 he went off to Persia again and from there carried on to India, visiting Surat and Agra. He was in Goa in 1641.

In 1643 he left Paris again on another expedition to Persia and India. In 1648 he reached Goa once more.

जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर का जन्म 1605 में पेरिस में हुआ था, जहाँ उनके पिता एक व्यापारी थे। उन्होंने कम उम्र में ही यूरोप की व्यापक यात्रा की और कई भाषाएँ सीखीं। 1631 में वे लेवांत और फारस के लिए रवाना हुए। टैवर्नियर का मुख्य व्यवसाय कीमती पत्थरों और मोतियों का था। उन्होंने खुद को एक आम व्यापारी के बजाय एक सज्जन व्यापारी के रूप में प्रस्तुत किया। इससे उनके लिए कई रास्ते खुल गए और बाद की यात्राओं में वे फारस के शाह और सम्राट औरंगजेब दोनों को गहने बेचने में सक्षम हुए। 1638 में वे फिर से फारस गए और वहाँ से भारत की ओर बढ़े, सूरत और आगरा का दौरा किया। वे 1641 में गोवा में थे। 1643 में वे फारस और भारत के एक और अभियान पर पेरिस से फिर रवाना हुए। 1648 में वे एक बार फिर गोवा पहुँचे।

Tavernier was much struck with the changes for the worse that had occurred in the seven years since he had last been in Goa: ‘The Portuguese were then all rich, the nobles on account of the governments and other offices, the merchants by the trade which they enjoyed before the English and Dutch came to cut the ground from under their feet.’ He described the condition in the Royal Hospital, the one that Francois Pyrard had so fulsomely praised, as deplorable. It was impossible to even obtain a drink of water without bribing the staff. ‘Many Europeans who enter it,’ he wrote, ‘do not leave it save to be carried to the tomb.’

टैवर्नियर गोवा में अपने अंतिम प्रवास के बाद से सात वर्षों में आए बदलावों से बहुत आहत थे: 'उस समय पुर्तगाली सभी धनी थे, कुलीन वर्ग सरकारों और अन्य पदों के कारण, और व्यापारी उस व्यापार के कारण जो वे अंग्रेजों और डचों के आने से पहले करते थे, जिन्होंने उनके पैरों तले से ज़मीन खींच ली।' उन्होंने रॉयल अस्पताल की स्थिति का वर्णन किया, जिसकी फ्रांकोइस पायर्ड ने इतनी प्रशंसा की थी, उसे दयनीय बताया। कर्मचारियों को रिश्वत

दिए बिना पानी का एक गिलास भी मिलना असंभव था। उन्होंने लिखा, 'इस अस्पताल में भर्ती होने वाले कई यूरोपीय लोग, केवल मृत्यु को प्राप्त होने के लिए ही बाहर निकलते हैं।'

It seems, however, that there might have been some advantages in the decline of the Portuguese for Tavernier:

हालांकि, ऐसा प्रतीत होता है कि पुर्तगालियों के पतन से टैवर्नियर को कुछ लाभ भी हुए होंगे:

On my first visit to Goa I saw people who had property yielding up to 2,000 écus of income, who on my second visit came secretly in the evening to ask alms of me without abating anything of their pride, especially the women, who came in palanquins, and remained at the door of the house, whilst a boy, who attended them, came to present their compliments. You sent them then what you wished, or took it yourself when you were curious to see their faces; this happened rarely, because they cover all the head with a veil. Otherwise when one goes in person to give them charity at the door, the visitor generally offers a letter from some religious person who recommends them, and speaks of the wealth she formerly possessed, and the poverty into which she has now fallen. Thus you generally enter into a conversation with the fair one, and in honour bound invite her to partake of refreshment, which lasts sometimes till the following day.

गोवा की अपनी पहली यात्रा में मैंने ऐसे लोगों को देखा जिनकी संपत्ति से 2,000 एकू तक की आय होती थी। दूसरी यात्रा में वे लोग शाम को चुपके से मुझसे भीख मांगने आए, और उन्होंने अपना स्वाभिमान जरा भी कम नहीं किया, खासकर महिलाएं, जो पालकी में आती थीं और घर के दरवाजे पर खड़ी रहती थीं, जबकि उनका सेवक लड़का उनका अभिवादन करने आता था। तब आप उन्हें अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी दे देते थे, या फिर उनके चेहरे देखने की उत्सुकता में खुद ले जाते थे; ऐसा बहुत कम होता था, क्योंकि वे अपना पूरा सिर घूंघट से ढक कर रखती थीं। अन्यथा, जब कोई व्यक्ति स्वयं उनके दरवाजे पर दान देने जाता है, तो वह आमतौर पर किसी धार्मिक व्यक्ति का सिफारिशी पत्र देता है, जिसमें महिला के पूर्व धन

और वर्तमान गरीबी का वर्णन होता है। इस प्रकार आप आमतौर पर उस महिला से बातचीत शुरू कर देते हैं, और सम्मान के नाते उसे भोजन करने के लिए आमंत्रित करते हैं, जो कभी-कभी अगले दिन तक चलता है।

As the century progressed and Portuguese finances became ever more parlous, their soldiers in India became even less likely to be paid on time. Many deserted to join the armies of Indian rulers. Another favourite escape route for disaffected soldiers was to join one of the religious orders – not an obvious calling for 'scoundrels from the prisons of Portugal'. The church was the one sector not in decline. The Jesuits, the Dominicans and the Augustinians, with the vast endowments they had acquired in more prosperous times, had built numerous monasteries, convents, colleges and schools. Parish churches had sprung up everywhere until there were nearly seventy. Work on the great Se Cathedral had been started in 1562. It proceeded very slowly until the end of the sixteenth century and then began in earnest. The cathedral was finally completed in 1652. It was 250 feet long and 165 feet wide – the largest church in all Asia.

जैसे-जैसे सदी आगे बढ़ी और पुर्तगाल की आर्थिक स्थिति और भी खराब होती गई, भारत में तैनात उनके सैनिकों को समय पर वेतन मिलना और भी मुश्किल होता चला गया। कई सैनिक भारतीय शासकों की सेनाओं में शामिल होने के लिए भाग गए। असंतुष्ट सैनिकों के लिए एक और पसंदीदा रास्ता धार्मिक संगठनों में शामिल होना था – पुर्तगाल की जेलों से निकले बदमाशों के लिए यह कोई स्वाभाविक विकल्प नहीं था। चर्च एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जो पतन की ओर नहीं बढ़ा। जेसुइट, डोमिनिकन और ऑगस्टिनियन संप्रदायों ने समृद्ध काल में प्राप्त विशाल दान से कई मठ, कॉन्वेंट, कॉलेज और स्कूल बनवाए थे। पैरिश चर्च हर जगह फैल गए थे, जिनकी संख्या लगभग सत्तर तक पहुँच गई थी। विशाल से कैथेड्रल का निर्माण कार्य 1562 में शुरू हुआ था। सोलहवीं शताब्दी के अंत तक यह बहुत धीमी गति से चला और

फिर तेज़ी से शुरू हुआ। कैथेड्रल अंततः 1652 में बनकर तैयार हुआ। यह 250 फीट लंबा और 165 फीट चौड़ा था – पूरे एशिया का सबसे बड़ा चर्च।

The onslaught of the Dutch in the middle of the seventeenth century dramatically affected Portuguese India. A blockade of Goa brought trade between Portugal and India almost to a halt. In 1659 the Portuguese queen-regent told the French ambassador that no news had been received from Portuguese India for three whole years. It was only after the marriage of Charles II to a Portuguese princess that things improved, but only slightly. The English and the French put pressure on the Dutch to make peace. The Portuguese were then able to resume sending ships to India, but they only managed to despatch one or two a year.

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में डचों के आक्रमण ने पुर्तगाली भारत को बुरी तरह प्रभावित किया। गोवा की नाकाबंदी के कारण पुर्तगाल और भारत के बीच व्यापार लगभग ठप हो गया। 1659 में पुर्तगाली रानी-रीजेंट ने फ्रांसीसी राजदूत को बताया कि पुर्तगाली भारत से तीन वर्षों से कोई खबर नहीं मिली है। चार्ल्स द्वितीय के पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह के बाद ही स्थिति में कुछ सुधार हुआ, लेकिन वह भी मामूली ही। अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने डचों पर शांति समझौता करने का दबाव डाला। इसके बाद पुर्तगाली भारत में जहाज भेजना फिर से शुरू कर सके, लेकिन वे साल में केवल एक या दो जहाज ही भेज पाते थे।

In 1670, the Portuguese suffered another humiliating blow. Their fort at Diu, which had successfully withstood the great sieges of the previous century, was attacked by a small band of Arabs from Muscat. The Portuguese were unable to fend off this raid. The Arabs sacked Diu, took away much booty and destroyed it as a centre of trade.

1670 में पुर्तगालियों को एक और अपमानजनक झटका लगा। दीव स्थित उनका किला, जिसने पिछली शताब्दी की भीषण घेराबंदी का सफलतापूर्वक सामना किया था, मस्कट से आए अरबों के एक छोटे समूह द्वारा हमला किया गया। पुर्तगाली इस हमले को रोकने में असमर्थ रहे। अरबों ने दीव को लूटा, भारी मात्रा में माल लूट लिया और व्यापार केंद्र के रूप में इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया।

Abbé Carré was sent out to India by a minister at the court of Louis XIV to assist the head of a fledgling French East India Company, which would establish itself at Pondicherry. He travelled widely in India and made many interesting observations. After he departed from Surat, his Muslim-owned and -crewed ship was becalmed for weeks. He wrote of the superstitious rituals employed to summon the wind – throwing great basins of food from the ship into the surrounding sea; bathing in the sea so as to 'wash away the dirty impurities they commit with their young slaves'. At Goa, he noted that, since the trade in gems was a government monopoly in Portuguese India, it was usual for the merchants to do covert deals with the visiting English.

लुई 14 वें के दरबार में एक मंत्री ने अब्बे कैरे को भारत भेजा था ताकि वे नवगठित फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रमुख की सहायता कर सकें, जो बाद में पांडिचेरी में स्थापित हुई। उन्होंने भारत में व्यापक यात्रा की और कई रोचक अवलोकन किए। सूरत से रवाना होने के बाद, उनका मुस्लिम स्वामित्व वाला और मुस्लिम कर्मचारियों वाला जहाज हफ्तों तक शांत समुद्र में फंसा रहा। उन्होंने हवा को बुलाने के लिए अपनाए जाने वाले अंधविश्वासी अनुष्ठानों के बारे में लिखा - जहाज से भोजन से भरे बड़े-बड़े बर्तन समुद्र में फेंकना; समुद्र में स्नान करना ताकि 'अपने युवा दासों के साथ किए गए गंदे कृत्यों को धो सकें'। गोवा में, उन्होंने देखा कि चूंकि पुर्तगाली भारत में रत्नों का व्यापार सरकार का एकाधिकार था, इसलिए व्यापारियों के लिए आने वाले अंग्रेजों के साथ गुप्त सौदे करना आम बात थी।

When Abbé Carré arrived in Goa in 1672, he noted that he could 'hardly find any shadow or vestige of its former splendour'. The principal palace, apart from the viceroy's quarters, was derelict. The great arsenal, which had formerly housed the armaments that supplied the Portuguese war machine across the East, was being used to store ships' cables and rigging. There were insufficient new arrivals from Portugal to maintain the population. The Portuguese nobles, who used to come out to India in droves, had disappeared. Such new arrivals as there were had been sent out from the jails and the scaffold.

सन् 1672 में जब अब्बे कैरे गोवा पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि उन्हें यहाँ की पुरानी शान-शौकत का कोई नामोनिशान नहीं बचा था। वायसराय के आवास को छोड़कर मुख्य महल जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। विशाल शस्त्रागार, जहाँ कभी पूर्वी गोवा में पुर्तगाली युद्ध शक्ति को आपूर्ति करने वाले हथियार रखे जाते थे, अब जहाजों के तार और रस्सियाँ रखने के लिए इस्तेमाल हो रहा था। पुर्तगाल से आने वाले नए लोग जनसंख्या के लिए पर्याप्त नहीं थे। पुर्तगाली रईस, जो कभी बड़ी संख्या में भारत आते थे, गायब हो चुके थे। जो भी नए लोग आए थे, वे जेलों और फांसी के तख्तों से रिहा होकर आए थे।

Thus it seems that this grand town, once so rich and called the Treasury and Queen of the East, is now at its last gasp. Everything changed very suddenly. First the great trade and commerce, which so enriched this town, ceased: and then all the treasure and immense wealth, which they had collected, vanished like smoke.

इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि यह भव्य नगर, जो कभी अत्यंत समृद्ध था और जिसे खजाना और पूरब की रानी कहा जाता था, अब अपने अंतिम चरण में है। सब कुछ अचानक बदल गया। पहले वह महान व्यापार और वाणिज्य, जिसने इस नगर को इतना समृद्ध बनाया था, बंद हो गया; और फिर वह सारा खजाना और अपार धन, जो उन्होंने एकत्र किया था, धुएं की तरह गायब हो गया।

Seven

सात

THE DUTCH, THE ENGLISH AND THE DANES

डच, अंग्रेज और डेनिश

THE TRIUMPH OF PEACEFUL TRADE

शांतिपूर्ण व्यापार की विजय

For it was but an unwise undertaking for our East India Company, with a handful of men and money, to go make wars with one of the greatest monarchs in the world who, although not so well versed in war and manage of guns, yet had men enough to have eaten up all the Company's servants for a breakfast.

हमारी ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए, मुट्ठी भर आदमियों और पैसों के साथ, दुनिया के सबसे महान सम्राटों में से एक के साथ युद्ध करना एक मूर्खतापूर्ण कार्य था, जो यद्यपि युद्ध और तोपों के प्रबंधन में उतना कुशल नहीं था, फिर भी उसके पास इतने सैनिक थे कि वह कंपनी के सभी नौकरों को नाश्ते में खा सकता था।

Edward Barlow, *Barlow's Journal*, 1692

एडवर्ड बार्लो, बार्लो की डायरी, 1692

In 1594 a group of Dutch merchants had sent four ships to the Far East, which successfully brought pepper back from Java. Other, often competing, companies soon followed suit. In 1602 these Dutch companies amalgamated their interests into the Vereenigde Oostindische Compagnie (United East India Company), known as the VOC.

1594 में डच व्यापारियों के एक समूह ने सुदूर पूर्व में चार जहाज भेजे, जो जावा से काली मिर्च सफलतापूर्वक वापस लाए। अन्य, अक्सर प्रतिस्पर्धी, कंपनियों ने भी जल्द ही उनका अनुसरण किया। 1602 में इन डच कंपनियों ने अपने हितों को मिलाकर वेरेनिग्डे ओस्टइंडिशे कॉम्पैग्नी (संयुक्त ईस्ट इंडिया कंपनी) का गठन किया, जिसे वीओसी के नाम से जाना जाता है।

In 1604 the VOC sent a fleet of thirteen ships to western India. Its commander met with the Zamorin of Calicut and made a treaty, both to trade and to join forces to drive out the Portuguese. The Dutch then sent annual fleets to Calicut to buy spices. The Portuguese, however, were too powerful to be dislodged and they continued to dominate the Malabar trade. The Dutch, therefore, decided to concentrate their energies on setting up trading posts in other parts of the Indian Ocean. They set up factories on the east coast of India, in Surat, in Ceylon and, most importantly, in the Far East. They built up an eastern fleet of heavily armed and outstandingly manoeuvrable ships – a fleet larger than those of the Portuguese, Spanish and English combined. It was only when they had sufficiently weakened the Portuguese by taking away much of their trade that they returned to attack them on the Malabar Coast.

1604 में वीओसी ने पश्चिमी भारत में तेरह जहाजों का एक बेड़ा भेजा। इसके कमांडर ने कालीकट के ज़मोरिन से मुलाकात की और व्यापार करने तथा पुर्तगालियों को खदेड़ने के लिए संयुक्त रूप से लड़ने की संधि की। इसके बाद डचों ने मसालों की खरीद के लिए कालीकट में वार्षिक बेड़े भेजे। हालांकि, पुर्तगाली इतने शक्तिशाली थे कि उन्हें हटाना संभव नहीं था और उन्होंने मालाबार व्यापार पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा। इसलिए, डचों ने अपनी ऊर्जा हिंद महासागर के अन्य हिस्सों में व्यापारिक चौकियाँ स्थापित करने पर केंद्रित करने का निर्णय लिया। उन्होंने भारत के पूर्वी तट पर, सूरत में, श्रीलंका में और सबसे महत्वपूर्ण रूप से सुदूर पूर्व में कारखाने स्थापित किए। उन्होंने भारी हथियारों से लैस और असाधारण रूप से कुशल जहाजों का एक पूर्वी बेड़ा तैयार किया - यह बेड़ा पुर्तगाली, स्पेनिश और अंग्रेज़ों के संयुक्त बेड़ों से भी बड़ा था। जब उन्होंने पुर्तगालियों के व्यापार का एक बड़ा हिस्सा छीनकर उन्हें पर्याप्त रूप से कमजोर कर दिया, तभी वे मालाबार तट पर उन पर हमला करने के लिए वापस लौटे।

Cochin was the most important Portuguese base in Malabar. The Dutch realized that if they could capture that superb port, they could capture the

spice trade of Malabar. The Portuguese might still hold on to Goa, but it would be of little value.

कोचीन मालाबार में पुर्तगालियों का सबसे महत्वपूर्ण अड्डा था। डचों को यह समझ आ गया था कि यदि वे इस शानदार बंदरगाह पर कब्जा कर लें, तो वे मालाबार के मसालों के व्यापार पर भी कब्जा कर लेंगे। पुर्तगाली भले ही गोवा पर अपना कब्जा बनाए रखें, लेकिन उसका कोई खास महत्व नहीं रह जाएगा।

Royal politics in Cochin played into Dutch hands. The senior branch of the royal family had fallen out with the Portuguese and had been supplanted by a pliant junior branch. When the raja died in 1658, the Portuguese again bypassed the senior members of the royal family. These disgruntled aristocrats then sent an emissary to the Dutch in Ceylon to ask for assistance. The Dutch, under Rykloff van Goens, saw their opportunity. Van Goens had no sympathy with the VOC's current guidelines, which urged peaceful trade: 'There is nobody in Asia who wishes us well but on the contrary we are hated by all nations, so that in my opinion sooner or later war will be the arbiter.' He gathered forces from Ceylon, eastern India and Java, until he had a fleet of two dozen ships and 4,000 soldiers.

कोचीन की शाही राजनीति ने डचों के पक्ष में माहौल बना दिया। शाही परिवार की वरिष्ठ शाखा पुर्तगालियों से अलग हो गई थी और उसकी जगह एक आज्ञाकारी कनिष्ठ शाखा ने ले ली थी। जब 1658 में राजा की मृत्यु हुई, तो पुर्तगालियों ने एक बार फिर शाही परिवार के वरिष्ठ सदस्यों को दरकिनार कर दिया। इन असंतुष्ट अभिजात वर्ग ने सहायता मांगने के लिए सीलोन में डचों के पास एक दूत भेजा। रिकलोफ वैन गोएन्स के नेतृत्व में डचों ने इसे एक अवसर के रूप में देखा। वैन गोएन्स को वीओसी के मौजूदा दिशानिर्देशों से कोई सहानुभूति नहीं थी, जो शांतिपूर्ण व्यापार का आग्रह करते थे: 'एशिया में कोई भी हमारा भला नहीं चाहता, बल्कि इसके विपरीत सभी राष्ट्र हमसे नफरत करते हैं, इसलिए मेरी राय में देर-सवेर युद्ध ही

निर्णायक होगा।' उन्होंने सीलोन, पूर्वी भारत और जावा से सेनाएँ एकत्र कीं, जब तक कि उनके पास दो दर्जन जहाजों और 4,000 सैनिकों का बेड़ा नहीं हो गया।

The Dutch first attacked the tiny Portuguese fort of Pallippuram, opposite Cochin. This was soon overcome and they then took Quilon and Cranganore. The battle for Cochin was protracted and claimed 360 Dutch and 900 Portuguese lives before the Portuguese surrendered to van Goens on 6 January 1663. A week later the Dutch took Cannanore, the last remaining Portuguese fort on the south-west coast.

डचों ने सबसे पहले कोचीन के सामने स्थित छोटे पुर्तगाली किले पल्लीपुरम पर हमला किया। उन्होंने जल्द ही इस किले पर कब्जा कर लिया और फिर क्विलोन और क्रैंगनोर पर भी कब्जा कर लिया। कोचीन के लिए लड़ाई लंबी चली और इसमें 360 डच और 900 पुर्तगाली सैनिक मारे गए। अंत में, 6 जनवरी 1663 को पुर्तगालियों ने वैन गोएन्स के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। एक सप्ताह बाद, डचों ने दक्षिण-पश्चिम तट पर बचे अंतिम पुर्तगाली किले, कन्ननोर पर कब्जा कर लिया।

The Dutch then installed the prince whom the Portuguese had sidelined as Raja of Cochin. He was merely a puppet of the Dutch. Van Goens himself put the crown on his head, a crown that bore the insignia of the Dutch East India Company. The raja then gave the Dutch a monopoly over his kingdom's spice trade. The Portuguese had built a huge fort with five miles of perimeter wall. This the Dutch much reduced in size. They also demolished many fine buildings or converted them into warehouses. They renamed Cochin 'New Orange'.

इसके बाद डचों ने पुर्तगालियों द्वारा दरकिनार किए गए राजकुमार को कोचीन का राजा बना दिया। वह केवल डचों की कठपुतली था। वैन गोएन्स ने स्वयं उसके सिर पर ताज पहनाया, जिस पर डच ईस्ट इंडिया कंपनी का चिन्ह अंकित था। राजा ने फिर डचों को अपने राज्य के मसालों के व्यापार पर एकाधिकार दे दिया। पुर्तगालियों ने पाँच मील लंबी चारदीवारी वाला

एक विशाल किला बनवाया था, जिसे डचों ने काफी छोटा कर दिया। उन्होंने कई शानदार इमारतों को ध्वस्त कर दिया या उन्हें गोदामों में बदल दिया। उन्होंने कोचीन का नाम बदलकर 'नया संतरा' रख दिया।

The Dutch, although overwhelmingly Protestant, were tolerant of Catholic wives and mistresses. Respectable Dutch women were loath to come to India. Women did travel to try and make a rich marriage, but the majority were described as 'filthy strumpets and street-walkers'. Initially, the Dutch authorities tried to get their men married off to higher caste Hindus or Muslims, but there were few takers as this would have cut the women off from their families and communities. The majority of the men ended up making alliances with Indo-Portuguese women. In general they were anxious to retain their Catholic religion which, together with Portuguese as a first language, they passed down to their children.

डच लोग, हालांकि अधिकतर प्रोटेस्टेंट थे, कैथोलिक पत्नियों और रखैल रखने के प्रति सहिष्णु थे। संभ्रांत डच महिलाएं भारत आने से कतराती थीं। कुछ महिलाएं अमीरों से शादी करने की कोशिश में भारत आती थीं, लेकिन उनमें से अधिकांश को 'गंदी वेश्याएं और देह व्यापार करने वाली औरतें' कहा जाता था। शुरुआत में, डच अधिकारियों ने अपने पुरुषों की शादी उच्च जाति के हिंदू या मुस्लिम महिलाओं से कराने की कोशिश की, लेकिन बहुत कम लोग इसके लिए तैयार हुए क्योंकि इससे महिलाएं अपने परिवार और समुदाय से कट जातीं। अंततः अधिकांश पुरुषों ने इंडो-पुर्तगाली महिलाओं से विवाह किया। आम तौर पर वे अपने कैथोलिक धर्म को बनाए रखने के लिए उत्सुक थे, जिसे पुर्तगाली भाषा के साथ-साथ वे अपने बच्चों को भी सिखाते थे।

Most of the Dutch in Malabar were servants of the Dutch East India Company. The lower levels were staffed by men who, for the most part, had only left the

Dutch Republic as a last resort. Those who had a good job in Europe were not likely to exchange it for a journey of hardship followed probably by death from tropical disease. In general, the VOC's men were 'poor, ignorant, slavish-minded Netherlanders or debauched foreigners'. There were some independent adventurers who became smiths, carpenters or who ran taverns. They often married local women. These unions were not well regarded by the Dutch officials. As one remarked, 'The scum of our land are marrying the scum of the East Indies.'

मालाबार में रहने वाले अधिकांश डच लोग डच ईस्ट इंडिया कंपनी के सेवक थे। निचले पदों पर ऐसे पुरुष कार्यरत थे, जिन्होंने डच गणराज्य को मजबूरीवश ही छोड़ा था। यूरोप में अच्छी नौकरी पाने वाले लोग शायद ही उसे छोड़कर उष्णकटिबंधीय रोगों से होने वाली मृत्यु के बाद की कठिन यात्रा पर जाना चाहते थे। सामान्यतः, डच ईस्ट इंडिया कंपनी के लोग 'गरीब, अनपढ़, गुलाम मानसिकता वाले नीदरलैंडवासी या भ्रष्ट विदेशी' थे। कुछ स्वतंत्र साहसी भी थे जो लोहार, बढ़ई या शराबखाने चलाते थे। वे अक्सर स्थानीय महिलाओं से विवाह करते थे। डच अधिकारियों द्वारा इन विवाहों को अच्छा नहीं माना जाता था। एक अधिकारी ने टिप्पणी की, 'हमारे देश के नीच लोग ईस्ट इंडीज के नीच लोगों से विवाह कर रहे हैं।'

Dutch life in the East was governed by strict protocol. An act covered the order of precedence and the precise details of how each level of society should behave and dress. Rules governed the value of the jewellery that wives and their servants could wear. They specified who could use silver cloth or who could sport a gold hatpin. Even the use of parasols and the decoration of the children's chairs were regulated.

पूर्वी डचों का जीवन सख्त नियमों के अनुसार चलता था। एक अधिनियम में वरीयता क्रम और समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यवहार और पहनावे के सटीक विवरण दिए गए थे। पत्नियों और नौकरानियों द्वारा पहने जाने वाले आभूषणों के मूल्य को भी नियमों द्वारा नियंत्रित किया जाता था। इनमें यह भी निर्दिष्ट था कि कौन चांदी का कपड़ा पहन सकता है या कौन सोने की टोपी

की पिन लगा सकता है। यहां तक कि छतरियों के उपयोग और बच्चों की कुर्सियों की सजावट को भी विनियमित किया जाता था।

The non-Dutch were treated with contempt. Although probably most of the Europeans in India thought themselves superior to the Indians; the Dutch Calvinists were the most extreme. They habitually described themselves as the 'Elect of God', and the Indians as 'black dogs'.

गैर-डचों के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया जाता था। हालाँकि भारत में रहने वाले अधिकांश यूरोपीय स्वयं को भारतीयों से श्रेष्ठ समझते थे; डच कैल्विनवादी सबसे कट्टरपंथी थे। वे स्वयं को 'ईश्वर के चुने हुए' और भारतीयों को 'काले कुत्ते' बताते थे।

The vast majority of the inhabitants in the Dutch forts were slaves – a single Dutch household might employ fifty or sixty. Such was the poverty in parts of India that people sold their families into slavery in order to survive. Some even sold themselves. The Dutch fort at Pulicat, which had been built a little to the north of Madras in 1609, was the main centre for the export of slaves. Each year the Dutch in India sent at least 500 slaves to their establishments in the Far East. Not that slavery was new to India. In Malabar, particularly in Travancore, there had been large numbers of slaves from time immemorial. Their owners had power of life and death over them. They were forced to speak in a special inferior way – not referring to themselves as 'I', but as 'your slave'; not to refer to their food as rice, but as 'dirty gruel'. Not only were they 'untouchable' to upper-caste Hindus, but they were also 'unapproachable'. They were not allowed within sixty-four feet of a member of a Nair, warrior caste, or within ninety feet of a Brahmin.

डच किलों में रहने वाले अधिकांश लोग गुलाम थे – एक डच परिवार में पचास-साठ गुलाम होते थे। भारत के कुछ हिस्सों में गरीबी इतनी अधिक थी कि लोग जीवित रहने के लिए अपने परिवार को गुलामी में बेच देते थे। कुछ लोग तो खुद को भी बेच देते थे। 1609 में मद्रास के

उत्तर में बना डच किला पुलिकट, गुलामों के निर्यात का मुख्य केंद्र था। भारत में डच हर साल कम से कम 500 गुलामों को सुदूर पूर्व में स्थित अपने प्रतिष्ठानों में भेजते थे। ऐसा नहीं था कि गुलामी भारत के लिए नई थी। मालाबार, विशेष रूप से त्रावणकोर में, प्राचीन काल से ही बड़ी संख्या में गुलाम थे। उनके मालिकों को उन पर जीवन और मृत्यु का अधिकार प्राप्त था। उन्हें एक विशेष, हीन तरीके से बोलने के लिए मजबूर किया जाता था – वे खुद को 'मैं' नहीं, बल्कि 'आपका गुलाम' कहते थे; अपने भोजन को चावल नहीं, बल्कि 'गंदा दलिया' कहते थे। वे न केवल उच्च जाति के हिंदुओं के लिए 'अछूत' थे, बल्कि 'पहुँच से बाहर' भी थे। उन्हें नायर जाति के किसी योद्धा व्यक्ति से चौंसठ फीट के दायरे में या ब्राह्मण से नब्बे फीट के दायरे में आने की अनुमति नहीं थी।

The Dutch attacked Goa twice, but without success. However, their blockades severely affected Portuguese exports. Moreover, with much of the trade of the Far East and Malabar in Dutch hands, Goa dramatically declined in importance. It became a well-fortified backwater, which the Dutch could afford to ignore. For Goa the ‘Golden Years’ were over.

डचों ने दो बार गोवा पर आक्रमण किया, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। हालांकि, उनकी नाकाबंदी ने पुर्तगाली निर्यात को बुरी तरह प्रभावित किया। इसके अलावा, सुदूर पूर्व और मालाबार के अधिकांश व्यापार पर डचों का नियंत्रण होने के कारण, गोवा का महत्व नाटकीय रूप से कम हो गया। यह एक सुदृढ़ किलेबंद पिछड़ा क्षेत्र बन गया, जिसे डच अनदेखा कर सकते थे। गोवा के लिए 'स्वर्ण युग' समाप्त हो चुके थे।

For the Dutch, Malabar and their other Dutch bases in India were never as important as were Java and the Far East. Nevertheless, following their victories over the Portuguese, the Dutch had expected to make large profits from the Indian spice trade. However, the Zamorin of Calicut soon fell out with his recent ally. He wanted to have his old primacy over the Cochin rajas reinstated. The Dutch turned a deaf ear to his pleas. The Zamorin then took to trading with the English, the Danes and various independent merchants. In

places where the Dutch were paramount, they tried to impose a monopoly and buy commodities cheap. Nevertheless, local merchants often managed to bypass the Dutch and sell at a higher price to others – principally to the English.

डचों के लिए, मालाबार और भारत में उनके अन्य डच ठिकाने जावा और सुदूर पूर्व जितने महत्वपूर्ण कभी नहीं थे। फिर भी, पुर्तगालियों पर अपनी जीत के बाद, डचों को भारतीय मसालों के व्यापार से भारी मुनाफा होने की उम्मीद थी। हालांकि, कालीकट के ज़मोरिन का अपने नए सहयोगी से जल्द ही मतभेद हो गया। वह कोचीन के राजाओं पर अपना पुराना वर्चस्व फिर से स्थापित करना चाहता था। डचों ने उसकी विनतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके बाद ज़मोरिन ने अंग्रेजों, डेनिश लोगों और विभिन्न स्वतंत्र व्यापारियों के साथ व्यापार करना शुरू कर दिया। जिन स्थानों पर डचों का वर्चस्व था, वहां उन्होंने एकाधिकार स्थापित करने और सस्ते दामों पर सामान खरीदने की कोशिश की। फिर भी, स्थानीय व्यापारी अक्सर डचों को दरकिनार करते हुए दूसरों को, मुख्य रूप से अंग्रेजों को, अधिक कीमत पर सामान बेचने में कामयाब हो जाते थे।

The Dutch ran into trouble at Cochin when they interfered with the succession in the royal family. This sparked a rebellion of the Nair *warriors*. This rebellion – together with the failure to establish a monopoly in pepper as the English expanded their operations – severely affected the VOC's finances. In 1697 the company scaled back its operations in Malabar. It both reduced the size of its forts and reduced their garrisons. Cochin was left with only 300 soldiers, while Quilon, Cannanore, Cranganore and the five smaller outposts were each left with less than 100. The English were poised to take over much of their Malabar trade.

डचों को कोचीन में तब परेशानी का सामना करना पड़ा जब उन्होंने शाही परिवार में उत्तराधिकार के मामले में हस्तक्षेप किया। इससे नायर योद्धाओं का विद्रोह भड़क उठा। इस विद्रोह और अंग्रेजों द्वारा अपने संचालन का विस्तार करने के कारण काली मिर्च पर

एकाधिकार स्थापित करने में विफलता ने वीओसी की वित्तीय स्थिति को बुरी तरह प्रभावित किया। 1697 में कंपनी ने मालाबार में अपने संचालन को कम कर दिया। उसने अपने किलों का आकार और सैनिकों की संख्या दोनों घटा दी। कोचीन में केवल 300 सैनिक रह गए, जबकि क्विलोन, कन्ननोर, क्रैंगनोर और पांच छोटे चौकियों में से प्रत्येक में 100 से कम सैनिक थे। अंग्रेज उनके मालाबार व्यापार के बड़े हिस्से पर कब्जा करने के लिए तैयार थे।

The English East India Company had found it hard to establish itself on the south-west coast. The most important spice-growing areas of India lay in the hills behind that coast. The Portuguese and later the Dutch had secured bases in many of the better ports and estuaries, and then used their influence to undermine the English. The English had been at a disadvantage since they were loath to use military might. The Portuguese and Dutch had shown no compunction about using force to obtain and hold their Malabar bases – force, which in the long term, proved too expensive to produce a profit.

अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को दक्षिण-पश्चिम तट पर अपना दबदबा कायम करने में कठिनाई हो रही थी। भारत के सबसे महत्वपूर्ण मसाला उत्पादक क्षेत्र उस तट के पीछे की पहाड़ियों में स्थित थे। पुर्तगालियों और बाद में डचों ने कई प्रमुख बंदरगाहों और मुहानों पर अपने ठिकाने बना लिए थे और फिर अंग्रेजों को कमजोर करने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। अंग्रेज सैन्य शक्ति का प्रयोग करने से कतराते थे, इसलिए वे नुकसान में थे। पुर्तगालियों और डचों ने मालाबार में अपने ठिकाने हासिल करने और उन्हें अपने कब्जे में रखने के लिए बल प्रयोग करने में कोई संकोच नहीं किया – हालांकि, लंबे समय में यह बल प्रयोग लाभप्रद साबित नहीं हुआ और बहुत महंगा साबित हुआ।

A Company factory was established at Valapattanam, just north of Cannanore, in 1669. There were conflicts with local traders and it closed in 1675. That same year, the Company reopened a factory at Calicut. The Zamorins,

however, were suspicious of Europeans – understandably so, given the behaviour of the Portuguese and the Dutch. Any attempt to fortify the factory was forbidden and for many years the Company was not even allowed to tile the factory roof. The Company decided, therefore, to look for new bases in Malabar.

सन् 1669 में कन्ननोर के उत्तर में स्थित वलापट्टनम में कंपनी की एक फैक्ट्री स्थापित की गई। स्थानीय व्यापारियों के साथ विवादों के चलते यह फैक्ट्री 1675 में बंद हो गई। उसी वर्ष, कंपनी ने कालीकट में एक फैक्ट्री फिर से खोली। हालांकि, ज़मोरिन लोग यूरोपीय लोगों के प्रति संशय में थे – पुर्तगालियों और डचों के व्यवहार को देखते हुए यह स्वाभाविक ही था। फैक्ट्री को मजबूत बनाने का कोई भी प्रयास वर्जित था और कई वर्षों तक कंपनी को फैक्ट्री की छत पर टाइलें लगाने की भी अनुमति नहीं दी गई। इसलिए, कंपनी ने मालाबार में नए ठिकाने तलाशने का निर्णय लिया।

An opportunity came in 1682 when the French abandoned a small factory with mud walls they had at Tellicherry. A regent of the royal family at Cannanore, which controlled the area, agreed to the Company occupying it. The French later complained that they had intended to return, but the English refused to budge. Tellicherry, which the Company later fortified, was built on a rocky cliff projecting into the sea. It had neither access to a major river nor a major harbour. It had, however, the great advantage of being close to hills that produced pepper in abundance and the finest cardamom in the world.

सन् 1682 में एक अवसर आया जब फ्रांसीसियों ने टेलिचेरी में मिट्टी की दीवारों वाली अपनी एक छोटी फैक्ट्री छोड़ दी। कन्ननोर में शाही परिवार के एक रीजेंट, जिसका उस क्षेत्र पर नियंत्रण था, ने कंपनी को उस पर कब्जा करने की अनुमति दे दी। फ्रांसीसियों ने बाद में शिकायत की कि वे वापस लौटना चाहते थे, लेकिन अंग्रेजों ने पीछे हटने से इनकार कर दिया। टेलिचेरी, जिसे कंपनी ने बाद में किलेबंद किया, समुद्र में उभरी एक चट्टानी पहाड़ी पर बनाया गया था। इसकी न तो किसी बड़ी नदी तक पहुंच थी और न ही किसी बड़े बंदरगाह तक।

हालांकि, इसे यह बड़ा लाभ था कि यह उन पहाड़ियों के करीब था जहां प्रचुर मात्रा में काली मिर्च और दुनिया की सबसे बेहतरीन इलायची का उत्पादन होता था।

The other opportunity for the Company to establish itself came at Anjengo. The Rani of Attingal, in whose territory it lay, had invited the Company to set up factories in her domains in 1678. Two small trading posts were established. Alexander Hamilton, who visited Malabar in 1703, described how the rani was given a yearly present from these factories:

कंपनी को खुद को स्थापित करने का दूसरा अवसर अंजेन्गो में मिला। अत्तिंगल की रानी, जिसके क्षेत्र में यह स्थित था, ने 1678 में कंपनी को अपने राज्य में कारखाने स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया था। दो छोटे व्यापारिक केंद्र स्थापित किए गए। अलेक्जेंडर हैमिल्टन, जिन्होंने 1703 में मालाबार का दौरा किया, ने वर्णन किया कि कैसे रानी को इन कारखानों से वार्षिक उपहार दिए जाते थे:

In anno 1685, when the present was sent, a young beautiful English gentleman had the honour to present it to her black majesty; and as soon as the queen saw him, she fell in love with him, and next day made a proposal of marriage to him, but he modestly refused so great an honour: however, to please her majesty, he staid at court a month or two, and it is reported, treated her with the same civility as Solomon did the Queen of Ethiopia, or Alexander the Great did the Amazonian Queen, and satisfied her so well, that when he left her court, she made him some presents.

सन् 1685 में, जब यह उपहार भेजा गया, तो एक युवा, सुंदर अंग्रेज सज्जन को महारानी के समक्ष इसे प्रस्तुत करने का सम्मान प्राप्त हुआ; और जैसे ही महारानी ने उन्हें देखा, वे उनसे प्रेम करने लगीं और अगले ही दिन उन्होंने उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने विनम्रतापूर्वक इतने बड़े सम्मान को अस्वीकार कर दिया: हालांकि, महारानी को प्रसन्न करने के लिए, वे एक या दो महीने तक दरबार में रहे, और ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने उनके साथ उसी शिष्टाचार से व्यवहार किया जैसा सुलेमान ने इथियोपिया की रानी के साथ या सिकंदर

महान ने अमेज़ॅन की रानी के साथ किया था, और उन्हें इतना संतुष्ट किया कि जब वे उनके दरबार से विदा हुए, तो उन्होंने उन्हें कुछ उपहार दिए।

Whatever the truth of this, the rani was certainly well disposed towards the English. She gave the sandy spit of Anjengo to the Company for it to build a factory and a fort. Soon after work commenced, following protests by the Dutch, the rani cancelled this permission and tried to cut off supplies. The English, however, continued to receive necessities by sea. There was a skirmish, which the English won, and a treaty was concluded in the Company's favour. The fort at Anjengo was completed in 1695. A row of houses ran from the fort to the Portuguese church at the other end of the spit. Although small, the fort's location on the narrow spit gave its guns command over the sea on the one side and over the river on the other. In other respects, however, it was not an ideal site. Fresh water was often scarce. It was not a good anchorage for heavy surf made it impossible to bring ships in closer than a mile and small boats had to ferry their cargoes to the shore. Nevertheless, Anjengo became a major conduit for the Company's purchases of spices and textiles. Business increased because financial difficulties had forced the Dutch East India Company to reduce operations at its Malabar factories. Anjengo became second only to Bombay in the western presidency.

इस बात की सच्चाई चाहे जो भी हो, रानी अंग्रेजों के प्रति निश्चित रूप से उदार थीं। उन्होंने अंजेंगो की रेतीली पट्टी को कंपनी को एक कारखाना और किला बनाने के लिए दे दिया। काम शुरू होने के कुछ ही समय बाद, डचों के विरोध के बाद, रानी ने यह अनुमति रद्द कर दी और आपूर्ति रोकने की कोशिश की। हालांकि, अंग्रेजों को समुद्र के रास्ते आवश्यक वस्तुएं मिलती रहीं। एक झड़प हुई, जिसमें अंग्रेज जीते, और कंपनी के पक्ष में एक संधि संपन्न हुई। अंजेंगो का किला 1695 में बनकर तैयार हुआ। किले से पट्टी के दूसरे छोर पर स्थित पुर्तगाली चर्च तक घरों की एक कतार थी। हालांकि किला छोटा था, लेकिन संकरी पट्टी पर स्थित होने के

कारण इसकी तोपों से एक तरफ समुद्र और दूसरी तरफ नदी पर नियंत्रण रखा जा सकता था। हालांकि, अन्य मामलों में यह एक आदर्श स्थान नहीं था। ताजे पानी की अक्सर कमी रहती थी। यह एक अच्छा लंगरगाह नहीं था क्योंकि तेज लहरों के कारण जहाजों को एक मील से अधिक करीब लाना असंभव था और छोटी नावों को अपना माल किनारे तक ले जाना पड़ता था। फिर भी, अंजेंगो कंपनी के मसालों और वस्त्रों की खरीद का एक प्रमुख माध्यम बन गया। वित्तीय कठिनाइयों के कारण डच ईस्ट इंडिया कंपनी को अपने मालाबार कारखानों में परिचालन कम करना पड़ा, जिसके चलते व्यापार में वृद्धि हुई। पश्चिमी प्रेसीडेंसी में अंजेंगो बॉम्बे के बाद दूसरे स्थान पर आ गया।

The last great trading region to be opened up by the Company in the seventeenth century was that of Bengal. Some trade into Bengal had already been done from the Company factories further south, but this had not amounted to much. In 1651 a factory was established on the bank of the River Ganges at Hooghly. Mindful of the expulsion of the Portuguese by the Mughals when they had attempted to fortify their base at Hooghly, the English arrived in a humble fashion. They left their ship off the coast and merely requested permission to bring small boats up the river. They were under instructions to make secret enquiries into the business methods of the Dutch and to see how they could be superseded. The English had a useful advantage. A few years before, they had judiciously lent one of their surgeons to the Mughal viceroy of Bengal. He had granted a licence for the English to trade freely. It was not clear whether this document contained permission to trade in the interior as well as at the seaports, since it had been mysteriously lost. Nevertheless, the English took it as authority to trade both on the coast and in the interior. After

some initial difficulties, Hooghly became the chief agency of the Company in Bengal, together with several subsidiary factories.

सत्रहवीं शताब्दी में कंपनी द्वारा खोला गया अंतिम बड़ा व्यापारिक क्षेत्र बंगाल था। कंपनी के दक्षिणी कारखानों से बंगाल में पहले से ही कुछ व्यापार होता था, लेकिन यह बहुत अधिक नहीं था। 1651 में गंगा नदी के किनारे हुगली में एक कारखाना स्थापित किया गया। पुर्तगालियों को मुगलों द्वारा खदेड़े जाने की घटना को ध्यान में रखते हुए, जब उन्होंने हुगली में अपना अड्डा मजबूत करने का प्रयास किया था, अंग्रेज विनम्रतापूर्वक पहुंचे। उन्होंने अपना जहाज तट से दूर छोड़ दिया और केवल नदी में छोटी नावें लाने की अनुमति मांगी। उन्हें डचों के व्यापारिक तरीकों की गुप्त जांच करने और उन्हें कैसे प्रतिस्थापित किया जा सकता है, यह देखने के निर्देश दिए गए थे। अंग्रेजों को एक उपयोगी लाभ प्राप्त था। कुछ वर्ष पहले, उन्होंने बुद्धिमानी से अपने एक सर्जन को बंगाल के मुगल वायसराय को सौंप दिया था। वायसराय ने अंग्रेजों को स्वतंत्र रूप से व्यापार करने का लाइसेंस दिया था। यह स्पष्ट नहीं है कि इस दस्तावेज़ में बंदरगाहों के साथ-साथ आंतरिक क्षेत्रों में भी व्यापार करने की अनुमति थी या नहीं, क्योंकि यह रहस्यमय तरीके से खो गया था। फिर भी, अंग्रेजों ने इसे तटीय और आंतरिक दोनों क्षेत्रों में व्यापार करने के लिए एक अधिकार क्षेत्र के रूप में स्वीकार किया। कुछ प्रारंभिक कठिनाइयों के बाद, हुगली कई सहायक कारखानों के साथ बंगाल में कंपनी की प्रमुख एजेंसी बन गई।

Over the course of the seventeenth century there had been an extraordinary transformation in the Company's trade. Initially, textiles had been bought, not for export to Europe, but to take to the Far East in exchange for the spices that the English desired. There was almost no market for Indian decorative textiles in England. Plain and cheap calico and quilts were all that London wanted. When, in 1615, Sir Thomas Roe had come as ambassador to India, he had been bitterly disappointed with the goods on offer. He had imagined he would be able to find the highly decorated 'oriental' textiles and objets d'art he had seen on sale in the 'China shops' of London. 'I had thought all India a China shop,' he

complained, ‘and that I should furnish all my friends with rarities.’ The Mughals too were not impressed by Indian artistic endeavours. They were taking steps to import craftsmen and techniques from Persia and Turkey, but these had yet to spread across India. The first textiles sent to England by the Company found few buyers.

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान कंपनी के व्यापार में एक असाधारण परिवर्तन आया। प्रारंभ में, वस्त्र यूरोप को निर्यात के लिए नहीं, बल्कि सुदूर पूर्व में ले जाने के लिए खरीदे जाते थे, ताकि अंग्रेजों द्वारा वांछित मसालों के बदले उन्हें प्राप्त किया जा सके। इंग्लैंड में भारतीय सजावटी वस्त्रों का लगभग कोई बाज़ार नहीं था। लंदन में केवल सादे और सस्ते कैलिको और रजाईयों की ही मांग थी। जब 1615 में सर थॉमस रो भारत में राजदूत बनकर आए, तो वे उपलब्ध वस्तुओं से घोर निराश हुए। उन्होंने कल्पना की थी कि उन्हें लंदन की 'चीनी दुकानों' में बिकने वाले अत्यधिक अलंकृत 'प्राच्य' वस्त्र और कलाकृतियाँ मिलेंगी। उन्होंने शिकायत की, 'मैंने सोचा था कि पूरा भारत एक चीनी दुकान है, और मैं अपने सभी मित्रों को दुर्लभ वस्तुएँ भेंट करूँगा।' मुगल भी भारतीय कलात्मक प्रयासों से प्रभावित नहीं थे। वे फारस और तुर्की से शिल्पकारों और तकनीकों को आयात करने के लिए कदम उठा रहे थे, लेकिन ये अभी तक पूरे भारत में नहीं फैले थे। कंपनी द्वारा इंग्लैंड भेजे गए पहले वस्त्रों को बहुत कम खरीदार मिले।

The main attraction of Indian painted textiles – called ‘painted’ because the dye was applied with a brush – was that their dyes were fast and their colours lasting. In Europe, patterns were applied to cloth and then, when washed, soon disappeared. The Indians had long since discovered that mordants could make their colours bright and permanent. Seeing the superiority of the Indian techniques but doubtful of their artistic ability, the Company in London wrote to Surat in 1643, suggesting modifications – flowers and branches as the painter pleased, but on a white rather than on a dull red background. In the 1660s detailed patterns were sent from England for the artisans to copy.

Later, the Company even sent out the seeds of weld, a plant used to make yellow dye in England, suggesting that it could be used to advantage by the Indian dyers. What finally emerged was a synthesis of European and Indian taste. This sold well.

भारतीय चित्रित वस्त्रों की मुख्य विशेषता यह थी कि उनके रंग पक्के होते थे और लंबे समय तक टिकते थे। इन्हें 'चित्रित' इसलिए कहा जाता था क्योंकि रंग ब्रश से लगाया जाता था। यूरोप में, कपड़ों पर पैटर्न बनाए जाते थे, लेकिन धोने पर वे जल्द ही गायब हो जाते थे। भारतीयों ने बहुत पहले ही यह जान लिया था कि मोर्डेंट का उपयोग करके रंगों को चमकीला और स्थायी बनाया जा सकता है। भारतीय तकनीकों की श्रेष्ठता को देखते हुए, लेकिन उनकी कलात्मक क्षमता पर संदेह करते हुए, लंदन स्थित कंपनी ने 1643 में सूरत को पत्र लिखकर कुछ संशोधन सुझाए - चित्रकार की इच्छानुसार फूल और शाखाएँ, लेकिन फीके लाल रंग की पृष्ठभूमि के बजाय सफेद रंग पर। 1660 के दशक में, कारीगरों को नकल करने के लिए इंग्लैंड से विस्तृत पैटर्न भेजे गए। बाद में, कंपनी ने वेल्ड के बीज भी भेजे, जो इंग्लैंड में पीले रंग बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला एक पौधा था, यह सुझाव देते हुए कि भारतीय रंगसाज़ इसका लाभ उठा सकते हैं। अंततः जो सामने आया वह यूरोपीय और भारतीय रुचि का मिश्रण था। इसकी खूब बिक्री हुई।

The Indians had used painted textiles principally for clothing. Initially, the Europeans used these cloths mostly for wall hangings (which had gained popularity as homes acquired smoke-free chimneys), cushions and bedspreads. As the century progressed, however, English taste in clothing changed. Instead of heavy broadcloth, light silks and cottons, readily obtainable from India, became the fashion for both men and women. In 1661 Samuel Pepys recorded in his diary that he had ‘bought an Indian gown for myself’. Two years later, he bought his wife ‘a very noble particoloured Indian gown’. When imports from France into England were prohibited in 1678, imports from India gained further impetus.

भारतीय लोग मुख्य रूप से वस्त्रों के लिए रंगीन कपड़ों का उपयोग करते थे। प्रारंभ में, यूरोपीय लोग इन कपड़ों का उपयोग मुख्य रूप से दीवारों पर टांगने (जो घरों में धुआं रहित चिमनियों के आने से लोकप्रिय हो गए थे), तकियों और बिस्तर की चादरों के लिए करते थे। हालाँकि, सदी बीतने के साथ, अंग्रेजों की वस्त्रों की पसंद बदल गई। भारी ब्रॉडक्लॉथ के स्थान पर, भारत से आसानी से उपलब्ध हल्के रेशम और सूती कपड़े पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए फैशन बन गए। 1661 में सैमुअल पेप्स ने अपनी डायरी में लिखा कि उन्होंने 'अपने लिए एक भारतीय गाउन खरीदा'। दो साल बाद, उन्होंने अपनी पत्नी के लिए 'एक बहुत ही सुंदर बहुरंगी भारतीय गाउन' खरीदा। 1678 में जब फ्रांस से इंग्लैंड में आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तो भारत से आयात को और अधिक बढ़ावा मिला।

As the price of spices in Europe fell over the years due to oversupply in a limited market, Indian muslins and chintzes became the height of fashion and a more important source of income for the Company. In 1694 the Company wrote to Madras observing that the greatest ladies in England were wearing chintzes for both their upper garments and petticoats – and that the Indians could ‘never make, nor you send us, too many of them’. Muslins, so fine that they were almost transparent, were also in demand as were bales of silk. Coarser Indian calicoes were cheap enough to be purchased by the poor. At first only lengths of cloth were exported, but later ready-made clothes became important too. The East India Company was in the enviable position of being suppliers to an insatiable market. Indian textiles, as Daniel Defoe wrote ‘crept into our houses, our closets, and bed chambers, curtains, cushions, chairs and at last beds themselves were nothing but calico or Indian stuffs. In short, everything that used to be made of wool or silk, relating either to the dress of women or the furniture of our houses, was supplied by the Indian trade.’ In addition to this vast market, the Company was also re-exporting to mainland Europe on a huge scale. By 1700, textiles comprised three quarters of all the

Company’s exports to England. The share with the greatest value came from Bengal.

यूरोप में सीमित बाज़ार में अधिक आपूर्ति के कारण वर्षों से मसालों की कीमतें गिरने से भारतीय मलमल और चिंट्ज़ का चलन चरम पर पहुंच गया और ये कंपनी के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गए। 1694 में कंपनी ने मद्रास को पत्र लिखकर बताया कि इंग्लैंड की संभ्रांत महिलाएं अपने ऊपरी वस्त्रों और पेटीकोट दोनों के लिए चिंट्ज़ पहन रही थीं और भारतीय 'न तो इनका निर्माण कर सकते हैं और न ही हमें इनकी अधिकता हो सकती है'। लगभग पारदर्शी मलमल की भी खूब मांग थी, साथ ही रेशम के गठ्ठों की भी। मोटे भारतीय कैलिको इतने सस्ते थे कि गरीब लोग भी उन्हें खरीद सकते थे। शुरुआत में केवल कपड़े के लंबे टुकड़े ही निर्यात किए जाते थे, लेकिन बाद में तैयार कपड़े भी महत्वपूर्ण हो गए। ईस्ट इंडिया कंपनी एक ऐसे बाज़ार की आपूर्ति करने की सौभाग्यशाली स्थिति में थी जिसकी मांग कभी तृप्त नहीं होती थी। जैसा कि डैनियल डेफ़ो ने लिखा है, 'भारतीय वस्त्र हमारे घरों, हमारी अलमारियों और शयनकक्षों में इस कदर समा गए कि पर्दे, तकिए, कुर्सियां और अंत में बिस्तर भी कैलिको या भारतीय कपड़ों के ही बने थे।' संक्षेप में कहें तो, महिलाओं के वस्त्रों या घरों के फर्नीचर से संबंधित ऊन या रेशम से बनी हर वस्तु की आपूर्ति भारतीय व्यापार द्वारा की जाती थी। इस विशाल बाजार के अलावा, कंपनी मुख्य भूमि यूरोप को भी बड़े पैमाने पर निर्यात कर रही थी। 1700 तक, इंग्लैंड को कंपनी के कुल निर्यात का तीन-चौथाई हिस्सा वस्त्रों का था। सबसे अधिक मूल्य वाला हिस्सा बंगाल से आता था।

Despite periodic changes of viceroy, the Company was able to renew its early privileges in Bengal, although it had to pay heavily. In 1685 the Company’s agent asked the viceroy for permission to fortify a landing place for goods. This was indignantly refused, the Company’s trade brought to a halt and one of its factories besieged. The Company in London then initiated an important change in policy. Up until then they had always insisted that war and trade were incompatible. Occasionally, their men in India had ignored this directive, but London had always continued to urge peace. This time, however, they

decided on confrontation. Asserting that the local authorities had taken to 'trampling upon us, and extorting what they please from our estate from us, by the besieging of our factorys and stopping of our boats upon the Ganges, they will never forbare doing so till we have made them as sensible of our power, as we have of our truth and justice'.

समय-समय पर वायसराय के परिवर्तन के बावजूद, कंपनी बंगाल में अपने प्रारंभिक विशेषाधिकारों को नवीनीकृत करने में सक्षम रही, हालांकि इसके लिए उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी। 1685 में कंपनी के एजेंट ने वायसराय से माल उतारने के लिए एक बंदरगाह को किलेबंद करने की अनुमति मांगी। इसे कड़े शब्दों में अस्वीकार कर दिया गया, कंपनी का व्यापार ठप हो गया और उसके एक कारखाने को घेर लिया गया। इसके बाद लंदन स्थित कंपनी ने नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया। तब तक वे हमेशा इस बात पर जोर देते रहे थे कि युद्ध और व्यापार एक-दूसरे के विपरीत हैं। कभी-कभी भारत में उनके लोगों ने इस निर्देश की अनदेखी की थी, लेकिन लंदन हमेशा शांति का आग्रह करता रहा था। हालांकि, इस बार उन्होंने टकराव का रास्ता चुना। उनका कहना था कि स्थानीय अधिकारियों ने "हमारे कारखानों को घेरकर और गंगा में हमारी नावों को रोककर हम पर अत्याचार किया है और हमारी संपत्ति से मनमानी वसूली की है। वे तब तक ऐसा करना बंद नहीं करेंगे जब तक हम उन्हें अपनी शक्ति का उतना ही एहसास नहीं करा देते जितना हमने अपने सत्य और न्याय का कराया है।"

An expedition of ten ships with six companies of infantry was despatched to Bengal. It was under instructions from London to rescue the Company's employees in Bengal, capture the ships of the Mughals, go to Dacca and extract a treaty from the Mughal viceroy there by force. There was no chance whatsoever of these objectives being achieved against a viceroy with an army of 100,000. The river below Hooghly was impassable to the Company's large ships, so 300 soldiers were sent up the river in small boats. To counter this, the Mughals surrounded the Hooghly factory with several thousand soldiers

and several hundred cavalry. They then closed the bazaar to the English, which left them without food.

छह पैदल सेना कंपनियों सहित दस जहाजों का एक दल बंगाल भेजा गया। लंदन से मिले निर्देशों के अनुसार, उन्हें बंगाल में कंपनी के कर्मचारियों को छुड़ाना था, मुगलों के जहाजों पर कब्जा करना था, ढाका जाकर वहां के मुगल वायसराय से बलपूर्वक संधि करानी थी। 100,000 सैनिकों की सेना वाले वायसराय के सामने इन उद्देश्यों को प्राप्त करना असंभव था। हुगली के नीचे की नदी कंपनी के बड़े जहाजों के लिए अगम्य थी, इसलिए 300 सैनिकों को छोटी नावों में नदी के ऊपर भेजा गया। इसका मुकाबला करने के लिए, मुगलों ने कई हजार सैनिकों और सैकड़ों घुड़सवारों के साथ हुगली कारखाने को घेर लिया। फिर उन्होंने अंग्रेजों के लिए बाजार बंद कर दिया, जिससे वे भोजन से वंचित हो गए।

The Company's chief agent at Hooghly was Job Charnock. Charnock had been in Bengal for thirty years. He had married an Indian widow, with whom he had at least four children, was fluent in several Indian languages and dressed as an Indian merchant. It was said that his wife was a widow whom he had rescued from committing sati on her husband's pyre and that after her death Charnock made a yearly sacrifice of a cock on her tomb. It was also said of him, probably truly, that 'when any poor ignorant native transgressed his laws, they were sure to undergo a severe whipping for a penalty'. Charnock had a deep knowledge of the Bengal trade, but his manners were rough. This led to a prickly relationship with some of his superiors – who often knew less than Charnock – and he was continually denied promotion. It was only as a result of his superior's death that he had assumed command.

हुगली में कंपनी के मुख्य एजेंट जॉब चार्नॉक थे। चार्नॉक तीस वर्षों से बंगाल में थे। उन्होंने एक भारतीय विधवा से विवाह किया था, जिनसे उनके कम से कम चार बच्चे थे। वे कई भारतीय भाषाओं में पारंगत थे और भारतीय व्यापारी की तरह कपड़े पहनते थे। कहा जाता था कि उनकी पत्नी एक विधवा थीं, जिन्हें उन्होंने अपने पति की चिता पर सती होने से बचाया था, और

उनकी मृत्यु के बाद चार्नॉक हर साल उनकी समाधि पर मुर्गे की बलि देते थे। उनके बारे में यह भी कहा जाता था, जो शायद सच था, कि 'जब कोई गरीब अनपढ़ भारतीय उनके नियमों का उल्लंघन करता था, तो उसे दंड के रूप में कड़ी पिटाई खानी पड़ती थी।' चार्नॉक को बंगाल के व्यापार का गहरा ज्ञान था, लेकिन उनका व्यवहार कठोर था। इस वजह से उनके कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उनके संबंध तनावपूर्ण थे - जो अक्सर चार्नॉक से कम जानते थे - और उन्हें लगातार पदोन्नति से वंचित रखा गया। अपने वरिष्ठ अधिकारी की मृत्यु के बाद ही उन्होंने कमान संभाली थी।

In October 1686 there was a skirmish between the English and the Mughals. The English had the better of it but, realizing that their long-term prospects of holding out were poor, they left Hooghly in small boats. Twenty-seven miles downstream, they landed on a bank with three villages, one of which was called Kalikata. It seemed to be a good defensive position – on one side there was a deep pool in the river, suitable for the heavily armed Company ships; on the other sides there were swamps.

अक्टूबर 1686 में अंग्रेजों और मुगलों के बीच झड़प हुई। अंग्रेज विजयी रहे, लेकिन यह महसूस करते हुए कि उनका लंबे समय तक टिके रहना संभव नहीं है, वे छोटी नावों में हुगली से निकल गए। 27 मील नीचे की ओर जाकर वे एक ऐसे किनारे पर उतरे जहाँ तीन गाँव थे, जिनमें से एक का नाम कलिकता था। यह एक अच्छी रक्षात्मक स्थिति प्रतीत हुई - एक तरफ नदी में एक गहरा कुंड था, जो भारी हथियारों से लैस मुगलों के जहाजों के लिए उपयुक्त था; दूसरी तरफ दलदल था।

Charnock built a few huts for his men and opened up negotiations with the local governor. However, as the dry season progressed the swamps diminished and the viceroy attacked. Charnock and his men had to take to their boats again. As they went downstream they attacked several Mughal forts and burnt a town. One boat was captured, some of its crew beheaded and

their heads displayed at Hooghly. The rest of the men took refuge seventy miles further downstream at Hijli.

चार्नॉक ने अपने आदमियों के लिए कुछ झोपड़ियाँ बनवाईं और स्थानीय गवर्नर से बातचीत शुरू की। हालाँकि, जैसे-जैसे सूखा मौसम आगे बढ़ा, दलदल कम होते गए और वायसराय ने हमला कर दिया। चार्नॉक और उसके आदमियों को फिर से नावों का सहारा लेना पड़ा। नदी के बहाव की दिशा में आगे बढ़ते हुए उन्होंने कई मुगल किलों पर हमला किया और एक शहर को जला दिया। एक नाव पर कब्ज़ा कर लिया गया, उसके कुछ साथियों के सिर काट दिए गए और उनके सिर हुगली में प्रदर्शित किए गए। बाकी बचे आदमियों ने सत्तर मील आगे नदी के बहाव की दिशा में हिजली में शरण ली।

Hijli was a famously unhealthy place about which there was a local proverb: 'It is quite one thing to go to Hijli, but another to come back alive.' And so it proved. The viceroy's army cut off supplies. It began to pound the encampment and the ships on the river with cannons. Disease took its toll. Within three months, 200 English soldiers died and another 100 were either sick or wounded. The 100 that remained active were racked with fever. Out of forty officers, only five and Charnock himself were alive and fit. The Company's largest ship had been holed and the others had severely depleted crews.

हिजली एक कुख्यात अस्वस्थ स्थान था, जिसके बारे में एक स्थानीय कहावत प्रचलित थी: 'हिजली जाना एक बात है, और ज़िंदा वापस आना दूसरी बात।' और ऐसा ही हुआ। वायसराय की सेना ने आपूर्ति रोक दी। उसने शिविर और नदी पर मौजूद जहाजों पर तोपों से बमबारी शुरू कर दी। बीमारी ने अपना कहर बरपाया। तीन महीनों के भीतर, 200 अंग्रेज सैनिक मारे गए और 100 अन्य या तो बीमार थे या घायल। जो 100 सैनिक बचे थे, वे बुखार से त्रस्त थे। चालीस अधिकारियों में से केवल पाँच और चार्नॉक स्वयं ही जीवित और स्वस्थ थे। कंपनी के सबसे बड़े जहाज में छेद हो गया था और अन्य जहाजों के चालक दल बुरी तरह से कम हो गए थे।

All looked lost, when a new ship came into view carrying seventy soldiers. Charnock put on a great display of welcome: with cheers, banners, trumpets and drums. He then duplicated this welcome with the same troops, so that the enemy were deceived into thinking a great relief force had arrived. Charnock was allowed to march out under truce with drums and flags. Once again, he departed downstream.

सब कुछ हारा हुआ सा लग रहा था, तभी सत्तर सैनिकों को लेकर एक नया जहाज नज़र आया। चार्नॉक ने जयकारे, झंडे, तुरही और ढोल बजाकर उनका ज़ोरदार स्वागत किया। फिर उन्होंने उन्हीं सैनिकों के साथ दोबारा स्वागत किया, जिससे दुश्मन को लगा कि कोई बड़ी राहत सेना आ गई है। चार्नॉक को ढोल और झंडे लेकर शांति समझौते के तहत जाने की अनुमति मिल गई। एक बार फिर, वह नदी के बहाव की दिशा में रवाना हो गए।

Later, Charnock meekly accepted a rebuke from the Mughal viceroy. He then somehow managed to obtain permission to return to Hooghly or anywhere else of his choosing. Because of its defensive possibilities and trading location, he chose to return upstream to Kalikata. He built more huts and some minor defences. Then a Captain William Heath arrived there with a fleet and instructions from the Company that Charnock and his men should come aboard and sail away to capture Chittagong. It seems that the Company were under the impression that Chittagong lay up the River Ganges whereas, of course, it was actually on the north-eastern coast of the Bay of Bengal. Charnock remonstrated, but he had to leave. As they departed, Heath burnt and pillaged Kalikata. This led to the arrest of the remaining Company factors in Bengal. Chittagong, as might have been expected, turned out to be heavily defended by the Mughals. After a month of fruitless negotiations, Heath's fleet was forced to return to the sanctuary of Madras.

बाद में, चर्नॉक ने मुगल वायसराय की फटकार को विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने किसी तरह हुगली या अपनी पसंद के किसी अन्य स्थान पर लौटने की अनुमति प्राप्त कर ली। अपनी रक्षात्मक क्षमताओं और व्यापारिक स्थिति के कारण, उन्होंने कलिकता लौटने का निर्णय लिया। उन्होंने और झोपड़ियाँ और कुछ छोटे-मोटे सुरक्षा इंतज़ाम बनवाए। तभी कैप्टन विलियम हीथ एक बेड़ा लेकर वहाँ पहुँचे और उन्हें कंपनी से निर्देश मिले कि चर्नॉक और उनके साथी जहाज पर सवार होकर चटगाँव पर कब्ज़ा करने के लिए रवाना हों। ऐसा लगता है कि कंपनी को यह भ्रम था कि चटगाँव गंगा नदी के ऊपरी हिस्से में स्थित है, जबकि वास्तव में यह बंगाल की खाड़ी के उत्तर-पूर्वी तट पर था। चर्नॉक ने विरोध किया, लेकिन उन्हें जाना पड़ा। उनके प्रस्थान के समय, हीथ ने कलिकता को जलाकर लूट लिया। इससे बंगाल में बचे हुए कंपनी के अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। जैसा कि उम्मीद थी, चटगाँव मुगलों द्वारा भारी सुरक्षा में था। एक महीने की निष्फल बातचीत के बाद, हीथ के बेड़े को मद्रास की शरण में लौटना पड़ा।

Charnock had to remain in Madras until 1690. The Mughal occupation of Bombay precipitated by the foolish aggression of Sir John Child had made the Company realize that it was much weaker than it had imagined. Any idea of challenging the Mughal supremacy was jettisoned. The Company apologized, paid an indemnity and was authorized to continue its trade throughout the Emperor’s dominions. Charnock waited at Madras, however, until he had obtained a specific promise from the viceroy of Bengal. He managed to secure an agreement that, in return for an annual payment of a derisory Rs 3,000 a year, the Company could trade free of local duties. On receipt of this, he and his men returned to Kalikata or, as it would soon be called, Calcutta, and now Kolkata.

चार्नॉक को 1690 तक मद्रास में ही रहना पड़ा। सर जॉन चाइल्ड के मूर्खतापूर्ण आक्रमण के कारण मुगलों द्वारा बंबई पर कब्ज़ा कर लेने से कंपनी को अपनी क्षमता का एहसास हो गया था। मुगल वर्चस्व को चुनौती देने का विचार त्याग दिया गया। कंपनी ने माफी मांगी, हर्जाना

अदा किया और उसे सम्राट के राज्य में अपना व्यापार जारी रखने की अनुमति मिल गई। हालांकि, चार्नॉक मद्रास में तब तक रुके रहे जब तक उन्हें बंगाल के वायसराय से एक निश्चित वादा नहीं मिल गया। उन्होंने एक समझौता कर लिया जिसके तहत मात्र 3,000 रुपये के वार्षिक भुगतान के बदले कंपनी को स्थानीय करों से मुक्त व्यापार करने की अनुमति मिल गई। यह वादा मिलते ही वह और उनके साथी कलकत्ता लौट आए, जिसे बाद में कलकत्ता और अब कोलकाता कहा जाने लगा।

At Calcutta, Charnock found that the buildings painstakingly constructed the year before had been burnt. Through the monsoon of 1690 he and his men were forced to live in boats. Nevertheless, work proceeded and by the summer of 1692 there was a small settlement. The adjacent deep water attracted ships and trade. Indian merchants began to settle. A large number of Portuguese and Armenian merchants moved to the safety of the town and were given plots for their churches.

कलकत्ता पहुँचने पर चार्नॉक ने पाया कि पिछले वर्ष बड़ी मेहनत से बनाई गई इमारतें जलकर राख हो गई थीं। 1690 की मानसूनी बारिश के दौरान उन्हें और उनके साथियों को नावों में रहना पड़ा। फिर भी, काम जारी रहा और 1692 की गर्मियों तक एक छोटी बस्ती बस गई। पास के गहरे पानी ने जहाजों और व्यापार को आकर्षित किया। भारतीय व्यापारी बसने लगे। बड़ी संख्या में पुर्तगाली और अर्मेनियाई व्यापारी शहर की सुरक्षा में आ गए और उन्हें अपने गिरजाघरों के लिए भूखंड दिए गए।

Job Charnock died in 1693. He was buried at Calcutta. Within a decade, the Company would have acquired the two adjacent villages, begun work on the massively strong Fort William and put Calcutta well on the way to becoming its most important base in India.

जॉब चार्नॉक की मृत्यु 1693 में हुई। उन्हें कलकत्ता में दफनाया गया। एक दशक के भीतर, कंपनी ने दो पड़ोसी गांवों का अधिग्रहण कर लिया, विशाल और मजबूत फोर्ट विलियम का

निर्माण शुरू कर दिया और कलकत्ता को भारत में अपना सबसे महत्वपूर्ण अड्डा बनाने की दिशा में अग्रसर हो गई।

Until the last decade of the seventeenth century, the East India Company had invariably been able to pay handsome dividends of 20 per cent or more. In the 1690s the Company suffered heavy losses due to the war against France and in 1696 the French seized the Company's returning fleet of five fully laden ships. As the century came to an end the Company was also locked in a struggle for survival against a new company. This led to producers in India raising their prices and profit margins narrowing. Facing all these difficulties, the Company stopped paying dividends.

सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक, ईस्ट इंडिया कंपनी लगातार 20 प्रतिशत या उससे अधिक का अच्छा लाभांश देती रही थी। 1690 के दशक में फ्रांस के साथ युद्ध के कारण कंपनी को भारी नुकसान हुआ और 1696 में फ्रांसीसियों ने कंपनी के पांच माल से लदे जहाजों के बेड़े को जब्त कर लिया। शताब्दी के अंत तक कंपनी एक नई कंपनी के खिलाफ अस्तित्व के संघर्ष में उलझ गई। इसके चलते भारत में उत्पादकों ने कीमतें बढ़ा दीं और लाभ मार्जिन कम हो गया। इन सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए, कंपनी ने लाभांश देना बंद कर दिया।

The gravest threat to the Company, however, came from events in England. The Company's very success had provoked envy. There was an abortive attempt to resuscitate a Scottish company that had been given royal authority, afterwards rescinded, to trade with the East. This prompted the English Company to ask Parliament to confirm its own privileges. This had disastrous consequences. The government of the day was short of money and decided instead to auction the monopoly. The 'Old Company' lost out to a 'New

Company', which was incorporated in 1698. The Old Company was, however, to be permitted to trade until 1701. Moreover, as the Old Company took the precaution of subscribing to a loan made to the New Company, it could legally continue to trade to the amount of this loan each year. It was a recipe for bitter conflict.

हालाँकि, कंपनी के लिए सबसे बड़ा खतरा इंग्लैंड में घटी घटनाओं से उत्पन्न हुआ। कंपनी की सफलता ने ही ईर्ष्या को जन्म दिया था। एक स्कॉटिश कंपनी को पुनर्जीवित करने का असफल प्रयास किया गया था, जिसे बाद में रद्द कर दिया गया था, ताकि वह पूर्व के साथ व्यापार कर सके। इससे प्रेरित होकर इंग्लिश कंपनी ने संसद से अपने विशेषाधिकारों की पुष्टि करने का अनुरोध किया। इसके विनाशकारी परिणाम हुए। तत्कालीन सरकार के पास धन की कमी थी और उसने एकाधिकार की नीलामी करने का निर्णय लिया। 'पुरानी कंपनी' 1698 में स्थापित 'नई कंपनी' से हार गई। हालाँकि, पुरानी कंपनी को 1701 तक व्यापार करने की अनुमति दी गई थी। इसके अलावा, चूंकि पुरानी कंपनी ने नई कंपनी को दिए गए ऋण में योगदान देकर एहतियात बरती थी, इसलिए वह कानूनी रूप से प्रत्येक वर्ष इस ऋण की राशि तक व्यापार जारी रख सकती थी। यह एक भयंकर संघर्ष का कारण बना।

The ill feeling between the two companies in India was further inflamed by the New Company appointing all its senior officials from the staff of the Old Company. The Mughals initially sided with the Old Company. When, for example, the New Company's president at Surat, Sir Nicholas Waite, despatched his men to haul down the Old Company's flag, the Mughal governor sent his own troops to replace it. Waite retaliated by telling the Mughals that the Old Company was in league with pirates that were attacking Mughal ships. The Mughals then arrested the governor of Bombay, Sir John Gayer, and his wife. The unfortunate Sir John Gayer languished in prison for seven years and was not released by the Mughals until 1710. The following year he sailed for England. The French intercepted his ship off the tip of India

and he was killed. There were similar disputes between the two companies in southern and eastern India. It became clear to the shareholders in London that the companies would have to be amalgamated. An agreement was made in 1702 to phase this in over seven years.

भारत में दोनों कंपनियों के बीच दुश्मनी तब और बढ़ गई जब नई कंपनी ने अपने सभी वरिष्ठ अधिकारियों को पुरानी कंपनी के कर्मचारियों में से नियुक्त किया। मुगलों ने शुरू में पुरानी कंपनी का साथ दिया। उदाहरण के लिए, जब सूरत में नई कंपनी के अध्यक्ष सर निकोलस वेट ने अपने आदमियों को पुरानी कंपनी का झंडा उतारने के लिए भेजा, तो मुगल गवर्नर ने अपनी सेना भेजकर झंडा फहरा दिया। वेट ने पलटवार करते हुए मुगलों से कहा कि पुरानी कंपनी उन समुद्री लुटेरों के साथ मिलीभगत कर रही है जो मुगल जहाजों पर हमला कर रहे हैं। इसके बाद मुगलों ने बंबई के गवर्नर सर जॉन गेयर और उनकी पत्नी को गिरफ्तार कर लिया। दुर्भाग्य से सर जॉन गेयर सात साल तक जेल में रहे और मुगलों ने उन्हें 1710 तक रिहा नहीं किया। अगले साल वे इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। फ्रांसीसियों ने भारत के दक्षिणी छोर पर उनके जहाज को रोक लिया और उनकी हत्या कर दी। दक्षिण और पूर्वी भारत में भी दोनों कंपनियों के बीच इसी तरह के विवाद थे। लंदन में शेयरधारकों को यह स्पष्ट हो गया कि कंपनियों का विलय करना होगा। 1702 में इस प्रक्रिया को सात वर्षों में चरणबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए एक समझौता हुआ।

All these difficulties, however, were only temporary – the war with France came to an end; the New Company was absorbed. As the United Company of Merchants of England Trading to the East Indies – generally known just as the East India Company – entered the new century, it was in an excellent position to expand its trade and profits. It had raised over £3 million by share issues to 3,000 investors. Short-term bonds supplied a further £6 million of capital. It was importing over half a million pounds worth of goods a year into England. It had set up a network of trading posts all over India. In general, it had been true to the counsel of Sir Thomas Roe to avoid wars or the establishment of

large forts with many soldiers. Its many bases had all been acquired with the permission of Indian rulers; none had been acquired by force. There had been a few spats caused by overzealous Company or Indian officials, but generally these had been satisfactorily resolved. The fact was that both parties wanted to make money. The Indians were as keen as the English to expand trade, customs duties and mutual profit. There was no advantage to be gained by aggression.

हालांकि, ये सभी कठिनाइयाँ अस्थायी थीं – फ्रांस के साथ युद्ध समाप्त हो गया; नई कंपनी का विलय हो गया। जैसे ही यूनाइटेड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ इंग्लैंड ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडीज – जिसे आम तौर पर ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम से जाना जाता था – ने नई शताब्दी में प्रवेश किया, यह अपने व्यापार और मुनाफे को बढ़ाने के लिए एक बेहतरीन स्थिति में थी। इसने 3,000 निवेशकों को शेयर जारी करके 30 लाख पाउंड से अधिक की राशि जुटाई थी। अल्पकालिक बांडों से 60 लाख पाउंड की अतिरिक्त पूंजी प्राप्त हुई। यह इंग्लैंड में प्रति वर्ष पांच लाख पाउंड से अधिक मूल्य का माल आयात कर रही थी। इसने पूरे भारत में व्यापारिक चौकियों का एक जाल स्थापित किया था। कुल मिलाकर, इसने सर थॉमस रो की सलाह का पालन करते हुए युद्धों या बड़ी संख्या में सैनिकों वाले विशाल किलों की स्थापना से परहेज किया था। इसके सभी ठिकाने भारतीय शासकों की अनुमति से प्राप्त किए गए थे; कोई भी जबरदस्ती हासिल नहीं किया गया था। कंपनी या भारतीय अधिकारियों के कुछ अति उत्साही प्रयासों के कारण कुछ विवाद हुए थे, लेकिन आम तौर पर इन्हें संतोषजनक ढंग से सुलझा लिया गया था। असल बात यह थी कि दोनों पक्ष पैसा कमाना चाहते थे। भारतीय भी अंग्रेजों की तरह ही व्यापार, सीमा शुल्क और आपसी लाभ बढ़ाने के लिए उत्सुक थे। आक्रामकता से कोई लाभ नहीं मिलने वाला था।

The Company was also benefiting from its policy of religious tolerance. In contrast to the Portuguese, the Company had gone to considerable lengths to achieve religious harmony. At Surat they had prohibited the display of any images in their chapel that might offend the Muslims. At Bombay they had

encouraged the settlement of Hindu merchants and weavers. At Madras and Bengal they had attracted Catholic Portuguese and Orthodox Armenian merchants. All these communities had been allowed to worship freely. The Company, in spite of the strict enforcement of Protestant observance on its own senior employees, was happy to coexist with the followers of any religion that boosted its profits.

कंपनी को धार्मिक सहिष्णुता की नीति से भी लाभ हो रहा था। पुर्तगालियों के विपरीत, कंपनी ने धार्मिक सद्भाव बनाए रखने के लिए काफी प्रयास किए थे। सूरत में उन्होंने अपने गिरजाघर में ऐसी किसी भी मूर्ति को प्रदर्शित करने पर रोक लगा दी थी जिससे मुसलमानों की भावनाएं आहत हो सकती थीं। बंबई में उन्होंने हिंदू व्यापारियों और बुनकरों के बसने को प्रोत्साहित किया था। मद्रास और बंगाल में उन्होंने कैथोलिक पुर्तगाली और ऑर्थोडॉक्स अर्मेनियाई व्यापारियों को आकर्षित किया था। इन सभी समुदायों को स्वतंत्र रूप से पूजा-पाठ करने की अनुमति दी गई थी। कंपनी, अपने वरिष्ठ कर्मचारियों पर प्रोटेस्टेंट धर्म के पालन को सख्ती से लागू करने के बावजूद, किसी भी ऐसे धर्म के अनुयायियों के साथ सह-अस्तित्व में रहने के लिए तैयार थी जिससे उसका मुनाफा बढ़ता हो।

All seemed fair as the Company entered the new century. By avoiding the expensive aggression of the Portuguese and the Dutch, the Company had secured the largest share of trade between India and Europe. The strictures of the Company's founders and of the king's ambassador, Sir Thomas Roe, that they confine their activities to peaceful trade had produced great rewards. It was difficult at that time to imagine that the Company might jettison this advice.

नई सदी में प्रवेश करते ही कंपनी के लिए सब कुछ अनुकूल प्रतीत हो रहा था। पुर्तगालियों और डचों के महंगे आक्रमण से बचकर कंपनी ने भारत और यूरोप के बीच व्यापार का सबसे बड़ा हिस्सा हासिल कर लिया था। कंपनी के संस्थापकों और राजा के राजदूत सर थॉमस रो

द्वारा शांतिपूर्ण व्यापार तक ही सीमित रहने के सख्त निर्देशों से कंपनी को भारी लाभ प्राप्त हुआ था। उस समय यह कल्पना करना कठिन था कि कंपनी इस सलाह को नकार सकती है।

At the beginning of the eighteenth century, embezzlement by its own employees was probably the biggest problem the Company had to face. The Company was happy for its men to conduct private trade to supplement their meagre salaries. They were not, however, supposed to compete with the Company in those commodities the Company itself traded in. Moreover, they were not, of course, supposed to use the Company's money to trade on their own account. Many ignored these strictures; William Gyfford was a classic example.

अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में, कंपनी के सामने सबसे बड़ी समस्या शायद अपने ही कर्मचारियों द्वारा धन का गबन करना था। कंपनी अपने कर्मचारियों को उनकी कम तनख्वाहों की पूर्ति के लिए निजी व्यापार करने की अनुमति देती थी। हालांकि, उन्हें उन वस्तुओं के व्यापार में कंपनी के साथ प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति नहीं थी जिनका व्यापार कंपनी स्वयं करती थी। इसके अलावा, उन्हें कंपनी के धन का उपयोग अपने निजी खाते पर व्यापार करने की भी अनुमति नहीं थी। कई लोगों ने इन सख्त नियमों की अवहेलना की; विलियम गिफोर्ड इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण थे।

In 1717 William Gifford was appointed to be the chief factor at Anjengo. Gyfford devoted his energies to making a fortune for himself. Using the Company's money, he bought and sold pepper, a Company monopoly, on his own account. Furthermore, he alienated local merchants by making false entries in account books and by using counterfeit weights. There was also an altercation when his interpreter's mistress threw coloured powder, which was used by Hindus during the festival of Holi, over some Muslim traders.

When one of the traders wounded the woman with his sword, Gyfford had the traders arrested and expelled from the fort. He also insulted them by breaking their swords. This incident provoked a series of skirmishes. Eventually calm was restored, but the resentment against Gyfford simmered on.

1717 में विलियम गिफोर्ड को अंजेंगो का मुख्य फैक्टर नियुक्त किया गया। गिफोर्ड ने अपनी सारी ऊर्जा खुद के लिए धन कमाने में लगा दी। कंपनी के पैसे का इस्तेमाल करते हुए, उसने कंपनी के एकाधिकार वाली काली मिर्च को अपने निजी खाते से खरीदा-बेचा। इसके अलावा, उसने हिसाब-किताब की किताबों में गलत प्रविष्टियाँ करके और नकली बाटों का इस्तेमाल करके स्थानीय व्यापारियों को नाराज़ कर दिया। एक विवाद तब भी हुआ जब उसके दुभाषिए की प्रेमिका ने कुछ मुस्लिम व्यापारियों पर रंगीन पाउडर फेंक दिया, जिसका इस्तेमाल हिंदू होली के त्योहार के दौरान करते हैं। जब एक व्यापारी ने अपनी तलवार से महिला को घायल कर दिया, तो गिफोर्ड ने व्यापारियों को गिरफ्तार करवाकर किले से निकाल दिया। उसने उनकी तलवारें तोड़कर उनका अपमान भी किया। इस घटना ने कई झड़पों को जन्म दिया। अंततः शांति बहाल हुई, लेकिन गिफोर्ड के प्रति असंतोष बढ़ता ही रहा।

The custom of giving annual gifts to the Rani of Attingal had been neglected for several years. Gyfford decided to make amends. On 11 April 1721, bearing seven years' presents, he set off on the four-mile journey up the river to Attingal. It was a large expedition comprising about 120 merchants and soldiers together and 120 porters. A large, seemingly friendly, crowd met them. Gyfford and his men were herded into an enclosure. They found themselves separated from their porters who had foolishly been allowed to carry the ammunition. Gyfford managed to send a note to Anjengo:

अत्तिंगल की रानी को वार्षिक उपहार देने की प्रथा कई वर्षों से उपेक्षित थी। गिफोर्ड ने इसकी भरपाई करने का निश्चय किया। 11 अप्रैल 1721 को, सात वर्षों के उपहार लेकर, वह नदी के किनारे अत्तिंगल तक चार मील की यात्रा पर निकल पड़े। यह एक बड़ा अभियान था जिसमें लगभग 120 व्यापारी और सैनिक तथा 120 कुली शामिल थे। एक विशाल, प्रतीत होता है कि

मैत्रीपूर्ण भीड़ ने उनका स्वागत किया। गिफोर्ड और उनके आदमियों को एक बाड़े में बंद कर दिया गया। उन्होंने खुद को अपने कुलियों से अलग पाया, जिन्हें मूर्खतापूर्वक गोला-बारूद ले जाने की अनुमति दी गई थी। गिफोर्ड किसी तरह अंजेंगो को एक संदेश भेजने में कामयाब रहे:

Captain Sewell,

कैप्टन सेवेल,

We are treacherously dealt with here, therefore keep a very good look-out of any designs on you. Have a good look to your two trankers [palisades]. We hope to be with you tonight. Take care and don't frighten the women; we are in no great danger.

यहां हमारे साथ विश्वासघात किया जा रहा है, इसलिए अपने ऊपर होने वाले किसी भी खतरे से सावधान रहें। अपनी दोनों बाड़ों पर अच्छी तरह नज़र रखें। हमें उम्मीद है कि हम आज रात आपके साथ होंगे। सावधान रहें और महिलाओं को डराएँ नहीं; हमें कोई बड़ा खतरा नहीं है।

Shortly afterwards, the crowd overwhelmed them. Most of the soldiers were killed. The Company's merchants were tortured to death. Gyfford's interpreter died in great agony as he was slowly cut to pieces. Gyfford's tongue was cut out. He was then nailed to a log and floated down the river towards Anjengo.

कुछ ही क्षणों बाद, भीड़ ने उन पर आक्रमण कर दिया। अधिकांश सैनिक मारे गए। कंपनी के व्यापारियों को यातनाएँ देकर मार डाला गया। गिफोर्ड के दुभाषिए की भी भीषण पीड़ा से मृत्यु हो गई, क्योंकि उसे धीरे-धीरे टुकड़ों में काटा जा रहा था। गिफोर्ड की जीभ काट दी गई। फिर उसे एक लकड़ी के लट्ठे पर कीलों से ठोककर अंजेनगो की ओर नदी में बहा दिया गया।

Gyfford's note reached Anjengo and some wounded soldiers followed. There were only three British officers and a gunner in the fort. One of the officers was ill and died soon afterwards. The other two set about plundering the warehouse and treasury. Then spirited their booty away in small boats. Only

an artillery officer, Gunner Ince, remained steadfast. Fortuitously, a boat loaded with cowrie shells from the Maldives had arrived. Ince commandeered it and was able to evacuate the British women, including Gyfford's widow. He then set about preparing the fort for a siege. He moved all of the Company's servants from the outside houses into the fort. They were mainly boys and old men of whom there were 'not twenty fit to hold a firelock'. The warehouse was also outside and Ince moved the food and the contents of the treasury – such as had not been plundered – to within the fort.

गिफोर्ड का संदेश अंजेन्गो तक पहुंचा और कुछ घायल सैनिक भी उसके पीछे-पीछे आ गए। किले में केवल तीन ब्रिटिश अधिकारी और एक तोपची थे। उनमें से एक अधिकारी बीमार था और कुछ ही समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। बाकी दो ने गोदाम और खजाने को लूटना शुरू कर दिया। फिर वे लूटे गए माल को छोटी नावों में भरकर भाग गए। केवल तोपची अधिकारी, तोपची इन्स, ही डटे रहे। संयोगवश, मालदीव से कौड़ियों से लदी एक नाव आ गई थी। इन्स ने उस नाव पर कब्जा कर लिया और गिफोर्ड की विधवा सहित सभी ब्रिटिश महिलाओं को सुरक्षित निकाल लिया। इसके बाद उन्होंने किले को घेराबंदी के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। उन्होंने कंपनी के सभी नौकरों को बाहरी घरों से किले के अंदर स्थानांतरित कर दिया। वे मुख्य रूप से लड़के और बूढ़े पुरुष थे, जिनमें से 'बीस भी बंदूक चलाने लायक नहीं थे'। गोदाम भी बाहर था और इन्स ने भोजन और खजाने की सामग्री - जो लूटी नहीं गई थी - को किले के अंदर स्थानांतरित कर दिया।

When the mob from Attingal arrived, they laid waste to the small town and killed many of its male inhabitants. The women and children were subsequently taken into the fort and were eventually given refuge by the Raja of Quilon. The attackers shot fire arrows into the fort. All its roofs were thatched with palm and these had to be hurriedly stripped to prevent a conflagration. This exposed all inside to the sun at the hottest time of the year. A fortnight into the siege, two small British ships from Cochin delivered some

supplies and seven soldiers. A week later, another fifty-two men from Calicut and Tellicherry were shipped in.

अत्तिंगल से जब भीड़ आई, तो उन्होंने छोटे से कस्बे को तहस-नहस कर दिया और उसके कई पुरुषों को मार डाला। महिलाओं और बच्चों को बाद में किले में ले जाया गया और अंततः किलोन के राजा ने उन्हें शरण दी। हमलावरों ने किले पर आग के तीर चलाए। किले की सभी छतें ताड़ के पत्तों से बनी थीं और आग लगने से बचाने के लिए उन्हें तुरंत हटाना पड़ा। इससे अंदर मौजूद सभी लोग साल के सबसे गर्म समय में धूप के संपर्क में आ गए। घेराबंदी के दो सप्ताह बाद, कोचीन से दो छोटे ब्रिटिश जहाजों ने कुछ आपूर्ति और सात सैनिक पहुंचाए। एक सप्ताह बाद, कालीकट और तेलिचेरी से बावन और सैनिकों को जहाजों द्वारा लाया गया।

On 24 June the attack on the fort was launched. There was a large house set against the factory's wall, which the attackers occupied and then used as a base. Some of the Company's men made forays to dislodge them. At first they were unsuccessful, but finally they managed to hurl grenades through the windows with devastating effects. This completely demoralized the enemy. There were a few more small raids and the blockade was maintained, but there were no more serious attacks.

24 जून को किले पर हमला शुरू किया गया। कारखाने की दीवार से सटा एक बड़ा मकान था, जिस पर हमलावरों ने कब्ज़ा कर लिया और उसे अपना अड्डा बना लिया। कंपनी के कुछ जवानों ने उन्हें खदेड़ने के लिए घुसपैठ की। पहले तो वे असफल रहे, लेकिन अंत में उन्होंने खिड़कियों से ग्रेनेड फेंककर भारी तबाही मचा दी। इससे दुश्मन का मनोबल पूरी तरह टूट गया। कुछ और छोटे-मोटे हमले हुए और घेराबंदी जारी रही, लेकिन कोई और गंभीर हमला नहीं हुआ।

The arrival of the monsoon made it impossible for the Company to send a major relief expedition for several months. In their roofless fort, the defenders of Anjengo were exposed to the torrential rain. Finally, on 17 October, 300 men from Karwar and Surat arrived to lift the siege. Their commander, Mr

Midford, immediately set about emulating Gyfford to make his own fortune – using the Company's money to trade pepper on his own account. However, he died within a year. It was left to his successor to conclude a formal treaty with the Rani of Attingal. This was highly favourable to the Company – the attackers were to be punished and their estates confiscated; the rani would compensate the Company for the affair and the Company would have the exclusive right to the pepper trade in the rani's dominions.

मानसून के आगमन के कारण कंपनी कई महीनों तक कोई बड़ा राहत अभियान नहीं भेज सकी। छतविहीन किले में, अंजेन्गो के रक्षक मूसलाधार बारिश में फंसे रहे। अंततः, 17 अक्टूबर को, कारवार और सूरत से 300 सैनिक घेराबंदी हटाने के लिए पहुंचे। उनके कमांडर, श्री मिडफोर्ड ने तुरंत गिफोर्ड की तरह अपनी किस्मत बनाने का काम शुरू कर दिया - कंपनी के पैसे का इस्तेमाल अपने निजी खाते से काली मिर्च का व्यापार करने में किया। हालांकि, एक साल के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई। उनके उत्तराधिकारी को अत्तिंगल की रानी के साथ एक औपचारिक संधि करने का दायित्व सौंपा गया। यह संधि कंपनी के लिए अत्यंत लाभकारी थी - हमलावरों को दंडित किया जाना था और उनकी संपत्तियां जब्त की जानी थीं; रानी इस मामले के लिए कंपनी को मुआवजा देंगी और कंपनी को रानी के राज्य में काली मिर्च के व्यापार का अनन्य अधिकार प्राप्त होगा।

Perhaps the most interesting person of all those associated with the debacle at Anjengo was William Gyfford's wife, Catherine. Her life, both before and after her escape, was extraordinary.

अंजेन्गो की त्रासदी से जुड़े सभी लोगों में शायद सबसे दिलचस्प व्यक्ति विलियम गिफोर्ड की पत्नी कैथरीन थीं। भागने से पहले और बाद का उनका जीवन असाधारण था।

Born Catherine Cooke, she first landed in India at Karwar on 8 October 1709 when she was only thirteen or fourteen years old. She was with her father, a

captain in the Company's Bengal army, her mother, brother and two younger sisters. They had sailed on the *Loyall Bliss* from England in March and had a difficult voyage. This tough journey had so delayed them that they had missed the south-west monsoon that would have carried them directly to Bengal. Being unable to round the tip of India, and anxious to evade the French who were rumoured to be harassing the British along the west coast, they had sought shelter at the Company factory at Karwar.

कैथरीन कुक के रूप में जन्मीं, वह पहली बार 8 अक्टूबर 1709 को कारवार में भारत पहुंचीं, जब उनकी उम्र केवल तेरह या चौदह वर्ष थी। उनके साथ उनके पिता, जो कंपनी की बंगाल सेना में कप्तान थे, उनकी माता, भाई और दो छोटी बहनें थीं। वे मार्च में इंग्लैंड से लॉयल ब्लिस जहाज से रवाना हुए थे और उनकी यात्रा काफी कठिन रही। इस कठिन यात्रा के कारण उन्हें इतनी देरी हुई कि वे दक्षिण-पश्चिम मानसून से चूक गए, जो उन्हें सीधे बंगाल ले जा सकता था। भारत के दक्षिणी छोर का चक्कर लगाने में असमर्थ होने और फ्रांसीसियों से बचने के लिए, जिनके बारे में अफवाह थी कि वे पश्चिमी तट पर अंग्रेजों को परेशान कर रहे थे, उन्होंने कारवार में कंपनी के कारखाने में शरण ली थी।

The Company's chief, John Harvey, offered hospitality to them and to the ship's officers. He was glad to receive the latest news from England. He was also delighted by the highly unusual arrival of a young unmarried and 'most beautiful' girl. John Harvey had been on the coast for many years. He was old – old enough to be Catherine Cooke's grandfather – and deformed. He was, however, rich. Captain Cooke was poor and he allowed himself to be cajoled into approving of a marriage by the promise of a lavish settlement. He and his wife then persuaded their daughter to comply. Since the captain of the Company's ship was keen to depart, the marriage was rushed through. On 22 October the *Loyall Bliss* sailed away and Catherine was left behind with her aged husband.

कंपनी के प्रमुख जॉन हार्वे ने उनका और जहाज के अधिकारियों का आतिथ्य सत्कार किया। उन्हें इंग्लैंड से ताज़ा ख़बरें पाकर बहुत खुशी हुई। एक युवा, अविवाहित और 'बेहद खूबसूरत' लड़की के अचानक आगमन से भी वे बेहद प्रसन्न थे। जॉन हार्वे कई वर्षों से तट पर रह रहे थे। वे बूढ़े थे - कैथरीन कुक के दादा की उम्र के - और शारीरिक रूप से विकलांग थे। फिर भी, वे धनी थे। कप्तान कुक गरीब थे और उन्होंने एक भव्य विवाह के वादे के झांसे में आकर शादी के लिए सहमति दे दी। इसके बाद उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपनी बेटी को भी राजी कर लिया। चूंकि कंपनी के जहाज के कप्तान को प्रस्थान की जल्दी थी, इसलिए शादी जल्दबाज़ी में संपन्न कराई गई। 22 अक्टूबर को लॉयल ब्लिस जहाज रवाना हो गया और कैथरीन अपने बूढ़े पति के साथ वहीं रह गईं।

The following year, John Harvey began the long process of settling his affairs in India. It was a complicated matter for he had, as was then usual, traded on his own account as well as the Company's and the two accounts were intertwined. Perhaps Catherine assisted her husband with the accounts. Harvey's successor was appointed and in August 1711 the couple went to Bombay.

अगले वर्ष, जॉन हार्वे ने भारत में अपने मामलों को निपटाने की लंबी प्रक्रिया शुरू की। यह एक जटिल मामला था क्योंकि उस समय के रिवाज़ के अनुसार, वे अपने निजी खाते के साथ-साथ कंपनी के खाते से भी व्यापार करते थे और दोनों खाते आपस में जुड़े हुए थे। संभवतः कैथरीन ने खातों के काम में अपने पति की सहायता की थी। हार्वे के उत्तराधिकारी की नियुक्ति हुई और अगस्त 1711 में दंपति बंबई चले गए।

The new chief at Karwar died after only three months in post, long enough for him to embezzle a considerable amount of the Company's money – and another chief was appointed. The Harveys took the opportunity to travel down with him from Bombay to Karwar to sort out some of their accounts. Four months after their arrival, John Harvey died.

कारवार में नए प्रमुख की पदभार संभालने के महज तीन महीने बाद ही मृत्यु हो गई, इस दौरान उन्होंने कंपनी की काफी धनराशि का गबन कर लिया – और एक अन्य प्रमुख की नियुक्ति की गई। हार्वे परिवार ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने कुछ खातों को निपटाने के लिए उनके साथ बॉम्बे से कारवार की यात्रा की। उनके आगमन के चार महीने बाद जॉन हार्वे की मृत्यु हो गई।

The Company then impounded Harvey's assets. This was normal procedure since virtually all their employees were mixing Company trade with their own. It would have been necessary for John Harvey to obtain clearance from the Company to leave India, and the same would be true for his widow. Catherine began to work on the accounts. She also laid claim to John Harvey's estate.

इसके बाद कंपनी ने हार्वे की संपत्ति जब्त कर ली। यह सामान्य प्रक्रिया थी क्योंकि उनके लगभग सभी कर्मचारी कंपनी के कारोबार को अपने निजी कारोबार के साथ मिला रहे थे। जॉन हार्वे को भारत छोड़ने के लिए कंपनी से अनुमति लेना आवश्यक था, और उनकी विधवा के लिए भी यही बात लागू होती। कैथरीन ने हिसाब-किताब का काम शुरू किया। उन्होंने जॉन हार्वे की संपत्ति पर भी अपना दावा जताया।

Two months after Harvey's death, Thomas Chown was sent from Bombay to be a factor at Karwar. Chown had come out on a ship that had been wrecked off Bombay the year before. When the ship went down he had lost all his possessions. At Bombay he had already met Catherine Harvey. Some weeks after his arrival at Karwar he married her.

हार्वे की मृत्यु के दो महीने बाद, थॉमस चॉउन को बॉम्बे से कारवार में फैक्टर के पद पर नियुक्त किया गया। चॉउन एक जहाज से आए थे जो एक साल पहले बॉम्बे के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। जहाज डूबने पर उन्होंने अपनी सारी संपत्ति खो दी थी। बॉम्बे में उनकी मुलाकात कैथरीन हार्वे से हुई थी। कारवार पहुंचने के कुछ सप्ताह बाद उन्होंने उनसे शादी कर ली।

On 3 November 1712, Thomas and Catherine Chown sailed from Karwar for Bombay on the *Anne*, which carried a cargo of pepper and wax, to pursue their claim to Harvey's estate. Catherine was expecting a baby. Because of the danger from 'pirates', they were given an escort of an armed yacht and a frigate. Next day, four ships of the Maratha admiral, Kanhoji Angre, attacked them. The yacht had its masts shot away. Two ships took the *Anne* alongside and, running out of ammunition, it surrendered. During the battle, Thomas Chown's arm was ripped off by a cannon ball. He died in his pregnant wife's arms.

3 नवंबर 1712 को, थॉमस और कैथरीन चॉउन हार्वे की संपत्ति पर अपना दावा पेश करने के लिए काली मिर्च और मोम से लदे जहाज 'ऐन' पर सवार होकर कारवार से बॉम्बे के लिए रवाना हुए। कैथरीन गर्भवती थीं। समुद्री लुटेरों के खतरे को देखते हुए, उन्हें एक सशस्त्र नौका और एक फ्रिगेट का सुरक्षा दस्ता दिया गया था। अगले दिन, मराठा एडमिरल कान्होजी आंग्रे के चार जहाजों ने उन पर हमला कर दिया। नौका के मस्तूल टूट गए। दो जहाजों ने 'ऐन' को घेर लिया और गोला-बारूद खत्म होने पर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। लड़ाई के दौरान, थॉमस चॉउन का हाथ तोप के गोले से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। उनकी मृत्यु अपनी गर्भवती पत्नी की बाहों में हुई।

The captured ships were sequestered. Their crews were taken to Angre's fort at Gheriah. The Europeans, including Catherine Chown, were taken to the Maratha island fortress of Colaba. The Company at Bombay sent a letter to Kanhoji Angre asking for everyone to be repatriated. A month later all the prisoners were returned, except for the ships' officers and Catherine Chown. They were all held for ransom.

पकड़े गए जहाजों को अलग-थलग कर दिया गया। उनके चालक दल को घेरिया स्थित आंग्रे के किले में ले जाया गया। कैथरीन चोवन समेत यूरोपीय लोगों को मराठा द्वीप पर स्थित कोलाबा किले में ले जाया गया। बंबई स्थित कंपनी ने कान्होजी आंग्रे को पत्र भेजकर सभी को

वापस भेजने का अनुरोध किया। एक महीने बाद, जहाजों के अधिकारियों और कैथरीन चोवन को छोड़कर सभी कैदियों को लौटा दिया गया। उन सभी को फिरौती के लिए बंधक बना लिया गया था।

Complicated negotiations then ensued. Angre wanted money and a promise of no retaliatory action against him by the British. Eventually, he got what he wanted. A lieutenant was sent with Rs 30,000, and he returned with all the remaining prisoners on 22 February 1713 – sixteen weeks after their capture. It was reported that Catherine was so poorly clothed that the lieutenant had to 'wrap his clothes around her to cover her nakedness'. She was, however, unbowed. Shortly afterwards she gave birth to a son.

इसके बाद जटिल बातचीत शुरू हुई। आंग्रे को धन और अंग्रेजों द्वारा उसके विरुद्ध किसी भी प्रकार की जवाबी कार्रवाई न करने का आश्वासन चाहिए था। अंततः, उसे अपनी मनचाही चीज़ मिल गई। एक लेफ्टिनेंट को 30,000 रुपये के साथ भेजा गया, और वह 22 फरवरी 1713 को सभी शेष कैदियों के साथ लौट आया - उनकी गिरफ्तारी के सोलह सप्ताह बाद। बताया जाता है कि कैथरीन के कपड़े इतने कम थे कि लेफ्टिनेंट को 'उसके नग्न शरीर को ढकने के लिए अपने कपड़े उसके चारों ओर लपेटने पड़े'। फिर भी, वह झुकी नहीं। कुछ ही समय बाद उसने एक बेटे को जन्म दिया।

There was much sympathy in Bombay for Catherine's plight. The Company advanced her Rs 1,000 and a small monthly living allowance. Her long-term prospects, however, were not good. She had a child and her claim against her first husband's estate was looking weak. It had seemed at first that he had died without making a will – in which case she would have received one-third of his assets. Later, however, it had been reported that he had made a will the year before they had met. This might leave her destitute.

बंबई में कैथरीन की दुर्दशा को लेकर काफी सहानुभूति थी। कंपनी ने उसे 1,000 रुपये और एक छोटा मासिक गुजारा भत्ता दिया। हालांकि, उसके भविष्य की संभावनाएं अच्छी नहीं थीं।

उसका एक बच्चा था और उसके पहले पति की संपत्ति पर उसका दावा कमजोर दिख रहा था। पहले तो ऐसा लग रहा था कि उसकी मृत्यु बिना वसीयत बनाए हुई थी - ऐसी स्थिति में उसे उसकी संपत्ति का एक तिहाई हिस्सा मिलता। लेकिन बाद में यह खबर आई कि उसने उनसे मिलने से एक साल पहले वसीयत बना ली थी। इससे वह बेसहारा हो सकती थी।

On her previous visit to Bombay, Catherine had met a young Company factor, William Gyfford. He now appeared to be a favourite of the governor and had been put in charge of Bombay Market. Catherine married him. She must have been well regarded by the governor too, for his consent was necessary for the marriage. The union had benefits both for Catherine and for William. Catherine's claim on her first husband's estate proceeded apace. John Harvey's will seemed to disappear. It was officially recorded that both of her previous husbands had died intestate. In October she received one-third of Harvey's estate – Rs 70,492. She and her new husband were now well off.

बंबई की अपनी पिछली यात्रा के दौरान, कैथरीन की मुलाकात एक युवा कंपनी एजेंट विलियम गिफोर्ड से हुई थी। वह अब गवर्नर का चहेता प्रतीत होता था और उसे बंबई बाजार का प्रभार सौंपा गया था। कैथरीन ने उससे शादी कर ली। गवर्नर भी कैथरीन को काफी पसंद करते थे, क्योंकि शादी के लिए उनकी सहमति आवश्यक थी। इस विवाह से कैथरीन और विलियम दोनों को लाभ हुआ। कैथरीन का अपने पहले पति की संपत्ति पर दावा तेजी से आगे बढ़ा। जॉन हार्वे की वसीयत मानो गायब हो गई। आधिकारिक तौर पर यह दर्ज किया गया कि उसके दोनों पिछले पतियों की मृत्यु बिना वसीयत बनाए हुई थी। अक्टूबर में उसे हार्वे की संपत्ति का एक तिहाई हिस्सा - 70,492 रुपये प्राप्त हुए। अब वह और उसका नया पति दोनों अच्छी स्थिति में थे।

The following year William Gyfford was made supercargo of a Company ship trading to the Arabian port of Mocha. This gave him plenty of opportunities to make money on his own account in private trade, especially as he now had capital to invest. Three years later he was promoted chief at Anjengo. Four

years after that he reaped the folly of his behaviour at Anjengo and was dead. Catherine, still only in her mid-twenties, was a widow for the third time.

अगले वर्ष विलियम गिफोर्ड को कंपनी के उस जहाज का सुपरकार्गो नियुक्त किया गया जो अरब के मोचा बंदरगाह के लिए व्यापार करता था। इससे उन्हें निजी व्यापार में खुद पैसा कमाने के भरपूर अवसर मिले, खासकर इसलिए कि अब उनके पास निवेश करने के लिए पूंजी थी। तीन साल बाद उन्हें अंजेंगो में प्रमुख के पद पर पदोन्नत किया गया। इसके चार साल बाद अंजेंगो में अपने मूर्खतापूर्ण व्यवहार का उन्हें फल भुगतना पड़ा और उनकी मृत्यु हो गई। कैथरीन, जो अभी केवल पच्चीस वर्ष की ही थीं, तीसरी बार विधवा हो गईं।

The boat that evacuated Catherine from the siege of Anjengo made for Madras – a voyage around the tip of India and up the east coast of at least 500 miles. The journey, at the hottest time of the year, took over a month. She was with the two other British women and six children who had lived at Anjengo. The little boat had been carrying cowry shells that were used in India as small currency. It would have smelled dreadfully and would have been swarming with flies and insects. It must also have been overcrowded and unsanitary. But Catherine had been through worse before and she would have been comforted by the knowledge that she had the foresight to take the Company's account books with her.

अंजेन्गो की घेराबंदी से कैथरीन को निकालने वाली नाव मद्रास के लिए रवाना हुई – भारत के दक्षिणी छोर से होते हुए पूर्वी तट पर कम से कम 500 मील की यह यात्रा थी। साल के सबसे गर्म समय में हुई इस यात्रा में एक महीने से अधिक का समय लगा। वह अंजेन्गो में रहने वाली दो अन्य ब्रिटिश महिलाओं और छह बच्चों के साथ थीं। छोटी नाव में कौड़ी के गोले लदे हुए थे, जिनका इस्तेमाल भारत में छोटी मुद्रा के रूप में किया जाता था। उसमें भयानक बदबू आ रही होगी और मक्खियों व कीड़ों का झुंड होगा। वह नाव भीड़भाड़ वाली और अस्वच्छ भी रही होगी। लेकिन कैथरीन ने इससे भी बदतर हालात देखे थे और उन्हें इस बात से तसल्ली मिली होगी कि उन्होंने दूरदर्शिता दिखाते हुए कंपनी के खाते-बही अपने साथ ले लिए थे।

Catherine reached Madras on 17 May 1721. She then fended off the Company's repeated demands for the return of the Anjengo accounts. Meanwhile, she received a letter from Lieutenant Lapthorne at Anjengo whom she had appointed as her agent:

कैथरीन 17 मई 1721 को मद्रास पहुंचीं। वहां उन्होंने अंजेन्गो खातों की वापसी के लिए कंपनी की बार-बार की मांगों का खंडन किया। इसी बीच, उन्हें अंजेन्गो में तैनात लेफ्टिनेंट लैपथोर्न का एक पत्र मिला, जिन्हें उन्होंने अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था।

Upon examining the Company's treasure, we found in gold & silver not above 2,100£, but Capt. Sewell says he saw an account by invoice that your husband had received by the Bombay fleet ten chests of treasure of the Company's.

कंपनी के खजाने की जांच करने पर, हमें सोने और चांदी में 2,100 पाउंड से अधिक की संपत्ति नहीं मिली, लेकिन कैप्टन सेवेल का कहना है कि उन्होंने एक बिल देखा था जिसमें लिखा था कि आपके पति को बॉम्बे बेड़े द्वारा कंपनी के खजाने के दस बक्से प्राप्त हुए थे।

Catherine decamped to Calcutta to stay with her family. She eventually agreed that some money was owed to the Company and paid them Rs 7,312. Her agent at Madras eventually handed over the Anjengo account books to the Company. They were incomplete. Perhaps some papers had been genuinely lost; perhaps they had been deliberately removed. Whatever the truth, when the Company claimed Rs 50,000 from her, Catherine was able to reply:

कैथरीन अपने परिवार के साथ रहने के लिए कलकत्ता चली गईं। अंततः उन्होंने स्वीकार किया कि कंपनी को कुछ पैसे देने थे और उन्होंने उन्हें 7,312 रुपये का भुगतान किया। मद्रास में उनके एजेंट ने अंततः अंजेंगो के खाते की किताबें कंपनी को सौंप दीं। वे अधूरी थीं। शायद कुछ कागजात सचमुच खो गए थे; शायद उन्हें जानबूझकर हटा दिया गया था। सच्चाई जो भी हो, जब कंपनी ने उनसे 50,000 रुपये मांगे, तो कैथरीन ने जवाब दिया:

I was favoured with yours, which unhappily informed me of advice from the Honble President and Council of Bombay, in relation to a debt which the said

Council did suppose to be due from my deceased husband to the amount of fifty thousand rupees. In which I cannot but think they have used me a little hard in consideration that he met with his fate in performing his duty to his Masters, as his death was sudden and unexpected and all the Company's servants (belonging to the settlement) destroyed in that fatal expedition, so it occasioned a general confusion of affairs, attended with the loss of several papers, which might perhaps been very instrumental in clearing the deceased from this demand.

मुझे आपका पत्र प्राप्त हुआ, जिससे मुझे दुर्भाग्यवश बॉम्बे के माननीय अध्यक्ष और परिषद की सलाह मिली, जो मेरे दिवंगत पति पर पचास हजार रुपये के बकाया होने के संबंध में थी। मुझे लगता है कि उन्होंने मेरे साथ कुछ अनुचित व्यवहार किया है, क्योंकि उनकी मृत्यु अपने स्वामी के प्रति कर्तव्य निभाते हुए हुई। उनकी मृत्यु अचानक और अप्रत्याशित थी, और उस घातक अभियान में कंपनी के सभी कर्मचारी (जो उस बस्ती से संबंधित थे) मारे गए, जिससे व्यापक अव्यवस्था फैल गई और कई कागजात खो गए, जो शायद मृतक को इस दावे से मुक्त कराने में सहायक हो सकते थे।

I have now gentlemen nothing to add, but to beg the favour of your Honble &ct to consider a little the vast complication of misfortune I have laboured under, and I cannot but hope from your candour and equity, that the hard circumstances of an unfortunate widow, and orphan, will draw from you a just and favourable representation of this affair to the Honble company in behalf of

महोदय, अब मुझे कुछ और कहना नहीं है, बस आपसे निवेदन है कि आप मेरी विपत्ति की व्यापक जटिलता पर थोड़ा विचार करें। मैं आपकी निष्पक्षता और न्यायसंगतता से आशा करती हूँ कि एक दुर्भाग्यशाली विधवा और अनाथ की कठिन परिस्थितियों को देखते हुए, आप माननीय कंपनी के समक्ष इस मामले का उचित और अनुकूल प्रतिनिधित्व करेंगे।

Your humble servant

आपका विनम्र सेवक

Cath^{n} Gyfford

बिल्ली^{n} वहन करने योग्य

Calcutta, 26 April 1722

कलकत्ता, 26 अप्रैल 1722

However much Catherine protested, she was still at the mercy of the Company, for there was the law that she needed their permission to leave the country. Once again, however, Catherine would show her mettle.

कैथरीन चाहे जितना भी विरोध करे, वह कंपनी की दया पर ही निर्भर थी, क्योंकि कानून के अनुसार देश छोड़ने के लिए उसे कंपनी की अनुमति की आवश्यकता थी। हालांकि, एक बार फिर कैथरीन ने अपना साहस दिखाया।

Commodore Thomas Mathews had come to India in command of a Royal Navy squadron charged with suppressing piracy. In fact, he was more interested in making money for himself and for this he traded aggressively. This was probably illegal and certainly against the interests of the Company. With his own warships, however, Mathews could do as he pleased. He and the Company had become bitter enemies. The fiasco at Colaba had increased this enmity. The Company's employees also railed against Mathews, for he was damaging their own, officially approved, private trade.

कमोडोर थॉमस मैथ्यूज समुद्री डाकुओं को दबाने के लिए रॉयल नेवी के एक स्क्वाड्रन की कमान संभालते हुए भारत आए थे। वास्तव में, उनकी दिलचस्पी खुद के लिए पैसा कमाने में अधिक थी और इसी के लिए उन्होंने आक्रामक रूप से व्यापार किया। यह संभवतः गैरकानूनी था और निश्चित रूप से कंपनी के हितों के खिलाफ था। हालांकि, अपने युद्धपोतों के साथ, मैथ्यूज अपनी मनमर्जी कर सकते थे। वे और कंपनी कट्टर दुश्मन बन चुके थे। कोलाबा में हुई विफलता ने इस दुश्मनी को और बढ़ा दिया था। कंपनी के कर्मचारी भी मैथ्यूज

के खिलाफ थे, क्योंकि वे उनके आधिकारिक रूप से स्वीकृत निजी व्यापार को नुकसान पहुंचा रहे थे।

Commodore Mathews arrived off Calcutta aboard his flagship, *Lyon*, in September 1722. Catherine Gyfford immediately became friendly. Mathews was appalled that a young British woman, thrice widowed by Company men – two of them killed while defending the Company's interests – should be so persecuted by the Company. He informed them that he was putting Catherine under the protection of the Crown and that they should cease their harassment.

कमोडोर मैथ्यूज सितंबर 1722 में अपने प्रमुख जहाज लियोन पर सवार होकर कलकत्ता पहुंचे। कैथरीन गिफोर्ड ने तुरंत उनसे मित्रता का भाव दिखाया। मैथ्यूज इस बात से स्तब्ध थे कि एक युवा ब्रिटिश महिला, जो कंपनी के पुरुषों द्वारा तीन बार विधवा हो चुकी थी - जिनमें से दो कंपनी के हितों की रक्षा करते हुए मारे गए थे - को कंपनी द्वारा इस प्रकार सताया जा रहा था। उन्होंने उन्हें सूचित किया कि वे कैथरीन को क्राउन के संरक्षण में सौंप रहे हैं और उन्हें उत्पीड़न बंद कर देना चाहिए।

The Bengal authorities tried to take money from Catherine in another way. Her brother commanded a trading boat, the *Thomas*, in which Catherine had a major share. The Company commenced legal proceedings to seize the boat. They soon received a letter from Mathews advising them that Catherine had sold her share in the boat to him.

बंगाल के अधिकारियों ने कैथरीन से पैसे लेने का एक और तरीका आजमाया। उसके भाई के पास थॉमस नामक एक व्यापारिक नौका थी, जिसमें कैथरीन की बड़ी हिस्सेदारी थी। कंपनी ने नौका को जब्त करने के लिए कानूनी कार्यवाही शुरू की। जल्द ही उन्हें मैथ्यूज का एक पत्र मिला जिसमें बताया गया था कि कैथरीन ने नौका में अपनी हिस्सेदारी उसे बेच दी है।

Ignoring the Company's plaintive appeals, Commodore Mathews sailed for Bombay with Catherine Gyfford. There they shared a house, which caused

much scandal. At Bombay, the Company's demands on Catherine increased for they now had more precise details of William Gyfford's business activities. It seemed that all the goods at Anjengo – pepper, cloth, opium and rice – that supposedly belonged to him had actually been purchased with the Company's money. Once again the Company wrote to Catherine demanding that she not leave India before they were reimbursed. To forestall any attempt by the Company to arrest or confine her, she moved from the town house to Mathews's ship.

कंपनी की बार-बार की गुहारों को अनसुना करते हुए, कमोडोर मैथ्यूज कैथरीन गिफोर्ड के साथ बंबई के लिए रवाना हो गए। वहां उन्होंने एक घर साझा किया, जिससे काफी हंगामा हुआ। बंबई पहुंचने पर, कंपनी ने कैथरीन से और भी मांगें बढ़ा दीं क्योंकि अब उनके पास विलियम गिफोर्ड की व्यावसायिक गतिविधियों के बारे में अधिक सटीक जानकारी थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि अंजेंगो में मौजूद सभी सामान - काली मिर्च, कपड़ा, अफीम और चावल - जो कथित तौर पर उनके थे, वास्तव में कंपनी के पैसे से खरीदे गए थे। कंपनी ने एक बार फिर कैथरीन को पत्र लिखकर मांग की कि जब तक उन्हें भुगतान नहीं मिल जाता, वह भारत न छोड़ें। कंपनी द्वारा उन्हें गिरफ्तार या कैद करने के किसी भी प्रयास को रोकने के लिए, वह शहर के घर से मैथ्यूज के जहाज पर चली गईं।

At the end of 1723, Mathews sailed from Bombay with Catherine aboard. He wanted to do some final business transactions before leaving for England. The two of them stopped off in Karwar and Tellicherry. They also went to Anjengo – which must have caused a stir – so that Catherine could try and reclaim some of her possessions. Her agent, Peter Lapthorne, had written 'I have in my possession nothing more than 2 wiggs & the bolster & bed on which you used to lay.' She plainly did not believe him.

1723 के अंत में, मैथ्यूज कैथरीन को साथ लेकर बॉम्बे से रवाना हुए। इंग्लैंड जाने से पहले वे कुछ अंतिम व्यापारिक सौदे निपटाना चाहते थे। दोनों कारवार और तेलीचेरी में रुके। वे

अंजेंगो भी गए - जिससे काफी हलचल मच गई होगी - ताकि कैथरीन अपनी कुछ संपत्ति वापस ले सकें। उनके एजेंट, पीटर लैपथोर्न ने लिखा था, 'मेरे पास दो चबूतरे और तकिया व पलंग के अलावा कुछ नहीं है, जिस पर आप सोती थीं।' कैथरीन को उनकी बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ।

In July 1724 the *Lyon* reached England. Catherine's dispute with the Company rumbled on. She took the initiative by claiming against them. Whether this was a ploy or whether she really believed she had been ill-used is unclear. She backed out of arbitration. The Company were the first to go to court, but she then counter-sued. Patient research might find out if any final judgment was made, or whether, as often happened in those times, the litigation went on for years without resolution. We do know that at some stage she returned to Madras, where she was given a pension by the Company prior to her death in 1745.

जुलाई 1724 में लियोन जहाज इंग्लैंड पहुंचा। कंपनी के साथ कैथरीन का विवाद जारी रहा। उन्होंने कंपनी के खिलाफ मुकदमा दायर करके पहल की। यह एक चाल थी या उन्हें सचमुच लगता था कि उनके साथ अन्याय हुआ है, यह स्पष्ट नहीं है। उन्होंने मध्यस्थता से इनकार कर दिया। कंपनी ने सबसे पहले अदालत का रुख किया, लेकिन उन्होंने भी पलटवार करते हुए मुकदमा कर दिया। धैर्यपूर्वक शोध करने पर पता चल सकता है कि कोई अंतिम फैसला सुनाया गया था या नहीं, या जैसा कि उन दिनों अक्सर होता था, मुकदमा वर्षों तक बिना किसी समाधान के चलता रहा। हम इतना जरूर जानते हैं कि किसी समय वह मद्रास लौट आईं, जहां 1745 में उनकी मृत्यु से पहले कंपनी ने उन्हें पेंशन दी थी।

After Portugal, the Dutch Republic and England, Denmark – or more correctly Denmark-Norway as their crowns were united – was the next European country to establish a base in India. The Danish East India Company was

incorporated in 1616 at the instigation of some Dutch merchants doing business in Denmark. King Christian IV was the largest investor. Two ships left Copenhagen for the East in 1618, escorted by a tender and two of the king's warships. They first went to Ceylon where they started negotiations with the king of Kandy. These negotiations would eventually prove fruitless, but meanwhile an expedition to the south-eastern coast of India was more successful. In November 1620, the provincial governor of Tanjore granted the Danes a permit to trade duty-free on his territory and build a factory and fort at Tranquebar. Moreover, he barred the Dutch and the English from trade in his domains. Those two countries were too occupied with fighting each other in the Far East to intervene.

पुर्तगाल, डच गणराज्य और इंग्लैंड के बाद, डेनमार्क - या अधिक सटीक रूप से डेनमार्क-नॉर्वे, क्योंकि उनके राज्य संयुक्त थे - भारत में अपना आधार स्थापित करने वाला अगला यूरोपीय देश था। डेनमार्क में व्यापार करने वाले कुछ डच व्यापारियों के आग्रह पर 1616 में डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। राजा क्रिश्चियन चतुर्थ सबसे बड़े निवेशक थे। 1618 में दो जहाज कोपेनहेगन से पूर्व की ओर रवाना हुए, जिनके साथ एक छोटी नाव और राजा के दो युद्धपोत भी थे। वे सबसे पहले श्रीलंका गए, जहाँ उन्होंने कैंडी के राजा के साथ बातचीत शुरू की। ये बातचीत अंततः निष्फल साबित हुई, लेकिन इस बीच भारत के दक्षिण-पूर्वी तट पर किया गया अभियान अधिक सफल रहा। नवंबर 1620 में, तंजौर के प्रांतीय गवर्नर ने डेनिश लोगों को अपने क्षेत्र में बिना शुल्क के व्यापार करने और ट्रांकेबार में एक कारखाना और किला बनाने की अनुमति दी। इसके अलावा, उन्होंने डचों और अंग्रेजों को अपने क्षेत्र में व्यापार करने से रोक दिया। ये दोनों देश सुदूर पूर्व में आपस में लड़ रहे थे, इसलिए वे हस्तक्षेप करने में असमर्थ रहे।

Roland Grappe, a merchant who had considerable experience with the Dutch East India Company, was left in charge of the Tranquebar factory. A large fort was built, named Dansborg. In 1623 a ship was despatched from Denmark to

Tranquebar. It returned in 1625 with valuable cargo. As a company from a neutral country the Danish company was able to take advantage of the competition between the English and Dutch companies. In addition to this, they were able to undercut the prices offered by those companies as the Danish company received free protection from its king's navy, whereas the Dutch and the English had to finance their own warships. The Danes established factories at Masulipatam and Pondicherry on the south-east coast and at Pipli in Bengal. They also set up bases in the Indonesian archipelago. Not having yet shown a profit, however, the company needed more capital to finance its promising trade. Since Denmark was entering the Thirty Years War against Germany, capital was not available. Nevertheless, the company's Indian bases were able to survive by conducting local trade.

डच ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ काफी अनुभव रखने वाले व्यापारी रोलैंड ग्रैपे को ट्रांकेबार कारखाने का प्रभार सौंपा गया। डैनसबोर्ग नाम का एक विशाल किला बनाया गया। 1623 में डेनमार्क से ट्रांकेबार के लिए एक जहाज भेजा गया। यह जहाज 1625 में मूल्यवान माल लेकर लौटा। एक तटस्थ देश की कंपनी होने के नाते, डेनिश कंपनी अंग्रेजी और डच कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा का लाभ उठाने में सक्षम थी। इसके अलावा, वे उन कंपनियों द्वारा दी जाने वाली कीमतों को कम करने में भी सक्षम थे, क्योंकि डेनिश कंपनी को अपने राजा की नौसेना से मुफ्त सुरक्षा प्राप्त थी, जबकि डच और अंग्रेजी कंपनियों को अपने युद्धपोतों का वित्तपोषण स्वयं करना पड़ता था। डेनिश कंपनी ने दक्षिण-पूर्वी तट पर मसूलीपट्टनम और पांडिचेरी और बंगाल के पिपली में कारखाने स्थापित किए। उन्होंने इंडोनेशियाई द्वीपसमूह में भी ठिकाने बनाए। हालांकि, अभी तक लाभ न होने के कारण, कंपनी को अपने आशाजनक व्यापार को वित्तपोषित करने के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता थी। चूंकि डेनमार्क जर्मनी के खिलाफ तीस वर्षीय युद्ध में प्रवेश कर रहा था, इसलिए पूंजी उपलब्ध नहीं थी। फिर भी, कंपनी के भारतीय ठिकाने स्थानीय व्यापार करके जीवित रहने में सक्षम रहे।

Prospects began to look a bit brighter in the 1630s. However, when the able Roland Grappe departed in 1637 trouble followed. A new leader, Willem Leyel, was not despatched from Denmark until 1639. His ship, the *Christianshavn*, was detained in the Canary Islands and did not arrive in India until September 1643. Meanwhile, the settlement was led by a Dutch merchant, Barrent Pessart. His speculations severely depleted the company's finances. Attempts then followed to sell Tranquebar to the Dutch, but these were unsuccessful. Events in Europe had severely damaged the Danish economy and Dutch merchants managed to increase their shareholding in the Danish East India Company. They marginalized it relative to the Dutch East India Company.

1630 के दशक में हालात कुछ बेहतर होने लगे। हालांकि, 1637 में सक्षम रोलैंड ग्रैपे के चले जाने के बाद मुश्किलें शुरू हो गईं। डेनमार्क से नए नेता विलेम लेयेल को 1639 तक नहीं भेजा जा सका। उनका जहाज, क्रिस्टियनशवन, कैनरी द्वीप समूह में ही रुक गया और सितंबर 1643 तक भारत नहीं पहुँच पाया। इस बीच, बस्ती का नेतृत्व एक डच व्यापारी, बैरेंट पेसार्ट ने किया। उनके सट्टेबाजी के कारण कंपनी की आर्थिक स्थिति बुरी तरह बिगड़ गई। इसके बाद ट्रांकेबार को डचों को बेचने के प्रयास किए गए, लेकिन वे असफल रहे। यूरोप की घटनाओं ने डेनिश अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया था और डच व्यापारियों ने डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा ली। उन्होंने डच ईस्ट इंडिया कंपनी की तुलना में डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी को हाशिए पर धकेल दिया।

When Willem Leyel eventually arrived at Tranquebar, he was briefly shown around the seriously dilapidated fort by Pessart, who told him there was no business to be had locally and suggested they both take their ships north to make up a cargo for the *Christianshavn* to take to Denmark. Pessart put off their departure for two weeks while Leyel remained aboard the *Christianshavn* fretting at the delay. Pessart had time to secretly remove all the

fort's removable assets – including the best guns, the account books and the money – and secrete them aboard his own ship.

जब विलेम लेयेल अंततः ट्रांकेबार पहुंचे, तो पेसार्ट ने उन्हें जीर्ण-शीर्ण अवस्था में स्थित किले का संक्षिप्त दौरा कराया और बताया कि स्थानीय स्तर पर कोई व्यापार नहीं है। उन्होंने सुझाव दिया कि वे दोनों अपने जहाजों को उत्तर की ओर ले जाएं ताकि क्रिस्टियनशवन जहाज के लिए माल लादकर डेनमार्क भेजा जा सके। पेसार्ट ने दो सप्ताह के लिए अपना प्रस्थान टाल दिया, जबकि लेयेल देरी से परेशान होकर क्रिस्टियनशवन जहाज पर ही रुके रहे। पेसार्ट को किले की सभी कीमती वस्तुओं - जिनमें बेहतरीन तोपें, लेखा-पुस्तकें और धन शामिल थे - को गुप्त रूप से निकालकर अपने जहाज पर ले जाने का समय मिल गया।

Leyel and Pessart finally departed north in their own ships. They went to Madras and Masulipatam. Leyel was shocked to discover that Pessart had run up such huge debts in Masulipatam that the company was no longer considered creditworthy. A few days later, some of Pessart's men came secretly in the night to Leyel and told him that Pessart intended to sail off on his own. Leyel decided to arrest Pessart. He was too late, however, for Pessart had already disappeared. Moreover, with the onset of the north-east monsoon it would be months before the *Christianshavn* could return Leyel to Tranquebar. He reached Madras in April 1644 and Tranquebar in June of that year.

लेयेल और पेसार्ट अंततः अपने-अपने जहाजों में उत्तर की ओर रवाना हुए। वे मद्रास और मसूलीपट्टनम गए। लेयेल यह जानकर स्तब्ध रह गए कि पेसार्ट ने मसूलीपट्टनम में इतना भारी कर्ज ले लिया था कि कंपनी अब साख के लायक नहीं रह गई थी। कुछ दिनों बाद, पेसार्ट के कुछ आदमी रात में चुपके से लेयेल के पास आए और उन्हें बताया कि पेसार्ट अकेले ही रवाना होने का इरादा रखता है। लेयेल ने पेसार्ट को गिरफ्तार करने का फैसला किया। हालांकि, तब तक बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि पेसार्ट पहले ही गायब हो चुका था। इसके अलावा, उत्तर-

पूर्वी मानसून के आगमन के साथ, क्रिस्टियनशावन को लेयेल को ट्रांकेबार वापस लाने में कई महीने लग जाते। वे अप्रैल 1644 में मद्रास और उसी वर्ष जून में ट्रांकेबार पहुंचे।

The arrival of the *Christianshavn* at Tranquebar was greeted by a strange silence – no guns fired a salute, and no one came to the beach. A message was then sent to the fort addressed to Jacob van Stackenborg, an old and infirm merchant whom Leyel had met previously, asking for information as to the state of the fort and also for provisions. There was no reply. Another similar letter was then sent, this time addressed to one of the two chaplains. At first there was no reply, but later that day a reply came signed by both van Stackenborg and the chaplain. It stated that they were unaware of any royal decree that allowed the removal of Pessart as leader. No provisions were sent.

ट्रांकेबार में क्रिस्टियनशावन के आगमन पर एक अजीब सन्नाटा पसरा रहा था – किसी ने सलामी के लिए तोपें नहीं दागीं, और कोई भी तट पर नहीं आया। फिर जैकब वैन स्टैकेनबोर्ग, एक बूढ़े और कमजोर व्यापारी, जिनसे लेयल पहले मिल चुके थे, के नाम एक संदेश किले को भेजा गया, जिसमें किले की स्थिति के बारे में जानकारी और रसद की मांग की गई थी। कोई जवाब नहीं आया। फिर एक और ऐसा ही पत्र भेजा गया, इस बार दो पादरियों में से एक के नाम। पहले तो कोई जवाब नहीं आया, लेकिन उसी दिन बाद में वैन स्टैकेनबोर्ग और पादरी दोनों के हस्ताक्षर वाला एक जवाब आया। उसमें लिखा था कि उन्हें किसी ऐसे शाही फरमान की जानकारी नहीं है जिससे पेसार्ट को नेता पद से हटाया जा सके। कोई रसद नहीं भेजी गई।

The *Christianshavn* remained anchored off Tranquebar for four days and then sailed a few miles down the coast to Karikal to take on much-needed provisions. Leyel returned the following week with seventy armed men. The inhabitants of the town outside the fort, whose livelihoods had been damaged by the lack of trade, welcomed him. Together they blockaded the fort. This eventually resulted in the head of the guard emerging to negotiate. Leyel

granted a pardon to those inside the fort who had resisted him and was allowed to enter and assume command.

क्रिश्चियंसहावन जहाज चार दिनों तक ट्रांकेबार के पास लंगर डाले रहा और फिर आवश्यक रसद लेने के लिए तट से कुछ मील दूर कारिकल की ओर रवाना हुआ। लेयेल अगले सप्ताह सत्तर सशस्त्र पुरुषों के साथ लौटा। किले के बाहर स्थित कस्बे के निवासियों ने, जिनकी आजीविका व्यापार ठप होने से प्रभावित हुई थी, उसका स्वागत किया। उन्होंने मिलकर किले की घेराबंदी कर दी। अंततः, पहरेदारों का मुखिया बातचीत के लिए बाहर आया। लेयेल ने किले के अंदर मौजूद उन लोगों को क्षमादान दे दिया जिन्होंने उसका विरोध किया था और उसे अंदर जाकर कमान संभालने की अनुमति मिल गई।

The fort was a sorry sight. Pessart had removed all the serviceable guns as well as all the company's cash, believed to have comprised 20,000 of the silver Spanish dollars known as 'pieces of eight'. Closer examination of doors and window frames revealed them to have been hollowed out by white ants. The moat no longer functioned properly as it was filled with bricks and rubbish.

किले की हालत बेहद दयनीय थी। पेसार्ट ने सभी चालू तोपों के साथ-साथ कंपनी की सारी नकदी भी निकाल ली थी, जिसमें कथित तौर पर 20,000 चांदी के स्पेनिश डॉलर शामिल थे जिन्हें 'पीस ऑफ एट' के नाम से जाना जाता था। दरवाजों और खिड़कियों के फ्रेमों की बारीकी से जांच करने पर पता चला कि दीमक ने उन्हें खोखला कर दिया था। खाई भी ठीक से काम नहीं कर रही थी क्योंकि वह ईंटों और कचरे से भरी हुई थी।

Leyel was an energetic man with years of experience in the service of the Dutch VOC. He immediately set about importing good wood from further up the coast to renovate the fort. Within a short time the buildings were put into good condition, the moat was cleared of debris and Fort Dansborg was restored to its former glory.

लेयेल एक ऊर्जावान व्यक्ति थे जिन्हें डच वीओसी की सेवा में वर्षों का अनुभव था। उन्होंने किले के जीर्णोद्धार के लिए तट के दूर स्थित इलाकों से अच्छी लकड़ी मंगवाने का काम तुरंत

शुरू कर दिया। थोड़े ही समय में इमारतें अच्छी हालत में आ गईं, खाई से मलबा हटा दिया गया और फोर्ट डान्सबोर्ग को उसकी पुरानी शान वापस मिल गई।

Unfortunately for Leyel, as a consequence of the wars in Europe that Denmark had become embroiled in, the Danes had no spare ships to despatch to India. From 1639 to 1669 no Danish ships left Denmark for Tranquebar. Its inhabitants were left to fend for themselves. Following an incident in Bengal in which some Danish ships had been stranded on the coast and subsequently had their cargoes seized, a few residents of Tranquebar had taken to attacking and plundering Bengal ships. This privateering had become a steady source of income, much to the annoyance of the English and Dutch whom the Mughal authorities lumped together with the Danes.

लेयेल के लिए दुर्भाग्यवश, यूरोप में चल रहे युद्धों के कारण, जिनमें डेनमार्क उलझ गया था, डेनमार्क के पास भारत भेजने के लिए कोई अतिरिक्त जहाज नहीं थे। 1639 से 1669 तक डेनमार्क से कोई भी जहाज ट्रांकेबार के लिए रवाना नहीं हुआ। वहां के निवासियों को अपने हाल पर छोड़ दिया गया था। बंगाल में एक घटना के बाद, जिसमें कुछ डेनिश जहाज तट पर फंस गए थे और बाद में उनका माल जब्त कर लिया गया था, ट्रांकेबार के कुछ निवासियों ने बंगाल के जहाजों पर हमला करके उन्हें लूटना शुरू कर दिया था। यह समुद्री डकैती आय का एक नियमित स्रोत बन गई थी, जिससे अंग्रेजों और डचों को बहुत परेशानी होती थी, जिन्हें मुगल अधिकारी डेनमार्कवासियों के साथ एक ही श्रेणी में रखते थे।

Leyel tried to restrict privateering. In 1648 this provoked a mutiny amongst Leyel's officers. Using the pretext that he was misappropriating the company's money, they imprisoned him and seized the treasury. Leyel's papers were despatched to Denmark together with an indictment against him. When Leyel was released he was put aboard a ship going to Java and given enough money for an onward passage to Denmark. In Copenhagen he was cleared of any wrongdoing and in 1654 the king gave 'our well-beloved Willem Leyel' an

annual grant of foodstuffs. Unfortunately, later that year he died, probably of the plague.

लेयेल ने समुद्री लुटेरों के अवैध व्यापार को रोकने का प्रयास किया। 1648 में इससे लेयेल के अधिकारियों में विद्रोह भड़क गया। कंपनी के धन के दुरुपयोग का बहाना बनाकर, उन्होंने लेयेल को कैद कर लिया और खजाने पर कब्जा कर लिया। लेयेल के कागजात और उनके खिलाफ अभियोग पत्र डेनमार्क भेज दिए गए। रिहा होने पर लेयेल को जावा जाने वाले एक जहाज पर बिठा दिया गया और डेनमार्क जाने के लिए पर्याप्त धन दिया गया। कोपेनहेगन में उन्हें किसी भी प्रकार के अपराध से बरी कर दिया गया और 1654 में राजा ने 'हमारे प्रिय विलेम लेयेल' को खाद्य सामग्री का वार्षिक अनुदान दिया। दुर्भाग्य से, उसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई, संभवतः प्लेग से।

Poul Hansen Kosør became the new leader at Tranquebar. Other Danes also departed. When Kosør died in 1655 the small remaining population of Danes chose Eskild Andersen Kongsbakke to succeed him. Shortly afterwards he became the sole Dane left at Tranquebar.

पॉल हैनसेन कोसोर ट्रांकेबार के नए नेता बने। अन्य डेनिश नागरिक भी वहाँ से चले गए। 1655 में कोसोर की मृत्यु के बाद, शेष बचे डेनिश नागरिकों की छोटी आबादी ने एस्किल्ड एंडरसन कोंग्सबाके को उनका उत्तराधिकारी चुना। कुछ ही समय बाद, वे ट्रांकेबार में बचे एकमात्र डेनिश नागरिक बन गए।

Kongsbakke, an almost illiterate commoner, managed with the help of the local Indians to defend Tranquebar for the next fourteen years. The ruler of Tanjore, incensed that tribute had not been paid, besieged the town several times, but Kongsbakke managed to survive. To better protect the town and its inner fort a wall was built around the whole. Privateering was accelerated and a large cash reserve was amassed from the proceeds. Progress reports were regularly despatched to Copenhagen. These were viewed with some scepticism in Denmark, but when augmented by a verbal report sent via a

Dutch emissary, the Danish government decided to send a frigate to relieve the settlement. In 1669, after a gap of twenty-nine years, this Danish ship finally arrived at Tranquebar. It carried a notice from the king that formally appointed Kongsbakke as governor.

लगभग अनपढ़ आम आदमी कोंग्सबाके ने स्थानीय भारतीयों की मदद से अगले चौदह वर्षों तक ट्रांकेबार की रक्षा की। तंजौर का शासक कर का भुगतान न होने से क्रोधित होकर कई बार शहर को घेर लिया, लेकिन कोंग्सबाके बच निकलने में कामयाब रहा। शहर और उसके भीतरी किले की बेहतर सुरक्षा के लिए चारों ओर एक दीवार बनाई गई। समुद्री लूटपाट तेज कर दी गई और उससे प्राप्त धन से एक बड़ा भंडार जमा किया गया। प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से कोपेनहेगन भेजी जाती थीं। डेनमार्क में इन रिपोर्टों को कुछ संदेह की दृष्टि से देखा जाता था, लेकिन जब एक डच दूत के माध्यम से भेजी गई मौखिक रिपोर्ट से इसकी पुष्टि हुई, तो डेनिश सरकार ने बस्ती की सहायता के लिए एक फ्रिगेट भेजने का फैसला किया। 1669 में, उनतीस वर्षों के अंतराल के बाद, यह डेनिश जहाज अंततः ट्रांकेबार पहुंचा। इसमें राजा का एक नोटिस था जिसमें औपचारिक रूप से कोंग्सबाके को राज्यपाल नियुक्त किया गया था।

In 1670 the Danish government reorganized and refinanced the Danish East India Company. Towards the end of the century, the Danes were able to take advantage of the damage to the Dutch and the English economies wrought by the nine years war (1688–1697) to increase their profitability in India and the East.

1670 में डेनिश सरकार ने डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी का पुनर्गठन और पुनर्वित्तपोषण किया। सदी के अंत तक, डेनिश लोग नौ वर्षीय युद्ध (1688-1697) के कारण डच और अंग्रेजी अर्थव्यवस्थाओं को हुए नुकसान का लाभ उठाकर भारत और पूर्व में अपनी लाभप्रदता बढ़ाने में सक्षम हुए।

Moving into the eighteenth century, the Dutch and the British once again became the dominant European merchants in India and the East. The Danish

company went into decline and was dissolved in 1729 to be reborn as the Asiatic Company in 1732. This company was given a forty-year monopoly on all Danish trade east of the Cape of Good Hope. In 1755, following various payments to the Nawab of Bengal and his local official, the company acquired land a few miles north of Calcutta at Serampore. It was governed by a regent of the Danish Crown, answerable to the company's governor of Tranquebar, and was renamed Frederiksnagore. A considerable trade was developed in textiles and saltpetre.

अठारहवीं शताब्दी में प्रवेश करते ही, डच और ब्रिटिश एक बार फिर भारत और पूर्वी यूरोप में प्रमुख व्यापारी बन गए। डेनिश कंपनी का पतन होने लगा और 1729 में उसका विघटन हो गया, जिसके बाद 1732 में एशियाटिक कंपनी के रूप में उसका पुनर्जन्म हुआ। इस कंपनी को केप ऑफ गुड होप के पूर्व में स्थित सभी डेनिश व्यापार पर चालीस वर्षों का एकाधिकार दिया गया। 1755 में, बंगाल के नवाब और उनके स्थानीय अधिकारी को विभिन्न भुगतान करने के बाद, कंपनी ने कलकत्ता से कुछ मील उत्तर में सेरामपुर में भूमि का अधिग्रहण किया। इस पर डेनिश राजशाही के एक रीजेंट का शासन था, जो कंपनी के ट्रांकेबार के गवर्नर के प्रति जवाबदेह था, और इसका नाम बदलकर फ्रेडरिक्सनागोर कर दिया गया। वस्त्र और शोरा का काफी व्यापार विकसित हुआ।

In 1763, Balasore, on the coast just south of Bengal, became a Danish possession governed from Tranquebar. Its bay was too shallow from which to conduct much trade and it only ever had a small Danish community.

1763 में, बंगाल के ठीक दक्षिण में स्थित तटवर्ती क्षेत्र बालासोर, ट्रांकेबार से शासित एक डेनिश उपनिवेश बन गया। इसकी खाड़ी इतनी उथली थी कि वहाँ से व्यापार करना संभव नहीं था और यहाँ डेनिश समुदाय की संख्या भी बहुत कम थी।

The Asiatic Company also decided to colonize the Nicobar Islands, which were 800 miles east of the tip of India, with a view to plant spices and other crops. They were declared Danish in 1756, named Frederiksøerne and administered

from Tranquebar. The colony had perished miserably by1759. The Danes then invited the Moravian (Herrnhuter) Mission to establish a new colony. This lasted from 1768 to 1787, but did not flourish. The Asiatic Company, dismayed by another failure, withdrew its protection in 1773 and left the missionaries to a miserable fate.

एशियाटिक कंपनी ने भारत के दक्षिणी छोर से 800 मील पूर्व में स्थित निकोबार द्वीप समूह को भी उपनिवेश बनाने का निर्णय लिया, जिसका उद्देश्य मसालों और अन्य फसलों की खेती करना था। 1756 में इन्हें डेनिश घोषित किया गया, इनका नाम फ्रेडरिकसोएर्ने रखा गया और इनका प्रशासन ट्रांकेबार से किया जाता था। 1759 तक यह उपनिवेश बुरी तरह से नष्ट हो गया। इसके बाद डेनिश लोगों ने मोरावियन (हेर्नहुटर) मिशन को एक नया उपनिवेश स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया। यह 1768 से 1787 तक चला, लेकिन फलता-फूलता नहीं रहा। एक और विफलता से निराश होकर, एशियाटिक कंपनी ने 1773 में अपना संरक्षण वापस ले लिया और मिशनरियों को उनके दयनीय भाग्य पर छोड़ दिया।

When the charter of the Asiatic Company came up for renewal in 1772, its monopoly was removed and trade with India opened up to all Danes. The company limped on. In 1777 it was decided that administration of the company's sovereign territories in India – Tranquebar, Serampore and Balasore – would be removed from the company and that they would henceforth be ruled directly by the Danish Crown.

जब 1772 में एशियाटिक कंपनी के चार्टर के नवीनीकरण का समय आया, तो उसका एकाधिकार समाप्त कर दिया गया और भारत के साथ व्यापार सभी डेनिश नागरिकों के लिए खोल दिया गया। कंपनी किसी तरह चलती रही। 1777 में यह निर्णय लिया गया कि भारत में कंपनी के संप्रभु क्षेत्रों - ट्रांकेबार, सेरामपुर और बालासोर - का प्रशासन कंपनी से अलग कर दिया जाएगा और अब से इन पर सीधे डेनिश राजशाही का शासन होगा।

Eight

आठ

THE FRENCH AND THE BRITISH

फ्रांसीसी और ब्रिटिश

TOWARDS CONQUEST

विजय की ओर

From his first visit to India dates the renown of the English arms in the East. Till he appeared, his countrymen were despised as mere pedlars, while the French were revered as a people formed for victory and command. His courage and capacity dissolved the charm.

भारत की अपनी पहली यात्रा से ही पूर्व में अंग्रेजी सेना की प्रसिद्धि का ख्याति का स्रोत शुरू हुआ। उनके आगमन से पहले, उनके देशवासियों को मात्र फेरीवालों के रूप में तिरस्कृत किया जाता था, जबकि फ्रांसीसियों को विजय और नेतृत्व के लिए गठित राष्ट्र के रूप में सम्मानित किया जाता था। उनके साहस और क्षमता ने इस भ्रम को दूर कर दिया।

Thomas Babington Macaulay, *Lord Clive*, 1840

थॉमस बैबिंगटन मैकाले, लॉर्ड क्लाइव, 1840

The Portuguese, the Dutch, the English and the Danes were finally followed into India by the French. It was the French who would precipitate the European conquest of India. When Emperor Aurangzeb died in 1707 there was a battle among his sons for the succession. The Mughal Empire started to disintegrate. Mughal nobles who had been held in check by the central administration became largely autonomous. They fought each other and also had to fight the Marathas and southern Hindus who saw their opportunity. These were ideal conditions for the Europeans to play one side off against the other. The French became very accomplished in these diplomatic manoeuvres.

पुर्तगालियों, डचों, अंग्रेजों और डेनिश लोगों के बाद अंततः फ्रांसीसी भारत में आए। फ्रांसीसियों ने ही भारत पर यूरोपीय विजय की शुरुआत की। जब सम्राट औरंगजेब की 1707 में मृत्यु हुई, तो उनके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष हुआ। मुगल साम्राज्य का विघटन शुरू हो गया। केंद्रीय प्रशासन द्वारा नियंत्रित मुगल सरदारों ने काफी हद तक स्वायत्तता प्राप्त कर ली। वे आपस में लड़ने लगे और उन्हें मराठों और दक्षिण के हिंदुओं से भी लड़ना पड़ा, जिन्होंने इस अवसर का लाभ उठाया। ये परिस्थितियाँ यूरोपियों के लिए एक पक्ष को दूसरे के विरुद्ध भड़काने के लिए आदर्श थीं। फ्रांसीसी इन कूटनीतिक दांव-पेचों में अत्यंत निपुण हो गए।

After the disastrous expedition of 1601, when Francois Pyrard was shipwrecked, a company was set up in 1604, which was granted a monopoly of trade between the East and France for fifteen years. Nothing was achieved. In 1615 it was amalgamated with a newly established company and its privileges confirmed. This company did make two expeditions to the Far East, but then lapsed into inaction. In 1642 Cardinal Richelieu sponsored a new company. This company became bogged down in conflict at Madagascar, where the native people strongly resisted attempts at colonization, and lost its capital.

1601 के उस विनाशकारी अभियान के बाद, जिसमें फ्रांकोइस पायर्ड का जहाज डूब गया था, 1604 में एक कंपनी की स्थापना की गई, जिसे पंद्रह वर्षों के लिए पूर्व और फ्रांस के बीच व्यापार का एकाधिकार दिया गया। लेकिन इससे कोई उपलब्धि हासिल नहीं हुई। 1615 में इसका एक नई स्थापित कंपनी के साथ विलय कर दिया गया और इसके विशेषाधिकारों की पुष्टि की गई। इस कंपनी ने सुदूर पूर्व में दो अभियान तो किए, लेकिन फिर निष्क्रिय हो गई। 1642 में कार्डिनल रिचेल्यू ने एक नई कंपनी को प्रायोजित किया। यह कंपनी मेडागास्कर में

संघर्ष में उलझ गई, जहाँ के मूल निवासियों ने उपनिवेशीकरण के प्रयासों का कड़ा विरोध किया, और अपनी पूंजी खो दी।

In 1664 the French at last established a company that could trade seriously with India. Jean-Baptiste Colbert, finance minister to Louis XIV, sponsored the establishment of a Compagnie des Indes. It was given exclusive right to trade with the East for fifty years. Moreover, any losses incurred during the first ten years of operations would be reimbursed by the government. The state bought 20 per cent of its initial share offering, which made the launch a success. The company initially concentrated its efforts on Madagascar, where another debacle would ensue. There were enough resources, however, to also investigate possibilities in India.

सन् 1664 में फ्रांसीसियों ने अंततः एक ऐसी कंपनी की स्थापना की जो भारत के साथ गंभीरता से व्यापार कर सके। लुई 14 वें के वित्त मंत्री जीन-बैप्टिस्ट कोलबर्ट ने कॉम्पैग्नी डेस इंडेस की स्थापना को प्रायोजित किया। इसे पचास वर्षों के लिए पूर्व के साथ व्यापार करने का अनन्य अधिकार दिया गया। इसके अलावा, संचालन के पहले दस वर्षों के दौरान होने वाले किसी भी नुकसान की भरपाई सरकार द्वारा की जाएगी। सरकार ने इसके प्रारंभिक शेयर ऑफर का 20 प्रतिशत हिस्सा खरीदा, जिससे इसका शुभारंभ सफल रहा। कंपनी ने शुरू में अपना ध्यान मेडागास्कर पर केंद्रित किया, जहाँ उसे एक और असफलता का सामना करना पड़ा। हालाँकि, भारत में संभावनाओं का पता लगाने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध थे।

In 1666 six ships set sail for Madagascar. From Madagascar two of these ships made for Cochin. Afterwards they went north to Surat, where in 1668 was established the first French trading post in India. The enterprise was commanded by the director general of French commerce in India, Francis Caron. He was an experienced trader who had run the Dutch East India Company’s agency in Japan. Valuable cargoes were soon being exported from the Surat factory.

1666 में छह जहाज मेडागास्कर के लिए रवाना हुए। मेडागास्कर से इनमें से दो जहाज कोचीन के लिए रवाना हुए। इसके बाद वे उत्तर की ओर सूरत गए, जहाँ 1668 में भारत में पहली फ्रांसीसी व्यापारिक चौकी स्थापित की गई। इस उद्यम का नेतृत्व भारत में फ्रांसीसी वाणिज्य के महानिदेशक फ्रांसिस कैरन कर रहे थे। वे एक अनुभवी व्यापारी थे जिन्होंने जापान में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की एजेंसी का संचालन किया था। जल्द ही सूरत स्थित कारखाने से मूल्यवान माल का निर्यात होने लगा।

Caron was assisted by an Armenian from Persia, Marcara Avanchinz. He knew India and was despatched to the independent kingdom of Golconda, on the west coast of the country, where he obtained a permit to trade. He also secured permission to construct a trading post at Masulipatam, where the English and Dutch were already established. Perversely, Caron became jealous of this success and denounced Marcara to Colbert. Marcara was fully exonerated, but the incident led to enmity between the two. Destructive conflicts between the leading personalities would become a feature of the French enterprises in India.

कैरोन को फारस के एक अर्मेनियाई नागरिक, मारकारा अवंचिन्ज़ का सहयोग प्राप्त था। वह भारत से परिचित थे और उन्हें देश के पश्चिमी तट पर स्थित स्वतंत्र राज्य गोलकोंडा भेजा गया, जहाँ उन्होंने व्यापार करने का परमिट प्राप्त किया। उन्होंने मसूलीपट्टनम में एक व्यापारिक चौकी बनाने की अनुमति भी प्राप्त की, जहाँ अंग्रेज और डच पहले से ही स्थापित थे। विडंबना यह थी कि कैरोन को इस सफलता से ईर्ष्या होने लगी और उन्होंने मारकारा की शिकायत कोलबर्ट से कर दी। मारकारा पूरी तरह निर्दोष साबित हुए, लेकिन इस घटना के कारण दोनों के बीच शत्रुता उत्पन्न हो गई। प्रमुख व्यक्तियों के बीच विनाशकारी संघर्ष भारत में फ्रांसीसी उद्यमों की एक विशेषता बन गए।

Caron then embarked on a more ambitious project. He persuaded Colbert to back an expedition to Ceylon with the objective of securing a base to enter the spice trade. It was also envisioned that such a base would be fortified, so

giving the French a permanent settlement where they would not be at the mercy of a local ruler. A French fleet was put at Caron's disposal. The king of Kandy intimated that he would support any ousting of the Dutch. In 1672 the French attacked Point de Galle, but were unable to capture it. They had more success at Trincomali, which they captured and began to strengthen. Soon, however, a Dutch fleet arrived. The French ships fled, leaving the garrison unprotected. It was quickly overcome. The French fleet then abandoned Ceylon and made for St Thomé on the east coast of India. St Thomé had a formidable Portuguese fort that, a few years previously, had been taken by the Dutch. The French managed to capture it with only a few casualties.

इसके बाद कैरन ने एक और महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू की। उन्होंने कोलबर्ट को सीलोन में एक अभियान का समर्थन करने के लिए राजी किया, जिसका उद्देश्य मसाला व्यापार में प्रवेश करने के लिए एक आधार स्थापित करना था। यह भी परिकल्पना की गई थी कि ऐसे आधार को किलेबंद किया जाएगा, जिससे फ्रांसीसियों को एक स्थायी बस्ती मिल सके जहाँ वे किसी स्थानीय शासक की दया पर निर्भर न रहें। कैरन के लिए एक फ्रांसीसी बेड़ा उपलब्ध कराया गया। कैंडी के राजा ने संकेत दिया कि वह डचों को खदेड़ने के किसी भी प्रयास का समर्थन करेंगे। 1672 में फ्रांसीसियों ने प्वाइंट डी गैल पर हमला किया, लेकिन वे उस पर कब्जा करने में असमर्थ रहे। उन्हें त्रिंकोमाली में अधिक सफलता मिली, जिस पर उन्होंने कब्जा कर लिया और उसे मजबूत करना शुरू कर दिया। हालाँकि, जल्द ही एक डच बेड़ा आ गया। फ्रांसीसी जहाज भाग गए, जिससे गैरीसन असुरक्षित रह गया। उस पर जल्दी ही कब्जा कर लिया गया। इसके बाद फ्रांसीसी बेड़े ने सीलोन को छोड़ दिया और भारत के पूर्वी तट पर स्थित सेंट थोमे की ओर बढ़ गया। सेंट थोमे में एक दुर्जेय पुर्तगाली किला था, जिसे कुछ साल पहले डचों ने अपने कब्जे में ले लिया था। फ्रांसीसियों ने कुछ ही हताहतों के साथ उस पर कब्जा कर लिया।

The directors of the Compagnie des Indes were not pleased when they learnt of the meagre success achieved by such vast expenditure. They recalled Caron.

Together with the fortune he had accumulated, Caron sailed for Marseilles. As his ship entered the Mediterranean, Caron learnt that the authorities wanted to investigate his finances. He had the ship turn about and make for Lisbon. As it entered the harbour, it hit a rock and sank. The only survivor was one of Caron's sons.

कॉम्पैग्नी डेस इंडेस के निदेशकों को जब इतने बड़े खर्च के बावजूद मिली मामूली सफलता के बारे में पता चला तो वे प्रसन्न नहीं हुए। उन्होंने कैरन को वापस बुला लिया। अपनी संचित संपत्ति के साथ कैरन मार्सिले के लिए रवाना हो गए। जैसे ही उनका जहाज भूमध्य सागर में पहुँचा, कैरन को पता चला कि अधिकारी उनके वित्त की जाँच करना चाहते हैं। उन्होंने जहाज को मोड़कर लिस्बन की ओर जाने का आदेश दिया। बंदरगाह में प्रवेश करते ही वह एक चट्टान से टकराकर डूब गया। कैरन के बेटों में से एक ही एकमात्र जीवित बचा।

In India, the French feared an attempt by the Dutch to recapture St Thomé. They sent François Martin, who had distinguished himself in the engagements at Ceylon, to plead with an official of the Ruler of Bijapur for the grant of some land. The company was allocated a plot on the coast, about 100 miles south of Madras. Martin returned to St Thomé to learn that the Dutch intended to attack. The Dutch had also persuaded the ruler of Golconda to aid them by convincing him that the French were in a dangerously expansionist phase. These allies were able to blockade the fort and force a French capitulation. The French were, however, allowed to leave for a destination of their choosing. Most, including the company's chief officers, went to Surat. François Martin, together with sixty men, marched south to the plot he had recently acquired. He arrived in April 1674 and began to construct a settlement. This became known as Pondicherry.

भारत में, फ्रांसीसियों को डर था कि डच सेंट थोमे पर फिर से कब्ज़ा करने की कोशिश करेंगे। उन्होंने सीलोन की लड़ाइयों में अपनी बहादुरी साबित कर चुके फ्रांस्वा मार्टिन को

बीजापुर के शासक के एक अधिकारी से कुछ ज़मीन देने की गुज़ारिश करने के लिए भेजा। कंपनी को मद्रास से लगभग 100 मील दक्षिण में, तट पर एक ज़मीन का टुकड़ा आवंटित किया गया। मार्टिन सेंट थोमे लौट आए तो उन्हें पता चला कि डच हमला करने की योजना बना रहे हैं। डचों ने गोलकोंडा के शासक को भी यह कहकर अपनी मदद के लिए मना लिया था कि फ्रांसीसी खतरनाक रूप से विस्तारवादी दौर में हैं। इन सहयोगियों ने किले की घेराबंदी कर फ्रांसीसियों को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया। हालाँकि, फ्रांसीसियों को अपनी पसंद के गंतव्य के लिए रवाना होने की अनुमति दे दी गई। कंपनी के मुख्य अधिकारियों सहित अधिकांश लोग सूरत चले गए। फ्रांस्वा मार्टिन, साठ आदमियों के साथ, हाल ही में हासिल की गई ज़मीन की ओर दक्षिण की ओर कूच किया। वे अप्रैल 1674 में वहाँ पहुँचे और एक बस्ती का निर्माण शुरू किया। यह बस्ती बाद में पांडिचेरी के नाम से जानी गई।

By shrewd bargaining with native officials and rulers, François Martin was able to obtain revenue rights to the villages near Pondicherry and was given permission to fortify the town. Martin's soldiers were given land on which to build houses. The colony prospered until 1689, when war broke out again between France and the Dutch Republic. The Dutch were determined to exterminate the settlement at Pondicherry. In 1693 they arrived with a fleet of nineteen ships carrying over 2,000 soldiers. After a twelve-day siege, Martin capitulated. Once again, the French were allowed to march out in honour. This time, however, they had to undertake return to Europe. It seemed that French ambitions on the Coromandel Coast had been permanently extinguished. However, as was to happen so frequently in the eighteenth century, it was events in Europe that would determine what would happen in India.

स्थानीय अधिकारियों और शासकों के साथ चतुराईपूर्ण सौदेबाजी करके, फ्रांस्वा मार्टिन पांडिचेरी के पास के गांवों पर राजस्व अधिकार प्राप्त करने में सफल रहे और उन्हें शहर को किलेबंद करने की अनुमति दी गई। मार्टिन के सैनिकों को घर बनाने के लिए ज़मीन दी गई।

यह बस्ती 1689 तक फली-फूली, जब फ्रांस और डच गणराज्य के बीच फिर से युद्ध छिड़ गया। डच पांडिचेरी की बस्ती को पूरी तरह से नष्ट करने पर तुले हुए थे। 1693 में वे 2,000 से अधिक सैनिकों को लेकर उन्नीस जहाजों के बेड़े के साथ पहुंचे। बारह दिनों की घेराबंदी के बाद, मार्टिन ने आत्मसमर्पण कर दिया। एक बार फिर, फ्रांसीसियों को सम्मान के साथ बाहर निकलने की अनुमति दी गई। हालाँकि, इस बार उन्हें यूरोप लौटना पड़ा। ऐसा लग रहा था कि कोरोमंडल तट पर फ्रांसीसी महत्वाकांक्षाएं हमेशा के लिए समाप्त हो गई हैं। हालाँकि, जैसा कि अठारहवीं शताब्दी में अक्सर होता था, यूरोप में होने वाली घटनाओं ने ही भारत में होने वाली घटनाओं को निर्धारित किया।

Peace came to Europe with the Treaty of Ryswick in 1697. This stipulated that all captured places should be returned. Moreover, in the case of Pondicherry, it stated that the additional fortifications made by the Dutch should be handed over intact. François Martin was accordingly sent back to Pondicherry to assume command again. He was sent 200 regular French troops and some artillery. He was also instructed to further improve the fortifications.

सन् 1697 में राइसविक की संधि के साथ यूरोप में शांति स्थापित हुई। इस संधि में यह निर्धारित किया गया कि सभी कब्जे वाले क्षेत्रों को वापस लौटा दिया जाए। इसके अलावा, पांडिचेरी के मामले में, यह भी कहा गया कि डचों द्वारा निर्मित अतिरिक्त किलेबंदी को भी अक्षुण्ण रूप से सौंप दिया जाए। तदनुसार, फ्रांस्वा मार्टिन को पुनः कमान संभालने के लिए पांडिचेरी वापस भेजा गया। उन्हें 200 नियमित फ्रांसीसी सैनिक और कुछ तोपखाना भेजा गया। उन्हें किलेबंदी को और मजबूत करने का भी निर्देश दिया गया।

Martin drew up an ambitious plan for the development of Pondicherry. Hundreds of new houses were quickly built. In 1701 it was decided to close the unprofitable factory at Surat (leaving behind large debts) and move the company's Indian administration to Pondicherry. Martin was appointed director general of French affairs in India. He built up excellent relations with local rulers and attracted many Indians to take up residence there. He came

from a family with long connections of the French trade with the East. His father owned a spice shop in Paris. Although François Martin was born illegitimate, his father had seen that he was given good business training. François Martin was primarily a businessman, but he had scruples. In 1687 he wrote a note about the slave trade:

मार्टिन ने पांडिचेरी के विकास के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार की। सैकड़ों नए घर शीघ्र ही बनाए गए। 1701 में सूरत में घाटे में चल रहे कारखाने को बंद करने (जिस पर भारी कर्ज था) और कंपनी के भारतीय प्रशासन को पांडिचेरी स्थानांतरित करने का निर्णय लिया गया। मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक नियुक्त किया गया। उन्होंने स्थानीय शासकों के साथ उत्कृष्ट संबंध स्थापित किए और कई भारतीयों को वहां बसने के लिए आकर्षित किया। उनका परिवार पूर्वी देशों के साथ फ्रांसीसी व्यापार से लंबे समय से जुड़ा हुआ था। उनके पिता पेरिस में मसालों की दुकान चलाते थे। हालांकि फ्रांस्वा मार्टिन नाजायज संतान थे, लेकिन उनके पिता ने यह सुनिश्चित किया था कि उन्हें अच्छी व्यावसायिक शिक्षा मिले। फ्रांस्वा मार्टिन मुख्य रूप से एक व्यापारी थे, लेकिन उनमें नैतिक संशय भी था। 1687 में उन्होंने दास व्यापार के बारे में एक टिप्पणी लिखी।

The English and the Danes derive considerable profit from the sale of slaves at Atjeh [Achin in Sumatra]. It was very easy now to obtain slaves on the Coromandel Coast as people were willing to sell themselves or their children into bondage for food. It was estimated that in two years as many as fifteen or twenty thousand had been brought in this way to Atjeh. I was approached by some parties to participate in this trade, but I refused as I felt this to be too demeaning an activity for the Company.

अंग्रेज़ और डेनिश लोग अतजेह [सुमात्रा में अचिन] में दासों की बिक्री से काफी मुनाफा कमाते थे। कोरोमंडल तट पर दास प्राप्त करना अब बहुत आसान हो गया था क्योंकि लोग भोजन के लिए खुद को या अपने बच्चों को गुलामी में बेचने को तैयार थे। अनुमान है कि दो वर्षों में पंद्रह से बीस हजार दासों को इसी तरह अतजेह लाया गया था। कुछ लोगों ने मुझसे

इस व्यापार में भाग लेने का प्रस्ताव रखा, लेकिन मैंने मना कर दिया क्योंकि मुझे लगा कि यह कंपनी के लिए बहुत ही अपमानजनक काम है।

By the time of François Martin's death in 1706, Pondicherry was a prosperous and well-ordered city with a population of 40,000.

1706 में फ्रांकोइस मार्टिन की मृत्यु के समय तक, पांडिचेरी 40,000 की आबादी वाला एक समृद्ध और सुव्यवस्थित शहर था।

Although Pondicherry prospered – mostly by trading with its neighbours in India and the East – the finances of the parent company were precarious. Military escapades had consumed much of its capital. It was unable to find sufficient resources to equip expeditions to trade with India and was reduced to assigning its rights to other French merchants. Nevertheless, when its fifty-year privileges lapsed in 1714, it was able to renew them to 1725. It had, however, no money. For several years no ships went out to India. Pondicherry was left to fend for itself.

हालाँकि पांडिचेरी ने भारत और पूर्वी देशों में अपने पड़ोसी देशों के साथ व्यापार करके समृद्धि हासिल की, फिर भी मूल कंपनी की आर्थिक स्थिति डावाँडोल थी। सैन्य अभियानों में उसकी अधिकांश पूंजी खर्च हो गई थी। भारत के साथ व्यापार करने के लिए अभियानों को तैयार करने हेतु उसके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे और उसे अपने अधिकार अन्य फ्रांसीसी व्यापारियों को सौंपने पड़े। फिर भी, जब 1714 में उसके पचास वर्षों के विशेषाधिकार समाप्त हुए, तो वह उन्हें 1725 तक नवीनीकृत करने में सक्षम रहा। हालाँकि, उसके पास धन नहीं था। कई वर्षों तक भारत के लिए कोई जहाज नहीं रवाना हुआ। पांडिचेरी को अपने हाल पर छोड़ दिया गया था।

Towards the end of the financial chaos that followed the death of Louis XIV in 1715, and the speculative bubble and collapse that ensued, the company was

generously refinanced. Moreover, it had managed to renew its privileges again without any time limit. From 1720 it therefore became known as the Perpetual Company of the Indies. In 1723 it resumed operations, sending out ships laden with merchandise to Pondicherry. By 1730 Pondicherry was sending home annual cargoes worth over Rs 2 million.

सन् 1715 में लुई 14 की मृत्यु के बाद फैली आर्थिक उथल-पुथल और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई सट्टेबाजी की लहर और उसके पतन के अंत में, कंपनी को उदारतापूर्वक पुनर्वित्त प्रदान किया गया। इसके अलावा, इसने बिना किसी समय सीमा के अपने विशेषाधिकारों का नवीनीकरण भी करवा लिया था। इसलिए 1720 से इसे 'परपेचुअल कंपनी ऑफ द इंडीज' के नाम से जाना जाने लगा। 1723 में इसने फिर से परिचालन शुरू किया और माल से लदे जहाज पांडिचेरी को भेजने लगे। 1730 तक पांडिचेरी से प्रतिवर्ष 20 लाख रुपये से अधिक मूल्य का माल भेजा जाने लगा था।

The French were also anxious to expand their sphere of operations. They wanted a share of the important spice trade on the south-west coast. A few miles to the south of the British base at Tellicherry, there was a small town called Maihi, later named Mahé, near the mouth of a river. Rocks made it very difficult to enter this river and the town was thought impregnable. However, a French naval captain, Mahé de La Bourdonnais, devised and led a successful French invasion on a large raft. The French then took control of the estuary and set up a trading post for their Perpetual Company of the Indies in 1725. Naturally, this infuriated the British at Tellicherry, and there were clashes between the militia of the two settlements as they disputed their boundary. Since Britain and France were supposed to be at peace, this alarmed the two governments and instructions were sent out for them to behave amicably. Friendly visits resulted, and ‘much gunpowder was spent in salutes’.

फ्रांसीसी भी अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करने के लिए उत्सुक थे। वे दक्षिण-पश्चिम तट पर होने वाले महत्वपूर्ण मसाला व्यापार में हिस्सा चाहते थे। टेलिचेरी स्थित ब्रिटिश अड्डे से कुछ मील दक्षिण में, नदी के मुहाने के पास माईही नामक एक छोटा सा कस्बा था, जिसका नाम बाद में माहे रखा गया। चट्टानों के कारण नदी में प्रवेश करना बहुत कठिन था और कस्बे को अभेद्य माना जाता था। हालांकि, एक फ्रांसीसी नौसेना कप्तान, माहे डी ला बॉर्डोनाइस ने एक बड़ी नाव पर सवार होकर एक सफल फ्रांसीसी आक्रमण की योजना बनाई और उसका नेतृत्व किया। इसके बाद फ्रांसीसियों ने नदी के मुहाने पर नियंत्रण कर लिया और 1725 में अपनी परपेचुअल कंपनी ऑफ द इंडीज के लिए एक व्यापारिक चौकी स्थापित की। स्वाभाविक रूप से, इससे टेलिचेरी में ब्रिटिश नाराज हो गए और सीमा विवाद के कारण दोनों बस्तियों की सेनाओं के बीच झड़पें हुईं। चूंकि ब्रिटेन और फ्रांस के बीच शांति स्थापित होनी थी, इसलिए इस घटना ने दोनों सरकारों को चिंतित कर दिया और उन्हें सौहार्दपूर्ण व्यवहार करने के निर्देश भेजे गए। इसके परिणामस्वरूप मैत्रीपूर्ण दौरे हुए और 'अभिवादन में बहुत गोलाबारी हुई'।

Significant developments also took place at Chandernagore in Bengal. Chandernagore, on the Hooghly River, had been occupied by some French settlers since 1676. In 1688 the Mughals had officially transferred the settlement to them. It had then been fortified. In 1701 the French government put it under the control of the governor of Pondicherry. Its trade was insignificant until the arrival of Joseph François Dupleix.

बंगाल के चंदननगर में भी महत्वपूर्ण विकास हुए। हुगली नदी पर स्थित चंदननगर पर 1676 से कुछ फ्रांसीसी उपनिवेशी बसे हुए थे। 1688 में मुगलों ने आधिकारिक तौर पर इस बस्ती को अपने अधीन कर लिया था। इसके बाद इसकी किलेबंदी की गई। 1701 में फ्रांसीसी सरकार ने इसे पांडिचेरी के गवर्नर के नियंत्रण में दे दिया। जोसेफ फ्रांकोइस डुप्लेक्स के आगमन तक इसका व्यापार नगण्य था।

Dupleix was the son of a director of the Compagnie des Indes. He went to sea when only seventeen and when only twenty-three his father secured for him the position of first councillor and military commissioner at Pondicherry. This post, the second most important in Pondicherry, he assumed in 1720. He took the lead in expanding trade and traded vigorously and very profitably on his own account. In 1726, however, he had a misunderstanding with the directors and was suspended. He was offered a free passage back home, but chose to stay in Pondicherry while awaiting the outcome of an appeal. Four years later he was cleared of any wrongdoing. In recompense he was sent to Chandernagore as director. He arrived there in 1731.

डुप्लेक्स, कॉम्पैग्नी डेस इंडेस के एक निदेशक के पुत्र थे। सत्रह वर्ष की आयु में ही वे समुद्री यात्रा पर निकल पड़े और तेईस वर्ष की आयु में उनके पिता ने उन्हें पांडिचेरी में प्रथम पार्षद और सैन्य आयुक्त का पद दिलवाया। पांडिचेरी के इस दूसरे सबसे महत्वपूर्ण पद को उन्होंने 1720 में ग्रहण किया। उन्होंने व्यापार विस्तार में अग्रणी भूमिका निभाई और अपने दम पर भरपूर और लाभदायक व्यापार किया। हालाँकि, 1726 में निदेशकों के साथ उनका मतभेद हो गया और उन्हें निलंबित कर दिया गया। उन्हें घर वापसी के लिए निःशुल्क यात्रा की पेशकश की गई, लेकिन उन्होंने अपील के परिणाम की प्रतीक्षा करते हुए पांडिचेरी में ही रहने का विकल्प चुना। चार वर्ष बाद उन्हें किसी भी प्रकार के दोषमुक्त घोषित कर दिया गया। इसके बदले उन्हें चंदननगर में निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया। वे 1731 में वहाँ पहुँचे।

Dupleix put the wealth he had accumulated at Pondicherry to work. He purchased ships, opened up inland trade and induced Indian traders to settle. He did this for the company and, with the approval of the company, on his own account. He made money for the company and added to his own fortune. From being semi-derelict, Chandernagore became a commercial hub. Some ships were loaded directly for France; others for Pondicherry and then to

France. Dozens of other ships carried merchandise to Indian ports, and beyond to Arabia and China. There was a large trade from the interior in saltpetre, which was used in making gunpowder. This was sent on to Europe and many other destinations. Large quantities of cowrie shells were imported into Bengal where they were used as small currency – several thousand making one rupee. Pepper was brought from the Malabar Coast. Coral from the Mediterranean was also in demand. Dupleix also ran a brisk trade in slaves from the interior. Many of these were sent on to Mauritius.

डुप्लेक्स ने पांडिचेरी में जमा की गई अपनी संपत्ति का सदुपयोग किया। उन्होंने जहाज़ खरीदे, आंतरिक व्यापार के द्वार खोले और भारतीय व्यापारियों को वहाँ बसने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह सब कंपनी के लिए और कंपनी की सहमति से अपने निजी खर्च पर किया। उन्होंने कंपनी के लिए धन कमाया और अपनी संपत्ति में भी वृद्धि की। लगभग वीरान पड़े चंदननगर शहर ने एक व्यापारिक केंद्र का रूप धारण कर लिया। कुछ जहाज़ सीधे फ्रांस के लिए माल लादते थे; कुछ पांडिचेरी से होते हुए फ्रांस जाते थे। दर्जनों अन्य जहाज़ भारतीय बंदरगाहों और उससे आगे अरब और चीन तक माल पहुँचाते थे। आंतरिक क्षेत्रों से बारूद बनाने में इस्तेमाल होने वाले सॉल्टपीटर का बड़ा व्यापार होता था। इसे यूरोप और कई अन्य स्थानों पर भेजा जाता था। बड़ी मात्रा में कौड़ी के गोले बंगाल में आयात किए जाते थे, जहाँ इनका इस्तेमाल छोटी मुद्रा के रूप में किया जाता था - कई हज़ार कौड़ी के गोले मिलकर एक रुपया बनाते थे। काली मिर्च मालाबार तट से लाई जाती थी। भूमध्य सागर से मूंगे की भी मांग थी। डुप्लेक्स आंतरिक क्षेत्रों से दासों का भी ज़ोरदार व्यापार करते थे। इनमें से कई को मॉरीशस भेजा जाता था।

While Dupleix at Chandernagore was expanding French trade, a new Governor General at Pondicherry was expanding French political influence. Pierre Benoît Dumas had been a successful governor of the Isle de France and Bourbon – renamed Mauritius and Réunion – until in 1735 when he became director general of French affairs in India. He built on the good relations the

French had already established with the rulers adjacent to Pondicherry. In particular he developed a close friendship with Dost Ali Khan, the Nawab of the Carnatic. Dost Ali, probably anticipating that French power might be useful in the future, obtained permission from the Mughal emperor for the French to produce Mughal coins with the Pondicherry stamp on them. The French took care to mint coins of high quality. These became popular and gave Pondicherry a considerable profit.

चंदननगर में डुप्लेक्स फ्रांसीसी व्यापार का विस्तार कर रहे थे, वहीं पांडिचेरी में नए गवर्नर जनरल फ्रांसीसी राजनीतिक प्रभाव बढ़ा रहे थे। पियरे बेनोइट डुमास आइल डी फ्रांस और बॉर्बन (जिसका नाम बदलकर मॉरीशस और रीयूनियन कर दिया गया था) के सफल गवर्नर रहे थे, और 1735 में वे भारत में फ्रांसीसी मामलों के महानिदेशक बने। उन्होंने पांडिचेरी के आसपास के शासकों के साथ फ्रांसीसियों द्वारा पहले से स्थापित अच्छे संबंधों को और मजबूत किया। विशेष रूप से उन्होंने कर्नाटक के नवाब दोस्त अली खान के साथ घनिष्ठ मित्रता विकसित की। दोस्त अली ने शायद यह अनुमान लगाते हुए कि भविष्य में फ्रांसीसी शक्ति उपयोगी हो सकती है, मुगल सम्राट से फ्रांसीसियों को पांडिचेरी की मुहर वाले मुगल सिक्के बनाने की अनुमति प्राप्त की। फ्रांसीसियों ने उच्च गुणवत्ता वाले सिक्के बनाने का पूरा ध्यान रखा। ये सिक्के लोकप्रिय हुए और पांडिचेरी को काफी लाभ हुआ।

In 1739 the Carnatic was invaded by large army of Marathas. Dost Ali met them in battle but was killed. Five days after the battle, Dost Ali's widow arrived outside Pondicherry, together with an escort of cavalry, a large entourage of relatives and her valuable jewellery. She asked Dumas for sanctuary. Knowing full well that the Marathas might attack Pondicherry if he acceded to her request, Dumas decided that the dishonour of not doing so would affect French interests even more and the gates of the city were thrown open. The widow and her entourage – which included 1,500 cavalry, 300 camels, 200 bullock carts and eight elephants – were welcomed by gun

salutes. Some days later the wife and son of Chanda Sahib, Dost Ali's son-in-law, were also given protection.

1739 में मराठों की विशाल सेना ने कर्नाटक पर आक्रमण किया। दोस्त अली ने उनसे युद्ध किया, लेकिन वे शहीद हो गए। युद्ध के पाँच दिन बाद, दोस्त अली की विधवा घुड़सवारों के एक दल, रिश्तेदारों के एक बड़े समूह और अपने बहुमूल्य आभूषणों के साथ पांडिचेरी के बाहर पहुँचीं। उन्होंने डुमास से शरण मांगी। यह भलीभांति जानते हुए कि यदि उन्होंने उनकी विनती मान ली तो मराठा पांडिचेरी पर हमला कर सकते हैं, डुमास ने निर्णय लिया कि ऐसा न करने से फ्रांसीसी हितों को और भी अधिक ठेस पहुंचेगी और इसलिए शहर के द्वार खोल दिए गए। विधवा और उनके दल - जिसमें 1,500 घुड़सवार, 300 ऊँट, 200 बैलगाड़ियाँ और आठ हाथी शामिल थे - का तोपों की सलामी से स्वागत किया गया। कुछ दिनों बाद दोस्त अली के दामाद चंदा साहब की पत्नी और बेटे को भी सुरक्षा प्रदान की गई।

The Marathas moved a considerable force into the vicinity of Pondicherry. An emissary went to Pondicherry to demand Rs 6 million and an annual tribute. He also demanded the surrender of Chanda Sahib's family and jewels. Dumas politely refused. The envoy was then taken on a tour of Pondicherry's now impressive fortifications. He was also given a gift for the Maratha commander of ten bottles of liqueurs. The commander's wife sampled these and found them very agreeable. Dumas sent another thirty bottles. The Marathas, impressed by Pondicherry's defences and Dumas's hospitality, withdrew.

मराठों ने पुडुचेरी के आसपास एक बड़ी सेना तैनात कर दी। एक दूत पुडुचेरी जाकर 60 लाख रुपये और वार्षिक कर की मांग करने लगा। उसने चंदा साहब के परिवार और उनके गहनों को सौंपने की भी मांग की। दुमास ने विनम्रतापूर्वक इनकार कर दिया। इसके बाद दूत को पुडुचेरी के अब प्रभावशाली किलेबंदी का दौरा कराया गया। उसे मराठा सेनापति के लिए दस बोतल शराब का उपहार भी दिया गया। सेनापति की पत्नी ने इसे चखा और उसे बहुत पसंद आया। दुमास ने तीस और बोतलें भेजीं। पुडुचेरी की रक्षा व्यवस्था और दुमास के आतिथ्य सत्कार से प्रभावित होकर मराठा सेना वापस लौट गई।

In recognition of this French assistance against the Marathas, the Mughal emperor in Delhi gave Dumas the title of nawab with the rights over 4,500 local horsemen to be provided free of any charge. Before he resigned, so as to return to France, Dumas managed to have this title made transferrable to his successor.

मराठों के विरुद्ध फ्रांस की इस सहायता को मान्यता देते हुए, दिल्ली के मुगल सम्राट ने डुमास को नवाब की उपाधि से सम्मानित किया और उन्हें नि:शुल्क 4,500 स्थानीय घुड़सवारों की देखरेख का अधिकार दिया। फ्रांस लौटने के लिए पद छोड़ने से पहले, डुमास ने यह सुनिश्चित कर लिया कि यह उपाधि उनके उत्तराधिकारी को हस्तांतरित हो सके।

Dumas was succeeded by the successful director of Chandernagore, Dupleix. On his arrival at Pondicherry in 1741, Dupleix made sure he was confirmed as a nawab of the Mughal Empire. As a mark of favour, the Mughal Emperor sent a flag and kettledrum from Delhi. Dupleix also had himself installed as a nawab at Chandernagore. He accepted tribute from local nobles of lower rank and generally insisted on the respect due to an imperial officer. He then married the widow of a councillor, Joanna Vincens. Of mixed Portuguese and Indian blood, she had been born and brought up in India and was fluent in several Indian languages. She also had a good knowledge of Indian politics. She and Dupleix made a formidable couple.

डुमास के बाद चंदननगर के सफल निदेशक डुप्लेक्स ने पदभार संभाला। 1741 में पांडिचेरी पहुँचने पर डुप्लेक्स ने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें मुगल साम्राज्य के नवाब के रूप में स्थायी नियुक्ति मिल जाए। कृपा के प्रतीक के रूप में, मुगल सम्राट ने दिल्ली से एक झंडा और ढोल भेजा। डुप्लेक्स ने चंदननगर में भी नवाब के रूप में अपना राज्याभिषेक करवाया। उन्होंने निचले दर्जे के स्थानीय सरदारों से कर स्वीकार किया और एक शाही अधिकारी के रूप में

सम्मान की अपेक्षा रखी। फिर उन्होंने एक पार्षद की विधवा, जोआना विंसेंस से विवाह किया। पुर्तगाली और भारतीय मिश्रित वंश की जोआना का जन्म और पालन-पोषण भारत में हुआ था और वे कई भारतीय भाषाओं में पारंगत थीं। उन्हें भारतीय राजनीति का भी अच्छा ज्ञान था। जोआना और डुप्लेक्स एक शक्तिशाली दंपत्ति थे।

The directorate in France wrote of the probability of there being a war with Britain. They intended to reduce the number of ships coming to India. Perversely, they commanded Dupleix to cut expenditure, especially on fortifications. Dupleix ignored these instructions and proceeded apace with strengthening the walls around Pondicherry. The directors made no objection since Dupleix paid for the work out of his own vast fortune.

फ्रांस स्थित निदेशालय ने ब्रिटेन के साथ युद्ध की संभावना के बारे में लिखा। उनका इरादा भारत आने वाले जहाजों की संख्या कम करने का था। विडंबना यह थी कि उन्होंने डुप्लेक्स को खर्च में कटौती करने का आदेश दिया, विशेष रूप से किलेबंदी पर। डुप्लेक्स ने इन निर्देशों को अनसुना कर दिया और पांडिचेरी के चारों ओर की दीवारों को मजबूत करने का काम तेजी से जारी रखा। निदेशकों ने कोई आपत्ति नहीं जताई क्योंकि डुप्लेक्स ने अपने विशाल धन से इस काम का खर्च उठाया।

Dupleix was also instructed to approach the English East India Company at Madras to suggest, should Britain and France go to war in Europe, that the two nations' settlements in India should remain neutral. The Company at Madras rejected this overture. They had already been told that a British fleet, which had been intercepting French ships going to China, was coming to India to exterminate French trade. Dupleix, who only had one warship at his disposal, decided to appeal to the Nawab of the Carnatic. Mindful of the assistance the French had given to his predecessors and anxious to avoid any disruption of trade, the nawab told the Company in Madras that he would not tolerate any attack by the British on the French in his dominions. Equally, he would not

countenance any attack by the French on the British. Reluctantly, the Company at Madras acquiesced.

डुप्लेक्स को मद्रास स्थित इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी से संपर्क करने का निर्देश दिया गया था ताकि यह सुझाव दिया जा सके कि यदि ब्रिटेन और फ्रांस यूरोप में युद्ध छेड़ते हैं, तो भारत में दोनों देशों की बस्तियाँ तटस्थ रहें। मद्रास स्थित कंपनी ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उन्हें पहले ही सूचित किया जा चुका था कि ब्रिटिश बेड़ा, जो चीन जा रहे फ्रांसीसी जहाजों को रोक रहा था, फ्रांसीसी व्यापार को पूरी तरह से नष्ट करने के लिए भारत आ रहा है। डुप्लेक्स, जिनके पास केवल एक ही युद्धपोत था, ने कर्नाटक के नवाब से अपील करने का निर्णय लिया। अपने पूर्ववर्तियों को फ्रांसीसियों द्वारा दी गई सहायता को ध्यान में रखते हुए और व्यापार में किसी भी प्रकार की बाधा से बचने के लिए चिंतित, नवाब ने मद्रास स्थित कंपनी से कहा कि वह अपने राज्य में फ्रांसीसियों पर अंग्रेजों के किसी भी हमले को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसी प्रकार, वह अंग्रेजों पर फ्रांसीसियों के किसी भी हमले को भी स्वीकार नहीं करेंगे। अनिच्छा से ही सही, मद्रास स्थित कंपनी ने यह बात मान ली।

The British fleet confined itself to attacking the French on the open seas. In 1746 the French sent a fleet of their own into Indian waters. The two fleets met off the south-east coast of India. There was an indecisive encounter. The British, with one of their ships leaking, decided to abandon the fight and left for Ceylon. The French fleet then anchored off Pondicherry. It was commanded by Mahé de La Bourdonnais, the man who had captured Mahé, and followed Dumas as governor of the Isle de France and Bourbon. Dupleix and La Bourdonnais immediately began to plan an attack on the British at Madras.

ब्रिटिश बेड़ा खुले समुद्र में फ्रांसीसियों पर हमला करने तक ही सीमित रहा। 1746 में फ्रांसीसियों ने अपना एक बेड़ा भारतीय जलक्षेत्र में भेजा। दोनों बेड़े भारत के दक्षिण-पूर्वी तट पर आमने-सामने आ गए। यह एक अनिर्णायक मुकाबला था। ब्रिटिश बेड़े के एक जहाज में रिसाव होने के कारण उन्होंने लड़ाई छोड़ने का फैसला किया और सीलोन (श्रीलंका) के लिए

रवाना हो गए। फ्रांसीसी बेड़ा फिर पांडिचेरी के पास लंगर डालकर रुक गया। इस बेड़े की कमान माहे दे ला बॉर्डोनाइस के हाथ में थी, वही व्यक्ति जिसने माहे को बंदी बनाया था और जो डुमास के बाद आइल ऑफ फ्रांस और बॉर्बन का गवर्नर बना था। डुप्लेक्स और ला बॉर्डोनाइस ने तुरंत मद्रास में अंग्रेजों पर हमले की योजना बनाना शुरू कर दिया।

There were arguments between Dupleix and La Bourdonnais, who wanted to wait for reinforcements, over the timing of an assault on Madras. Eventually, La Bourdonnais was persuaded to set sail. He was given a contingent of 500 men from Pondicherry. On 14 May he landed these men together with cannons on the coast twelve miles south of Madras. Next day he landed another 2000 troops, mostly Europeans.

मद्रास पर हमले के समय को लेकर डुप्लेक्स और ला बॉर्डोनाइस के बीच मतभेद थे। ला बॉर्डोनाइस अतिरिक्त सैनिकों के आने का इंतजार करना चाहते थे। अंततः ला बॉर्डोनाइस को जहाज से रवाना होने के लिए राजी कर लिया गया। उन्हें पांडिचेरी से 500 सैनिकों की एक टुकड़ी दी गई। 14 मई को उन्होंने इन सैनिकों और तोपों को मद्रास से बारह मील दक्षिण में तट पर उतारा। अगले दिन उन्होंने लगभग 2000 और सैनिकों को उतारा, जिनमें ज्यादातर यूरोपीय थे।

Madras was thrown into panic. It had never occurred to the Company that the town might be attacked by a powerful European force – a force with modern weapons. The governor, Nicholas Morse, was the very same man who had rejected Dupleix's offer of neutrality. He now remembered the Nawab of the Carnatic's injunction against European wars on his territory. Accordingly, he sent a messenger to the nawab seeking protection. Foolishly, he omitted to send the customary gifts that were normally sent when seeking a favour. The nawab prevaricated. The French began the siege and bombardment of Madras. On 20 May the British made an attempt to buy off the French. This overture

was rejected. The town was heavily bombarded throughout the night, both from land and sea. The next day the British capitulated.

मद्रास में दहशत का माहौल छा गया। कंपनी ने कभी सोचा भी नहीं था कि शहर पर किसी शक्तिशाली यूरोपीय सेना, आधुनिक हथियारों से लैस सेना, द्वारा हमला किया जा सकता है। गवर्नर निकोलस मोर्स वही व्यक्ति थे जिन्होंने डुप्लेक्स के तटस्थता के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। उन्हें अब कर्नाटक के नवाब द्वारा अपने क्षेत्र में यूरोपीय युद्धों के खिलाफ दिए गए आदेश की याद आ गई। तदनुसार, उन्होंने नवाब से सुरक्षा मांगने के लिए एक दूत भेजा। मूर्खता से, उन्होंने वे पारंपरिक उपहार भेजना भूल गए जो आमतौर पर किसी से मदद मांगते समय भेजे जाते थे। नवाब ने टालमटोल किया। फ्रांसीसियों ने मद्रास की घेराबंदी और बमबारी शुरू कर दी। 20 मई को अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को रिश्वत देने का प्रयास किया। इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया। रात भर शहर पर ज़मीन और समुद्र दोनों ओर से भारी बमबारी की गई। अगले दिन अंग्रेजों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

There were protracted negotiations to fix the terms of surrender. La Bourdonnais was inclined to ransom the town and then return it. The British encouraged this magnanimity by giving him a personal gift of £40,000. Dupleix, who wanted complete French domination of that coast, was outraged. Meanwhile, the Nawab of the Carnatic had learnt of the French assault and was also angry. Dupleix, determined that the British should be permanently ousted from Madras, accordingly informed the Nawab that the French had taken over the city on his behalf and would hand it over once the surrender had been finalized.

आत्मसमर्पण की शर्तों को तय करने के लिए लंबी बातचीत चली। ला बॉर्डोनाइस शहर को छुड़ाने और फिर उसे लौटाने के लिए तैयार थे। अंग्रेजों ने उनकी इस उदारता को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें 40,000 पाउंड का व्यक्तिगत उपहार दिया। डुप्लेक्स, जो उस तट पर पूर्ण फ्रांसीसी प्रभुत्व चाहते थे, इस बात से बेहद नाराज थे। इसी बीच, कर्नाटक के नवाब को फ्रांसीसी हमले की खबर मिल गई थी और वे भी क्रोधित थे। डुप्लेक्स, जो मद्रास से अंग्रेजों को

स्थायी रूप से बाहर निकालने के लिए दृढ़ थे, ने नवाब को सूचित किया कि फ्रांसीसियों ने उनकी ओर से शहर पर कब्जा कर लिया है और आत्मसमर्पण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद उसे सौंप देंगे।

Dupleix and La Bourdonnais continued their wrangling. It was perfectly clear that Dupleix had the final authority over French affairs in India, but La Bourdonnais continued to argue that his fleet was independent and under his own control. When Dupleix sent a deputation to implore La Bourdonnais to fall in with his plans to expel the British from Madras, and to insist on his right of command, La Bourdonnais arrested them.

डुप्लेक्स और ला बॉर्डोनाइस के बीच खींचतान जारी रही। यह स्पष्ट था कि भारत में फ्रांसीसी मामलों पर अंतिम अधिकार डुप्लेक्स के पास था, लेकिन ला बॉर्डोनाइस का तर्क था कि उनका बेड़ा स्वतंत्र और उनके नियंत्रण में है। जब डुप्लेक्स ने मद्रास से अंग्रेजों को निकालने की अपनी योजना में ला बॉर्डोनाइस का साथ देने और अपने कमान के अधिकार पर जोर देने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेजा, तो ला बॉर्डोनाइस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

Dupleix realized it would take a year or more to obtain confirmation of his position from France. It looked as though La Bourdonnais might get his way when the weather struck. A huge storm hit his fleet. Of eight ships, four were lost, two so damaged as to be unseaworthy and two were seriously incapacitated. Over 1,200 men were lost. La Bourdonnais decided he must leave Madras for Goa, a neutral port where his ships could be repaired and where he could buy new ones. He left Madras under the control of Dupleix's deputies, with the signed capitulation and the troops from Pondicherry. La Bourdonnais sailed to Pondicherry. He tried to obtain money, guns, men and provisions from Dupleix. As he might have expected, Dupleix refused. La Bourdonnais then limped off to Mauritius to repair his ships. When he finally

returned to France, he was arrested for disobeying orders and imprisoned in the Bastille.

डुप्लेक्स को एहसास हो गया था कि फ्रांस से अपनी स्थिति की पुष्टि प्राप्त करने में एक वर्ष या उससे अधिक समय लगेगा। ऐसा लग रहा था कि ला बॉर्डोनाइस अपनी बात मनवा लेंगे, तभी अचानक मौसम खराब हो गया। एक भयंकर तूफान ने उनके बेड़े को तहस-नहस कर दिया। आठ जहाजों में से चार नष्ट हो गए, दो इतने क्षतिग्रस्त हो गए कि वे चलने लायक नहीं रहे और दो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। 1,200 से अधिक लोग मारे गए। ला बॉर्डोनाइस ने फैसला किया कि उन्हें मद्रास छोड़कर गोवा जाना चाहिए, जो एक तटस्थ बंदरगाह था जहाँ उनके जहाजों की मरम्मत की जा सकती थी और जहाँ वे नए जहाज खरीद सकते थे। उन्होंने हस्ताक्षरित आत्मसमर्पण पत्र और पांडिचेरी से सैनिकों के साथ मद्रास को डुप्लेक्स के प्रतिनिधियों के नियंत्रण में छोड़ दिया। ला बॉर्डोनाइस पांडिचेरी के लिए रवाना हुए। उन्होंने डुप्लेक्स से धन, बंदूकें, सैनिक और रसद प्राप्त करने का प्रयास किया। जैसा कि उन्हें उम्मीद थी, डुप्लेक्स ने इनकार कर दिया। इसके बाद ला बॉर्डोनाइस अपने जहाजों की मरम्मत के लिए मॉरीशस के लिए रवाना हुए। जब वे अंततः फ्रांस लौटे, तो उन्हें आदेशों का उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और बैस्टिल जेल में डाल दिया गया।

Dupleix was now faced with a serious dilemma. He had promised to hand over Madras, after it had surrendered, to the Nawab of the Carnatic. It may be that Dupleix made this offer in good faith. However, if so, he had probably intended to destroy its fortifications first, so as to avoid giving the nawab another powerful base close to Pondicherry. This destruction had been held back by La Bourdonnais's plans for a ransom. The Nawab knew of the capture of Madras. He became agitated when, over a month later, it had still not been handed over to him.

अब डुप्लेक्स एक गंभीर दुविधा में फंस गया था। उसने मद्रास के आत्मसमर्पण के बाद उसे कर्नाटक के नवाब को सौंपने का वादा किया था। हो सकता है कि डुप्लेक्स ने यह प्रस्ताव सद्भावना से दिया हो। लेकिन अगर ऐसा था, तो शायद उसका इरादा पहले उसकी किलेबंदी

को नष्ट करने का था, ताकि नवाब को पांडिचेरी के पास एक और शक्तिशाली अड्डा न मिल सके। ला बॉर्डोनिस की फिरौती की योजना के कारण यह विध्वंस रुका रहा। नवाब को मद्रास पर कब्जे की जानकारी थी। एक महीने से अधिक समय बीत जाने के बाद भी जब मद्रास उसे नहीं सौंपा गया, तो वह व्याकुल हो गया।

The nawab sent 10,000 men – a small proportion of his army – under the command of his son, Mahfuz Khan, to make clear his determination to secure Madras. On the day La Bourdonnais left, they camped outside the city walls. Dupleix realized that to commence the destruction of the fortifications now would only further enrage the nawab. Furthermore, he feared that if the nawab obtained control of the city he might ransom it back to the British. Dupleix sent instructions from Pondicherry that his men must hold on to Madras at all costs, but should not initiate any hostilities towards Mahfuz Khan's army. This was prudent since the French had less than 1,200 troops. The French commander was forced to commence hostilities when Mahfuz Khan cut off Madras's only supply of fresh water. He decided to send a force to recapture the spring.

नवाब ने मद्रास पर कब्ज़ा करने का अपना दृढ़ संकल्प स्पष्ट करने के लिए अपने पुत्र महफूज़ खान की कमान में अपनी सेना के एक छोटे से हिस्से, 10,000 सैनिकों को भेजा। जिस दिन ला बॉर्डोनिस रवाना हुए, उसी दिन उन्होंने शहर की दीवारों के बाहर डेरा डाला। डुप्लेक्स समझ गए थे कि किलेबंदी को तोड़ना नवाब को और भी क्रोधित कर देगा। इसके अलावा, उन्हें डर था कि अगर नवाब ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया तो वह उसे अंग्रेजों को वापस सौंप सकता है। डुप्लेक्स ने पांडिचेरी से निर्देश भेजे कि उनके सैनिकों को हर हाल में मद्रास पर कब्ज़ा बनाए रखना है, लेकिन महफूज़ खान की सेना के विरुद्ध कोई शत्रुतापूर्ण कार्रवाई नहीं करनी है। यह एक समझदारी भरा कदम था क्योंकि फ्रांसीसियों के पास 1,200 से भी कम सैनिक थे। फ्रांसीसी कमांडर को तब शत्रुता शुरू करने के लिए विवश होना पड़ा जब

महफूज़ खान ने मद्रास के ताजे पानी के एकमात्र स्रोत को काट दिया। उन्होंने उस स्रोत को पुनः प्राप्त करने के लिए एक सेना भेजने का निर्णय लिया।

Four hundred men, with two cannon hidden behind them, made towards the spring. Some Mughal cavalry charged towards them. When these came within point-blank range, the French troops parted to reveal their cannon. Their first shots ripped into the Mughal horses. Before the cavalry could regroup, the French fired their cannon again. For the Mughals, such rapid reloading of artillery was a new and unpleasant experience. Several other cannonades followed in quick succession. There were many casualties and the survivors fled.

चार सौ सैनिक, जिनके पीछे दो तोपें छिपी थीं, झरने की ओर बढ़े। कुछ मुगल घुड़सवारों ने उन पर हमला कर दिया। जब वे बिल्कुल करीब आ गए, तो फ्रांसीसी सैनिकों ने अपनी तोपें दिखाने के लिए रास्ता बनाया। उनके पहले ही गोले मुगल घोड़ों पर जा गिरे। घुड़सवारों के फिर से संगठित होने से पहले ही, फ्रांसीसियों ने अपनी तोपों से दोबारा गोले दागे। मुगलों के लिए तोपखाने को इतनी तेजी से लोड करना एक नया और अप्रिय अनुभव था। इसके बाद कई और तोपों के गोले दागे गए। कई लोग हताहत हुए और जो बच गए वे भाग गए।

Meanwhile, Dupleix had decided to despatch some of his soldiers at Pondicherry to the aid of those besieged at Madras. About 1,000 troops marched north. They were under the command of an engineer, not a regular officer, whom Dupleix had chosen for his ability and decisiveness – Louis Paradis. Mahfuz Khan learnt of their approach and moved his huge army a little to the south of Madras on to the bank of a river that it would be necessary for Paradis to cross. Paradis had no artillery. It must have been a daunting sight for him to see the massive force awaiting him on the other side of the river. The river was fordable, however, and Paradis did not hesitate. He led his men across the river and straight into the middle of Mahfuz Khan's

army. They fired their muskets and then charged. The startled Mughals fled. They made for the nearby town of St Thomé. The French followed them. They were able to fire repeated volleys into the troops confined by the narrow streets. The French soldiers at nearby Madras soon joined the action. Mahfuz Khan fled. His army followed in great confusion.

इसी बीच, डुप्लेक्स ने मद्रास में घिरे सैनिकों की सहायता के लिए पांडिचेरी में तैनात अपने कुछ सैनिकों को भेजने का फैसला किया। लगभग 1,000 सैनिक उत्तर की ओर बढ़े। उनकी कमान एक इंजीनियर के हाथ में थी, न कि किसी नियमित अधिकारी के। डुप्लेक्स ने लुई पैराडिस को उनकी योग्यता और निर्णायकता के कारण चुना था। महफूज खान को उनके आने की खबर मिली और उसने अपनी विशाल सेना को मद्रास से थोड़ा दक्षिण में एक नदी के किनारे पर तैनात कर दिया, जिसे पार करना पैराडिस के लिए आवश्यक था। पैराडिस के पास तोपखाना नहीं था। नदी के दूसरी ओर उसका इंतजार कर रही विशाल सेना को देखकर वह भयभीत हो गया होगा। हालांकि, नदी पार करने योग्य थी, और पैराडिस ने जरा भी संकोच नहीं किया। उसने अपने सैनिकों को नदी पार कराया और सीधे महफूज खान की सेना के बीचोंबीच पहुँच गया। उन्होंने अपनी तोपों से गोलियां चलाईं और फिर हमला कर दिया। घबराए हुए मुगल भाग गए। वे पास के सेंट थोमे शहर की ओर भागे। फ्रांसीसी सेना ने उनका पीछा किया। वे संकरी गलियों में फंसे सैनिकों पर लगातार गोलियां बरसाने में सफल रहे। पास ही स्थित मद्रास में मौजूद फ्रांसीसी सैनिक भी जल्द ही युद्ध में शामिल हो गए। महफूज खान भाग गया। उसकी सेना भारी अफरा-तफरी में उसके पीछे भागी।

This extraordinary French victory transformed the relationship between the Indians and the Europeans. Previously, it had never occurred to the Europeans that they might challenge the supremacy of the huge Indian armies. Dupleix and his predecessors had always taken every precaution to placate the Mughals. Now, an extraordinary series of chance circumstances had shown how a relatively small European army, modernly equipped and trained, could defeat a vastly bigger Indian one.

फ्रांस की इस असाधारण जीत ने भारतीयों और यूरोपियों के बीच संबंधों को पूरी तरह बदल दिया। इससे पहले, यूरोपियों ने कभी सोचा भी नहीं था कि वे विशाल भारतीय सेनाओं की सर्वोच्चता को चुनौती दे सकते हैं। डुप्लेक्स और उनके पूर्ववर्तियों ने मुगलों को प्रसन्न रखने के लिए हमेशा हर संभव सावधानी बरती थी। अब, संयोगवश हुई असाधारण घटनाओं ने यह दिखा दिया कि कैसे आधुनिक उपकरणों और प्रशिक्षण से लैस एक अपेक्षाकृत छोटी यूरोपीय सेना, एक विशाल भारतीय सेना को परास्त कर सकती है।

Dupleix was now master of Madras. He made Paradis its military governor. The final terms of surrender for the British were made more stringent than those proposed by La Bourdonnais, but they were still generous. Nicholas Morse and his council were taken as prisoners to Pondicherry. The rest of the British were, on undertaking not to fight against the French, allowed to leave. Some refused to give this assurance and escaped.

अब डुप्लेक्स मद्रास का शासक बन गया था। उसने पैराडिस को वहाँ का सैन्य गवर्नर नियुक्त किया। अंग्रेजों के लिए आत्मसमर्पण की अंतिम शर्तें ला बॉर्डोनेज़ द्वारा प्रस्तावित शर्तों से अधिक कठोर थीं, लेकिन फिर भी उदार थीं। निकोलस मोर्स और उनके साथियों को कैदी बनाकर पांडिचेरी ले जाया गया। शेष अंग्रेजों को फ्रांसीसियों के विरुद्ध न लड़ने का वचन देने पर जाने की अनुमति दी गई। कुछ ने यह वचन देने से इनकार कर दिया और भाग गए।

Fort St David, twelve miles south of Pondicherry, was well fortified. It had now become the East India Company's main base on the eastern coast. A little to the south was the smaller Company fort at Cuddalore. Dupleix decided to take this fort and completely destroy the British on the Coromandel Coast. He summoned Paradis from Madras to take command of a military expedition from Pondicherry. Paradis set off for Pondicherry with 300 soldiers and numerous porters carrying booty. Despite being harassed by the Mughals, he

reached Pondicherry with his force intact. Dupleix now had a considerable army at his disposal.

पांडिचेरी से बारह मील दक्षिण में स्थित फोर्ट सेंट डेविड अच्छी तरह से किलेबंद था। यह अब पूर्वी तट पर ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य अड्डा बन गया था। इससे थोड़ा दक्षिण में कुड्डालोर में कंपनी का एक छोटा किला था। डुप्लेक्स ने इस किले पर कब्जा करने और कोरोमंडल तट पर अंग्रेजों को पूरी तरह से नष्ट करने का फैसला किया। उसने मद्रास से पैराडिस को पांडिचेरी से एक सैन्य अभियान का नेतृत्व करने के लिए बुलाया। पैराडिस 300 सैनिकों और लूट का माल ले जाने वाले कई कुलियों के साथ पांडिचेरी के लिए रवाना हुआ। मुगलों द्वारा लगातार परेशान किए जाने के बावजूद, वह अपनी पूरी सेना के साथ पांडिचेरी पहुँच गया। अब डुप्लेक्स के पास एक विशाल सेना थी।

The British at Fort St David had 200 Europeans and 100 local troops. Dupleix had 900 Europeans, 600 locals and 100 African soldiers. In spite of this overwhelming superiority, however, Duplex had a problem. He wanted Paradis to command the expedition against Fort St David. The military establishment at Pondicherry opposed this. Louis Paradis was merely an engineer and the French army in India was under the command of General du Bury. Du Bury was old and indecisive, but he insisted on his right to lead the expedition. Reluctantly, Dupleix gave way. On 19 December 1746, du Bury marched his troops towards Fort St David.

फोर्ट सेंट डेविड में ब्रिटिश सेना में 200 यूरोपीय और 100 स्थानीय सैनिक थे। वहीं डुप्लेक्स के पास 900 यूरोपीय, 600 स्थानीय और 100 अफ्रीकी सैनिक थे। इतनी भारी संख्या में सैनिकों के बावजूद, डुप्लेक्स के सामने एक समस्या थी। वह फोर्ट सेंट डेविड के खिलाफ अभियान का नेतृत्व पैराडिस को सौंपना चाहता था। पांडिचेरी स्थित सैन्य प्रतिष्ठान ने इसका विरोध किया। लुई पैराडिस केवल एक इंजीनियर थे और भारत में फ्रांसीसी सेना जनरल डु बरी के नेतृत्व में थी। डु बरी उम्रदराज और अनिर्णायक थे, लेकिन उन्होंने अभियान का नेतृत्व

करने के अपने अधिकार पर जोर दिया। अनिच्छा से ही सही, डुप्लेक्स मान गया। 19 दिसंबर 1746 को डु बरी ने अपनी सेना के साथ फोर्ट सेंट डेविड की ओर कूच किया।

The British at Fort St David were determined to resist the French. They had recruited another 1,000 local troops. Moreover, they had mended relations with the Nawab of the Carnatic who was becoming seriously alarmed by the rise of French power. It had been agreed that when the French attacked the British, the nawab would attack the French rear.

फोर्ट सेंट डेविड में ब्रिटिश सेना फ्रांसीसियों का प्रतिरोध करने के लिए दृढ़ संकल्पित थी। उन्होंने 1,000 स्थानीय सैनिकों की भर्ती की थी। इसके अलावा, उन्होंने कर्नाटक के नवाब से संबंध सुधार लिए थे, जो फ्रांसीसी शक्ति के उदय से गंभीर रूप से चिंतित थे। यह सहमति बनी थी कि जब फ्रांसीसी ब्रिटिश सेना पर हमला करेंगे, तो नवाब फ्रांसीसियों के पीछे से हमला करेंगे।

Du Bury's men set up camp in a garden a mile or so from Fort St David. They set about cooking a meal and du Bury neglected to post any sentries. Six thousand cavalry and 3,000 soldiers of the nawab descended on them. The French fled, with the Mughals in pursuit. Fortunately for the French, they managed to cross a river and their artillery were then able to inflict heavy damage on the Mughals. The nawab lost 2,000 men. Both sides then withdrew.

डु बरी के सैनिकों ने फोर्ट सेंट डेविड से लगभग एक मील दूर एक बगीचे में डेरा डाला। वे खाना पकाने लगे और डु बरी ने कोई पहरेदार तैनात नहीं किया। नवाब के छह हज़ार घुड़सवार और तीस हज़ार सैनिक उन पर टूट पड़े। फ्रांसीसी भाग निकले और मुगल उनका पीछा करने लगे। सौभाग्य से फ्रांसीसी एक नदी पार करने में सफल रहे और उनकी तोपों ने मुगलों को भारी नुकसान पहुँचाया। नवाब के बीस हज़ार सैनिक मारे गए। इसके बाद दोनों पक्ष पीछे हट गए।

Dupleix did not abandon his ambitions. He instructed his troops to harass the Mughal forces around the nawab's base at Arcot. He also managed to summon

a small flotilla of warships from the Far East. He then reopened negotiations with the nawab, pointing out how much stronger the French were than the British. The nawab succumbed. He signed a treaty confirming French control over Madras and abandoning his support for the British. Furthermore, Dupleix managed to persuade his own officers that they be led by Paradis.

डुप्लेक्स ने अपनी महत्वाकांक्षाओं को नहीं छोड़ा। उसने अपनी सेना को आर्कोट स्थित नवाब के अड्डे के आसपास मुगल सेनाओं को परेशान करने का आदेश दिया। उसने सुदूर पूर्व से युद्धपोतों का एक छोटा बेड़ा भी मंगवा लिया। फिर उसने नवाब के साथ बातचीत फिर से शुरू की और उसे बताया कि फ्रांसीसी, अंग्रेजों की तुलना में कितने अधिक शक्तिशाली थे। नवाब मान गया। उसने मद्रास पर फ्रांसीसी नियंत्रण की पुष्टि करने वाली संधि पर हस्ताक्षर किए और अंग्रेजों को अपना समर्थन देना छोड़ दिया। इसके अलावा, डुप्लेक्स अपने अधिकारियों को भी यह समझाने में सफल रहा कि उनका नेतृत्व पैराडिस करे।

Paradis marched on Fort St David. In the same garden that Du Bury had abandoned, he set up camp and prepared an attack for the next morning. This was a crucial moment in French history. If the French could overcome the much weaker British, they would end the British presence on the Coromandel Coast and lay the foundations of a French Indian empire. When morning came, however, it brought a nasty surprise. A squadron of British warships from Bengal had arrived. There were ten ships, all heavily armed. They had brought soldiers too.

पैराडिस ने फोर्ट सेंट डेविड की ओर कूच किया। उसी बगीचे में, जिसे डु बरी ने छोड़ दिया था, उसने अपना शिविर लगाया और अगली सुबह के हमले की तैयारी शुरू कर दी। यह फ्रांसीसी इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यदि फ्रांसीसी सेना अपेक्षाकृत कमजोर ब्रिटिश सेना पर विजय प्राप्त कर लेती, तो वे कोरोमंडल तट पर ब्रिटिश उपस्थिति को समाप्त कर देते और एक फ्रांसीसी-भारतीय साम्राज्य की नींव रख देते। लेकिन जब सुबह हुई, तो एक अप्रिय

आश्चर्य सामने आया। बंगाल से ब्रिटिश युद्धपोतों का एक दस्ता आ चुका था। दस जहाज थे, सभी भारी हथियारों से लैस थे। वे अपने साथ सैनिक भी लाए थे।

Paradis immediately realized that he would have to abandon his plans to attack Fort St David. Moreover, a fleet this size would be a threat to Pondicherry too. He hurried back there to offer protection.

पैराडिस को तुरंत एहसास हो गया कि उसे फोर्ट सेंट डेविड पर हमला करने की अपनी योजना छोड़नी पड़ेगी। इसके अलावा, इतने बड़े बेड़े से पांडिचेरी को भी खतरा हो सकता था। वह सुरक्षा प्रदान करने के लिए तुरंत वापस पांडिचेरी चला गया।

The British now temporally had the upper hand. They shipped in troops from the western coast to reinforce the garrison at Fort St David. Meanwhile, Dupleix summoned up a French naval squadron from Mauritius. This managed to land soldiers and supplies for the French at Madras. It then, unbeknown to the British, returned to Mauritius. The British squadron went off in search of the French ships. This enabled Dupleix to make yet another attempt to capture Fort St David. The French plan was to attack the nearby fort at Cuddalore and from there move against Fort St David. The British pretended to evacuate Cuddalore and the French tried to occupy it by night. They were unnerved by formidable resistance and fled in disarray to Pondicherry.

अब ब्रिटिश सेना अस्थायी रूप से हावी हो गई थी। उन्होंने पश्चिमी तट से सैनिकों को भेजकर सेंट डेविड किले की चौकी को मजबूत किया। इसी बीच, डुप्लेक्स ने मॉरीशस से एक फ्रांसीसी नौसैनिक दस्ते को बुलाया। इस दस्ते ने मद्रास में फ्रांसीसियों के लिए सैनिक और रसद उतारने में कामयाबी हासिल की। फिर, ब्रिटिशों की जानकारी के बिना, वह मॉरीशस लौट गया। ब्रिटिश दस्ता फ्रांसीसी जहाजों की तलाश में निकल पड़ा। इससे डुप्लेक्स को सेंट डेविड किले पर कब्जा करने का एक और प्रयास करने का मौका मिल गया। फ्रांसीसियों की योजना पास के कुड्डालोर किले पर हमला करने और वहां से सेंट डेविड किले की ओर बढ़ने की थी। ब्रिटिशों ने कुड्डालोर को खाली करने का नाटक किया और फ्रांसीसियों ने रात में उस

पर कब्जा करने की कोशिश की। लेकिन भयंकर प्रतिरोध से घबराकर वे अव्यवस्था में भागकर पांडिचेरी चले गए।

At Pondicherry, information had been received that the British were sending a fleet to India. Dupleix put Paradis's engineering abilities to good use in strengthening the fortifications. Just beyond the city he erected impressive earthworks.

पांडिचेरी में यह सूचना मिली थी कि अंग्रेज भारत में एक बेड़ा भेज रहे हैं। डुप्लेक्स ने किलेबंदी को मजबूत करने में पैराडिस की इंजीनियरिंग क्षमताओं का भरपूर उपयोग किया। शहर के ठीक बाहर उन्होंने प्रभावशाली मिट्टी के टीले बनवाए।

In Britain the loss of Madras had enraged both the Company and the government. The government decided to send a Royal Navy fleet together with British soldiers to the aid of the Company. Admiral Boscawen set sail in November 1747. He arrived on the Coromandel Coast the following August where he was joined by the squadron from Bengal. In all, the British had amassed thirty warships – the most powerful force ever seen on Indian waters. It landed troops at Fort St David. This brought the garrison there up to 6,000 men, over half of them European.

ब्रिटेन में मद्रास के हाथ से निकल जाने से कंपनी और सरकार दोनों ही बेहद गुस्से में थे। सरकार ने कंपनी की सहायता के लिए ब्रिटिश सैनिकों के साथ एक शाही नौसेना बेड़ा भेजने का फैसला किया। एडमिरल बोस्कावेन नवंबर 1747 में रवाना हुए। वे अगले अगस्त में कोरोमंडल तट पर पहुँचे, जहाँ बंगाल से आया बेड़ा भी उनसे जुड़ गया। कुल मिलाकर, अंग्रेजों ने तीस युद्धपोत जमा कर लिए थे - भारतीय जलक्षेत्र में अब तक की सबसे शक्तिशाली सेना। उन्होंने फोर्ट सेंट डेविड में सैनिकों को उतारा। इससे वहाँ की सेना की संख्या बढ़कर 6,000 हो गई, जिनमें से आधे से अधिक यूरोपीय थे।

Seven hundred men were sent to attack the outworks at Pondicherry. The British were unaware of the great improvements made by Paradis. They had

no scaling ladders. When they were only forty yards away, the French mowed them down. The French then rode out and the British were routed. However, soon afterwards, the French gunpowder store exploded, killing many of their men. The outworks had to be abandoned and the survivors retreated into Pondicherry.

सात सौ सैनिकों को पांडिचेरी की बाहरी चौकियों पर हमला करने के लिए भेजा गया था। ब्रिटिश सैनिक पैराडिस द्वारा किए गए बड़े सुधारों से अनजान थे। उनके पास सीढ़ियाँ भी नहीं थीं। जब वे मात्र चालीस गज की दूरी पर थे, तब फ्रांसीसियों ने उन्हें मार गिराया। इसके बाद फ्रांसीसी सैनिक आगे बढ़े और ब्रिटिश सेना को खदेड़ दिया गया। हालाँकि, कुछ ही समय बाद, फ्रांसीसियों के बारूद भंडार में विस्फोट हो गया, जिससे उनके कई सैनिक मारे गए। बाहरी चौकियों को छोड़ना पड़ा और बचे हुए सैनिक पांडिचेरी लौट गए।

When the main attack on Pondicherry began on 6 September 1748, it was by the largest European force that had ever set foot in India. Admiral Boscawen had command of about 4,000 European and 2,000 Indian soldiers, complete with artillery. A few days into the siege, Paradis made a sortie out to attack a British detachment and was killed. He was an outstanding officer, almost impossible to replace. Dupleix himself, not of course a soldier, took over the command of the military. He proved to be as efficient a soldier as he had been an administrator. The British admiral, in contrast, knew little of land warfare. Under constant fire his men managed, over many days, to push forward to within half a mile of the fort. They then found that a marsh made it impossible to advance further. Boscawen's ships endeavoured to bombard the town, but could not get in close enough to cause serious damage. More disastrously, the rains had arrived, accompanied by fevers and dysentery. On 17 October, after six weeks of fighting that left over 1,000 British dead, Boscawen withdrew his army to Fort St David.

6 सितंबर 1748 को जब पांडिचेरी पर मुख्य हमला शुरू हुआ, तो यह भारत में कदम रखने वाली अब तक की सबसे बड़ी यूरोपीय सेना थी। एडमिरल बोस्कावेन के पास लगभग 4,000 यूरोपीय और 2,000 भारतीय सैनिकों की कमान थी, जिनमें तोपखाना भी शामिल था। घेराबंदी के कुछ दिनों बाद, पैराडिस ने एक ब्रिटिश टुकड़ी पर हमला करने के लिए एक आक्रमण किया और शहीद हो गए। वे एक उत्कृष्ट अधिकारी थे, जिनकी जगह लेना लगभग असंभव था। डुप्लेक्स, जो स्वयं एक सैनिक नहीं थे, ने सेना की कमान संभाली। उन्होंने एक कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ एक कुशल सैनिक के रूप में भी अपनी क्षमता साबित की। इसके विपरीत, ब्रिटिश एडमिरल को जमीनी युद्ध का बहुत कम ज्ञान था। लगातार गोलाबारी के बीच, उनके सैनिक कई दिनों तक संघर्ष करते हुए किले से आधा मील की दूरी तक पहुँचने में कामयाब रहे। फिर उन्होंने पाया कि दलदल के कारण आगे बढ़ना असंभव था। बोस्कावेन के जहाजों ने शहर पर बमबारी करने का प्रयास किया, लेकिन वे गंभीर नुकसान पहुँचाने के लिए पर्याप्त करीब नहीं पहुँच सके। इससे भी बुरी बात यह थी कि बारिश आ चुकी थी, जिसके साथ बुखार और पेचिश भी फैल गई थी। 17 अक्टूबर को, छह सप्ताह तक चले युद्ध के बाद जिसमें 1,000 से अधिक ब्रिटिश सैनिक मारे गए थे, बोस्कावेन ने अपनी सेना को फोर्ट सेंट डेविड में वापस बुला लिया।

Two months after the raising of the siege of Pondicherry, news arrived of impending peace in Europe. In May 1749, details arrived of the Treaty of Aix-la-Chapelle. This forbade any further hostilities between the French and the British in India. It also stipulated that Madras be returned to the British. The war between the British and the French in India had been a complete waste of money and lives.

पांडिचेरी की घेराबंदी हटने के दो महीने बाद, यूरोप में शांति की खबर आई। मई 1749 में, ऐक्स-ला-चैपल संधि का विवरण प्राप्त हुआ। इस संधि के तहत भारत में फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच किसी भी प्रकार की शत्रुता पर रोक लगा दी गई। साथ ही, मद्रास को अंग्रेजों को वापस सौंपने का भी प्रावधान था। भारत में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच का युद्ध धन और जान की पूरी तरह से बर्बादी साबित हुआ था।

It had become clear during the years of conflict that Indian armies, although they had huge numbers of troops, were no match for the new European military. A few years previously the soldiers of the British and French had still been using pikes; now they all had modern muskets and bayonets. They had earlier been using artillery that took several minutes to reload, now in one minute they could fire a dozen times. Now with the advent of peace, both the British and the French companies had considerable armies that they could not use against each other and that were expensive to maintain. It was inevitable that some way would be found to employ them. Perhaps they could be loaned out to Indian rulers or pretenders, to mutual advantage.

संघर्ष के वर्षों के दौरान यह स्पष्ट हो गया था कि भारतीय सेनाएँ, सैनिकों की विशाल संख्या के बावजूद, नई यूरोपीय सेनाओं का मुकाबला नहीं कर सकती थीं। कुछ वर्ष पूर्व तक ब्रिटिश और फ्रांसीसी सैनिक भाले का उपयोग करते थे; अब उनके पास आधुनिक बंदूकें और संगीनें थीं। पहले वे ऐसी तोपों का उपयोग करते थे जिन्हें पुनः लोड करने में कई मिनट लगते थे, अब वे एक मिनट में एक दर्जन बार गोला दाग सकते थे। अब शांति के आगमन के साथ, ब्रिटिश और फ्रांसीसी दोनों कंपनियों के पास बड़ी-बड़ी सेनाएँ थीं जिनका उपयोग वे एक-दूसरे के विरुद्ध नहीं कर सकते थे और जिनका रखरखाव महंगा था। यह अपरिहार्य था कि उन्हें उपयोग में लाने का कोई न कोई तरीका खोजा जाए। शायद उन्हें पारस्परिक लाभ के लिए भारतीय शासकों या दावेदारों को उधार दिया जा सकता था।

The British were the first to try this post-war device. They decided to interfere in the affairs of the princely state of Tanjore. In 1749, Raja Sahuji had been deposed and replaced by Pratab Singh. Sahuji offered to pay all the expenses of an expedition to put himself back on the throne – which, he assured the British, was the desire of a people oppressed by Pratab Singh. He would also give the British the coastal town and adjacent land of Devikota, which lay 120

miles south of Madras. It seemed a generous offer and the British despatched 1,500 troops. When, however, they reached Tanjore territory they found there was no support for Sahuji. Moreover, a formidable army lay in wait. The British decided to abandon any immediate attempt to restore Sahuji but, nevertheless, capture Devikota for themselves. To do this they needed naval support. This was disrupted by a huge storm that sank several ships. Finding Devikota too strong to attack unaided, the expedition returned to Fort St David. A second, much stronger, expedition was then assembled. This was taken south by ship and Devikota was captured. Pratab Singh then agreed to it being controlled by the British. In return, the British promised to abandon and restrain Sahuji.

युद्ध के बाद इस रणनीति को आजमाने वाले पहले व्यक्ति अंग्रेज थे। उन्होंने तंजौर की रियासत के मामलों में हस्तक्षेप करने का फैसला किया। 1749 में राजा साहूजी को पदच्युत कर प्रताप सिंह को उनकी जगह राजा बना दिया गया था। साहूजी ने खुद को फिर से गद्दी पर बिठाने के लिए एक अभियान का सारा खर्च उठाने की पेशकश की – उन्होंने अंग्रेजों को आश्वासन दिया कि प्रताप सिंह द्वारा सताए गए लोगों की यही इच्छा थी। उन्होंने मद्रास से 120 मील दक्षिण में स्थित तटीय शहर और उससे सटी भूमि भी अंग्रेजों को देने का वादा किया। यह एक उदार प्रस्ताव प्रतीत हुआ और अंग्रेजों ने 1,500 सैनिक भेजे। लेकिन जब वे तंजौर पहुंचे तो उन्होंने पाया कि साहूजी को कोई समर्थन नहीं मिल रहा था। इसके अलावा, एक विशाल सेना घात लगाकर बैठी थी। अंग्रेजों ने साहूजी को तुरंत गद्दी पर बिठाने का प्रयास छोड़ दिया, लेकिन फिर भी देविकोटा पर कब्जा करने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्हें नौसैनिक सहायता की आवश्यकता थी। लेकिन एक भयंकर तूफान ने कई जहाजों को डुबो दिया, जिससे उनकी नौसैनिक सहायता बाधित हो गई। देविकोटा पर अकेले हमला करना असंभव पाकर, अभियान फोर्ट सेंट डेविड लौट आया। इसके बाद एक दूसरा, कहीं अधिक शक्तिशाली अभियान दल गठित किया गया। यह दल जहाज द्वारा दक्षिण की ओर गया और देविकोटा पर कब्जा कर लिया गया। प्रताप सिंह ने तब इसे अंग्रेजों के नियंत्रण में लेने पर

सहमति जताई। बदले में, अंग्रेजों ने साहूजी को छोड़ने और उसे नियंत्रित करने का वादा किया।

While the British were preoccupied with Tanjore, the French had more ambitious plans. The Mughal Empire in the south, the Deccan, was nominally under the control of the Nizam. When the Nizam died in 1748, there were two claimants to his throne – his son, Nasir Jang, and his grandson, Muzaffar Jang. In the far south there was the Nawab of the Carnatic, nominally a vassal of the Nizam but actually largely independent, who had a smaller territory around Arcot. The current nawab, Anwar-ud-din, an impostor, was opposed by a member of the legitimate family, Chanda Sahib. However, Chanda Sahib was in no position to take action. He had been captured by the Marathas and was being held at Satara in western India for ransom. Muzaffar Jang met him there and the two agreed to work together against Nasir Jang and the illegitimate Nawab of the Carnatic. Nothing could be done, however, until Chanda Sahib was released.

जब अंग्रेज तंजौर में व्यस्त थे, तब फ्रांसीसियों की योजनाएँ कहीं अधिक महत्वाकांक्षी थीं। दक्षिण में स्थित मुगल साम्राज्य, दक्कन, नाममात्र के लिए निज़ाम के नियंत्रण में था। 1748 में जब निज़ाम की मृत्यु हुई, तो उनके सिंहासन के दो दावेदार थे - उनके पुत्र नासिर जंग और उनके पोते मुज़फ़्फ़र जंग। सुदूर दक्षिण में कर्नाटक के नवाब थे, जो नाममात्र के लिए निज़ाम के अधीन थे, लेकिन वास्तव में काफी हद तक स्वतंत्र थे और उनका क्षेत्र अरकोट के आसपास छोटा था। तत्कालीन नवाब, अनवर-उद-दीन, एक धोखेबाज था, जिसका वैध परिवार के सदस्य चंदा साहब ने विरोध किया। हालाँकि, चंदा साहब कार्रवाई करने की स्थिति में नहीं थे। उन्हें मराठों ने पकड़ लिया था और फिरौती के लिए पश्चिमी भारत के सतारा में रखा गया था। मुज़फ़्फ़र जंग उनसे वहीं मिले और दोनों ने नासिर जंग और कर्नाटक के अवैध

नवाब के खिलाफ मिलकर काम करने का फैसला किया। हालाँकि, चंदा साहब की रिहाई तक कुछ नहीं किया जा सकता था।

Chanda Sahib's family had long been on excellent terms with the French. In difficult times, they had received shelter at Pondicherry. Much of their jewellery and other wealth was at Pondicherry. Dupleix decided to stand guarantor for Chanda Sahib's ransom, so as to allow his release from captivity. He also loaned him 2,000 Indian and 400 European troops. These would join Chanda Sahib, who had mustered an army of 6,000 and Muzaffar Jang who had another 30,000 men in the Carnatic. In return, the French would receive more land at Pondicherry.

चंदा साहब के परिवार के फ्रांसीसियों के साथ लंबे समय से अच्छे संबंध थे। मुश्किल समय में उन्हें पांडिचेरी में शरण मिली थी। उनके अधिकांश गहने और अन्य संपत्ति पांडिचेरी में ही थी। डुप्लेक्स ने चंदा साहब की रिहाई के लिए ज़मानत देने का फैसला किया। उन्होंने चंदा साहब को 2,000 भारतीय और 400 यूरोपीय सैनिक भी दिए। ये सैनिक कर्नाटक में चंदा साहब की 6,000 सैनिकों की सेना और मुजफ्फर जंग की 30,000 सैनिकों की सेना में शामिल हो गए। इसके बदले में फ्रांसीसियों को पांडिचेरी में और अधिक भूमि मिली।

On 3 August 1749 the Nawab of the Carnatic, Anwar-ud-din waited for the advancing army at Ambur, fifty miles west of his capital of Arcot. He had an army of 20,000 supported by artillery operated by sixty European adventurers. They were in a well-chosen and fortified position. The French led the assault. Twice they were beaten back. Their commander was killed and his place taken by Charles de Bussy. A third assault broke through the enemy lines. A rout ensued. Anwar-ud-din was killed.

3 अगस्त 1749 को कर्नाटक के नवाब अनवर-उद-दीन ने अपनी राजधानी आर्कोट से पचास मील पश्चिम में अंबूर में आगे बढ़ रही सेना का इंतजार किया। उनके पास 20,000 सैनिकों की सेना थी, जिसे साठ यूरोपीय साहसी सैनिकों द्वारा संचालित तोपखाने का समर्थन प्राप्त था। वे

एक सुनियोजित और किलेबंद स्थान पर तैनात थे। फ्रांसीसियों ने आक्रमण का नेतृत्व किया। उन्हें दो बार पीछे हटना पड़ा। उनके कमांडर मारे गए और उनकी जगह चार्ल्स डी बुसी ने ले ली। तीसरे आक्रमण में दुश्मन की घेराबंदी तोड़ दी गई। इसके परिणामस्वरूप सेना को भारी हार का सामना करना पड़ा। अनवर-उद-दीन मारे गए।

Next day, the allies entered Arcot. Chanda Sahib was proclaimed the new Nawab of the Carnatic. He and Muzaffar Jang then proceeded to Pondicherry to thank the French for their support. Dupleix arranged a sumptuous reception. Full of gratitude, Chanda Sahib more than fulfilled his own promises. In addition to the villages around Pondicherry that he had undertaken to give to the French, he gave them the port of Masulipatam. He also gave them the district of Bahur, which surrounded Fort St David. The British feared that this might signal a French plan to cut them off from trade with the interior.

अगले दिन, सहयोगी सेना अरकोट में दाखिल हुई। चंदा साहब को कर्नाटक का नया नवाब घोषित किया गया। वे और मुजफ्फर जंग फिर फ्रांसीसियों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देने के लिए पांडिचेरी गए। डुप्लेक्स ने एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया। कृतज्ञता से परिपूर्ण चंदा साहब ने अपने वादों से कहीं बढ़कर काम किया। पांडिचेरी के आसपास के जिन गांवों को उन्होंने फ्रांसीसियों को देने का वचन दिया था, उनके अलावा उन्होंने मसूलीपट्टनम बंदरगाह भी उन्हें दे दिया। उन्होंने सेंट डेविड किले के आसपास स्थित बहुर जिला भी उन्हें दे दिया। अंग्रेजों को डर था कि यह फ्रांसीसियों की आंतरिक व्यापार से उनका संपर्क तोड़ने की योजना का संकेत हो सकता है।

The British decided to pursue their late war against the French by proxy. They would support the son of Anwar-ud-din, Mohammed Ali, against Chanda Sahib; they would support Nasir Jang, the Nizam of the Deccan, against Muzaffar Jang.

अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों के खिलाफ अपने पुराने युद्ध को परोक्ष रूप से जारी रखने का फैसला किया। वे चंदा साहब के खिलाफ अनवरुद्दीन के बेटे मोहम्मद अली का समर्थन करेंगे; वे मुजफ्फर जंग के खिलाफ दक्कन के निजाम नासिर जंग का समर्थन करेंगे।

In 1750 Nasir Jang was taking his army north to Delhi to help repel an invasion from Afghanistan. When he received the news of the victory of Muzaffar Jang and Chanda Sahib at Ambur, he turned back to confront them. Aided by Marathas and Pathans, he had a massive army of 60,000 soldiers, 45,000 cavalry, 700 elephants and a lot artillery. Fearing defeat, Muzaffar Jang opened negotiations with his uncle and was promised confirmation of his titles. However, when he surrendered he was imprisoned. Nasir Jang then made for Jinji, midway between Chanda Sahib's capital at Arcot and the French at Pondicherry. His army was then bogged down for two months by the monsoon.

सन् 1750 में नासिर जंग अफ़गानिस्तान से हो रहे आक्रमण को रोकने के लिए अपनी सेना लेकर दिल्ली की ओर उत्तर दिशा में अग्रसर हुए। जब उन्हें अंबूर में मुज़फ़्फ़र जंग और चंदा साहब की विजय की खबर मिली, तो वे उनसे मुकाबला करने के लिए वापस लौट आए। मराठों और पठानों की सहायता से, उनके पास 60,000 सैनिकों, 45,000 घुड़सवारों, 700 हाथियों और भारी तोपखाने की विशाल सेना थी। हार के भय से मुज़फ़्फ़र जंग ने अपने चाचा से बातचीत शुरू की और उन्हें अपने खिताबों की पुष्टि का आश्वासन दिया गया। हालाँकि, आत्मसमर्पण करने पर उन्हें कैद कर लिया गया। इसके बाद नासिर जंग चंदा साहब की राजधानी अरकोट और फ्रांसीसियों की राजधानी पांडिचेरी के बीच स्थित जिंजी की ओर बढ़े। मानसून के कारण उनकी सेना दो महीने तक फँसी रही।

The nearby French used this lull to open up negotiations with Nasir Jang. Under cover of these, they also opened up secret negotiations with some discontented Pathan officers in his court. These officers agreed to stand aside if the French attacked. They would signal when the time was favourable. At

the very moment Dupleix had agreed terms with Nasir Jang, the signal was given. The French military, unaware that their instructions were being countermanded, stormed Nasir Jang's camp. As promised, there was no resistance. One of the rebels shot Nasir Jang. Muzaffar Jang was released and instantly proclaimed as the new Nizam of the Deccan.

पास ही मौजूद फ्रांसीसियों ने इस शांति का फायदा उठाकर नासिर जंग से बातचीत शुरू कर दी। इसकी आड़ में उन्होंने नासिर जंग के दरबार में मौजूद कुछ असंतुष्ट पठान अधिकारियों से भी गुप्त बातचीत शुरू कर दी। इन अधिकारियों ने फ्रांसीसियों के हमले की स्थिति में पीछे हटने पर सहमति जताई। उन्होंने अनुकूल समय आने पर संकेत देने का वादा किया। जिस क्षण डुप्लेक्स ने नासिर जंग से शर्तों पर सहमति जताई, उसी क्षण संकेत दे दिया गया। फ्रांसीसी सेना, इस बात से अनभिज्ञ कि उनके निर्देशों का उल्लंघन किया जा रहा है, नासिर जंग के शिविर पर धावा बोल दिया। वादे के मुताबिक, कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। विद्रोहियों में से एक ने नासिर जंग को गोली मार दी। मुजफ्फर जंग को रिहा कर दिया गया और तुरंत दक्कन का नया निज़ाम घोषित कर दिया गया।

Muzaffar Jang immediately went to Pondicherry to thank Dupleix. The French organized another elaborate reception. Muzaffar took along Nasir Jang's captured treasure – eighteen chests of jewels and Rs 10 million. With some of this, he generously rewarded the French. He confirmed Chanda Sahib as the Nawab of the Carnatic. He also made Duplex his own deputy for all of southern India south of the River Krishna, including the Carnatic.

मुजफ्फर जंग तुरंत डुप्लेक्स को धन्यवाद देने के लिए पांडिचेरी गए। फ्रांसीसियों ने एक और भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया। मुजफ्फर अपने साथ नासिर जंग का लूटा हुआ खजाना ले गए – अठारह संदूक रत्न और 10 मिलियन रुपये। इसमें से कुछ राशि उन्होंने उदारतापूर्वक फ्रांसीसियों को इनाम के रूप में दी। उन्होंने चंदा साहब को कर्नाटक का नवाब नियुक्त किया। उन्होंने डुप्लेक्स को कृष्णा नदी के दक्षिण में स्थित पूरे दक्षिण भारत, जिसमें कर्नाटक भी शामिल था, का अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।

Early in 1751, Muzaffar Jang went north to consolidate his position in the Deccan and to ascend the throne at Aurangabad. He asked Dupleix for a French escort. Charles de Bussy, together with 300 European and 2,000 Indian soldiers, was despatched. En route the allies were attacked and Muzaffar Jang was killed. This could have been a serious setback for the French. De Bussy, however, consulted with the Mughal officers and it was agreed to put Nasir Jang's brother, Salabat Jang, on the throne. Salabat was accordingly released from captivity. He was extremely grateful to the French for this sudden change of fortune and immediately awarded them several more parcels of land and townships. At the end of June, Salabat Jang and de Bussy made a triumphant entry into Aurangabad. The French were now at the height of their power. In effect, Dupleix was the master of all of southern India. Except, that was, for the tiny enclaves of the British and the beleaguered Mohammed Ali.

सन् 1751 की शुरुआत में, मुजफ्फर जंग दक्कन में अपनी स्थिति मजबूत करने और औरंगाबाद में सिंहासन पर बैठने के लिए उत्तर की ओर बढ़ा। उसने डुप्लेक्स से फ्रांसीसी सुरक्षा दल भेजने का अनुरोध किया। चार्ल्स डी बुसी को 300 यूरोपीय और 2,000 भारतीय सैनिकों के साथ भेजा गया। रास्ते में सहयोगियों पर हमला हुआ और मुजफ्फर जंग मारा गया। यह फ्रांसीसियों के लिए एक गंभीर झटका हो सकता था। हालांकि, डी बुसी ने मुगल अधिकारियों से परामर्श किया और नासिर जंग के भाई, सलाबत जंग को सिंहासन पर बिठाने पर सहमति बनी। तदनुसार, सलाबत को कैद से रिहा कर दिया गया। वह भाग्य के इस अचानक परिवर्तन के लिए फ्रांसीसियों के प्रति अत्यंत आभारी था और उसने तुरंत उन्हें कई और जमीनें और कस्बे दे दिए। जून के अंत में, सलाबत जंग और डी बुसी ने औरंगाबाद में विजयी प्रवेश किया। अब फ्रांसीसी अपनी शक्ति के चरम पर थे। वास्तव में, डुप्लेक्स पूरे दक्षिण भारत का स्वामी बन गया था। सिवाय अंग्रेजों के छोटे-छोटे क्षेत्रों और संकटग्रस्त मोहम्मद अली के।

Mohammed Ali was still holed up in the west of the Carnatic, at the fort of Trichinopoly. Late in 1749 the British had sent a few troops to him as a gesture of their support. In 1751 a larger force was sent to intercept an army of Chanda Sahib together with some French soldiers who were making for Trichinopoly. The British were forced into disarray and had to retreat to Trichinopoly. There, Mohammed Ali suggested to Robert Clive that the forces of Chanda Sahib might be diverted by an attack on Arcot.

मोहम्मद अली कर्नाटक के पश्चिम में स्थित त्रिचिनोपोली किले में छिपे हुए थे। 1749 के अंत में अंग्रेजों ने समर्थन जताते हुए कुछ सैनिक भेजे थे। 1751 में चंदा साहिब की सेना और कुछ फ्रांसीसी सैनिकों को त्रिचिनोपोली की ओर बढ़ते हुए रोकने के लिए एक बड़ी सेना भेजी गई। इससे अंग्रेज सेना में अफरा-तफरी मच गई और उन्हें त्रिचिनोपोली वापस लौटना पड़ा। वहां मोहम्मद अली ने रॉबर्ट क्लाइव को सुझाव दिया कि आर्कोट पर हमला करके चंदा साहिब की सेना का ध्यान भटकाया जा सकता है।

Robert Clive had arrived in Madras in 1744 to work as a 'writer', a clerk, in the East India Company. He was eighteen years old. His journey from England had taken nearly fifteen months. His ship had been blown towards Brazil – a common occurrence – and had also been damaged. The wait for repairs and a fair wind enabled Clive to learn some Portuguese. This would prove useful, since a debased Portuguese was the lingua franca – a language used to make communication possible between those who did not know each other's own language – of much of coastal India. He arrived in India with debts, no useful connections and was prone to depression. As a boy he had been adventurous, famously climbing the outside of the church tower in his hometown of Market Drayton, so he must have found writing up ledgers very dull. Eight months

after his arrival, he wrote to his cousin: ‘I have not enjoyed one happy day since I left my native country.’ A year later, the humdrum routine of an accounts clerk was suddenly interrupted by the arrival of the French army.

रॉबर्ट क्लाइव 1744 में ईस्ट इंडिया कंपनी में 'राइटर' (एक क्लर्क) के रूप में काम करने के लिए मद्रास पहुंचे थे। उनकी उम्र अठारह वर्ष थी। इंग्लैंड से उनकी यात्रा में लगभग पंद्रह महीने लगे थे। उनका जहाज ब्राज़ील की ओर बह गया था - जो एक आम बात थी - और क्षतिग्रस्त भी हो गया था। मरम्मत और अनुकूल हवा के इंतज़ार में क्लाइव ने कुछ पुर्तगाली भाषा सीख ली। यह उनके लिए उपयोगी साबित हुई, क्योंकि तटीय भारत के अधिकांश हिस्सों में पुर्तगाली भाषा ही संपर्क भाषा थी - एक ऐसी भाषा जिसका उपयोग उन लोगों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए किया जाता था जो एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते थे। वे कर्ज में डूबे हुए, बिना किसी जान-पहचान के और अवसादग्रस्त होकर भारत पहुंचे थे। बचपन में वे साहसी थे और अपने गृहनगर मार्केट ड्रेटन के चर्च के टावर पर चढ़ने के लिए प्रसिद्ध थे, इसलिए उन्हें बही-खाते लिखना बहुत नीरस लगता होगा। भारत पहुंचने के आठ महीने बाद उन्होंने अपने चचेरे भाई को लिखा: 'जब से मैंने अपना देश छोड़ा है, मुझे एक भी दिन खुशी का नहीं मिला।' एक साल बाद, एक लेखा क्लर्क की नीरस दिनचर्या अचानक फ्रांसीसी सेना के आगमन से बाधित हो गई।

After the surrender of Madras, the British had been allowed to leave provided they gave an undertaking not to fight against the French. Some of the Company’s men refused to do this. One was Robert Clive. He and some companions disguised themselves as Indians by darkening their faces and wearing black stockings on their legs. They managed to travel south, beyond Pondicherry, to the Company fort of St David.

मद्रास के आत्मसमर्पण के बाद, अंग्रेजों को इस शर्त पर जाने की अनुमति दी गई थी कि वे फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध न करने का वचन दें। कंपनी के कुछ सैनिकों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उनमें से एक रॉबर्ट क्लाइव थे। उन्होंने और उनके कुछ साथियों ने अपने चेहरे काले रंग से रंगकर और पैरों में काली मोज़े पहनकर खुद को भारतीयों के रूप में भेस

बदल लिया। वे दक्षिण की ओर, पांडिचेरी से आगे, कंपनी के सेंट डेविड किले तक पहुँचने में सफल रहे।

At Fort St David, Clive had volunteered for military service. This did not bar him from doing the private trading that was the normal and authorized way for the underpaid Company men to make their fortunes. He invested in handkerchiefs and ruffles. In the military he did well enough in the repelling of the two attacks by the French to be given a commission as an ensign. He was under the command of Major Stringer Lawrence. This highly professional soldier, a veteran of Fontenoy and Culloden, was not like the usual Company officers who were famously incompetent. He took Clive under his wing and taught him much.

फोर्ट सेंट डेविड में, क्लाइव ने सैन्य सेवा के लिए स्वेच्छा से आवेदन किया था। लेकिन इससे उन्हें निजी व्यापार करने से नहीं रोका गया, जो कम वेतन पाने वाले कंपनी के सैनिकों के लिए धन कमाने का सामान्य और अधिकृत तरीका था। उन्होंने रूमालों और झालरों में निवेश किया। सेना में उन्होंने फ्रांसीसियों के दो हमलों को विफल करने में इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि उन्हें एक एनसाइन के रूप में कमीशन दिया गया। वे मेजर स्ट्रिंगर लॉरेंस के अधीन थे। यह अत्यंत कुशल सैनिक, जो फोंटेनोय और कुलोडन युद्धों के अनुभवी थे, उन आम कंपनी अधिकारियों से अलग थे जो अपनी अक्षमता के लिए कुख्यात थे। उन्होंने क्लाइव को अपने संरक्षण में लिया और उन्हें बहुत कुछ सिखाया।

In the post-war expeditions that followed the peace with the French, Clive had seen action at Tanjore and Devikota. He impressed Stringer Lawrence with the courage he displayed when leading his men into battle. When Madras had been returned to the Company, Clive had applied for a promotion as captain in the Company's army. When this failed, he decided to return to civilian post. He became a steward at Madras, responsible for provisioning the settlement and

its garrison. This was a highly lucrative appointment with plenty of commission. It also taught him how to provision an army.

फ्रांसीसियों के साथ शांति समझौते के बाद हुए युद्धोत्तर अभियानों में, क्लाइव ने तंजौर और देविकोटा की लड़ाइयों में हिस्सा लिया था। युद्ध में अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए उन्होंने जो साहस दिखाया, उससे स्ट्रिंगर लॉरेंस बहुत प्रभावित हुए। जब मद्रास कंपनी को वापस सौंप दिया गया, तो क्लाइव ने कंपनी की सेना में कप्तान के पद पर पदोन्नति के लिए आवेदन किया। जब यह आवेदन असफल रहा, तो उन्होंने नागरिक पद पर लौटने का फैसला किया। वे मद्रास में एक प्रबंधक बन गए, जहाँ उन्हें बस्ती और उसकी सेना के लिए रसद आपूर्ति की जिम्मेदारी सौंपी गई। यह एक बेहद आकर्षक पद था जिसमें अच्छा कमीशन मिलता था। इससे उन्हें सेना के लिए रसद आपूर्ति करना भी सीखने को मिला।

In 1751 Clive was in charge of supplies at the Trichinopoly debacle. He had returned to Fort St David and volunteered to rejoin the military without extra pay, provided he was made a captain. This offer had been gratefully received. Shortly afterwards, Clive was given command of the expedition to attack Arcot. This town was Chanda Sahib's capital and had been left with only a skeleton garrison. Severely reducing their garrisons at Fort St David and Madras, the Company assembled a force of 300 sepoys – 'sepoy', a word of Persian origin was used to describe an Indian soldier drilled and dressed in the European manner – and 210 European soldiers. Captain Robert Clive was given command.

1751 में त्रिचिनोपोली की हार के दौरान क्लाइव रसद आपूर्ति के प्रभारी थे। वे फोर्ट सेंट डेविड लौट आए थे और बिना अतिरिक्त वेतन के सेना में पुनः शामिल होने के लिए स्वेच्छा से आगे आए, बशर्ते उन्हें कप्तान बना दिया जाए। इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। कुछ ही समय बाद, क्लाइव को आर्कोट पर आक्रमण करने के अभियान की कमान सौंपी गई। यह शहर चंदा साहिब की राजधानी था और यहाँ नाममात्र की ही सैन्य टुकड़ी बची थी। फोर्ट सेंट डेविड और मद्रास में अपनी सैन्य टुकड़ियों को काफी कम करते हुए, कंपनी ने

300 सिपाहियों (प्यादा शब्द फारसी मूल का है, जिसका प्रयोग यूरोपीय शैली में प्रशिक्षित और वर्दीधारी भारतीय सैनिक के लिए किया जाता था) और 210 यूरोपीय सैनिकों की एक टुकड़ी एकत्रित की। कप्तान रॉबर्ट क्लाइव को कमान सौंपी गई।

Clive and his expedition left Madras on 22 August 1751. Arcot was about sixty-five miles away. This was not a modern professional fighting force. Most of the officers were civilians; the European soldiers of the time would later be described by Clive as British 'scum and refuse'; the Indian soldiers had hardly been trained. There were three small cannons. Halfway to Arcot, Clive learnt that Chanda Sahib's garrison at Arcot was somewhat stronger than he had been led to believe. He sent a message to Madras to request more cannon, but continued to march. His detachment was hit by a huge thunderstorm, but Clive continued marching towards Arcot. He arrived at the gates of Arcot fort on the morning of 1 September. To everybody's amazement, they encountered no resistance. Chanda Sahib's men had learnt from their spies that Clive had been undaunted by the heavens opening and continued his march. To them, this indicated some supernatural force. The garrison of over 1,000 men had fled. The British took over the town.

क्लाइव और उनका दल 22 अगस्त 1751 को मद्रास से रवाना हुआ। आर्कोट लगभग पैंसठ मील दूर था। यह कोई आधुनिक पेशेवर लड़ाकू सेना नहीं थी। अधिकांश अधिकारी नागरिक थे; उस समय के यूरोपीय सैनिकों को क्लाइव ने बाद में ब्रिटिश 'नीच और निकम्मा' बताया; भारतीय सैनिकों को नाममात्र का प्रशिक्षण मिला था। उनके पास तीन छोटी तोपें थीं। आर्कोट के आधे रास्ते में, क्लाइव को पता चला कि आर्कोट में चंदा साहब की चौकी उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक मजबूत थी। उन्होंने मद्रास को और तोपों की मांग करते हुए संदेश भेजा, लेकिन अपना मार्च जारी रखा। उनकी टुकड़ी एक भयंकर तूफान की चपेट में आ गई, लेकिन क्लाइव आर्कोट की ओर बढ़ते रहे। वे 1 सितंबर की सुबह आर्कोट किले के द्वार पर पहुंचे। सभी को आश्चर्य हुआ कि उन्हें किसी प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा। चंदा साहब के

आदमियों को उनके जासूसों से पता चला था कि क्लाइव भारी बारिश से विचलित नहीं हुए और अपना मार्च जारी रखा। उनके लिए, यह किसी अलौकिक शक्ति का संकेत था। 1,000 से अधिक सैनिकों की चौकी भाग गई थी। अंग्रेजों ने शहर पर कब्जा कर लिया।

A spy sent details back to Pondicherry of the British success. He noted that they had arrived with two chests of liquor. Eighteenth-century soldiers were not noted for their restraints when fuelled with alcohol. However, the governor of Madras, Thomas Saunders, had given instructions that they were 'not in any shape to molest or distress the inhabitants'. This injunction was strictly enforced by Clive. He noted the way it calmed opposition from the town's population of 100,000, opposition that would have made life difficult for the invaders, and he would adopt this same policy in the future. He also took care to hoist the flags of the Mughals, so as to maintain the pretence that the British were solely acting on their behalf – another fiction that he would find useful in the future.

एक जासूस ने अंग्रेजों की सफलता की जानकारी पांडिचेरी भेजी। उसने बताया कि वे शराब से भरे दो बक्से लेकर आए थे। अठारहवीं सदी के सैनिक शराब के नशे में संयम नहीं बरतते थे। हालांकि, मद्रास के गवर्नर थॉमस सॉन्डर्स ने निर्देश दिया था कि वे 'किसी भी हालत में निवासियों को परेशान या तंग न करें'। क्लाइव ने इस आदेश का कड़ाई से पालन करवाया। उन्होंने देखा कि इससे शहर की 100,000 की आबादी का विरोध शांत हो गया, जबकि यही विरोध आक्रमणकारियों के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता था। उन्होंने भविष्य में भी यही नीति अपनाई। उन्होंने मुगलों के झंडे फहराने का भी ध्यान रखा, ताकि यह दिखावा बना रहे कि अंग्रेज केवल उनके इशारे पर काम कर रहे हैं - एक और झूठ जो भविष्य में उनके काम आएगा।

Clive then prepared to resist an inevitable siege. The former garrison of Arcot moved their camp closer and closer to the fort. After a couple of failed attempts to harry them, Clive decided on an attack in the dead of night. Most

of them were asleep when the British arrived. Before anyone could flee, Clive and his men opened fire. They wrought great damage before retiring back to the fort without losing a single soldier. In the days before the siege began, the two larger cannon that Clive had requested arrived, together with 300 cattle for sustenance.

इसके बाद क्लाइव ने अपरिहार्य घेराबंदी का सामना करने की तैयारी की। आर्कोट की पूर्व चौकी ने अपना शिविर किले के और करीब ला दिया। उन्हें परेशान करने के कुछ असफल प्रयासों के बाद, क्लाइव ने आधी रात को हमला करने का फैसला किया। जब अंग्रेज पहुंचे तो उनमें से अधिकांश सो रहे थे। इससे पहले कि कोई भाग पाता, क्लाइव और उसके आदमियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने भारी नुकसान पहुंचाया और एक भी सैनिक खोए बिना किले में वापस लौट गए। घेराबंदी शुरू होने से कुछ दिन पहले, क्लाइव द्वारा मंगवाई गई दो बड़ी तोपें, भोजन के लिए 300 मवेशियों के साथ, आ गईं।

Chanda Sahib's 4,000-strong army, together with 150 French soldiers, finally arrived to begin the siege. Supplemented with the former garrison and some other nearby troops, the besiegers had more than 10,000 men. Clive had 120 European soldiers and 200 sepoys. The very size of the fort at Arcot made it difficult to defend. The walls, which had to be constantly patrolled, were a mile in circumference. These walls were surrounded by the houses of the town outside, which made it easy for the enemy to get close enough to keep up constant musket fire. Three times during the siege the sergeant who accompanied Clive on his rounds was shot dead.

चंदा साहब की 4,000 सैनिकों की सेना, 150 फ्रांसीसी सैनिकों के साथ, अंततः घेराबंदी शुरू करने के लिए पहुँची। पूर्व गैरीसन और आसपास के कुछ अन्य सैनिकों को मिलाकर, घेराबंदी करने वालों की संख्या 10,000 से अधिक हो गई। क्लाइव के पास 120 यूरोपीय सैनिक और 200 सिपाही थे। आर्कोट किले का विशाल आकार ही उसकी रक्षा करना कठिन बना रहा था। इसकी दीवारें, जिनकी निरंतर गश्त करनी पड़ती थी, एक मील की परिधि में थीं। ये

दीवारें बाहर शहर के घरों से घिरी हुई थीं, जिससे दुश्मन के लिए लगातार गोलीबारी करने के लिए पर्याप्त करीब आना आसान हो गया था। घेराबंदी के दौरान तीन बार क्लाइव के साथ गश्त पर निकले सार्जेंट को गोली मार दी गई।

At Madras and Fort St David desperate efforts were made to assemble a relief force, but it was the end of October before 130 European soldiers and 100 sepoys left Madras for Arcot. This detachment was intercepted and had to take refuge. Meanwhile, artillery sent from Pondicherry had started to pound the fort and damage its walls. The outlook was grim until help arrived from an unlikely source. A Maratha army was camped in the hills away to the west. These 6,000 soldiers had been engaged to help Mohammed Ali, but were waiting to finalize details of their remuneration. Clive sent messages to them asking them to come to his rescue. Negotiations dragged on, but finally the Marathas moved towards Arcot. A detachment of Company troops was also marching towards Arcot. News of these relief columns spurred the besiegers into action. They delivered an ultimatum to Clive, offering him honourable terms to surrender. Otherwise, they would storm the fort and put all to death.

मद्रास और फोर्ट सेंट डेविड में राहत बल जुटाने के लिए अथक प्रयास किए गए, लेकिन अक्टूबर के अंत तक 130 यूरोपीय सैनिक और 100 सिपाही मद्रास से आर्कोट के लिए रवाना हुए। इस टुकड़ी को रोक लिया गया और उन्हें शरण लेनी पड़ी। इसी बीच, पांडिचेरी से भेजी गई तोपों ने किले पर गोले बरसाने शुरू कर दिए और उसकी दीवारों को नुकसान पहुँचाया। स्थिति बेहद गंभीर थी, तभी एक अप्रत्याशित स्रोत से मदद मिली। पश्चिम की ओर पहाड़ियों में मराठा सेना डेरा डाले हुए थी। इन 6,000 सैनिकों को मोहम्मद अली की सहायता के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन वे अपने पारिश्रमिक के विवरण को अंतिम रूप देने की प्रतीक्षा कर रहे थे। क्लाइव ने उन्हें संदेश भेजकर अपनी सहायता के लिए आने का अनुरोध किया। बातचीत लंबी खिंची, लेकिन अंततः मराठा आर्कोट की ओर बढ़े। कंपनी सैनिकों की एक टुकड़ी भी आर्कोट की ओर बढ़ रही थी। राहत बलों की इस खबर ने घेराबंदी करने वालों को

कार्रवाई के लिए प्रेरित किया। उन्होंने क्लाइव को आत्मसमर्पण के लिए सम्मानजनक शर्तें पेश करते हुए एक अल्टीमेटम दिया। अन्यथा, वे किले पर धावा बोल देंगे और सभी को मार डालेंगे।

The attack began on 14 November. A spy had given Clive the timing and he was well prepared. Elephants charged towards the fort gates. Well-directed musket fire made them turn in panic and trample the men they were leading. Prolonged musket fire decimated the sepoys who tried to enter the fort through a breach in the wall. It was said that in one hour Clive's men fired 12,000 shots. Nevertheless, the sepoys managed to advance and their commander was able to plant a flag in the breach. Soon afterwards, he was shot and killed. His death demoralized his men. The French troops were badly led and ineffectual. Gradually, it became clear that the attack had failed. There was a truce to collect the dead. In the night the attacking army departed, leaving behind most of their artillery. The siege had come to an end. This was the first significant British success against the French and their allies.

हमला 14 नवंबर को शुरू हुआ। एक जासूस ने क्लाइव को हमले का समय बता दिया था और वह पूरी तरह तैयार था। हाथी किले के द्वार की ओर दौड़े। सटीक निशाने पर हुई तोपों की गोलीबारी से हाथी घबराकर पीछे हट गए और अपने नेतृत्व में चल रहे सैनिकों को कुचल दिया। लगातार गोलीबारी से उन सिपाहियों का सफाया हो गया जिन्होंने दीवार में बने छेद से किले में घुसने की कोशिश की थी। कहा जाता है कि क्लाइव के सैनिकों ने एक घंटे में 12,000 गोलियां दागीं। फिर भी, सिपाही आगे बढ़ने में कामयाब रहे और उनके कमांडर ने छेद में झंडा गाड़ दिया। कुछ ही देर बाद, उन्हें गोली मार दी गई और उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से उनके सैनिकों का मनोबल गिर गया। फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व खराब था और वे अप्रभावी साबित हुए। धीरे-धीरे यह स्पष्ट हो गया कि हमला विफल हो गया था। मृतकों को इकट्ठा करने के लिए युद्धविराम किया गया। रात में हमलावर सेना अपने अधिकांश तोपखाने

को वहीं छोड़कर चली गई। घेराबंदी समाप्त हो गई थी। यह फ्रांसीसियों और उनके सहयोगियों के खिलाफ अंग्रेजों की पहली महत्वपूर्ण सफलता थी।

Later that morning the relief column from Madras arrived. Seeing that they were no longer needed, most of the Marathas went to join Mohammed Ali in Trichinopoly, but 1,000 cavalry remained with Clive for further action against the forces of the French and Chanda Sahib. There were victories at Arni and Conjeeveram. The governor of Madras wrote to congratulate Clive – 'I am informed the Mullahs are writing a history of the wars of Arcot wherein you will be delivered down to future ages.'

उसी सुबह मद्रास से राहत टुकड़ी आ गई। यह देखकर कि अब उनकी आवश्यकता नहीं है, अधिकांश मराठा त्रिचिनोपोली में मोहम्मद अली से मिलने चले गए, लेकिन 1,000 घुड़सवार फ्रांसीसी और चंदा साहिब की सेनाओं के विरुद्ध आगे की कार्रवाई के लिए क्लाइव के साथ रहे। अरनी और कोंजीवरम में विजय प्राप्त हुई। मद्रास के गवर्नर ने क्लाइव को बधाई देते हुए लिखा - 'मुझे सूचना मिली है कि मुल्ला अरकोट के युद्धों का इतिहास लिख रहे हैं जिसमें आपको आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाया जाएगा।'

The Marathas left to join the main body of their army at Trichinopoly. There was little more that Clive could do with his small force so he returned to Madras. He recruited another 500 sepoys. Another 100 European soldiers came from Bengal. Clive was ready to march into action again, when Stringer Lawrence arrived back from England to take command. This was a blessing for Clive. He had excited much jealousy among the Company's senior officers. These may well have refused to serve under him. With Lawrence in command – an officer who had already shown confidence in Clive – these problems were deflected.

मराठा त्रिचिनोपोली में अपनी सेना के मुख्य दल से मिलने के लिए रवाना हो गए। क्लाइव अपनी छोटी सी टुकड़ी के साथ कुछ खास नहीं कर सकते थे, इसलिए वे मद्रास लौट आए।

उन्होंने 500 और सिपाही भर्ती किए। बंगाल से 100 और यूरोपीय सैनिक आए। क्लाइव दोबारा युद्ध के लिए तैयार थे, तभी स्ट्रिंगर लॉरेंस इंग्लैंड से वापस आकर कमान संभाल ली। यह क्लाइव के लिए वरदान साबित हुआ। उन्होंने कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच काफी ईर्ष्या पैदा कर दी थी। वे शायद उनके अधीन काम करने से इनकार कर देते। लॉरेंस के कमान संभालने से - एक ऐसे अधिकारी जिन्होंने पहले ही क्लाइव पर भरोसा दिखाया था - ये समस्याएं टल गईं।

Lawrence and Clive arrived close to Trichinopoly at the end of March 1752. Mohammed Ali had been joined in the fort by the Marathas and other allies. The army of Chanda Sahib and the French was camped to the east. They failed to stop many of the Company's soldiers inside the fort from slipping out to join their approaching colleagues. Using a building for cover, Clive managed to move close to the enemy and rake them with his artillery. Chanda Sahib's cavalry commander's head was blown off by a cannon ball and his men retreated in disarray. Lawrence and Clive then entered Trichinopoly.

मार्च 1752 के अंत में लॉरेंस और क्लाइव त्रिचिनोपोली के पास पहुँचे। किले में मोहम्मद अली के साथ मराठा और अन्य सहयोगी भी मौजूद थे। चंदा साहिब और फ्रांसीसी सेना पूर्व में डेरा डाले हुए थी। वे किले के अंदर मौजूद कंपनी के कई सैनिकों को चुपके से निकलकर अपने साथियों से मिलने से रोकने में असफल रहे। एक इमारत की आड़ लेकर, क्लाइव दुश्मन के करीब पहुँचने में कामयाब रहे और अपनी तोपखाने से उन पर गोले बरसाए। चंदा साहिब के घुड़सवार सेनापति का सिर तोप के गोले से उड़ गया और उनके सैनिक अकड़कर पीछे हट गए। इसके बाद लॉरेंस और क्लाइव त्रिचिनोपोली में दाखिल हुए।

To the north of Trichinopoly, the River Cauvery divided into two with the island of Srirangam in between. The French, together with most of Chanda Sahib's men, crossed the river to Srirangam. A temple on the island was surrounded by a series of strong walls. The French thought it highly defensible and took it over. The British decided to mount a blockade of the

island. They sealed access from the south and then sent Clive over the river to stop any supplies reaching the island from Pondicherry and the north. Clive was nearly killed when a French detachment, led by British deserters, surprised his camp one night, but they were beaten off. A French relief column was sent from Pondicherry, but Clive destroyed it. He was then able to defeat the last of Chanda Sahib's troops north of the river and train artillery across the river on to those camped on the island. The constant barrage demoralized Chanda Sahib's men. Many deserted and a large number transferred their allegiance to Clive. The French troops surrendered. Chanda Sahib was captured by one of Mohammed Ali's allies and beheaded.

त्रिचिनोपोली के उत्तर में, कावेरी नदी श्रीरंगम द्वीप के बीच में दो भागों में बँट जाती थी। फ्रांसीसी, चंदा साहिब के अधिकांश सैनिकों के साथ, नदी पार करके श्रीरंगम पहुँचे। द्वीप पर स्थित एक मंदिर मजबूत दीवारों से घिरा हुआ था। फ्रांसीसियों ने इसे अत्यधिक सुरक्षित समझा और इस पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजों ने द्वीप की नाकाबंदी करने का फैसला किया। उन्होंने दक्षिण से आने-जाने का रास्ता बंद कर दिया और फिर क्लाइव को नदी पार भेजकर पांडिचेरी और उत्तर से द्वीप तक पहुँचने वाली किसी भी आपूर्ति को रोकने का आदेश दिया। एक रात जब ब्रिटिश भगोड़ों के नेतृत्व में फ्रांसीसी टुकड़ी ने क्लाइव के शिविर पर अचानक हमला किया, तो वह बाल-बाल बचे, लेकिन उन्हें खदेड़ दिया गया। पांडिचेरी से फ्रांसीसी राहत दल भेजा गया, लेकिन क्लाइव ने उसे नष्ट कर दिया। इसके बाद वह नदी के उत्तर में चंदा साहिब के अंतिम सैनिकों को हराने में सफल रहे और नदी के पार द्वीप पर डेरा डाले हुए सैनिकों पर तोपखाने से हमला किया। लगातार गोलाबारी से चंदा साहिब के सैनिक हतोत्साहित हो गए। कई सैनिक भाग गए और बड़ी संख्या में क्लाइव के प्रति वफादार हो गए। फ्रांसीसी सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। चंदा साहिब को मोहम्मद अली के एक सहयोगी ने पकड़ लिया और उसका सिर कलम कर दिया।

The battle of Trichinopoly seemed to have made Mohammed Ali the undisputed master of the Deccan with the British as his ally. The French

appeared to have been marginalized. In the Carnatic they still held Pondicherry and some minor outposts, but they had lost most of their army. It was true that they were still in a powerful position with the Nizam further north, but that was a relatively poor region without the ports essential for overseas trade.

त्रिचिनोपोली की लड़ाई ने मोहम्मद अली को अंग्रेजों के साथ दक्कन का निर्विवाद शासक बना दिया था। ऐसा प्रतीत होता था कि फ्रांसीसी हाशिए पर चले गए थे। कर्नाटक में उनके पास अभी भी पांडिचेरी और कुछ छोटे-मोटे चौकियां थीं, लेकिन उनकी अधिकांश सेना नष्ट हो चुकी थी। यह सच था कि उत्तर में निज़ाम के साथ उनकी स्थिति अभी भी मजबूत थी, लेकिन वह क्षेत्र अपेक्षाकृत गरीब था और वहां विदेशी व्यापार के लिए आवश्यक बंदरगाह नहीं थे।

Dupleix, however, was not yet finished. He received some reinforcements from France. He was able to bribe the Marathas to switch sides and support the French. He used his extraordinary diplomatic skills to persuade the powers at Mysore to pay the French for the use of the French army in a joint effort to take back Trichinopoly. This ended in failure with the French losing 400 men. At the beginning of 1754, Dupleix initiated peace talks. Meanwhile, however, Dupleix was being undermined in Europe. The directors of the company in France were alarmed by the cost of the continual warfare. They were not convinced by the fiction that the battles with the British were merely in support of the Mughals. Moreover, the company was running out of money. The French company sent a deputation to discuss affairs with the East India Company in London. The French ambassador had talks with the British government. It was decided to dismiss Dupleix.

लेकिन डुप्लेक्स का काम अभी खत्म नहीं हुआ था। उन्हें फ्रांस से कुछ अतिरिक्त सैनिक मिले। वे मराठों को रिश्वत देकर उनका पक्ष बदलने और फ्रांसीसियों का साथ देने में सफल रहे। उन्होंने अपनी असाधारण कूटनीतिक कुशलता का इस्तेमाल करते हुए मैसूर के अधिकारियों को त्रिचिनोपोली को वापस लेने के संयुक्त प्रयास में फ्रांसीसी सेना के इस्तेमाल के लिए भुगतान करने के लिए राजी किया। हालांकि यह प्रयास असफल रहा और फ्रांसीसियों को 400 सैनिकों का नुकसान उठाना पड़ा। 1754 की शुरुआत में, डुप्लेक्स ने शांति वार्ता शुरू की। इस बीच, यूरोप में डुप्लेक्स की साख कमजोर होती जा रही थी। फ्रांस में कंपनी के निदेशक लगातार युद्ध के खर्च से चिंतित थे। वे इस बात से सहमत नहीं थे कि अंग्रेजों के साथ लड़ाई केवल मुगलों के समर्थन में लड़ी जा रही थी। इसके अलावा, कंपनी के पास पैसों की कमी हो रही थी। फ्रांसीसी कंपनी ने लंदन स्थित ईस्ट इंडिया कंपनी से बातचीत करने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। फ्रांसीसी राजदूत ने ब्रिटिश सरकार से बातचीत की। अंत में डुप्लेक्स को बर्खास्त करने का निर्णय लिया गया।

On 1 August 1754 Charles Godeheu arrived off Pondicherry. He delivered three documents to Dupleix. One was a letter from himself hoping that matters could be resolved as amicably as possible; one asking for a full report on French affairs in India; one from the king to recall Dupleix to France. Next day, Godeheu came ashore, went to the council chamber and read out his own commission to replace Dupleix. In the silence that followed, Dupleix shouted out – 'Vive le Roi!'

1 अगस्त 1754 को चार्ल्स गोडेहु पांडिचेरी पहुंचे। उन्होंने डुप्लेक्स को तीन दस्तावेज़ सौंपे। एक उनका अपना पत्र था जिसमें उन्होंने आशा जताई थी कि मामले का यथासंभव सौहार्दपूर्ण ढंग से समाधान हो जाएगा; दूसरा भारत में फ्रांसीसी मामलों पर एक विस्तृत रिपोर्ट का अनुरोध था; और तीसरा राजा का डुप्लेक्स को फ्रांस वापस बुलाने का पत्र था। अगले दिन, गोडेहु तट पर उतरे, परिषद कक्ष में गए और डुप्लेक्स को हटाने के अपने आदेश को पढ़कर सुनाया। इसके बाद जो सन्नाटा छाया, उसमें डुप्लेक्स ने ज़ोर से कहा – 'राजा की जय हो!'

Godeheu entered into negotiations with the East India Company. A provisional treaty was drawn up in which the two companies agreed to a policy of equal possessions. In theory this would have meant the French giving up most of the territory that Dupleix had acquired. However, the treaty had to be ratified in Europe before this actually happened. Progress towards this came to a halt when the two countries went to war once again in 1756.

गोडेहु ने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ बातचीत शुरू की। एक अस्थायी संधि तैयार की गई जिसमें दोनों कंपनियों ने बराबर अधिकार क्षेत्र की नीति पर सहमति जताई। सैद्धांतिक रूप से इसका मतलब यह होता कि फ्रांसीसियों को डुप्लेक्स द्वारा अधिग्रहित अधिकांश क्षेत्र छोड़ देना पड़ता। हालांकि, ऐसा होने से पहले यूरोप में संधि की पुष्टि होनी आवश्यक थी। 1756 में जब दोनों देशों के बीच एक बार फिर युद्ध छिड़ गया, तो इस दिशा में प्रगति रुक गई।

Before Dupleix left Pondicherry, the French government had reconsidered its action. A message had been sent to Dupleix suggesting that perhaps Dupleix might continue as governor, but with Godeheu as emissary to make peace with the British. Unfortunately for Dupleix, he sailed before this arrived. When he reached France, he was initially well received. However, once the provisional treaty was finalized it was decided that Dupleix was of no further use. He had advanced large sums of his own money to the company to further his ambitions. He had also obtained credit for supplies. When his creditors demanded payment, the company refused to help him. The bailiffs were sent in. Fighting off efforts to imprison him for debt, he died in poverty in 1764.

डुप्लेक्स के पांडिचेरी छोड़ने से पहले, फ्रांसीसी सरकार ने अपने फैसले पर पुनर्विचार किया। डुप्लेक्स को एक संदेश भेजा गया था जिसमें सुझाव दिया गया था कि शायद डुप्लेक्स गवर्नर के रूप में बने रह सकते हैं, लेकिन गोडेहू को ब्रिटिशों के साथ शांति स्थापित करने के लिए दूत के रूप में भेजा जाए। दुर्भाग्य से, डुप्लेक्स यह संदेश पहुंचने से पहले ही रवाना हो गए। फ्रांस पहुंचने पर उनका शुरू में अच्छा स्वागत हुआ। हालांकि, एक बार अस्थायी संधि को

अंतिम रूप दिए जाने के बाद, यह तय किया गया कि डुप्लेक्स अब किसी काम के नहीं हैं। उन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कंपनी को अपनी जेब से बड़ी रकम दी थी। उन्होंने आपूर्ति के लिए ऋण भी लिया था। जब उनके लेनदारों ने भुगतान की मांग की, तो कंपनी ने उनकी मदद करने से इनकार कर दिया। बेलीफ भेजे गए। कर्ज के लिए उन्हें जेल भेजने के प्रयासों का विरोध करते हुए, 1764 में गरीबी में उनकी मृत्यु हो गई।

One concession was made by the French company before the treaty was ratified – they returned to the British a company of Swiss mercenaries captured on the sea off Pondicherry. The Swiss were the mercenaries par excellence in eighteenth-century battles between European forces. Out of 1,800 troops that the Company had recently landed at Madras, 500 were Swiss. Often, however, the 'Swiss' were adventurers from other European nations.

संधि पर हस्ताक्षर होने से पहले फ्रांसीसी कंपनी ने एक रियायत दी - उन्होंने पुडुचेरी के तट पर समुद्र में पकड़े गए स्विस भाड़े के सैनिकों की एक टुकड़ी को अंग्रेजों को लौटा दिया। अठारहवीं शताब्दी में यूरोपीय सेनाओं के बीच हुए युद्धों में स्विस भाड़े के सैनिक सर्वोत्कृष्ट थे। मद्रास में हाल ही में उतारे गए कंपनी के 1,800 सैनिकों में से 500 स्विस थे। हालांकि, अक्सर ये 'स्विस' अन्य यूरोपीय देशों के साहसी सैनिक होते थे।

European military adventurers had long been coming to India where they were particularly prized for their expertise, real or supposed, with artillery. Many Indian rulers, especially those who had originated from Persia, had an ambivalent attitude to artillery. It was considered necessary, but unchivalrous. It was not an occupation for a gentleman. The Portuguese had similar reservations and, although they manufactured good artillery pieces, the accuracy they achieved in using them was notoriously poor. From almost

the beginning of their time in India they had recruited German gunners. They also imported experts from other European nations to manufacture cannon. In 1503, two of their gun-founders from Milan defected to the Zamorin at Calicut, where they cast much artillery and trained many gunners. The Indians were making artillery from before the arrival of the Europeans, but it was mostly of an inferior quality. Moreover, they lacked the expertise in its effective use.

यूरोपीय सैन्य साहसी लोग लंबे समय से भारत आते रहे थे, जहाँ तोपखाने में उनकी विशेषज्ञता, चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक, के लिए उन्हें विशेष महत्व दिया जाता था। कई भारतीय शासकों, विशेषकर फारस से आए शासकों का तोपखाने के प्रति मिश्रित दृष्टिकोण था। इसे आवश्यक माना जाता था, लेकिन वीरतापूर्ण नहीं। यह सज्जनों का पेशा नहीं था। पुर्तगालियों की भी ऐसी ही आशंकाएँ थीं और यद्यपि उन्होंने अच्छी तोपें बनाईं, लेकिन उनके उपयोग में उनकी सटीकता कुख्यात रूप से खराब थी। भारत में अपने आगमन के लगभग आरंभ से ही उन्होंने जर्मन तोपची भर्ती किए थे। उन्होंने तोप बनाने के लिए अन्य यूरोपीय देशों से भी विशेषज्ञ आयात किए। 1503 में, मिलान के उनके दो तोप निर्माता कालीकट के ज़मोरिन के पास चले गए, जहाँ उन्होंने बड़ी मात्रा में तोपें बनाईं और कई तोपची प्रशिक्षित किए। यूरोपीय लोगों के आगमन से पहले से ही भारतीय तोपें बना रहे थे, लेकिन वे अधिकतर निम्न गुणवत्ता की थीं। इसके अलावा, उनके पास इसके प्रभावी उपयोग की विशेषज्ञता का अभाव था।

Many Europeans entered the service of the Mughals. In the first half of the sixteenth century, Rumi Khan from Turkey modernized the artillery of Bahadur Shah of Gujarat. This led to the victories over the Rajasthani Rajputs. He was aided by European mercenaries, principally Portuguese. In the middle of the seventeenth century, there were enough Portuguese in the service of the Mughals at Narwar, 100 miles south of Agra, to warrant a Jesuit priest. The Venetian, Niccolao Manucci, was an artillery officer for both Aurangzeb and his brother. Gemelli Careri observed of Aurangzeb's vast armies: 'All this

artillery, especially the heavy, is under the direction of Franks or Christian gunners, who have extraordinary pay; especially the Portuguese, English, Dutch, German and French.' A few decades later, the senior artillery officer of Nasir Jang was an Irishman. Many other hopefuls followed, often having very little military experience. After it had been shown that a small force of soldiers with muskets trained in the European manner could defeat much larger traditional armies, Indian rulers also took on a great many European military officers for their infantry. By the end of the eighteenth century, European artillery and infantry officers were attached to most Indian armies.

कई यूरोपीय लोगों ने मुगलों की सेवा में प्रवेश किया। सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, तुर्की के रूमी खान ने गुजरात के बहादुर शाह की तोपखाने का आधुनिकीकरण किया। इससे राजस्थानी राजपूतों पर विजय प्राप्त हुई। उन्हें यूरोपीय भाड़े के सैनिकों, मुख्य रूप से पुर्तगालियों का सहयोग प्राप्त था। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में, आगरा से 100 मील दक्षिण में स्थित नरवार में मुगलों की सेवा में इतने पुर्तगाली थे कि एक जेसुइट पादरी की नियुक्ति आवश्यक हो गई। वेनिस के निकोलाओ मनुची औरंगजेब और उनके भाई दोनों के लिए तोपखाने के अधिकारी थे। जेमेली कारेरी ने औरंगजेब की विशाल सेनाओं के बारे में टिप्पणी की: 'यह सारा तोपखाना, विशेषकर भारी तोपखाना, फ्रांसीसी या ईसाई तोपचियों के निर्देशन में है, जिन्हें असाधारण वेतन मिलता है; विशेष रूप से पुर्तगाली, अंग्रेज, डच, जर्मन और फ्रांसीसी।' कुछ दशकों बाद, नासिर जंग के वरिष्ठ तोपखाना अधिकारी एक आयरिश थे। कई अन्य इच्छुक लोगों ने भी उनका अनुसरण किया, जिनमें से अक्सर बहुत कम सैन्य अनुभव था। जब यह सिद्ध हो गया कि यूरोपीय शैली में प्रशिक्षित बंदूकधारी सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी भी कहीं अधिक विशाल पारंपरिक सेनाओं को परास्त कर सकती है, तो भारतीय शासकों ने भी अपनी पैदल सेना के लिए बड़ी संख्या में यूरोपीय सैन्य अधिकारियों को नियुक्त किया। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक, अधिकांश भारतीय सेनाओं में यूरोपीय तोपखाने और पैदल सेना के अधिकारी शामिल हो चुके थे।

After the victory at Trichinopoly, Robert Clive fought in a couple of minor battles and then resumed his post at the commissariat in Madras. He was ill for a while with stomach problems, possibly from gallstones, that would recur in the future. He recovered and began to look forward to soon returning to England. A friend wrote of 'the pleasure I propose myself in ******* in company with you in Covent Garden'. However, this was not to be because, shortly before his departure, Clive married. Margaret Maskelyne had come out to visit her brother who was one of those who had escaped in disguise with Clive from Madras. It was an impulsive gesture. Only three days before the ceremony Clive had booked a single passage back home. The couple sailed from Madras in March 1753 and arrived in England in the October. Clive had been in India for ten years. He was now wealthy, having made £40,000 in the commissariat and some extra by his private trading.

त्रिचिनोपोली में विजय के बाद, रॉबर्ट क्लाइव ने कुछ छोटी लड़ाइयों में भाग लिया और फिर मद्रास में रसद कार्यालय में अपने पद पर पुनः आसीन हो गए। कुछ समय तक वे पेट की समस्याओं से पीड़ित रहे, संभवतः पित्त की पथरी के कारण, जो भविष्य में फिर से उभर सकती थीं। वे ठीक हो गए और जल्द ही इंग्लैंड लौटने की आशा करने लगे। एक मित्र ने लिखा, 'मुझे कोवेंट गार्डन में आपके साथ समय बिताने में बहुत खुशी होगी।' हालाँकि, ऐसा नहीं हो सका क्योंकि, उनके प्रस्थान से कुछ समय पहले ही, क्लाइव ने शादी कर ली। मार्गरिट मास्केलीन अपने भाई से मिलने आई थीं, जो उन लोगों में से एक थे जो क्लाइव के साथ भेष बदलकर मद्रास से भाग निकले थे। यह एक आवेगपूर्ण निर्णय था। समारोह से केवल तीन दिन पहले क्लाइव ने घर वापसी के लिए एक टिकट बुक किया था। दंपति मार्च 1753 में मद्रास से रवाना हुए और अक्टूबर में इंग्लैंड पहुँचे। क्लाइव भारत में दस साल बिता चुके थे। अब वे धनी हो चुके थे, उन्होंने रसद कार्यालय में 40,000 पाउंड कमाए थे और अपने निजी व्यापार से भी कुछ अतिरिक्त आय अर्जित की थी।

Clive was in England for eighteen months. He stood for Parliament, was elected and then unseated by political machinations. He paid off most of the mortgage on the family home. The Company presented him with a sword – the hilt of gold set with diamonds – and made much of him. He entered into a five-year contract to return to India as the deputy governor of Fort St David with the right to eventually become the governor of Madras. He was also promoted to lieutenant colonel.

क्लाइव अठारह महीने इंग्लैंड में रहे। उन्होंने संसद के लिए चुनाव लड़ा, चुने गए, लेकिन राजनीतिक षड्यंत्रों के चलते उन्हें पद से हटा दिया गया। उन्होंने पारिवारिक घर का अधिकांश गिरवी ऋण चुका दिया। कंपनी ने उन्हें हीरे जड़ी सोने की तलवार भेंट की और उनका खूब सम्मान किया। उन्होंने फोर्ट सेंट डेविड के उप-गवर्नर के रूप में भारत लौटने के लिए पाँच साल का अनुबंध किया, जिसमें उन्हें अंततः मद्रास का गवर्नर बनने का अधिकार भी शामिल था। उन्हें लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पदोन्नत भी किया गया।

Nine

नौ

THE BRITISH

ब्रिटिश

THE SEIZURE OF BENGAL

बंगाल पर कब्ज़ा

Robert Clive returned to India in 1755. His convoy reached Bombay during October, carrying three companies of artillery and several hundred British soldiers. It had been intended that he would move against the French in the Deccan. However, the authorities in Bombay (who were still independent of Madras) were reluctant to join this operation. They were busy trying to destroy the 'pirates' of the coast – something they had been trying to do for many decades.

रॉबर्ट क्लाइव 1755 में भारत लौटे। उनका काफिला अक्टूबर में बॉम्बे पहुंचा, जिसमें तोपखाने की तीन कंपनियां और कई सौ ब्रिटिश सैनिक थे। उनका इरादा दक्कन में फ्रांसीसियों के खिलाफ कार्रवाई करने का था। हालांकि, बॉम्बे के अधिकारी (जो उस समय मद्रास से स्वतंत्र थे) इस अभियान में शामिल होने के लिए अनिच्छुक थे। वे तट के 'समुद्री डाकुओं' को नष्ट करने में व्यस्त थे - ऐसा करने का प्रयास वे कई दशकों से कर रहे थे।

In 1674, Shivaji had been made king of the Marathas at Raigad. He was the first Hindu king in that area since the rise of Muslim power four centuries before. The East India Company saw that there was a new authority to placate and they had sent a senior official bearing gifts who had successfully negotiated a treaty to facilitate trade.

1674 में शिवाजी को रायगढ़ में मराठों का राजा बनाया गया था। चार शताब्दियों पहले मुस्लिम सत्ता के उदय के बाद वे उस क्षेत्र के पहले हिंदू राजा थे। ईस्ट इंडिया कंपनी ने देखा कि एक नई सत्ता को प्रसन्न करना आवश्यक है और उन्होंने व्यापार को सुगम बनाने के लिए

एक संधि पर सफलतापूर्वक बातचीत करने वाले एक वरिष्ठ अधिकारी को उपहारों के साथ भेजा था।

Only six years later Shivaji died and his eldest son, Sambhaji, became king. Sambhaji had few military gifts and many vices. He drank to excess, participated in sexual orgies and could not control his temper. Nevertheless, he had military ambitions. He concentrated his efforts on trying to defeat the Siddis, the Mughal's allies on the coast south of Bombay. He had insufficient resources to do so. Various attempts to take the Siddi's island fort at Janjira came to nothing and Sambhaji's navy was largely destroyed in a foolish attack. Meanwhile, the Mughals, directed by Emperor Aurangzeb, had defeated the Adil Shahs of Bijapur – the former rulers of Goa. Now they were moving to attack the Marathas from the east. They, not the Siddis, should have been commanding Sambhaji's attention.

महज छह साल बाद शिवाजी जी का देहांत हो गया और उनके सबसे बड़े पुत्र संभाजी राजा बने। संभाजी में सैन्य कौशल की कमी थी, लेकिन वे कई बुराइयों से ग्रस्त थे। वे अत्यधिक शराब पीते थे, कामुक भोग-विलास में लिप्त रहते थे और अपने क्रोध पर काबू नहीं रख पाते थे। फिर भी, उनकी सैन्य महत्वाकांक्षाएँ प्रबल थीं। उन्होंने अपना सारा ध्यान बंबई के दक्षिण तट पर स्थित मुगलों के सहयोगी सिद्दी वंश को पराजित करने पर केंद्रित किया। उनके पास इसके लिए पर्याप्त संसाधन नहीं थे। जंजीरा स्थित सिद्दी द्वीप किले पर कब्जा करने के उनके कई प्रयास विफल रहे और एक मूर्खतापूर्ण हमले में संभाजी की नौसेना लगभग पूरी तरह नष्ट हो गई। इसी बीच, सम्राट औरंगजेब के नेतृत्व में मुगलों ने बीजापुर के आदिल शाहों (गोवा के पूर्व शासक) को पराजित कर दिया था। अब वे पूर्व से मराठों पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ रहे थे। संभाजी को सिद्दी वंश की बजाय मराठों पर ध्यान देना चाहिए था।

In 1689 a small column of Mughal soldiers had made a foray deep into Maratha territory. They made for the lakeside palace of Sangameshwar. Unlike

the strong Maratha hill forts, it was a soft target. It was easy to capture the palace and easy to capture the king of the Marathas for Sambhaji was drunk.

1689 में मुगल सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी मराठा क्षेत्र में काफी अंदर तक घुस गई। वे संगमेश्वर के झील किनारे स्थित महल की ओर बढ़े। मराठों के मजबूत पहाड़ी किलों के विपरीत, यह एक आसान लक्ष्य था। महल पर कब्जा करना आसान था और मराठों के राजा संभाजी को पकड़ना भी आसान था क्योंकि वे नशे में थे।

The Mughals took Sambhaji to Aurangzeb's camp in Tulapur. A red-hot iron was pushed into his eyes and his tongue was cut out. Later, he was beheaded, dismembered, and thrown to the dogs.

मुगलों ने संभाजी को औरंगजेब के तुलापुर स्थित शिविर में ले जाकर उनकी आँखों में गर्म लोहे से छेद कर दिया और उनकी जीभ काट दी। बाद में उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया, उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और कुत्तों के सामने फेंक दिए गए।

During Sambhaji's disastrous reign there had been few consolations for the Marathas. In his battle with the Siddis, however, there had been one memorable event. The year before Sambhaji was captured, the Siddis had decided to besiege the Maratha fort of Suvarnadurg. This island fort, 100 miles south of Bombay, was a mile offshore, had freshwater wells and was enclosed by thick fifty-foot high walls. The Siddis blocked any replenishment of supplies by putting a large fleet into the surrounding waters and an army on the nearby shore. They waited a while, and then opened secret negotiations with the Maratha commander. It was a tactic that they had often used successfully.

संभाजी के विनाशकारी शासनकाल में मराठों को शायद ही कोई सांत्वना मिली थी। लेकिन सिद्दी वंश के साथ उनके युद्ध में एक घटना यादगार रही। संभाजी के बंदी बनाए जाने से एक वर्ष पहले, सिद्दी वंश ने सुवर्णदुर्ग के मराठा किले को घेरने का फैसला किया था। बंबई से 100 मील दक्षिण में स्थित यह द्वीप किला तट से एक मील दूर था, इसमें मीठे पानी के कुएं थे और

यह पचास फुट ऊंची मोटी दीवारों से घिरा हुआ था। सिद्दी वंश ने आसपास के जलक्षेत्र में एक विशाल बेड़ा और निकटवर्ती तट पर एक सेना तैनात करके रसद आपूर्ति को रोक दिया। उन्होंने कुछ समय प्रतीक्षा की और फिर मराठा सेनापति के साथ गुप्त वार्ता शुरू की। यह एक ऐसी रणनीति थी जिसका वे अक्सर सफलतापूर्वक उपयोग करते थे।

A young Maratha officer, Kanhoji Angre, whose father had once been deputy commander of Suvarnadurg, learnt of the proposed surrender. With some fellow officers, he arrested the fort commander and took control himself. He announced that they would resist the Siddis till the end. He led an attack against the Siddi army on shore. Many of his men were killed and he was taken prisoner. However, Kanhoji Angre managed to escape and swam back to the fort.

युवा मराठा अधिकारी कान्होजी आंग्रे, जिनके पिता कभी सुवर्णदुर्ग के उप-कमांडर रह चुके थे, को प्रस्तावित आत्मसमर्पण की सूचना मिली। उन्होंने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर किले के कमांडर को गिरफ्तार कर लिया और किले पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। उन्होंने घोषणा की कि वे सिद्दी सेना का अंत तक प्रतिरोध करेंगे। उन्होंने तट पर स्थित सिद्दी सेना के विरुद्ध आक्रमण का नेतृत्व किया। उनके कई सैनिक मारे गए और उन्हें बंदी बना लिया गया। हालांकि, कान्होजी आंग्रे किसी तरह बच निकलने में कामयाब रहे और तैरकर किले तक वापस पहुँच गए।

The Siddis maintained the siege for a while. However, the monsoon was approaching, when it would become impossible to keep a fleet at sea and difficult to supply an army on land. The Siddis withdrew and a grateful Sambhaji confirmed Kanhoji Angre as commander of Suvarnadurg. When the new regent restructured the administration, he appointed an admiral with two deputies – one for southern Konkan and one for northern Konkan. The northern commander would take over the remnant of the fleets operating from the forts of Gheria and Suvarnadurg. The huge navy left by Shivaji –

perhaps 200 warships – had been reduced by the follies of his son to a pitiful number. The northern commander inherited only eight or ten ships. He was Kanhoji Angre.

सिद्दी वंश ने कुछ समय तक घेराबंदी जारी रखी। हालांकि, मानसून नजदीक आ रहा था, जिसके बाद समुद्र में बेड़ा रखना और ज़मीन पर सेना को रसद आपूर्ति करना असंभव हो जाता। सिद्दी वंश पीछे हट गया और साम्भाजी ने कृतज्ञतापूर्वक कान्होजी आंग्रे को सुवर्णदुर्ग का सेनापति नियुक्त कर दिया। जब नए शासक ने प्रशासन का पुनर्गठन किया, तो उन्होंने एक एडमिरल और दो उप-एडमिर नियुक्त किए – एक दक्षिणी कोंकण के लिए और एक उत्तरी कोंकण के लिए। उत्तरी सेनापति को घेरिया और सुवर्णदुर्ग के किलों से संचालित होने वाले बेड़ों के शेष भाग का कार्यभार सौंपा गया। शिवाजी द्वारा छोड़ी गई विशाल नौसेना – लगभग 200 युद्धपोत – उनके पुत्र की मूर्खता के कारण घटकर दयनीय संख्या में रह गई थी। उत्तरी सेनापति को केवल आठ या दस जहाज ही विरासत में मिले। वह कान्होजी आंग्रे थे।

Kanhoji began to rebuild his fleet. The commander of southern Konkan led a sedentary life and was happy for Kanhoji to operate within his territory. The southern seas – sometimes far south of Konkan and away from the powerful Siddi and English fleets – were easier places to capture stray shipping.

कान्होजी ने अपने बेड़े का पुनर्निर्माण शुरू किया। दक्षिणी कोंकण के सेनापति का जीवन स्थिर था और वे कान्होजी को अपने क्षेत्र में ही काम करने देने से प्रसन्न थे। दक्षिणी समुद्र - जो कभी-कभी कोंकण से काफी दक्षिण में और शक्तिशाली सिद्दी और अंग्रेजी बेड़ों से दूर होते थे - भटकते हुए जहाजों को पकड़ने के लिए आसान स्थान थे।

The Portuguese in their heyday had introduced a system of selling permits, their cartaz, to give safe passage. Anyone found by a Portuguese warship without one, or breaking its conditions regarding cargo, was liable to forfeiture. Kanhoji began to implement a similar system with his own permit, the *dastak*. In 1702 he seized a merchant ship without a dastak off Calicut. Although not an English ship, it had Englishmen aboard and the East India

Company demanded the ship and passengers be released. Kanhoji defied them.

पुर्तगालियों ने अपने चरम उत्कर्ष काल में सुरक्षित यात्रा के लिए परमिट बेचने की एक प्रणाली शुरू की थी। पुर्तगाली युद्धपोत द्वारा बिना परमिट के या माल से संबंधित शर्तों का उल्लंघन करने वाले किसी भी व्यक्ति को पकड़े जाने पर जहाज जब्त कर लिया जाता था। कान्होजी ने अपने स्वयं के परमिट, 'दस्तक' के साथ इसी तरह की प्रणाली लागू करना शुरू किया। 1702 में उन्होंने कालीकट के तट पर बिना 'दस्तक' के एक व्यापारी जहाज को जब्त कर लिया। हालांकि यह एक अंग्रेजी जहाज नहीं था, लेकिन इसमें अंग्रेज सवार थे और ईस्ट इंडिया कंपनी ने जहाज और यात्रियों को रिहा करने की मांग की। कान्होजी ने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया।

The next year, the Company again became agitated when Kanhoji captured a Dutch warship of thirty guns. When a ship from Konkan that carried one of Kanhoji's dastaks came to Bombay, the Company seized it. A year later, Kanhoji arrived with seven warships and parked them off Bombay. He made no threats, merely leaving them in a position where they could have cut off the island. A week later he sailed off. The Company rushed to be conciliatory, but Kanhoji refused to compromise on his demand that all ships travelling along the coast would need his dastak. The Company made it clear that they had no intention of carrying the dastaks.

अगले वर्ष, जब कान्होजी ने तीस तोपों वाले एक डच युद्धपोत पर कब्जा कर लिया, तो कंपनी फिर से उत्तेजित हो गई। जब कोंकण से एक जहाज, जिस पर कान्होजी की एक दस्तक थी, बंबई पहुंचा, तो कंपनी ने उसे जब्त कर लिया। एक वर्ष बाद, कान्होजी सात युद्धपोतों के साथ बंबई के तट पर पहुंचे और उन्हें खड़ा कर दिया। उन्होंने कोई धमकी नहीं दी, बस उन्हें ऐसी स्थिति में छोड़ दिया जहां से वे द्वीप का घेरा काट सकते थे। एक सप्ताह बाद वे रवाना हो गए। कंपनी ने सुलह का प्रयास किया, लेकिन कान्होजी ने अपनी इस मांग पर अडिग रहने से इनकार कर दिया कि तट के किनारे यात्रा करने वाले सभी जहाजों को उनकी दस्तक की

आवश्यकता होगी। कंपनी ने स्पष्ट कर दिया कि उनका दस्तक ले जाने का कोई इरादा नहीं है।

The Company described Kanhoji Angre as a pirate. 'Angria, a Sevagee pirate independent of that Rajah, came into the bay,' they reported back to London. This would continue to be the Company's appellation, even though Kanhoji always took care to sign himself as admiral of the Marathas. For some of Kanhoji's time, because the succession to Sambhaji was disputed, the Company could perhaps claim that he was backing a usurper to the Maratha throne. Even when the succession had been settled, however, and Sambhaji's son, Shahu, had been confirmed as king of the Marathas, the Company continued to describe Kanhoji as a pirate. Even when King Shahu made Kanhoji his chief admiral and the commander of the whole of Konkan, he was still a pirate to the English.

कंपनी ने कान्होजी आंग्रे को समुद्री डाकू बताया। उन्होंने लंदन को सूचना दी, 'उस राजा से स्वतंत्र एक सेवेगी समुद्री डाकू, आंग्रे खाड़ी में आया।' कंपनी का यही नाम कान्होजी को तब भी दिया जाता रहा, जब कान्होजी हमेशा मराठों के एडमिरल के रूप में ही हस्ताक्षर करते थे। कुछ समय तक, जब संभाजी के उत्तराधिकार को लेकर विवाद चल रहा था, कंपनी शायद यह दावा कर सकती थी कि वह मराठा सिंहासन पर कब्जा करने वाले का समर्थन कर रहे थे। हालांकि, उत्तराधिकार तय हो जाने और संभाजी के पुत्र शाहू के मराठों के राजा बनने की पुष्टि हो जाने के बाद भी, कंपनी ने कान्होजी को समुद्री डाकू ही बताया। यहां तक कि जब राजा शाहू ने कान्होजी को अपना मुख्य एडमिरल और पूरे कोंकण का सेनापति बनाया, तब भी अंग्रेजों के लिए वह समुद्री डाकू ही रहे।

As the activities of the European pirates decreased, the seizure of ships by Kanhoji Angre began to increase. In 1706 his ships captured the Company's

Monsoon at Karwar. In 1707 he attacked the Company's frigate *Bombay*, which sank. In 1710 there was an inconclusive battle with the Company's ship *Godolphin* – an engagement that lasted all day and was witnessed from Bombay. In 1712, off Karwar, Kanhoji Angre took the governor's armed yacht and the *Anne*. That same year he also attacked the annual armada of Portuguese ships that took the profits from Goa back to Lisbon. One warship of thirty-four guns guarding the armada was captured and the other forced to withdraw. The East India Company wrote to London that Kanhoji Angre's fleet could 'take any ship except the largest European ships'.

यूरोपीय समुद्री लुटेरों की गतिविधियाँ कम होने के साथ ही, कान्होजी आंग्रे द्वारा जहाजों पर कब्ज़ा करने की घटनाएँ बढ़ने लगीं। 1706 में उनके जहाजों ने कारवार में कंपनी के मॉनसून जहाज को पकड़ लिया। 1707 में उन्होंने कंपनी के फ्रिगेट बॉम्बे पर हमला किया, जो डूब गया। 1710 में कंपनी के जहाज गोडोल्फिन के साथ एक अनिर्णायक युद्ध हुआ - यह लड़ाई पूरे दिन चली और बॉम्बे से देखी गई। 1712 में, कारवार के पास, कान्होजी आंग्रे ने गवर्नर की सशस्त्र नौका और ऐनी पर कब्ज़ा कर लिया। उसी वर्ष उन्होंने पुर्तगाली जहाजों के वार्षिक बेड़े पर भी हमला किया जो गोवा से मुनाफा लेकर लिस्बन लौटता था। बेड़े की रक्षा कर रहे चौंतीस तोपों वाले एक युद्धपोत को पकड़ लिया गया और दूसरे को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। ईस्ट इंडिया कंपनी ने लंदन को लिखा कि कान्होजी आंग्रे का बेड़ा 'सबसे बड़े यूरोपीय जहाजों को छोड़कर किसी भी जहाज पर कब्ज़ा कर सकता है'।

All this was despite the expansion of the British navies – Company's and Royal. The Company's navy had one ship of thirty-two guns, four ships of twenty or more guns, and twenty smaller ships carrying from five to twelve guns. In addition to this, the Royal Navy had an Arabian Sea fleet of one ship with seventy-four guns, one with fifty, eighteen with twelve to thirty-two guns each and some smaller boats with four to eight guns.

यह सब ब्रिटिश नौसेनाओं - कंपनी और रॉयल नौसेना - के विस्तार के बावजूद था। कंपनी नौसेना के पास बत्तीस तोपों वाला एक जहाज, बीस या उससे अधिक तोपों वाले चार जहाज और पाँच से बारह तोपों वाले बीस छोटे जहाज थे। इसके अतिरिक्त, रॉयल नौसेना के पास अरब सागर में एक जहाज था जिसमें चौहत्तर तोपें थीं, एक पचास तोपों वाला, अठारह जहाज बारह से बत्तीस तोपों वाले और कुछ छोटे जहाज चार से आठ तोपों वाले थे।

How did Kanhoji Angre manage to defy what had become one of the most powerful naval powers in the world? Year after year he had gradually built up the small navy which he had inherited. He had also recruited well – not only from among the Marathas, but also from among the Europeans. There were numerous renegade Europeans in India, some of them once pirates, who were only too willing to take a share of the Maratha spoils. Kanhoji was always on the lookout for good gunners and good shipbuilders. It was said that many of his best captains were Dutch. Kanhoji's main asset, however, was his grasp of tactics. He operated like the guerrilla commander he had so successfully been on land. He avoided confronting the European navies on the high seas, for there they could out-sail and out-gun him. He always made sure that in any engagement he was close to the shore.

कान्होजी आंग्रे ने विश्व की सबसे शक्तिशाली नौसैनिक शक्तियों में से एक बन चुकी नौसेना को कैसे चुनौती दी? उन्होंने वर्षों-वर्षों में धीरे-धीरे अपनी विरासत में मिली छोटी नौसेना का विस्तार किया था। उन्होंने न केवल मराठों में से, बल्कि यूरोपीय लोगों में से भी कुशल सैनिकों की भर्ती की थी। भारत में कई बागी यूरोपीय थे, जिनमें से कुछ कभी समुद्री डाकू रह चुके थे, जो मराठों की लूट में हिस्सा लेने के लिए उत्सुक थे। कान्होजी हमेशा कुशल तोपची और कुशल जहाज निर्माता की तलाश में रहते थे। कहा जाता है कि उनके कई सर्वश्रेष्ठ कप्तान डच थे। हालाँकि, कान्होजी की सबसे बड़ी खूबी उनकी युद्धनीति की समझ थी। उन्होंने उसी तरह से युद्धनीति की रणनीति अपनाई, जैसे उन्होंने ज़मीन पर सफलतापूर्वक की थी। उन्होंने खुले समुद्र में यूरोपीय नौसेनाओं का सामना करने से परहेज किया, क्योंकि वहाँ वे उनसे अधिक

कुशल जहाज़ और तोपें चला सकते थे। उन्होंने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि किसी भी युद्ध में वे तट के करीब रहें।

There were two main types of ships in the Maratha fleet – the Ghurab and the Gallivat. The Ghurabs were the heavy armed ships, usually twin-masted, ranging from 150 to 400 tons. Typically they might have two guns firing forward and six along each side. Neither their guns nor their gunpowder were equal to that of the European ships. They were slow and cumbersome.

मराठा बेड़े में दो मुख्य प्रकार के जहाज थे – ग़ुरब और गैलीवेट। ग़ुरब भारी हथियारों से लैस जहाज थे, जिनमें आमतौर पर दो मस्तूल होते थे और इनका वजन 150 से 400 टन तक होता था। इनमें आम तौर पर आगे की ओर दो तोपें और दोनों ओर छह-छह तोपें लगी होती थीं। न तो उनकी तोपें और न ही उनका बारूद यूरोपीय जहाजों के बराबर था। वे धीमे और भारी-भरकम थे।

The much more numerous Gallivats were light and fast. Most were less than seventy tons and had bamboo decks unable to take the weight of cannon. They relied on bows and arrows, and slings until their crews were able to use their curved Maratha swords. The Gallivats had two masts, one with a large triangular sail and one with a small one. They also had forty or fifty oars.

गैलीवेट जहाज़ों की संख्या कहीं अधिक थी, लेकिन वे हल्के और तेज़ थे। इनमें से अधिकांश का वज़न सत्तर टन से कम था और उनके बांस के डेक तोपों का भार सहन नहीं कर सकते थे। जब तक उनके चालक दल मराठा तलवारों का उपयोग करने में सक्षम नहीं हो गए, तब तक वे धनुष-बाण और गुलेल पर निर्भर थे। गैलीवेट जहाज़ों में दो मस्तूल होते थे, एक पर बड़ा त्रिकोणीय पाल और दूसरे पर छोटा पाल लगा होता था। इनमें चालीस या पचास चप्पू भी होते थे।

Kanhoji's tactics were simple. His men waited until a potential prize came inshore or was lured there. Ideally, there would be little or no wind. Then, out of their hiding places, the Marathas would attack. The Ghurabs would be

towed, or half-sailed and half-towed, into position by a cluster of oared Gallivats. The Ghurabs would then open fire at point-blank range, hoping to bring down a mast or otherwise disable their quarry. Then the Marathas would board. Usually the men on their packed ships would totally outnumber the sailors aboard their enemy. In any event, the Marathas were expert swordsmen and deadly in close fighting.

कान्होजी की रणनीति सरल थी। उनके सैनिक तब तक प्रतीक्षा करते जब तक कोई संभावित शिकार तट के पास न आ जाए या उसे वहाँ न बुलाया जाए। आदर्श स्थिति में, हवा बिल्कुल न के बराबर या धीमी होनी चाहिए। फिर, अपने छिपने के स्थानों से मराठा हमला करते। गुरब नौकाओं को चप्पू वाली गैलीवेट नौकाओं के समूह द्वारा खींचकर या आधा पाल और आधा खींचकर, सही स्थान पर लाया जाता। फिर गुरब नौकाएँ बिल्कुल करीब से गोलीबारी करतीं, इस उम्मीद में कि उनका मस्तूल गिर जाए या वे अपने शिकार को किसी अन्य प्रकार से निष्क्रिय कर दें। इसके बाद मराठा नौकाओं पर सवार हो जाते। आमतौर पर, उनकी भरी हुई नौकाओं पर सवार सैनिकों की संख्या दुश्मन की नौकाओं पर सवार नाविकों से कहीं अधिक होती थी। किसी भी स्थिति में, मराठा तलवारबाजी में माहिर थे और आमने-सामने की लड़ाई में घातक सिद्ध होते थे।

If possible, the prize would be towed back to one of Kanhoji's forts. It would then be stripped of its cargo and valuables. The Europeans and other wealthy captives would be held for ransom. When repaired, the ship would join Kanhoji's fleet.

यदि संभव हो, तो लूटे गए जहाज को कान्होजी के किसी किले में वापस ले जाया जाता। फिर उसमें से माल और कीमती सामान निकाल लिया जाता। यूरोपीय नागरिकों और अन्य धनी बंधकों को फिरौती के लिए बंधक बनाकर रखा जाता। मरम्मत के बाद, जहाज कान्होजी के बेड़े में शामिल हो जाता।

After many successes against the Company, Kanhoji became the diplomat. There were complications in the Maratha succession and he wanted to use his army to influence events. Not wishing to fight on two fronts, he proposed a treaty of friendship with the Company. The Company was keen to agree and a treaty was signed in April 1713. In 1715, Kanhoji signed another treaty of peace – this time with his traditional enemies, the Siddis. With the Maratha succession decided in his favour and at peace with his two main enemies, Kanhoji set about fortifying Khanderi. This small island lay ten miles south of Bombay and three miles off the coast. It had been taken by Shivaji in 1679, but nothing had been done with it. It was ideally placed to gather intelligence on the activities at Bombay port.

कंपनी के खिलाफ कई सफलताओं के बाद, कान्होजी एक कुशल राजनयिक बन गए। मराठा उत्तराधिकार में जटिलताएं थीं और वे अपनी सेना का उपयोग करके घटनाक्रम को प्रभावित करना चाहते थे। दो मोर्चों पर लड़ना न चाहते हुए, उन्होंने कंपनी के साथ मैत्री संधि का प्रस्ताव रखा। कंपनी इस पर सहमत होने के लिए उत्सुक थी और अप्रैल 1713 में संधि पर हस्ताक्षर किए गए। 1715 में, कान्होजी ने एक और शांति संधि पर हस्ताक्षर किए - इस बार अपने पारंपरिक शत्रुओं, सिद्दी वंश के साथ। मराठा उत्तराधिकार उनके पक्ष में तय होने और अपने दो मुख्य शत्रुओं के साथ शांति स्थापित होने के बाद, कान्होजी ने खंडेरी को मजबूत करने का कार्य शुरू किया। यह छोटा द्वीप बंबई से दस मील दक्षिण और तट से तीन मील दूर स्थित था। इसे शिवाजी ने 1679 में अपने कब्जे में ले लिया था, लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। बंबई बंदरगाह पर होने वाली गतिविधियों की जानकारी जुटाने के लिए यह आदर्श स्थान था।

Shortly after the peace treaty between the Company and Kanhoji was signed, a new governor arrived at Bombay. Charles Boone was energetic and aggressive. He immediately began to strengthen the defences of Bombay. A tax was imposed on the Indian and other merchants to finance a wall with

fortified gates around the township. He also started a large shipbuilding programme. Within six months, he had added three frigates to the Company's fleet. By 1718 he had added another frigate, two fire ships and the *Phram* – a floating battery of guns – the very latest thing in naval architecture. These were not defensive weapons.

कंपनी और कान्होजी के बीच शांति संधि पर हस्ताक्षर होने के कुछ ही समय बाद, बंबई में एक नया गवर्नर आया। चार्ल्स बून ऊर्जावान और आक्रामक थे। उन्होंने तुरंत बंबई की सुरक्षा को मजबूत करना शुरू कर दिया। कस्बे के चारों ओर किलेबंद फाटकों वाली दीवार के निर्माण के लिए भारतीय और अन्य व्यापारियों पर कर लगाया गया। उन्होंने एक बड़ा जहाज निर्माण कार्यक्रम भी शुरू किया। छह महीनों के भीतर, उन्होंने कंपनी के बेड़े में तीन फ्रिगेट शामिल कर लिए। 1718 तक उन्होंने एक और फ्रिगेट, दो फायर शिप और फ्राम (तोपों की एक तैरती हुई बैटरी) शामिल कर ली थी, जो नौसैनिक वास्तुकला में सबसे आधुनिक थी। ये रक्षात्मक हथियार नहीं थे।

Kanhoji soon gave Boone an excuse to act. Firstly, he failed to return the timber and cannon he had appropriated when he had captured the *Anne* and the governor's yacht at Karwar. Secondly, he seized four ships flying the English flag. These ships were Indian-owned, but carried the Company's cargo. Kanhoji insisted that since these ships did not carry his dastak he was within his rights, but the Company maintained that they had immunity. In April 1718, Boone issued secret orders to seize Kanhoji's vessels. Shortly afterwards, one of Kanhoji's ships was taken near Bombay. 'Our friendship is over,' Kanhoji wrote to Boone, 'and from this day forward, what God gives, I shall take.' Boone then decided to send an expedition against Kanhoji's main base – the fort at Gheria.

कान्होजी ने जल्द ही बून को कार्रवाई करने का बहाना दे दिया। पहला, उन्होंने कारवार में ऐनी और गवर्नर की नौका पर कब्जा करते समय जब्त की गई लकड़ी और तोपें वापस नहीं

कीं। दूसरा, उन्होंने अंग्रेजी झंडा फहरा रहे चार जहाजों को जब्त कर लिया। ये जहाज भारतीय स्वामित्व वाले थे, लेकिन कंपनी का माल ढो रहे थे। कान्होजी ने जोर देकर कहा कि चूंकि इन जहाजों पर उनकी दस्तक नहीं थी, इसलिए वे अपने अधिकार क्षेत्र में थे, लेकिन कंपनी ने दावा किया कि उन्हें छूट प्राप्त है। अप्रैल 1718 में, बून ने कान्होजी के जहाजों को जब्त करने के गुप्त आदेश जारी किए। कुछ ही समय बाद, कान्होजी का एक जहाज बंबई के पास जब्त कर लिया गया। कान्होजी ने बून को लिखा, 'हमारी दोस्ती खत्म हो गई है, और आज से जो भी ईश्वर देगा, मैं उसे ले लूंगा।' इसके बाद बून ने कान्होजी के मुख्य अड्डे - घेरिया के किले - पर हमला करने का फैसला किया।

It was an excellent time to attack. The monsoon was imminent and Kanhoji's fleet was at anchor. Moreover, many of the sailors had departed to their villages and most of the officers were at Colaba for the wedding of Kanhoji's daughter. The British had another advantage too, for one of Kanhoji's senior advisors, the Portuguese adventurer, Manuel de Castro, had defected to them. He appeared to know a great deal about the Maratha fleet and had assured Boone that it would be easy to float a fire ship into the huddled vessels in Gheria harbour and then take the fort by storm. Nevertheless, a formidable force was assembled, of twenty Gallivats filled with soldiers, 2,500 men in all.

हमला करने का यह बिल्कुल सही समय था। मानसून आने ही वाला था और कान्होजी का बेड़ा लंगर डाले खड़ा था। इसके अलावा, कई नाविक अपने-अपने गांवों के लिए रवाना हो चुके थे और अधिकांश अधिकारी कान्होजी की बेटी की शादी के लिए कोलाबा में थे। अंग्रेजों को एक और फायदा भी था, क्योंकि कान्होजी के वरिष्ठ सलाहकारों में से एक, पुर्तगाली साहसी मैनुअल डी कास्त्रो, उनके पक्ष में आ गया था। ऐसा लगता था कि उसे मराठा बेड़े के बारे में काफी जानकारी थी और उसने बून को भरोसा दिलाया था कि घेरिया बंदरगाह में जमा जहाजों पर आग लगाने वाला जहाज भेजना और फिर किले पर धावा बोलना आसान होगा। फिर भी, सैनिकों से भरे बीस गैलीवेट जहाजों की एक विशाल सेना इकट्ठा की गई, जिसमें कुल 2,500 सैनिक थे।

When the English squadron arrived, they found the reality was somewhat different. Kanhoji's ships were there. However, they were not in the harbour by the fort, but in the river. A strong boom had been put across the river mouth, which made it impossible to send in fire ships. The fort was also not as imagined either. Its walls were so high that the British ladders were useless. A two-day bombardment of the fort failed to achieve much. However, since it seemed that there were only a few defenders, a landing was made beneath its walls. The troops were supposed to march to the river and set fire to Kanhoji's fleet. This plan was abandoned when they found themselves in a swamp. As the men tried to regain their ships, they came under heavy fire from within the fort. The British then left for Bombay 'to repair our frigates and take care of our wounded men, of whom we had a considerable number'.

जब अंग्रेज़ों का दस्ता वहाँ पहुँचा, तो उन्हें वास्तविकता कुछ अलग ही मिली। कान्होजी के जहाज़ वहाँ मौजूद थे। हालाँकि, वे किले के पास बंदरगाह में नहीं, बल्कि नदी में थे। नदी के मुहाने पर एक मज़बूत बैरिकेड लगा दिया गया था, जिससे आग लगाने वाले जहाज़ भेजना असंभव हो गया था। किला भी वैसा नहीं था जैसा उन्होंने सोचा था। उसकी दीवारें इतनी ऊँची थीं कि ब्रिटिश सीढ़ियाँ बेकार थीं। किले पर दो दिन तक बमबारी करने के बावजूद कोई खास सफलता नहीं मिली। हालाँकि, ऐसा प्रतीत हुआ कि वहाँ कुछ ही रक्षक थे, इसलिए किले की दीवारों के नीचे उतरने का फैसला किया गया। सैनिकों को नदी तक मार्च करके कान्होजी के बेड़े में आग लगानी थी। लेकिन जब वे दलदल में फँस गए, तो यह योजना छोड़ दी गई। जब सैनिक अपने जहाज़ों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे थे, तो किले के अंदर से उन पर भारी गोलाबारी हुई। इसके बाद अंग्रेज़ बंबई के लिए रवाना हो गए, "ताकि हम अपने फ्रिगेट की मरम्मत कर सकें और अपने घायल सैनिकों की देखभाल कर सकें, जिनकी संख्या काफी अधिक थी।"

Despite the failure of this expedition and a similar repulse with heavy casualties later in the year at Kanhoji's island fort of Khanderi, Governor Boone determined to attack Gheria again. At the end of the monsoon in 1720 a large fleet set sail from Bombay under the command of a Company official, Mr Walter Brown, who had been made admiral and commander-in-chief for the occasion. His flagship was the *London*, of forty guns. He also had five other large warships, various smaller ships, a fire ship and a bomb ketch, the *Terrible Bomb*. The fleet was to be augmented later by two more ships and the *Phram*. There were 2,000 sailors in all, plus 350 British soldiers and 80 others, mostly Africans.

इस अभियान की विफलता और उसी वर्ष बाद में कान्होजी के खंडेरी द्वीप किले में भारी जानमाल के नुकसान के साथ इसी तरह की हार के बावजूद, गवर्नर बून ने घेरिया पर फिर से हमला करने का निश्चय किया। 1720 में मानसून के अंत में, कंपनी के एक अधिकारी, श्री वाल्टर ब्राउन, जिन्हें इस अवसर के लिए एडमिरल और कमांडर-इन-चीफ बनाया गया था, के नेतृत्व में एक विशाल बेड़ा बंबई से रवाना हुआ। उनका प्रमुख पोत 40 तोपों वाला लंदन था। उनके पास पाँच अन्य बड़े युद्धपोत, कई छोटे जहाज, एक आग लगाने वाला जहाज और एक बम ले जाने वाला जहाज, टेरिबल बॉम्ब भी था। बाद में इस बेड़े में दो और जहाज और फ्राम शामिल किए गए। कुल मिलाकर 2,000 नाविक, 350 ब्रिटिश सैनिक और 80 अन्य लोग थे, जिनमें से अधिकांश अफ्रीकी थे।

On arrival at Gheria on 18 September, Brown lined up his ships and gave the order to open fire. Unfortunately, they were still a mile away and all the shots fell into the sea. The *Terrible Bomb* was then sent inshore to blast the fort. It only fired twice before it became apparent that its gun barrels were too weak to use an adequate charge of gunpowder. Four days later, a party of fifty soldiers was put ashore to capture a building on top of a nearby hill. The

building turned out to be merely a pile of stones. The men returned and suffered heavy losses as they tried to regain their ships.

18 सितंबर को घेरिया पहुँचने पर, ब्राउन ने अपने जहाजों को कतार में खड़ा किया और गोलीबारी का आदेश दिया। दुर्भाग्य से, वे अभी भी एक मील दूर थे और सभी गोले समुद्र में गिरे। इसके बाद, किले को उड़ाने के लिए टेरिबल बॉम्ब को तट की ओर भेजा गया। इसने केवल दो बार ही फायर किया, इससे पहले कि यह स्पष्ट हो गया कि इसकी तोपों की बैरल पर्याप्त बारूद का उपयोग करने के लिए बहुत कमजोर थीं। चार दिन बाद, पचास सैनिकों की एक टुकड़ी को पास की एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक इमारत पर कब्जा करने के लिए तट पर उतारा गया। इमारत केवल पत्थरों का ढेर निकली। सैनिक वापस लौटे और अपने जहाजों पर फिर से कब्जा करने की कोशिश में उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा।

Brown was under the impression that his men would fight better if intoxicated. As discipline broke down, some of the officers begged him to stop issuing rum. He refused, saying, 'Let them drink as they please.'

ब्राउन को यह भ्रम था कि नशे में धुत होकर उसके सैनिक बेहतर ढंग से लड़ेंगे। जब अनुशासन भंग होने लगा, तो कुछ अधिकारियों ने उससे रम देना बंद करने की गुहार लगाई। उसने इनकार करते हुए कहा, 'उन्हें जितना चाहें उतना पीने दो।'

There was a hiatus while they waited for the *Phram*, in which Brown had great confidence, to arrive. Meanwhile, seeing the inaction, the Maratha commander brought in new supplies and new men. The *Phram* arrived on 27 September and was immediately sent into the attack. However, its gun slits were too low and it only managed to fire into the sea twenty yards away. The next day was spent in making modifications.

ब्राउन को जिस फ्राम जहाज पर पूरा भरोसा था, उसके आने का इंतज़ार करते हुए कुछ समय के लिए काम रुका रहा। इसी बीच, निष्क्रियता देखकर मराठा कमांडर ने नई साजो-सामान और नए सैनिक मंगवा लिए। फ्राम जहाज 27 सितंबर को पहुंचा और उसे तुरंत हमले में भेज

दिया गया। हालांकि, उसकी तोपों के छेद बहुत नीचे थे और वह केवल बीस गज दूर समुद्र में ही गोली चला सका। अगला दिन उसमें सुधार करने में बिताया गया।

On 29 September, the combined assault began. Brown had assumed that the sailors would be part of the force, but most of them refused. Only 239 men volunteered to take the forty-rupee reward. The *Phram* went into action. It fired shells indiscriminately among friend and foe alike. This resulted in Brown ordering it to go under cover of darkness right beneath the fortress's walls. It was to open fire the next morning. To steady their resolve he sent them 'six dozen each of wine and arrack'. This was well received by the *Phram's* commander, Lieutenant Wise. He became too drunk to take any further part in the action.

29 सितंबर को संयुक्त हमला शुरू हुआ। ब्राउन ने सोचा था कि नाविक भी इस सेना का हिस्सा होंगे, लेकिन उनमें से अधिकांश ने इनकार कर दिया। केवल 239 लोगों ने चालीस रुपये का इनाम लेने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। फ्राम नामक जहाज ने कार्रवाई शुरू की। उसने मित्र और शत्रु, दोनों पर अंधाधुंध गोले दागे। इसके परिणामस्वरूप ब्राउन ने उसे अंधेरे की आड़ में किले की दीवारों के ठीक नीचे जाने का आदेश दिया। उसे अगली सुबह गोलीबारी शुरू करनी थी। उनका मनोबल बढ़ाने के लिए उसने उन्हें 'छह दर्जन शराब और छह दर्जन अराक' भेजी। फ्राम के कमांडर, लेफ्टिनेंट वाइज ने इसे अच्छी तरह से स्वीकार किया। वह इतना नशे में धुत हो गया कि आगे की कार्रवाई में भाग नहीं ले सका।

Those sober enough to do so opened fire from the *Phram*. Their most devastating salvo went into a British ship. This had the Company's African troops aboard. Half of them were killed; half were 'terribly scorched'. The Marathas then opened fire on the *Phram*, killing fifteen and wounding thirty.

जो लोग होश में थे, उन्होंने फ्राम से गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी सबसे विनाशकारी गोलीबारी एक ब्रिटिश जहाज पर हुई। इस जहाज पर कंपनी के अफ्रीकी सैनिक सवार थे।

उनमें से आधे मारे गए; आधे बुरी तरह झुलस गए। इसके बाद मराठों ने फ्राम पर गोलीबारी की, जिसमें पंद्रह मारे गए और तीस घायल हो गए।

The English withdrew their ships, including the *Phram*, and resumed drinking. Captain Woodward of the *Revenge* reported to Brown that his ship had run aground and was lost. This turned out to be a delusion and he was 'put into irons for cowardness'. There was a fist fight between some of the other officers.

अंग्रेजों ने फ्राम समेत अपने जहाज वापस बुला लिए और फिर से शराब पीने लगे। रिवेंज के कप्तान वुडवर्ड ने ब्राउन को सूचना दी कि उनका जहाज किनारे पर फंस गया है और डूब गया है। यह एक भ्रम निकला और उन्हें 'कायरता के लिए हथकड़ी लगा दी गई'। कुछ अन्य अधिकारियों के बीच हाथापाई भी हुई।

There was then a lull in hostilities for the liquor was running out. Brown sent a ship to Goa for fresh supplies. When the arrack arrived, Brown proposed another assault on Gheria. His officers refused to even consider it – one telling Brown he was mad. To salvage some pride, Brown then took off his fleet to bombard the nearby Maratha fort of Devgad. This had little effect and on 21 October the fleet set sail for Bombay. Then occurred the most extraordinary disaster of all.

शराब खत्म होने के कारण कुछ समय के लिए युद्ध विराम हो गया। ब्राउन ने ताज़ा आपूर्ति के लिए गोवा एक जहाज भेजा। जब शराब पहुँची, तो ब्राउन ने घेरिया पर एक और हमले का प्रस्ताव रखा। उनके अधिकारियों ने इस पर विचार करने से भी इनकार कर दिया - एक अधिकारी ने तो ब्राउन को पागल तक कह दिया। अपनी थोड़ी इज़्ज़त बचाने के लिए, ब्राउन ने अपने बेड़े को पास के मराठा किले देवगढ़ पर बमबारी करने के लिए भेजा। इसका कोई खास असर नहीं हुआ और 21 अक्टूबर को बेड़ा बंबई के लिए रवाना हो गया। फिर सबसे भयानक आपदा घटी।

Just off Gheria, Brown saw four pirate ships. Frightened by the possibility of an encounter, Brown's flotilla sailed into Gheria harbour hoping the pirates would be nervous of getting too close to the Marathas. At night they crept out to sea again. In the dark, probably entirely by coincidence, they ran into the pirate fleet. The pirate ship *Victory* then fired across the bows of the Company's ship *Victory*. Brown's flagship, the *London*, then hailed the ship that had fired the shots to ask her name. When, out of the darkness, she replied that she was the *Victory*, the *London* announced her own identity. A pirate broadside then raked her.

घेरिया के पास ही ब्राउन ने चार समुद्री लुटेरों के जहाज देखे। मुठभेड़ की आशंका से भयभीत होकर, ब्राउन का बेड़ा घेरिया बंदरगाह में घुस गया, इस उम्मीद में कि समुद्री लुटेरे मराठों के बहुत करीब आने से घबराएंगे। रात में वे चुपके से फिर समुद्र में निकल पड़े। अंधेरे में, शायद महज़ संयोग से, उनका सामना समुद्री लुटेरों के बेड़े से हो गया। समुद्री लुटेरों के जहाज विक्ट्री ने कंपनी के जहाज विक्ट्री पर गोलीबारी की। ब्राउन के प्रमुख जहाज, लंदन ने गोलीबारी करने वाले जहाज को नाम पूछने के लिए संकेत दिया। जब अंधेरे में से विक्ट्री ने जवाब दिया, तो लंदन ने अपनी पहचान ज़ाहिर कर दी। फिर समुद्री लुटेरों ने उस पर गोलियों की बौछार कर दी।

The pirate commander was Edward England. Based in Madagascar, he had recently captured and commandeered the Company's ship *Cassandra*, which had been coming to India with the annual injection of cash for investment – some £75,000. Normally, the pirates would have avoided a battle against such a large force, but it was soon apparent that, despite their overwhelming superiority, the Company's fleet was more in fear of them. Admiral Brown gave the order for all the flags of his fleet to be hauled down and then ran for Goa. They were slowed down in their escape by the ungainly *Phram*. It was set on fire and cast adrift.

समुद्री लुटेरों का सरदार एडवर्ड इंग्लैंड था। मेडागास्कर में स्थित, उसने हाल ही में कंपनी के जहाज कैसेंड्रा पर कब्जा कर लिया था, जो भारत में निवेश के लिए सालाना लगभग 75,000 पाउंड की धनराशि लेकर आता था। आम तौर पर, समुद्री लुटेरे इतनी बड़ी सेना से लड़ाई से बचते, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि अपनी भारी श्रेष्ठता के बावजूद, कंपनी का बेड़ा उनसे अधिक भयभीत था। एडमिरल ब्राउन ने अपने बेड़े के सभी झंडे नीचे उतारने का आदेश दिया और फिर गोवा की ओर भागे। उनकी भागने की गति को भद्दे जहाज फ्राम ने धीमा कर दिया। उसे आग लगाकर समुद्र में छोड़ दिया गया।

Before Governor Boone left Bombay, he supervised one more operation against Kanhoji. The Company entered into an alliance with the Portuguese to attack Colaba. Although this fort was on an island, at low tide it was possible to reach it from the mainland by foot. A combined Anglo-Portuguese force of over 6,000 men was assembled. Ten large warships were to pound the fort from the sea. The ineptitude of the commanders and the animosity between the two nations resulted in another failure. The Royal Navy commander, Commodore Mathews, was so incensed that he abused the viceroy and accusing one of the Portuguese generals of treachery ‘thrust his cane into his mouth’. Kanhoji took advantage of the situation to make a new treaty of friendship, this time with the Portuguese.

गवर्नर बूने के बंबई छोड़ने से पहले, उन्होंने कान्होजी के खिलाफ एक और अभियान का निरीक्षण किया। कंपनी ने कोलाबा पर हमला करने के लिए पुर्तगालियों के साथ गठबंधन किया। हालांकि यह किला एक द्वीप पर था, लेकिन कम ज्वार के समय मुख्य भूमि से पैदल चलकर वहां पहुंचा जा सकता था। 6,000 से अधिक सैनिकों की एक संयुक्त एंग्लो-पुर्तगाली सेना एकत्रित की गई। दस बड़े युद्धपोतों को समुद्र से किले पर गोलाबारी करनी थी। कमांडरों की अक्षमता और दोनों देशों के बीच की शत्रुता के कारण एक और विफलता मिली। रॉयल नेवी के कमांडर, कमोडोर मैथ्यूज, इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने वायसराय को अपशब्द कहे और पुर्तगाली जनरलों में से एक पर विश्वासघात का आरोप लगाते हुए 'अपनी छड़ी

उसके मुंह में ठूंस दी'। कान्होजी ने इस स्थिति का लाभ उठाते हुए पुर्तगालियों के साथ एक नई मैत्री संधि की।

Charles Boone left Bombay in 1722. He had done much to improve Bombay, but wasted much money and many lives on disastrous military adventures. The Royal Navy departed with Commodore Mathews. As a final insult to the Company, Mathews sent a message to the Portuguese viceroy telling him that if he failed to capture every one of the Company's ships he would send him a petticoat.

चार्ल्स बून ने 1722 में बॉम्बे छोड़ दिया। उन्होंने बॉम्बे के सुधार के लिए बहुत कुछ किया था, लेकिन विनाशकारी सैन्य अभियानों में बहुत सारा पैसा और कई जानें गंवा दीं। रॉयल नेवी कमोडोर मैथ्यूज के साथ रवाना हुई। कंपनी को अंतिम रूप से अपमानित करते हुए, मैथ्यूज ने पुर्तगाली वायसराय को संदेश भेजा कि यदि वह कंपनी के सभी जहाजों पर कब्जा करने में विफल रहे, तो वह उन्हें एक पेटीकोट भेजेंगे।

The new governor of Bombay, William Phipps, was more level-headed than Boone. Realizing he could not defeat Kanhoji, he refrained from attacking him. An uneasy truce resulted and there was an exchange of prisoners. In 1729 Kanhoji Angre fell ill and died. Gradually, over three decades, he had built up a formidable Maratha fleet, which had successfully taken on the navies of the Portuguese, the Dutch and the British. He had also made the Maratha coastal forts virtually impregnable.

बंबई के नए गवर्नर विलियम फिप्स, बून की तुलना में अधिक समझदार थे। यह जानते हुए कि वे कान्होजी को हरा नहीं सकते, उन्होंने उन पर हमला करने से परहेज किया। परिणामस्वरूप एक अस्थिर समझौता हुआ और कैदियों का आदान-प्रदान हुआ। 1729 में कान्होजी आंग्रे बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु हो गई। धीरे-धीरे, तीन दशकों में, उन्होंने एक

शक्तिशाली मराठा बेड़ा तैयार कर लिया था, जिसने पुर्तगालियों, डचों और अंग्रेजों की नौसेनाओं को सफलतापूर्वक चुनौती दी थी। उन्होंने मराठा तटीय किलों को लगभग अभेद्य बना दिया था।

Kanhoji left five sons. Although they divided Kanhoji's legacy and fought among themselves, the Angre family managed to resist the Europeans for another twenty-five years and often captured their ships. Year after year, however, the British were becoming more formidable.

कान्होजी के पाँच पुत्र थे। हालाँकि उन्होंने कान्होजी की विरासत को आपस में बाँट लिया और आपस में लड़ते रहे, फिर भी आंग्रे परिवार ने अगले पच्चीस वर्षों तक यूरोपीय लोगों का प्रतिरोध किया और अक्सर उनके जहाजों पर कब्जा कर लिया। हालाँकि, वर्ष दर वर्ष, ब्रिटिश अधिक शक्तिशाली होते जा रहे थे।

In 1755, the Angre fort at Suvarnadurg was captured by a small Company fleet under Commodore William James. Handling a bombardment with great skill, James managed to explode the fort's gunpowder magazine, which then set the other buildings on fire. He subsequently captured three subsidiary forts and raised the English flag on all four. This victory was a turning point for the Company. It showed that against competent professional leadership, the Marathas were not invincible. On Shooters Hill near Woolwich Common in London there is an impressive monument to Sir William James – a triangular tower still known as Severndroog Castle.

1755 में, कमोडोर विलियम जेम्स के नेतृत्व में कंपनी के एक छोटे से बेड़े ने सुवर्णदुर्ग स्थित आंग्रे किले पर कब्जा कर लिया। जेम्स ने बड़ी कुशलता से गोलाबारी करते हुए किले के बारूद भंडार को विस्फोटित कर दिया, जिससे अन्य इमारतें भी आग की चपेट में आ गईं। इसके बाद उन्होंने तीन सहायक किलों पर कब्जा कर लिया और उन सभी पर अंग्रेजी झंडा फहरा दिया। यह विजय कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। इसने दिखाया कि सक्षम और पेशेवर नेतृत्व के सामने मराठा अजेय नहीं थे। लंदन में वूलविच कॉमन के पास

शूटर्स हिल पर सर विलियम जेम्स का एक प्रभावशाली स्मारक है - एक त्रिकोणीय मीनार जिसे आज भी सेवरनड्रूग कैसल के नाम से जाना जाता है।

The attack against Gheria involved a much larger fleet. Commodore James's ships were again involved, together with another Company fleet. They were joined by six ships of the Royal Navy and the landing craft for Robert Clive's 1,400 soldiers. In addition, Clive was to be joined by a Maratha land force. The Maratha leadership had fallen out with the Angres following an incident in which some of their men, who had been sent to collect tribute from the Angres, had been returned with their noses cut off.

घेरिया पर हमले में एक बहुत बड़ा बेड़ा शामिल था। कमोडोर जेम्स के जहाज एक बार फिर शामिल हुए, साथ ही कंपनी का एक और बेड़ा भी। उनके साथ रॉयल नेवी के छह जहाज और रॉबर्ट क्लाइव के 1,400 सैनिकों के लिए लैंडिंग क्राफ्ट भी थे। इसके अलावा, क्लाइव के साथ मराठा थल सेना भी शामिल होने वाली थी। मराठा नेतृत्व का आंगरों के साथ तब मतभेद हो गया था जब उनके कुछ सैनिकों को, जिन्हें आंगरों से नजराना वसूलने के लिए भेजा गया था, नाक कटी हुई हालत में वापस लौटा दिया गया था।

When the British arrived at Gheria, they found the Maratha army already besieging the fort. The Marathas had previously captured the Angre leader and they wanted to take the fort without British help. The British, however, were determined to take the fort themselves, even though they were committed to returning it to the Marathas afterwards. It was rumoured that there were great spoils to be had and the British officers had already decided how to divide it among themselves and their men.

जब अंग्रेज घेरिया पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि मराठा सेना पहले से ही किले को घेरे हुए थी। मराठों ने पहले ही आंग्रे नेता को बंदी बना लिया था और वे अंग्रेजों की मदद के बिना किले पर कब्जा करना चाहते थे। हालांकि, अंग्रेज किले पर खुद कब्जा करने के लिए दृढ़ थे, भले ही उन्होंने बाद में इसे मराठों को वापस सौंपने का वादा किया था। ऐसी अफवाह थी कि वहां

बहुत सारा खजाना छिपा हुआ है और अंग्रेज अधिकारियों ने पहले ही तय कर लिया था कि इसे आपस में और अपने सैनिकों के बीच कैसे बांटा जाए।

The British ships opened up with a massive barrage from over 150 cannon. After two hours of continuous firing, they set one of the enemy ships on fire – actually a Company ship that had been captured earlier and refitted for the Angre navy – and the blaze spread throughout the moored fleet. Soon the buildings inside the fort were also on fire. Clive then took his men ashore a mile or two away from the fort. The Marathas joined him.

ब्रिटिश जहाजों ने 150 से अधिक तोपों से भारी गोलाबारी शुरू कर दी। दो घंटे तक लगातार गोलाबारी के बाद, उन्होंने दुश्मन के एक जहाज में आग लगा दी - दरअसल यह एक कंपनी का जहाज था जिसे पहले ही कब्जा कर लिया गया था और आंग्रे नौसेना के लिए संशोधित किया गया था - और आग लंगर डाले हुए पूरे बेड़े में फैल गई। जल्द ही किले के अंदर की इमारतें भी आग की चपेट में आ गईं। तब क्लाइव अपने आदमियों को किले से एक या दो मील दूर तट पर ले गया। मराठा भी उसके साथ आ गए।

Next morning there were surrender talks, but Angre's men fought on. Clive then moved his men closer to the fort and started shelling it from the land side. A powder magazine blew up inside the fort. Shortly afterwards, the Angre flag was lowered to indicate surrender. The Marathas tried to gain entry to the fortress, but Clive's men stopped them and next day took over the fort themselves. Ten British and three Dutch prisoners were found and released. The search for treasure then began. The official value of the seized gold, silver and jewels came to £130,000 and this was divided as agreed among the British. No doubt, there were other pickings too.

अगली सुबह आत्मसमर्पण की बातचीत हुई, लेकिन आंग्रे के सैनिक डटे रहे। तब क्लाइव ने अपने सैनिकों को किले के करीब भेजा और ज़मीन की तरफ से उस पर गोलाबारी शुरू कर दी। किले के अंदर एक बारूद डिपो में विस्फोट हो गया। कुछ ही देर बाद, आत्मसमर्पण का

संकेत देने के लिए आंग्रे का झंडा नीचे उतार दिया गया। मराठों ने किले में घुसने की कोशिश की, लेकिन क्लाइव के सैनिकों ने उन्हें रोक दिया और अगले दिन किले पर कब्ज़ा कर लिया। दस ब्रिटिश और तीन डच कैदियों को पकड़ा गया और रिहा कर दिया गया। इसके बाद खजाने की खोज शुरू हुई। जब्त किए गए सोने, चांदी और गहनों का आधिकारिक मूल्य 130,000 पाउंड था, जिसे ब्रिटिशों के बीच समझौते के अनुसार बाँट दिया गया। निस्संदेह, और भी बहुत कुछ लूटा गया होगा।

Richer by the £5,000 he had gained from Gheria, Clive reached Fort St David in May 1756. Now he was second in the Company only to the governor of Madras. He arrived at a time of crisis for the Company in Bengal.

घेरिया से प्राप्त 5,000 पाउंड की राशि से समृद्ध होकर, क्लाइव मई 1756 में फोर्ट सेंट डेविड पहुंचा। अब वह कंपनी में मद्रास के गवर्नर के बाद दूसरे स्थान पर था। वह ऐसे समय में पहुंचा जब बंगाल में कंपनी संकट के दौर से गुजर रही थी।

A month before Clive's arrival, the Nawab of Bengal, whose territory also included Orissa and Bihar, had died. He had been succeeded by his grandson, Siraj-ud-daula. Calcutta had grown phenomenally since its founding and now was nearly as large as the nawab's capital, Murshidabad. This had alarmed the old nawab who saw it as an abuse of the Company's original authority to merely trade, especially so as Calcutta's fortifications were continually being enhanced. His grandson had the same opinion and was determined to do something about it. He ordered the Company to demolish the latest improvements to Calcutta's fortifications. The governor of Calcutta, Roger Drake, was not suited to diplomacy. He dismissed the nawab's envoy with disdain. The nawab was furious: 'What honour is left to us, when a few traders

who have not yet learnt to wash their bottoms reply to the ruler's order by expelling his envoy?'

क्लाइव के आगमन से एक माह पहले, बंगाल के नवाब, जिनके राज्य में उड़ीसा और बिहार भी शामिल थे, का निधन हो गया था। उनके पोते सिराज-उद-दौला ने उनका स्थान लिया। कलकत्ता की स्थापना के बाद से अभूतपूर्व विकास हुआ था और अब यह नवाब की राजधानी मुर्शिदाबाद के लगभग बराबर हो गया था। इससे पुराने नवाब चिंतित हो गए थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि केवल व्यापार करना कंपनी के मूल अधिकार का दुरुपयोग है, खासकर तब जब कलकत्ता की किलेबंदी लगातार बढ़ाई जा रही थी। उनके पोते की भी यही राय थी और उन्होंने इस बारे में कुछ करने का निश्चय किया। उन्होंने कंपनी को कलकत्ता की किलेबंदी में किए गए नवीनतम सुधारों को ध्वस्त करने का आदेश दिया। कलकत्ता के गवर्नर रोजर ड्रेक कूटनीति में निपुण नहीं थे। उन्होंने नवाब के दूत को तिरस्कारपूर्वक वापस भेज दिया। नवाब क्रोधित हो गए: 'हमारे लिए क्या सम्मान बचा है, जब कुछ व्यापारी, जिन्हें अभी तक अपने नितंब धोना भी नहीं आता, शासक के आदेश का जवाब उनके दूत को निष्कासित करके देते हैं?'

Siraj-ud-daula moved fast. He occupied the Company's outpost near his capital, at Cossimbazar, and then marched his army towards Calcutta. Governor Drake then made a serious error – rather than bolster up the defences of the fort, he constructed artillery batteries on its approaches. Siraj-ud-daula's army overran these. They set fire to the town and bazaar. Fearing that he had too few men to defend the fort, Drake made the decision to evacuate by boat. In the confusion that ensued, many boats sank and many lives were lost. Drake escaped, having abandoned many of his garrison to the enemy. These were confined in a small dungeon that became infamous as 'The Black Hole of Calcutta'. On the night of 20 June, most of them died from overcrowding and suffocation. Nowhere near as many died as was subsequently alleged (modern estimates vary, from less than twenty to more

than forty) but it was, nevertheless, a barbaric event. It is doubtful whether it had any part in the decision to regain Calcutta from Madras.

सिराज-उद-दौला ने तेजी से कार्रवाई की। उन्होंने अपनी राजधानी के पास स्थित कासिमबाजार में कंपनी की चौकी पर कब्जा कर लिया और फिर अपनी सेना के साथ कलकत्ता की ओर कूच किया। गवर्नर ड्रेक ने एक गंभीर गलती की – किले की रक्षा को मजबूत करने के बजाय, उन्होंने किले के प्रवेश द्वारों पर तोपखाने की बैटरियां बनवा दीं। सिराज-उद-दौला की सेना ने इन बैटरियों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने शहर और बाजार में आग लगा दी। किले की रक्षा के लिए पर्याप्त सैनिक न होने के डर से ड्रेक ने नावों से निकलने का फैसला किया। इस अफरा-तफरी में कई नावें डूब गईं और कई लोगों की जान चली गई। ड्रेक बच निकले, लेकिन उन्होंने अपने कई सैनिकों को दुश्मन के हवाले कर दिया। इन सैनिकों को एक छोटी सी कालकोठरी में बंद कर दिया गया, जो बाद में 'कलकत्ता का काला गड्ढा' के नाम से कुख्यात हो गई। 20 जून की रात को, उनमें से अधिकांश भीड़भाड़ और दम घुटने से मर गए। मरने वालों की संख्या उतनी नहीं थी जितनी बाद में बताई गई (आधुनिक अनुमानों में भिन्नता है, बीस से कम से लेकर चालीस से अधिक तक), लेकिन फिर भी यह एक बर्बर घटना थी। यह संदेहजनक है कि मद्रास से कलकत्ता को वापस लेने के निर्णय में इसकी कोई भूमिका थी या नहीं।

News of the fall of Calcutta reached Madras on 16 August. After much bickering, command of a relief operation was entrusted to Robert Clive. He finally sailed for Bengal on 16 October. He had 800 European soldiers and 1,000 Indian sepoys. The wind was against them, blowing some of the fleet as far south as Ceylon, and it was December before they began to enter the River Hooghly. On 15 December the fleet anchored at Fulta, forty miles downstream from Calcutta. There, they met up with the British fugitives. Contact was established with Siraj-ud-daula and his commanders, with whom there was a civil exchange of messages. From the British, however, this was probably just

a device to gain time while they waited for a tide high enough to enable them to go upstream to Calcutta.

कलकत्ता के पतन की खबर 16 अगस्त को मद्रास पहुंची। काफी खींचतान के बाद राहत अभियान की कमान रॉबर्ट क्लाइव को सौंपी गई। अंततः वे 16 अक्टूबर को बंगाल के लिए रवाना हुए। उनके साथ 800 यूरोपीय सैनिक और 1,000 भारतीय सिपाही थे। हवा उनके विपरीत थी, जिससे बेड़ा का कुछ हिस्सा दक्षिण में सीलोन तक बह गया, और दिसंबर तक वे हुगली नदी में प्रवेश करने में सफल नहीं हुए। 15 दिसंबर को बेड़ा कलकत्ता से चालीस मील नीचे की ओर स्थित फुलता में लंगर डाला। वहां उनकी मुलाकात ब्रिटिश भगोड़ों से हुई। सिराज-उद-दौला और उनके कमांडरों से संपर्क स्थापित हुआ, जिनके साथ संदेशों का सौहार्दपूर्ण आदान-प्रदान हुआ। हालांकि, अंग्रेजों के लिए, यह शायद कलकत्ता की ओर जाने के लिए पर्याप्त ज्वार का इंतजार करते हुए समय प्राप्त करने की एक युक्ति मात्र थी।

On 27 December the expedition moved towards Calcutta. Halfway, there was a skirmish with a detachment of the nawab's army. Clive had managed to have his artillery dragged overland, which enabled him to inflict heavy casualties on the enemy. The advance to Calcutta continued, with Clive and the European troops aboard the ships and the sepoys marching along the riverbank. They reached Calcutta on the morning of 2 January 1757. There was a brief exchange of fire, then the small garrison of the nawab's troops fled. The town was severely damaged. Large areas of the bazaar had been consumed by fire. The European houses and their church had been destroyed. In a breach in the fort walls, a mosque was under construction.

27 दिसंबर को अभियान कलकत्ता की ओर बढ़ा। आधे रास्ते में नवाब की सेना की एक टुकड़ी से झड़प हुई। क्लाइव किसी तरह अपनी तोपें ज़मीन के रास्ते लाने में कामयाब रहे, जिससे वे दुश्मन को भारी नुकसान पहुँचाने में सफल रहे। कलकत्ता की ओर बढ़ना जारी रहा, क्लाइव और यूरोपीय सैनिक जहाजों पर सवार थे और सिपाही नदी किनारे-किनारे मार्च कर रहे थे। वे 2 जनवरी 1757 की सुबह कलकत्ता पहुँचे। संक्षिप्त गोलीबारी हुई, फिर नवाब

की सेना की छोटी टुकड़ी भाग गई। शहर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। बाज़ार का बड़ा हिस्सा आग की चपेट में आ गया था। यूरोपीय लोगों के घर और उनका चर्च नष्ट हो गए थे। किले की दीवारों में एक दरार में मस्जिद का निर्माण चल रहा था।

Clive was determined that Siraj-ud-daula should compensate the Company for its losses. Two British warships were sent up the river to Hooghly, where the nawab's troops who had fled from Calcutta were camped. They were bombarded by the ship's guns and fled again. The British, before they departed, plundered and set fire to the town and its surrounding areas.

क्लाइव इस बात पर अडिग था कि सिराज-उद-दौला को कंपनी के नुकसान की भरपाई करनी चाहिए। दो ब्रिटिश युद्धपोत हुगली नदी में भेजे गए, जहाँ नवाब की सेना, जो कलकत्ता से भागकर आई थी, डेरा डाले हुए थी। उन पर युद्धपोतों की तोपों से बमबारी की गई और वे फिर से भाग गए। ब्रिटिश सेना ने जाने से पहले शहर और उसके आसपास के इलाकों को लूटा और आग लगा दी।

Siraj-ud-daula came south with the bulk of his army, about 100,000 strong, through Hooghly and was shocked by the damage the British had wrought. It seemed as though he would meet the British demands for restitution and confirmation of their privileges. As he neared Calcutta, however, he became more belligerent. He camped his huge army just outside Calcutta.

सिराज-उद-दौला अपनी लगभग एक लाख सैनिकों की विशाल सेना के साथ हुगली घाटी से होते हुए दक्षिण की ओर बढ़ा और अंग्रेजों द्वारा मचाई गई तबाही को देखकर दंग रह गया। ऐसा लग रहा था मानो वह अंग्रेजों की क्षतिपूर्ति और उनके विशेषाधिकारों की पुष्टि की मांगों को मान लेगा। लेकिन जैसे ही वह कलकत्ता के निकट पहुँचा, उसका आक्रामक रवैया और भी बढ़ गया। उसने अपनी विशाल सेना को कलकत्ता के ठीक बाहर डेरा डाल दिया।

Clive decided to launch a night attack on Siraj-ud-daula's camp, during which he hoped he might incapacitate or take away the Nawab's cannon. Vice Admiral Charles Watson agreed to supply 600 sailors to carry off the cannon.

They arrived late, however, and it was dawn before the British attacked. The element of surprise was lost and Clive might have been defeated. However, by good fortune, a fog descended. Clive and his men were able to cut a swath through the nawab's camp, firing as they went. They failed to capture any cannon and lost fifty men. However, they had killed 1,300 of the nawab's men. Perhaps the nawab would have fought on, but he had received intelligence of a greater threat – an Afghan army was marching towards Bengal. He rapidly agreed a peace treaty, giving the British what they wanted, and took away his army.

क्लाइव ने सिराज-उद-दौला के शिविर पर रात में हमला करने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि वह नवाब की तोपों को निष्क्रिय कर देगा या उनसे छीन लेगा। वाइस एडमिरल चार्ल्स वॉटसन ने तोपों को ले जाने के लिए 600 नाविकों की आपूर्ति करने पर सहमति जताई। हालांकि, वे देर से पहुंचे और अंग्रेजों के हमले से पहले ही भोर हो गई। अचानक हमला करने का मौका हाथ से निकल गया और क्लाइव हार सकता था। लेकिन सौभाग्य से, घना कोहरा छा गया। क्लाइव और उसके सैनिक गोलीबारी करते हुए नवाब के शिविर में घुसने में सफल रहे। वे कोई भी तोप नहीं पकड़ पाए और उनके 50 सैनिक मारे गए। हालांकि, उन्होंने नवाब के 1,300 सैनिकों को मार गिराया था। शायद नवाब लड़ता रहता, लेकिन उसे एक बड़े खतरे की सूचना मिली थी - एक अफगान सेना बंगाल की ओर बढ़ रही थी। उसने तुरंत शांति संधि पर सहमति जताई, अंग्रेजों को उनकी मनचाही चीज दे दी और अपनी सेना को वापस बुला लिया।

The Seven Years War had started in Europe. News reached India that Britain and France were once again enemies. Clive was not confident that Siraj-ud-daula would respect the treaty. He worried that the nawab might forge an alliance with the French in the future to overwhelm the British. There were two possible options for him – either to agree to a treaty of neutrality with the French at Chandernagore or to capture that settlement. There were talks

about neutrality but eventually, with the nawab distracted by the menace from the approaching Afghans, Clive decided to attack Chandernagore. The nawab had left some troops behind to aid the French if they were attacked. Clive managed to bribe the nawab's representative, Nundcomar, not to use these in the conflict. The British then captured the town and laid siege to its fort. It was a hard-fought battle. Both sides lost about 200 men. Most of the British losses were sailors, on board the ships that were brought in close to cannonade the French. Their efforts were decisive in the British getting the upper hand. The French surrendered on 23 March. It was a body blow to the French company, for most of its profits came from Bengal.

यूरोप में सात वर्षीय युद्ध शुरू हो चुका था। भारत को खबर मिली कि ब्रिटेन और फ्रांस एक बार फिर शत्रु बन गए हैं। क्लाइव को विश्वास नहीं था कि सिराज-उद-दौला संधि का सम्मान करेंगे। उन्हें चिंता थी कि नवाब भविष्य में अंग्रेजों को हराने के लिए फ्रांसीसियों के साथ गठबंधन कर सकते हैं। उनके पास दो विकल्प थे - या तो चंदननगर में फ्रांसीसियों के साथ तटस्थता की संधि पर सहमत होना या उस बस्ती पर कब्जा करना। तटस्थता पर बातचीत हुई, लेकिन अंततः, नवाब का ध्यान अफ़गानों के बढ़ते खतरे की ओर आकर्षित होने पर, क्लाइव ने चंदननगर पर हमला करने का फैसला किया। नवाब ने फ्रांसीसियों की सहायता के लिए कुछ सैनिक पीछे छोड़ दिए थे, यदि उन पर हमला होता। क्लाइव नवाब के प्रतिनिधि नन्दकोमार को रिश्वत देकर इन सैनिकों को युद्ध में इस्तेमाल न करने के लिए राजी करने में सफल रहे। इसके बाद अंग्रेजों ने शहर पर कब्जा कर लिया और उसके किले को घेर लिया। यह एक भीषण युद्ध था। दोनों पक्षों के लगभग 200 सैनिक शहीद हुए। अंग्रेजों के अधिकांश नुकसान नाविकों के थे, जो उन जहाजों पर सवार थे जिन्हें फ्रांसीसियों पर तोपखाने से हमला करने के लिए करीब लाया गया था। उनके प्रयासों ने अंग्रेजों को जीत दिलाने में निर्णायक भूमिका निभाई। फ्रांसीसियों ने 23 मार्च को आत्मसमर्पण कर दिया। यह फ्रांसीसी कंपनी के लिए एक बड़ा झटका था, क्योंकि उसका अधिकांश मुनाफा बंगाल से ही आता था।

Siraj-ud-daula had excited much resentment among the financial elite of Bengal. A large proportion of their profits came from dealing with the European exporters. Moreover, the nawab had insulted some of them for not being Muslim. One of the principal businessmen of Calcutta was Omichand. The nawab had used him as an intermediary with the British. Now, Omichand advised Clive that there were powerful bankers at Murshidabad who believed that if the nawab were to show hostility to the British again, it might be politic to have him removed. There were nobles who might be willing to support a coup. The most powerful of these was a military commander and relative of the nawab, Mir Jafar. He was chosen by the conspirators to replace the nawab if the British would support a coup d'état. A committee of the Company, including both Clive and the governor of Calcutta, agreed to proceed. Mir Jafar, if installed, would compensate the Company and its employers, who traded privately, for all losses over the previous year; more land around Calcutta would be granted to the Company; the personnel of the army and navy would divide a gift of Rs 4,000,000; the four members of the committee would divide another Rs 1,200,000.

सिराज-उद-दौला ने बंगाल के वित्तीय अभिजात वर्ग में काफी असंतोष पैदा कर दिया था। उनके मुनाफे का एक बड़ा हिस्सा यूरोपीय निर्यातकों के साथ व्यापार से आता था। इसके अलावा, नवाब ने उनमें से कुछ का मुसलमान न होने के कारण अपमान किया था। कलकत्ता के प्रमुख व्यापारियों में से एक ओमीचंद थे। नवाब ने उन्हें अंग्रेजों के साथ मध्यस्थ के रूप में इस्तेमाल किया था। अब, ओमीचंद ने क्लाइव को सलाह दी कि मुर्शिदाबाद में कुछ शक्तिशाली बैंकर हैं जो मानते हैं कि यदि नवाब फिर से अंग्रेजों के प्रति शत्रुता दिखाते हैं, तो उन्हें पद से हटाना राजनीतिक रूप से लाभदायक हो सकता है। कुछ रईस भी थे जो तख्तापलट का समर्थन करने को तैयार हो सकते थे। इनमें सबसे शक्तिशाली नवाब के रिश्तेदार और एक सैन्य कमांडर मीर जाफर थे। साजिशकर्ताओं ने उन्हें नवाब के स्थान पर

नियुक्त करने का निर्णय लिया था यदि अंग्रेज तख्तापलट का समर्थन करते। कंपनी की एक समिति, जिसमें क्लाइव और कलकत्ता के गवर्नर दोनों शामिल थे, ने आगे बढ़ने पर सहमति व्यक्त की। यदि मीर जाफर को पद पर बिठाया जाता, तो वे कंपनी और उसके निजी व्यापार करने वाले कर्मचारियों को पिछले वर्ष के सभी नुकसानों की भरपाई करते। कलकत्ता के आसपास की और अधिक भूमि कंपनी को दी जाएगी; सेना और नौसेना के कर्मियों को 4,000,000 रुपये का उपहार आपस में बाँटा जाएगा; समिति के चार सदस्यों को 1,200,000 रुपये आपस में बाँटे जाएँगे।

Clive summoned Omichand, showed him a display of military manoeuvres, and sent him to report to the nawab. Omichand told the nawab that Clive intended to attack his capital next day. The threat from the Afghans had receded and the nawab ordered Mir Jafar to march an army towards Calcutta. Soon afterwards, Clive received a proposal from some Marathas that offered him assistance against the nawab. He sent a bland response, saying that he was friendly with the nawab, and then arranged for the nawab to see the message. The nawab recalled his army.

क्लाइव ने ओमीचंद को बुलाया, उन्हें सैन्य अभ्यास का प्रदर्शन दिखाया और नवाब को सूचना देने के लिए भेज दिया। ओमीचंद ने नवाब को बताया कि क्लाइव अगले दिन उनकी राजधानी पर हमला करने की योजना बना रहे हैं। अफ़गानों से खतरा टल गया था और नवाब ने मीर जाफ़र को कलकत्ता की ओर सेना बढ़ाने का आदेश दिया। कुछ समय बाद, क्लाइव को कुछ मराठों से नवाब के विरुद्ध सहायता का प्रस्ताव मिला। उन्होंने विनम्र जवाब देते हुए कहा कि वे नवाब के मित्र हैं और फिर नवाब को संदेश दिखाने की व्यवस्था की। नवाब ने अपनी सेना वापस बुला ली।

Omichand then threw matters into confusion by demanding a percentage of Siraj-ud-daula’s money and jewels. This would have amounted to millions of rupees. It was suspected that he would reveal the plot if not placated. Clive had two documents drafted – a red one for Omichand, which would give him

Rs 2,000,000, and a white one, the real agreement, with nothing for Omichand. Mir Jafar was then told that the white document was the genuine treaty and both parties signed both papers. The Company officials who had been acting as emissaries to the nawab's court made their escape. Next day, on 13 June, Clive marched towards Murshidabad. He was joined by some sailors and some soldiers from Calcutta. In all, Clive had about 1,000 European troops and 2,000 sepoys. They had about eight pieces of light artillery.

इसके बाद ओमीचंद ने सिराज-उद-दौला के धन और गहनों में हिस्सा मांगकर मामले को और उलझा दिया। यह रकम करोड़ों रुपये की होती। आशंका थी कि अगर उसे शांत नहीं किया गया तो वह साजिश का खुलासा कर देगा। क्लाइव ने दो दस्तावेज़ तैयार करवाए – एक लाल रंग का ओमीचंद के लिए, जिसमें उसे 2,000,000 रुपये मिलने थे, और दूसरा सफेद रंग का, जो असली समझौता था, जिसमें ओमीचंद के लिए कुछ भी नहीं था। मीर जाफर को बताया गया कि सफेद रंग का दस्तावेज़ ही असली संधि है और दोनों पक्षों ने दोनों दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर दिए। नवाब के दरबार में दूत बनकर आए कंपनी के अधिकारी भाग निकले। अगले दिन, 13 जून को, क्लाइव मुर्शिदाबाद की ओर कूच किया। उसके साथ कलकत्ता से कुछ नाविक और सैनिक भी शामिल हो गए। कुल मिलाकर, क्लाइव के पास लगभग 1,000 यूरोपीय सैनिक और 2,000 सिपाही थे। उनके पास लगभग आठ हल्की तोपें थीं।

Siraj-ud-daula had an army that was many times larger than Clive's. He seems to have had about 40,000 infantry. These were not well trained and many were armed only with pikes or bows. However, he also had 18,000 Pathan cavalry. These competent horsemen mostly had swords or lances. Finally, he had fifty pieces of artillery. These were large guns, much larger than Clive's, and were operated by French gunners who had escaped from Chandernagore. They were eager to avenge that defeat.

सिराज-उद-दौला की सेना क्लाइव की सेना से कई गुना बड़ी थी। ऐसा लगता है कि उनके पास लगभग 40,000 पैदल सैनिक थे। ये सैनिक अच्छी तरह से प्रशिक्षित नहीं थे और उनमें से कई केवल भाले या धनुष से लैस थे। हालांकि, उनके पास 18,000 पठान घुड़सवार भी थे। ये कुशल घुड़सवार ज्यादातर तलवार या भाले चलाते थे। अंत में, उनके पास पचास तोपें थीं। ये क्लाइव की तोपों से कहीं बड़ी थीं और चंदननगर से भागे फ्रांसीसी तोपचियों द्वारा संचालित की जाती थीं। वे उस हार का बदला लेने के लिए उत्सुक थे।

Given the disparity between the size of the armies, Clive was entirely dependent on Mir Jafar, who was to command one of the three divisions of the nawab's infantry, and his co-conspirators. The nawab's army lay on an island in the river. Clive would have to take his men across in boats. If Mir Jafar reneged on his promises, Clive would find retreat extremely difficult. There were rumours that Mir Jafar and Siraj-ud-daula had become reconciled. In fact, the nawab had attempted to regain Mir Jafar's loyalty, and the two had pledged friendship on the Quran. On 20 June, a messenger brought a note to Clive from Mir Jafar – he now considered himself bound by his oath of friendship to the nawab. He could not fight against the nawab. However, he and his men would stand aside from any battle.

सेनाओं के आकार में भारी अंतर को देखते हुए, क्लाइव पूरी तरह से मीर जाफ़र पर निर्भर था, जिसे नवाब की पैदल सेना की तीन टुकड़ियों में से एक की कमान सौंपी गई थी, और उसके साथियों पर भी। नवाब की सेना नदी के एक द्वीप पर थी। क्लाइव को अपने सैनिकों को नावों से नदी पार ले जाना था। यदि मीर जाफ़र अपने वादे से मुकर जाता, तो क्लाइव के लिए पीछे हटना बेहद मुश्किल हो जाता। अफवाहें थीं कि मीर जाफ़र और सिराज-उद-दौला के बीच सुलह हो गई है। वास्तव में, नवाब ने मीर जाफ़र की वफादारी फिर से हासिल करने का प्रयास किया था, और दोनों ने कुरान पर शपथ लेकर मित्रता की प्रतिज्ञा की थी। 20 जून को, एक दूत मीर जाफ़र का संदेश क्लाइव के पास लाया - अब वह नवाब के प्रति अपनी मित्रता की शपथ

से बंधा हुआ था। वह नवाब के विरुद्ध नहीं लड़ सकता था। हालांकि, वह और उसके सैनिक किसी भी लड़ाई से अलग रहेंगे।

Heavy rain set in, the river began to swell. This made it even more likely that, if the British crossed the river, they would find themselves marooned on the island with no possibility of escape. With Mir Jafar's support doubtful, Clive began to have doubts about the whole enterprise. He wrote to the other members of the Company's committee asking for their advice. A reply was so delayed that on 21 June Clive convened a council of war with his own officers. Nine senior officers voted – seven of them were against immediate action and two in favour. Eight junior officers also voted – three were against immediate action and five in favour. Clive prevaricated. A letter arrived from Mir Jafar, which gave him hope. It ended:

भारी बारिश शुरू हो गई और नदी उफान पर आ गई। इससे यह संभावना और बढ़ गई कि यदि अंग्रेज नदी पार करते हैं, तो वे द्वीप पर फंस जाएंगे और उनके बचने का कोई रास्ता नहीं होगा। मीर जाफर का समर्थन संदिग्ध होने के कारण, क्लाइव को पूरे अभियान पर संदेह होने लगा। उन्होंने कंपनी की समिति के अन्य सदस्यों को पत्र लिखकर सलाह मांगी। जवाब में इतनी देरी हुई कि 21 जून को क्लाइव ने अपने अधिकारियों के साथ एक युद्ध परिषद बुलाई। नौ वरिष्ठ अधिकारियों ने मतदान किया - उनमें से सात तत्काल कार्रवाई के खिलाफ थे और दो इसके पक्ष में। आठ कनिष्ठ अधिकारियों ने भी मतदान किया - तीन तत्काल कार्रवाई के खिलाफ थे और पांच इसके पक्ष में। क्लाइव टालमटोल करते रहे। मीर जाफर का एक पत्र आया, जिससे उन्हें उम्मीद जगी। पत्र का अंत इस प्रकार था:

When you come near I shall be able to join you. If you would send two or three hundred good fighting men the upper road towards Cossimbazar, the Nabob's army would themselves retreat. Then the battle will have no difficulty. When I am arrived near the army I will send you privately all the intelligence. Let me have previous notice of the time you intend to fight.

जब आप पास पहुँचेंगे तो मैं आपके साथ शामिल हो सकूँगा। यदि आप दो-तीन सौ कुशल योद्धाओं को ऊपरी मार्ग से कासिमबाजार की ओर भेज दें, तो नवाब की सेना स्वयं पीछे हट जाएगी। तब युद्ध में कोई कठिनाई नहीं होगी। जब मैं सेना के पास पहुँच जाऊँगा तो मैं आपको सारी जानकारी गुप्त रूप से भेज दूँगा। कृपया मुझे युद्ध के समय की पूर्व सूचना दें।

Clive replied:

क्लाइव ने उत्तर दिया:

Upon receiving your letter I am come to a resolution to proceed immediately to Placis.

आपका पत्र प्राप्त होने पर मैंने तुरंत प्लासिस जाने का निर्णय लिया है।

That evening, Clive's army crossed the river.

उसी शाम, क्लाइव की सेना ने नदी पार की।

Clive marched his men in darkness, over the sodden ground, until at 1 a.m. they reached the village of Plassey. They took possession of a large mango orchard. This, surrounded by a ditch and a high bank, was highly defensible. The space between the orchard and the river was taken up by a substantial hunting lodge, which Clive himself occupied.

क्लाइव अपने सैनिकों को अंधेरे में, दलदली ज़मीन पर आगे बढ़ाते हुए, रात के 1 बजे तक प्लासी गाँव पहुँचे। उन्होंने एक विशाल आम के बाग पर कब्ज़ा कर लिया। खाई और ऊँचे तटबंध से घिरा यह बाग रक्षा के लिहाज़ से बेहद सुरक्षित था। बाग और नदी के बीच की जगह में एक बड़ा शिकारगाह बना हुआ था, जिसमें क्लाइव खुद रहते थे।

At dawn on 23 June 1757, Robert Clive stood on the lodge roof and watched the nawab's army of 50,000 men spread across the landscape. Luke Scrafton, a Company factor who was there, described the scene: '... and what with the number of elephants all covered with scarlet cloth and embroidery; their

horse with their drawn swords glittering in the sun; their heavy cannon drawn by vast trains of oxen; and their standards flying, they made a most pompous and formidable appearance.'

23 जून 1757 की सुबह, रॉबर्ट क्लाइव लॉज की छत पर खड़े होकर नवाब की 50,000 सैनिकों की सेना को चारों ओर फैले हुए देख रहे थे। कंपनी के एक अधिकारी, ल्यूक स्क्राफ्टन, जो वहाँ मौजूद थे, ने दृश्य का वर्णन करते हुए कहा: "...लाल कपड़े और कढ़ाई से ढके हाथियों की विशाल संख्या; सूर्य की रोशनी में चमकती तलवारों वाले उनके घोड़े; बैलों की विशाल कतारों द्वारा खींची जा रही उनकी भारी तोपें; और लहराते उनके झंडे, ये सब मिलकर एक अत्यंत भव्य और दुर्जेय रूप धारण किए हुए थे।"

Clive had heard nothing further from Mir Jafar and was not confident that he would stand aside from the fray. At 7 a.m., he sent him a message:

क्लाइव को मीर जाफर से कोई खबर नहीं मिली थी और उसे भरोसा नहीं था कि वह इस झगड़े से अलग रहेगा। सुबह 7 बजे उसने उसे एक संदेश भेजा:

Whatever could have been done by me I have done, I can do no more. If you will come to Daudipore I will march from Placis to meet you, but if you won't comply even with this, pardon me, I shall make it up with the Nabob.

जो कुछ मैं कर सकता था, मैंने कर दिया है; अब मैं और कुछ नहीं कर सकता। यदि आप दाउदीपुर आएंगे, तो मैं प्लासिस से चलकर आपसे मिलने आऊंगा, लेकिन यदि आप इससे भी सहमत नहीं होंगे, तो मुझे क्षमा करें, मैं नवाब से इसकी भरपाई कर लूंगा।

In fact, Clive was firm in his belief that an audacious confrontation might win the day.

दरअसल, क्लाइव को इस बात पर पूरा यकीन था कि एक साहसिक टकराव से ही जीत हासिल हो सकती है।

Clive's troops moved out from the cover of the orchard to form a line facing the approaching army. The nawab's army stretched from the river on Clive's left, along the face of the orchard, and curved around to Clive's right flank. The

artillery of both sides opened up a barrage. The Company's guns were too light to damage the nawab's heavy cannon. Although Clive's artillery was killing many of the nawab's infantry, Clive was losing some of his own men. With his much smaller force, he could not afford many losses. He withdrew his troops back into the orchard. Settled behind the protective wall, they continued to fire at the approaching army.

क्लाइव की सेना बाग की आड़ से निकलकर आगे बढ़ती सेना के सामने एक पंक्ति में खड़ी हो गई। नवाब की सेना क्लाइव के बाईं ओर नदी से शुरू होकर बाग के किनारे-किनारे आगे बढ़ती हुई दाईं ओर मुड़ गई। दोनों तरफ की तोपों ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी। कंपनी की तोपें नवाब की भारी तोपों को नुकसान पहुंचाने के लिए बहुत हल्की थीं। हालांकि क्लाइव की तोपों से नवाब के कई पैदल सैनिक मारे जा रहे थे, लेकिन क्लाइव के भी कुछ सैनिक मारे जा रहे थे। अपनी छोटी सेना के साथ, वह ज्यादा नुकसान नहीं उठा सकते थे। उन्होंने अपनी सेना को वापस बाग में बुला लिया। सुरक्षात्मक दीवार के पीछे छिपकर, उन्होंने आगे बढ़ती सेना पर लगातार गोलाबारी जारी रखी।

At noon there was a tremendous thunderstorm. Much of the ammunition of the nawab's army was soaked and their firing became intermittent. Thinking that Clive's men were similarly affected, the nawab's best commander, Mir Madan, charged with his cavalry. In fact, the British had protected their ammunition with tarpaulins. They were able to maintain their fire and Mir Madan was hit and fatally wounded.

दोपहर को भयंकर आंधी-तूफान आया। नवाब की सेना का अधिकांश गोला-बारूद भीग गया और उनकी गोलीबारी रुक-रुक कर होने लगी। यह सोचकर कि क्लाइव के सैनिक भी इसी तरह प्रभावित हुए होंगे, नवाब के सर्वश्रेष्ठ सेनापति मीर मदन ने अपनी घुड़सवार सेना के साथ हमला कर दिया। दरअसल, अंग्रेजों ने अपने गोला-बारूद को तिरपाल से ढक रखा था। वे गोलीबारी जारी रखने में सक्षम रहे और मीर मदन को गोली लगी, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए।

The nawab was deeply shocked by the loss of Mir Madan. He called for Mir Jafar, threw his turban at the traitor's feet, and entreated him to help. Mir Jafar advised the nawab that it was too late to attack that day and suggested he recall his troops. Another conspirator gave the same advice. Mir Jafar then wrote to Clive (this letter was not received until the battle was over):

नवाब मीर मदन की मृत्यु से गहरे सदमे में थे। उन्होंने मीर जाफ़र को बुलाया, गद्दार के पैरों में अपनी पगड़ी फेंक दी और उनसे मदद की गुहार लगाई। मीर जाफ़र ने नवाब को सलाह दी कि उस दिन हमला करना बहुत देर हो चुकी है और उन्हें अपनी सेना वापस बुला लेने का सुझाव दिया। एक अन्य षड्यंत्रकारी ने भी यही सलाह दी। इसके बाद मीर जाफ़र ने क्लाइव को पत्र लिखा (यह पत्र युद्ध समाप्त होने तक प्राप्त नहीं हुआ था):

Attack him at 3 in the morning; they will run away, and then will be my opportunity. The forces want to return to the city. Attack him in the night by all means. We three shall be to the left of the Nabob ...We three are ready for your service and will see you by and by.

सुबह 3 बजे उस पर हमला करो; वे भाग जाएंगे, और तब मुझे मौका मिलेगा। सेना शहर लौटना चाहती है। रात में हर हाल में उस पर हमला करो। हम तीनों नवाब के बाईं ओर रहेंगे... हम तीनों आपकी सेवा के लिए तैयार हैं और आपसे जल्द ही मिलेंगे।

As the nawab's troops withdrew, Clive went to the lodge to change into dry clothes. Shortly afterwards he was told that, despite his orders to do nothing, a detachment of his troops had moved forward to take control of a reservoir recently abandoned by the French artillery. Angrily, Clive rushed out and threatened to put his second-in-command under arrest. When he calmed down, he realized that it would be folly to give the impression of withdrawing. He summoned up more of his troops and then launched another attack. The nawab's troops, backed up by French artillery, counter-attacked. Clive's cannon were able to cause havoc among the oxen that drew the nawab's huge

artillery platforms. Some elephants stampeded. Several of the nawab's senior officers were killed. His troops began to lose confidence.

नवाब की सेना के पीछे हटने पर क्लाइव सूखे कपड़े बदलने के लिए लॉज में गए। कुछ ही देर बाद उन्हें खबर मिली कि उनके आदेश के बावजूद, जिसमें उन्हें कुछ न करने के लिए कहा गया था, उनकी एक टुकड़ी फ्रांसीसी तोपखाने द्वारा हाल ही में छोड़े गए जलाशय पर कब्ज़ा करने के लिए आगे बढ़ गई है। क्रोधित होकर क्लाइव बाहर भागे और अपने दूसरे-कमांडर को गिरफ्तार करने की धमकी दी। शांत होने पर उन्हें एहसास हुआ कि पीछे हटने का दिखावा करना मूर्खता होगी। उन्होंने अपनी और टुकड़ियों को बुलाया और फिर एक और हमला किया। फ्रांसीसी तोपखाने के समर्थन से नवाब की सेना ने जवाबी हमला किया। क्लाइव की तोपों ने नवाब के विशाल तोपखाने के चबूतरों को खींचने वाले बैलों में अफरा-तफरी मचा दी। कुछ हाथी भगदड़ मचाने लगे। नवाब के कई वरिष्ठ अधिकारी मारे गए। उनकी सेना का आत्मविश्वास गिरने लगा।

Until this point Clive, not having received Mir Jafar's message, had been unsure about the intentions of the nawab's army deployed to his right. As they held back from the fight, however, he became sure that they must be the troops commanded by Mir Jafar and his co-conspirators. This prompted him to call up the rest of his army to attack the enemy in front. The nawab's soldiers soon realized they were losing the battle and fled. The Nawab himself had already gone. He took a fast camel back to his capital. By 5 p.m., the battle of Plassey was over.

इस समय तक क्लाइव को मीर जाफर का संदेश नहीं मिला था, इसलिए वह अपने दाहिनी ओर तैनात नवाब की सेना के इरादों को लेकर अनिश्चित था। लेकिन जब वे लड़ाई से पीछे हट गए, तो उसे यकीन हो गया कि वे मीर जाफर और उसके साथियों के नेतृत्व वाली सेना ही होगी। इससे प्रेरित होकर उसने अपनी शेष सेना को बुलाकर सामने वाले दुश्मन पर हमला कर दिया। नवाब के सैनिकों को जल्द ही एहसास हो गया कि वे युद्ध हार रहे हैं और वे भाग

गए। नवाब स्वयं पहले ही जा चुका था। वह एक तेज़ ऊँट पर सवार होकर अपनी राजधानी लौट गया। शाम 5 बजे तक प्लासी का युद्ध समाप्त हो गया।

For such a massive confrontation, there were very few casualties. The nawab lost about 500 men. The British losses were only four Europeans and sixteen sepoys. The treachery of Mir Jafar had won the day.

इतने बड़े संघर्ष के बावजूद, हताहतों की संख्या बहुत कम थी। नवाब के लगभग 500 सैनिक मारे गए। अंग्रेजों की ओर से केवल चार यूरोपीय और सोलह सिपाही मारे गए। मीर जाफर की धोखेबाजी ने ही जीत दिलाई।

On the morning after the battle, Mir Jafar visited Clive. The two embraced and Clive hailed him as the new ruler of Bengal. Mir Jafar hastened to his own palace at Murshidabad. Siraj-ud-daula was in his palace across the river. That night, he disguised himself and, together with a favourite wife and daughter and a eunuch, made for Patna where he thought he still had support.

युद्ध के अगले दिन सुबह, मीर जाफर क्लाइव से मिलने गए। दोनों गले मिले और क्लाइव ने उन्हें बंगाल का नया शासक घोषित किया। मीर जाफर जल्दी से मुर्शिदाबाद स्थित अपने महल की ओर रवाना हुए। सिराज-उद-दौला नदी के पार अपने महल में थे। उसी रात, उन्होंने अपना वेश बदला और अपनी एक प्रिय पत्नी, बेटी और एक हिजड़े के साथ पटना के लिए निकल पड़े, जहाँ उन्हें लगा कि अब भी उन्हें समर्थन प्राप्त है।

Clive entered Murshidabad two days later, accompanied by a large escort. He went to pay his respects to Mir Jafar. He punctiliously maintained the fiction that Mir Jafar was master of Bengal, Bihar and Orissa, and not himself. Next day they discussed money. The treasury had been partly emptied by Siraj-ud-daula and by looters, so was not as full as had been supposed. It was eventually agreed that Mir Jafar should pay one half of what had been agreed

immediately, mostly in cash but some in jewels, silver and goods. The other half would be paid in instalments over three years. Seventy-five boats were loaded up, each carrying a large chest containing Rs 100,000. They headed down the river to Calcutta, escorted by the navy, and serenaded by music and drums. Clive received the money due to himself as commander-in-chief, as a member of the committee and as privately promised by Mir Jafar. Altogether, this came to nearly a quarter of a million pounds sterling. In all, the equivalent of one year's total revenue of Bengal found its way to Britain.

दो दिन बाद क्लाइव एक बड़े सुरक्षा दल के साथ मुर्शिदाबाद में दाखिल हुए। वे मीर जाफर से मिलने गए। उन्होंने इस बात को पूरी तरह से झूठा साबित कर दिया कि बंगाल, बिहार और उड़ीसा का शासक मीर जाफर है, न कि वे खुद। अगले दिन उन्होंने पैसों के बारे में बात की। सिराज-उद-दौला और लुटेरों ने खजाने का कुछ हिस्सा खाली कर दिया था, इसलिए खजाना उतना भरा हुआ नहीं था जितना अनुमान लगाया गया था। अंततः यह तय हुआ कि मीर जाफर तय की गई राशि का आधा हिस्सा तुरंत चुकाएंगे, जिसमें ज्यादातर नकद होगा, लेकिन कुछ गहने, चांदी और सामान भी होंगे। बाकी आधा हिस्सा तीन साल में किश्तों में चुकाया जाएगा। पचहत्तर नावें लादी गईं, जिनमें से प्रत्येक में 100,000 रुपये से भरा एक बड़ा संदूक था। नौसेना की सुरक्षा में और संगीत व ढोल की थाप के साथ वे नदी के रास्ते कलकत्ता की ओर रवाना हुए। क्लाइव को कमांडर-इन-चीफ के रूप में, समिति के सदस्य के रूप में और मीर जाफर द्वारा निजी तौर पर किए गए वादे के अनुसार, उन्हें मिलने वाली राशि प्राप्त हुई। कुल मिलाकर, यह राशि लगभग ढाई लाख पाउंड स्टर्लिंग थी। इस प्रकार, बंगाल के एक वर्ष के कुल राजस्व के बराबर राशि ब्रिटेन को प्राप्त हुई।

Siraj-ud-daula was brought back to Murshidabad as a prisoner. He had been recognized and then captured by Mir Jafar's brother. Within a few hours he was stabbed to death. Before he was buried, his corpse was paraded around the city on the back on an elephant.

सिराज-उद-दौला को कैदी बनाकर मुर्शिदाबाद वापस लाया गया। मीर जाफर के भाई ने उसे पहचान लिया और पकड़ लिया। कुछ ही घंटों के भीतर उसकी चाकू मारकर हत्या कर दी गई। दफनाने से पहले उसके शव को हाथी की पीठ पर लादकर पूरे शहर में घुमाया गया।

POSTSCRIPT

परिशिष्ट भाग

The role of the East India Company in India was completely transformed by Clive's tactics. The directors of the Company in London were still adamant that peaceful trade should be Company policy. They complained that their men in India were 'so thoroughly possessed of military ideas as they forget their employers [were] merchants and trade was their principal object…Were we to adopt your several plans for fortifying, half our capital would be buried in stone walls.' However, it took many months, sometimes over a year, for correspondence to go back and forth from England to India. London's efforts to control events were further negated when Clive and his friends used their new money to buy large quantities of the Company's shares. Meanwhile, the men in India did what was in their own best interests.

क्लाइव की रणनीति ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की भूमिका को पूरी तरह से बदल दिया। लंदन स्थित कंपनी के निदेशक अब भी इस बात पर अड़े थे कि शांतिपूर्ण व्यापार ही कंपनी की नीति होनी चाहिए। उन्होंने शिकायत की कि भारत में उनके लोग "सैन्य विचारों में इतने डूबे हुए हैं कि वे भूल गए हैं कि उनके नियोक्ता व्यापारी हैं और व्यापार उनका मुख्य उद्देश्य है... यदि हम किलेबंदी के लिए आपकी विभिन्न योजनाओं को अपनाते हैं, तो हमारी आधी पूंजी पत्थर की दीवारों में दब जाएगी।" हालांकि, इंग्लैंड से भारत और इंग्लैंड से इंग्लैंड के बीच पत्राचार होने में कई महीने, कभी-कभी एक साल से भी अधिक समय लग जाता था। लंदन द्वारा स्थिति को नियंत्रित करने के प्रयास तब और भी विफल हो गए जब क्लाइव और उनके मित्रों ने अपने नए धन का उपयोग कंपनी के शेयरों की बड़ी मात्रा में खरीद लेने के लिए किया। इस बीच, भारत में लोगों ने वही किया जो उनके अपने हित में था।

Clive's agreement with Mir Jafar had stipulated that the Company would be allowed to import and export goods without paying any duty. This enabled the Company and its employees to undercut the Indian merchants and seize

control of much of the trade. Moreover, their profits were sent back to Britain rather than used to boost local businesses. This, together with the loss to Bengal of the money paid over by Mir Jafar, severely damaged the economy.

मीर जाफर के साथ क्लाइव के समझौते में यह शर्त थी कि कंपनी को बिना किसी शुल्क के माल आयात और निर्यात करने की अनुमति होगी। इससे कंपनी और उसके कर्मचारियों को भारतीय व्यापारियों से कम दाम पर सामान बेचने और व्यापार के बड़े हिस्से पर कब्ज़ा करने का मौका मिला। इसके अलावा, उनका मुनाफा स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा देने के बजाय ब्रिटेन वापस भेज दिया जाता था। मीर जाफर द्वारा दिए गए धन के नुकसान के साथ-साथ इस घटना ने बंगाल की अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

In 1760 Clive returned to Britain with a vast fortune. He was given an Irish peerage, became an MP and was given an honorary doctorate by Oxford University. In his absence from Bengal, mismanagement by the officers of the Company became even more rampant. Henry Vansittart, who took over from Clive as governor, wrote:

1760 में क्लाइव एक विशाल संपत्ति के साथ ब्रिटेन लौट आए। उन्हें आयरिश कुलीनता प्रदान की गई, वे सांसद बने और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया। बंगाल से उनकी अनुपस्थिति में, कंपनी के अधिकारियों द्वारा कुप्रबंधन और भी अधिक बढ़ गया। हेनरी वैनसिटार्ट, जिन्होंने क्लाइव के बाद गवर्नर का पदभार संभाला, ने लिखा:

A trade was carried on without payment of duties, in the prosecution of which infinite oppressions were committed. English Agents or Gomashtas [native agents], not content with injuring the people, trampled on the authority of government, binding and punishing the Nabob's officers whenever they presumed to interfere.

बिना कर अदा किए व्यापार किया जाता था, जिसके फलस्वरूप अनगिनत अत्याचार किए गए। अंग्रेज एजेंट या गोमश्ता (स्थानीय एजेंट) जनता को नुकसान पहुंचाने से संतुष्ट नहीं हुए

और उन्होंने सरकार के अधिकार को कुचलते हुए नवाब के अधिकारियों को तब तक बांधकर दंडित किया जब तक उन्होंने हस्तक्षेप करने का साहस नहीं किया।

Bengal's coffers were empty and Vansittart decided to remedy this by installing a stronger nawab. Accordingly, he used the Company's army to depose Mir Jafar and replace him with his son-in-law Mir Qasim. For this, Mir Qasim generously rewarded Vansittart and his colleagues. Furthermore, several districts of Bengal that were adjacent to Calcutta were ceded to the Company.

बंगाल का खजाना खाली था और वैनसिटार्ट ने एक शक्तिशाली नवाब नियुक्त करके इस समस्या का समाधान करने का निर्णय लिया। तदनुसार, उन्होंने कंपनी की सेना का उपयोग करके मीर जाफर को पदच्युत कर दिया और उनके दामाद मीर कासिम को उनकी जगह नियुक्त किया। इसके लिए मीर कासिम ने वैनसिटार्ट और उनके सहयोगियों को उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया। इसके अलावा, कलकत्ता से सटे बंगाल के कई जिले कंपनी को सौंप दिए गए।

Mir Qasim was a capable ruler and substantially improved his administration and army. However, the depredations of the Company's men, who were using the Company's right to illegally trade duty-free on their own account and even selling this right on to local merchants, severely hampered Mir Qasim's attempts at reform. He gradually became more hostile to the Company and decided to curtail the Company's activities by abolishing all duties so as to reopen trade on a more equal basis. He further enraged the Company by seizing a shipment of its arms and detaining some of its men. A Company officer took it upon himself to attack Mir Qasim's men at Patna and was captured. The Company declared war, pronounced Mir Qasim unfit to rule and reinstated Mir Jafar as nawab. Once again he paid up for this. In eight years the Company's senior officers had received a total of £3,770,833, this at a time

when a British labourer's family might make £37 a year and a Bengali family less than £2.

मीर कासिम एक कुशल शासक थे और उन्होंने अपने प्रशासन और सेना में काफी सुधार किया। हालांकि, कंपनी के लोगों द्वारा किए गए अत्याचारों ने, जो कंपनी के अवैध व्यापार के अधिकार का दुरुपयोग कर अपने लाभ के लिए बिना शुल्क के व्यापार कर रहे थे और यहां तक कि इस अधिकार को स्थानीय व्यापारियों को भी बेच रहे थे, मीर कासिम के सुधार प्रयासों को बुरी तरह प्रभावित किया। वे धीरे-धीरे कंपनी के प्रति और अधिक शत्रुतापूर्ण हो गए और उन्होंने सभी शुल्कों को समाप्त करके कंपनी की गतिविधियों को सीमित करने का निर्णय लिया ताकि व्यापार को अधिक समानता के आधार पर पुनः स्थापित किया जा सके। उन्होंने कंपनी के हथियारों की एक खेप जब्त करके और उसके कुछ सैनिकों को हिरासत में लेकर कंपनी को और भी क्रोधित कर दिया। कंपनी के एक अधिकारी ने पटना में मीर कासिम के सैनिकों पर हमला करने का बीड़ा उठाया और उसे पकड़ लिया गया। कंपनी ने युद्ध की घोषणा कर दी, मीर कासिम को शासन के लिए अयोग्य घोषित कर दिया और मीर जाफर को नवाब के पद पर पुनः स्थापित कर दिया। एक बार फिर उन्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ी। आठ वर्षों में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों को कुल 3,770,833 पाउंड प्राप्त हुए, यह उस समय की बात है जब एक ब्रिटिश मजदूर का परिवार सालाना 37 पाउंड कमाता था और एक बंगाली परिवार 2 पाउंड से भी कम कमाता था।

Mir Qasim retreated west, where he linked up with the viceroy of Awadh and the Mughal emperor. On 23 October 1764, the Company defeated their combined armies at Buxar, a town on the western edge of Bihar, which was a part of the nawab's fiefdom. This victory would eventually result in the Company extending its influence beyond Bengal.

मीर कासिम पश्चिम की ओर पीछे हट गया, जहाँ उसने अवध के वायसराय और मुगल सम्राट से संपर्क स्थापित किया। 23 अक्टूबर 1764 को, कंपनी ने बिहार के पश्चिमी छोर पर स्थित बक्सर शहर में उनकी संयुक्त सेनाओं को पराजित किया, जो नवाब की जागीर का हिस्सा था। इस विजय के परिणामस्वरूप अंततः कंपनी का प्रभाव बंगाल से परे भी फैल गया।

Clive returned to India for the third and final time in 1765. The defeat of Mir Qasim and his allies at Buxar enabled the Company to dictate terms to the losers. Mir Qasim fled to Delhi and died in poverty. Rather than conquer further territories, Clive decided to allow the viceroy of Awadh to resume office, but give some of his land to the Mughal emperor. In gratitude the emperor bestowed the 'Dewani' of Bengal, Bihar and Orissa on the Company. This made them the legal rulers and gave them the right to all the revenue. This momentous document was delivered at Benares by the Mughal emperor himself. He handed it down from a makeshift throne made by taking a chair from Clive's tent and putting it on top of an English dining table that had been covered with an embroidered cloth. It was the beginning of British rule in India.

क्लाइव 1765 में तीसरी और अंतिम बार भारत लौटे। बक्सर में मीर कासिम और उनके सहयोगियों की पराजय ने कंपनी को हारने वालों पर अपनी शर्तें थोपने का अधिकार दे दिया। मीर कासिम दिल्ली भाग गया और गरीबी में उसकी मृत्यु हो गई। और अधिक क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने के बजाय, क्लाइव ने अवध के वायसराय को पदभार संभालने की अनुमति देने का निर्णय लिया, लेकिन उसकी कुछ भूमि मुगल सम्राट को दे दी। कृतज्ञता के रूप में सम्राट ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी कंपनी को सौंप दी। इससे कंपनी कानूनी शासक बन गई और उसे सभी राजस्व पर अधिकार प्राप्त हो गया। यह महत्वपूर्ण दस्तावेज स्वयं मुगल सम्राट द्वारा बनारस में सौंपा गया था। उन्होंने इसे क्लाइव के तंबू से एक कुर्सी लाकर और उसे कढ़ाईदार कपड़े से ढकी अंग्रेजी भोजन मेज पर रखकर बनाए गए एक अस्थायी सिंहासन से सौंपा। यह भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत थी।

On his arrival from England, Clive had declared himself shocked as 'such a scene of anarchy, confusion, bribery, corruption, and extortion was never seen or heard of in any country but Bengal; nor so many fortunes acquired in so unjust and rapacious a manner'. He introduced various restrictions on private

trade and banned bribes and lavish gifts. He realized, nevertheless, that he would need to augment his officer's modest official salaries. An 'Exclusive Company' was established whose profits would be distributed among the East India Company's senior officers according to seniority. Clive himself was given the largest number of shares. It would have an exclusive monopoly to make what profit it could on tobacco, betel nut and salt. In the three years before London forced its closure, it made a profit of over Rs 6 million, when the basic wage for Bengalis was one or two rupees a month. Once again, these profits left Bengal for Britain. Clive finally left India in 1767 and was succeeded by Harry Verelst who, at the end of 1769, was succeeded by John Cartier. That year and the year that followed were the most traumatic in Bengal's history.

इंग्लैंड से लौटने पर क्लाइव ने कहा था कि वे 'अराजकता, अव्यवस्था, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार और जबरन वसूली का ऐसा मंजर बंगाल के सिवा किसी और देश में न कभी देखा गया था और न ही सुना गया था; न ही इतनी दौलत इतने अन्यायपूर्ण और लालची तरीके से अर्जित की गई थी'। उन्होंने निजी व्यापार पर कई तरह के प्रतिबंध लगाए और रिश्वतखोरी और महंगे उपहारों पर रोक लगा दी। फिर भी, उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें अपने अधिकारियों के मामूली सरकारी वेतन में वृद्धि करनी होगी। एक 'विशेष कंपनी' की स्थापना की गई, जिसका मुनाफा ईस्ट इंडिया कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों में वरिष्ठता के अनुसार वितरित किया जाना था। क्लाइव को स्वयं सबसे अधिक शेयर दिए गए। इस कंपनी को तंबाकू, सुपारी और नमक पर मुनाफा कमाने का एकाधिकार प्राप्त था। लंदन द्वारा इसे बंद करने के लिए मजबूर किए जाने से पहले के तीन वर्षों में, इसने 60 लाख रुपये से अधिक का मुनाफा कमाया, जबकि उस समय बंगालियों का मूल वेतन एक या दो रुपये प्रति माह था। एक बार फिर, यह मुनाफा बंगाल से ब्रिटेन चला गया। क्लाइव अंततः 1767 में भारत छोड़कर चले गए और उनके बाद हैरी वेरेलस्ट ने पदभार संभाला, जिनके बाद 1769 के अंत में जॉन कार्टियर ने पदभार ग्रहण किया। वह वर्ष और उसके बाद का वर्ष बंगाल के इतिहास में सबसे दर्दनाक वर्ष थे।

In most of Bengal, there were normally three harvests a year: a small crop of pulses in the spring, a rice crop in September and a bigger rice crop in December. Normally, it was one of the most fertile parts of India. As the widely travelled Italian, Ludovico di Varthema, put it after his visit in the sixteenth century: 'The country abounds in grain of every kind, sugar, ginger, the best place in the world to live in.' However, the harvests of 1768 had been poor, which caused a rise in the price of food that extended into 1769. In that year there was very little rainfall over most of Bengal and the rice crops failed. Food became extremely scarce and the agents of the Company's men cornered the market in such grain as there was and ruthlessly raised its price.

बंगाल के अधिकांश हिस्सों में सामान्यतः वर्ष में तीन फसलें होती थीं: वसंत ऋतु में दालों की एक छोटी फसल, सितंबर में चावल की फसल और दिसंबर में चावल की एक बड़ी फसल। सामान्यतः, यह भारत के सबसे उपजाऊ क्षेत्रों में से एक था। सोलहवीं शताब्दी में अपनी यात्रा के बाद व्यापक रूप से यात्रा करने वाले इतालवी लुडोविको डि वर्थेमा ने कहा था: 'देश में हर प्रकार के अनाज, चीनी, अदरक प्रचुर मात्रा में हैं, यह दुनिया में रहने के लिए सबसे अच्छी जगह है।' हालांकि, 1768 की फसलें खराब रहीं, जिसके कारण खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि हुई जो 1769 तक जारी रही। उस वर्ष बंगाल के अधिकांश हिस्सों में बहुत कम वर्षा हुई और चावल की फसलें बर्बाद हो गईं। भोजन अत्यंत दुर्लभ हो गया और कंपनी के एजेंटों ने उपलब्ध अनाज पर एकाधिकार कर लिया और उसकी कीमतें बेरहमी से बढ़ा दीं।

In the thirteen years since the Battle of Plassey huge sums of money had left Bengal for Britain; this had depressed the local economy. Moreover, the land tax had been collected especially rigorously. Traditionally, this tax had been paid by the cultivator to his landlord, either in cash or kind, at a rate that represented around one-third of his crop. As the landlord lived close to his cultivators, he had a good idea of what was a reasonable assessment. If there was a poor crop the landlord should, of course, receive less than in a good

year. The landlord, who was in effect merely a tax collector, then passed on nine-tenths of the collected tax to the government, retaining one-tenth for his services. This system required careful supervision by the government, otherwise unscrupulous landlords would squeeze the cultivators. The Company, short of staff, failed to do this effectively and many cultivators were unfairly assessed when their crops failed. As long as the Company received generous revenues, it turned a blind eye to these abuses.

प्लासी की लड़ाई के बाद तेरह वर्षों में बंगाल से भारी मात्रा में धन ब्रिटेन चला गया था; इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई थी। इसके अलावा, भूमि कर की वसूली विशेष रूप से सख्ती से की जा रही थी। परंपरागत रूप से, यह कर किसान द्वारा अपने जमींदार को नकद या वस्तु के रूप में, अपनी फसल के लगभग एक तिहाई के बराबर दर से अदा किया जाता था। चूंकि जमींदार अपने किसानों के करीब रहते थे, इसलिए उन्हें उचित कर निर्धारण का अच्छा अंदाजा होता था। फसल खराब होने पर जमींदार को स्वाभाविक रूप से अच्छी फसल की तुलना में कम कर मिलना चाहिए था। जमींदार, जो वास्तव में केवल एक कर संग्रहकर्ता था, एकत्रित कर का नौ-दसवां हिस्सा सरकार को दे देता था और एक-दसवां हिस्सा अपनी सेवाओं के लिए रख लेता था। इस प्रणाली के लिए सरकार द्वारा कड़ी निगरानी की आवश्यकता थी, अन्यथा बेईमान जमींदार किसानों का शोषण कर देते। कर्मचारियों की कमी के कारण कंपनी यह प्रभावी ढंग से नहीं कर पाई और फसल खराब होने पर कई किसानों का कर अनुचित तरीके से लगाया गया। जब तक कंपनी को पर्याप्त राजस्व प्राप्त होता रहा, उसने इन कुप्रथाओं को नजरअंदाज किया।

In 1769 the population, having been bled dry over the previous years, had no cash reserve with which to buy in food from parts of India where food was available. The Company could have done this, but chose not to. The famine accelerated, not because there was no food in India, but because the people of Bengal had no money with which to purchase it. The Company made minor arrangements for relief, but continued to ruthlessly collect the land tax and its

other revenues. As the famine increased in intensity the loss of life became terrible.

1769 में, पिछले वर्षों में जनसंख्या का अत्यधिक दोहन हो जाने के कारण, बंगाल की आबादी के पास इतना पैसा नहीं बचा था कि वह भारत के उन हिस्सों से भोजन खरीद सके जहाँ भोजन उपलब्ध था। कंपनी ऐसा कर सकती थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। अकाल और भी तीव्र हो गया, इसका कारण यह नहीं था कि भारत में भोजन की कमी थी, बल्कि यह था कि बंगाल के लोगों के पास भोजन खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। कंपनी ने राहत के लिए कुछ मामूली व्यवस्थाएँ कीं, लेकिन भूमि कर और अन्य राजस्व की वसूली निर्दयतापूर्वक जारी रखी। जैसे-जैसे अकाल की तीव्रता बढ़ती गई, जानमाल का नुकसान भयावह होता गया।

These developments seem to have been hardly noticed by the governor in Calcutta. Verelst retired on 24 December 1769 without giving London any intimation of the approaching famine or of the loss of revenue it would cause the Company. Nor did his successor, Governor Cartier, who took over on that same day, report anything amiss until late January 1770. The principal concern of both men was the land tax. This was despite having been told by Mr Alexander, the supervisor of Bihar, of the ‘extremity of immediate distress’ and that ‘each day lost in deliberation adds to the calamity’ and that ‘To judge from the city of Patna, the interior of the country must be in a deplorable condition. From fifty to sixty people have died of absolute hunger in the streets every day for these ten days past.’

कलकत्ता के गवर्नर ने इन घटनाक्रमों पर शायद ही ध्यान दिया हो। वेरेलस्ट 24 दिसंबर 1769 को लंदन को आने वाले अकाल या कंपनी को होने वाले राजस्व के नुकसान की कोई सूचना दिए बिना ही सेवानिवृत्त हो गए। उनके उत्तराधिकारी, गवर्नर कार्टियर, जिन्होंने उसी दिन पदभार संभाला, ने भी जनवरी 1770 के अंत तक किसी गड़बड़ी की सूचना नहीं दी। दोनों की मुख्य चिंता भूमि कर थी। यह तब भी था जब बिहार के पर्यवेक्षक श्री अलेक्जेंडर ने उन्हें 'तत्काल संकट की चरम सीमा' के बारे में बताया था और कहा था कि 'विचार-विमर्श में

लगने वाला प्रत्येक दिन विपत्ति को बढ़ाता है' और 'पटना शहर की स्थिति को देखते हुए, देश के आंतरिक भाग की स्थिति दयनीय होगी। पिछले दस दिनों से प्रतिदिन पचास से साठ लोग सड़कों पर भूख से मर रहे हैं।'

In February, Cartier reported that he had not 'yet found any failure in the revenue'. Extraordinarily, in April the government increased the land tax by 10 per cent. By May, however, it was beginning to dawn on the administration that something serious was happening. They reported: 'The mortality and beggary exceed all description. Above one-third of the inhabitants have perished in the once plentiful province of Purnea, and in other parts the misery is equal.'

फरवरी में, कार्टियर ने रिपोर्ट दी कि उन्हें 'राजस्व में अभी तक कोई कमी नहीं मिली है'। हैरानी की बात यह है कि अप्रैल में सरकार ने भूमि कर में 10 प्रतिशत की वृद्धि कर दी। हालांकि, मई तक प्रशासन को यह एहसास होने लगा था कि कुछ गंभीर हो रहा है। उन्होंने रिपोर्ट दी: 'मृत्यु और गरीबी की स्थिति अकल्पनीय है। कभी समृद्ध रहे पूर्णिया प्रांत में एक तिहाई से अधिक निवासी मर चुके हैं, और अन्य क्षेत्रों में भी यही हाल है।'

Throughout the hot season the famine continued. Mohamed Ala Khan, the Foujdar (judge) of Purnea, wrote to Calcutta:

गर्मी के पूरे मौसम में अकाल जारी रहा। पूर्णिया के फौजदार (न्यायाधीश) मोहम्मद अला खान ने कलकत्ता को पत्र लिखा:

Hardly a day passes without thirty or forty people dying. Multitudes have, and continue to perish from hunger. Seed grain has been sold for food, and cattle and agricultural utensils. Children offered for sale and no buyers.

शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब तीस-चालीस लोग न मरें। असंख्य लोग भूख से मर चुके हैं और मरते जा रहे हैं। अनाज, मवेशी और कृषि उपकरण सब बेच दिए गए हैं। बच्चों को बिक्री के लिए पेश किया जाता है, लेकिन कोई खरीदार नहीं मिलता।

The Aumil (collector of revenue) of Jessore wrote:

जेस्सोर के औमिल (राजस्व संग्राहक) ने लिखा:

The people are bringing in the leaves of the trees from the jungles for food; and they offer to sell their sons and daughters. Many of the ryots [tenants] are running away.

लोग खाने के लिए जंगलों से पेड़ों के पत्ते ला रहे हैं; और वे अपने बेटे-बेटियों को बेचने की पेशकश कर रहे हैं। कई किसान भाग रहे हैं।

Most shockingly, the resident of the Durbar reported:

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि दरबार के निवासी ने बताया:

The scene of misery that intervened, and still continue, shocks humanity too much to bear description. Certain it is, that in several parts the living have fed on the dead, and that the number that has perished in those provinces that have most suffered is calculated to have been, within these few months, as six is to sixteen of the whole inhabitants.

उस भयावह त्रासदी का जो दृश्य सामने आया और अभी भी जारी है, वह मानवता को इतना झकझोर देने वाला है कि उसका वर्णन करना असंभव है। यह निश्चित है कि कई जगहों पर जीवित लोगों ने मृतकों का मांस खाया है, और जिन प्रांतों को सबसे अधिक नुकसान हुआ है, उनमें इन कुछ महीनों के भीतर मरने वालों की संख्या कुल निवासियों के अनुपात में लगभग छह गुना है।

And later, in mid-July, after the rains had finally come, he reported to the governor and his council:

और बाद में, जुलाई के मध्य में, जब आखिरकार बारिश हुई, तो उन्होंने राज्यपाल और उनकी परिषद को रिपोर्ट दी:

Previous representations are faint in comparison to the miseries now endured … in the city of Moorshedabad [Murshidabad] alone it is calculated that more than five hundred are starved daily, and in the villages and country adjacent the numbers said to perish exceed belief … In one month we may expect relief

from our present distresses from the new harvest, if people survive to gather it in; but the numbers that I am sensible must perish in that interval, and those that I see dying around me, greatly affect my feelings and humanity as a man, and make me, as a servant of the Company, apprehensive of the consequences that may ensue to the revenues.

पहले के अनुमान वर्तमान कष्टों के सामने फीके पड़ जाते हैं... अकेले मुर्शिदाबाद शहर में ही अनुमान है कि प्रतिदिन पाँच सौ से अधिक लोग भूख से मर रहे हैं, और आसपास के गाँवों और ग्रामीण इलाकों में मरने वालों की संख्या अविश्वसनीय है... यदि लोग फसल काटने के लिए जीवित रहते हैं, तो एक महीने में नई फसल से हमें वर्तमान संकटों से कुछ राहत मिल सकती है; लेकिन इस दौरान मरने वालों की संख्या और मेरे आस-पास मरते हुए लोगों को देखकर एक इंसान के रूप में मेरी भावनाएँ और मानवता बहुत आहत होती हैं, और कंपनी के एक सेवक के रूप में मुझे राजस्व पर पड़ने वाले संभावित परिणामों की आशंका होती है।

The rainfall in the second half of 1770 was abundant. The crops, in places where there were people left to plant them and where seed that had not been eaten to survive, were good. It was, however, too late for many. In 1772, officials toured the Company's territories to ascertain the mortality. They estimated that, out of a population of thirty million, some ten million had died. For many years afterwards great swathes of Bengal remained uncultivated and reverted to wilderness. The land was roamed by desperate bandits.

1770 के उत्तरार्ध में भरपूर वर्षा हुई। जिन स्थानों पर फसलें बोने के लिए लोग बचे थे और जहाँ बीज बचे थे जिन्हें खाकर वे जीवित नहीं रह सके, वहाँ फसलें अच्छी हुईं। हालाँकि, कई लोगों के लिए बहुत देर हो चुकी थी। 1772 में, अधिकारियों ने कंपनी के क्षेत्रों का दौरा करके मृत्यु दर का पता लगाया। उन्होंने अनुमान लगाया कि तीस मिलियन की आबादी में से लगभग दस मिलियन लोग मारे गए थे। इसके बाद कई वर्षों तक बंगाल के बड़े-बड़े हिस्से बिना खेती के रहे और जंगल में तब्दील हो गए। उस भूमि पर खूंखार डाकुओं का राज था।

It is impossible to know what the mortality would have been had the Company not become the rulers of Bengal and Bihar. It seems clear that it would have been much lower since traditionally, in times of drought, the collection of the land tax was enforced less rigidly and certainly not increased. Moreover, all the money collected would have remained within the country, as would the huge sums given by the nawabs to the Company and its men. The administration and the populace would, therefore, have had more money with which to buy in grain from other parts of India. It seems likely that in the first thirteen years of British rule, more harm was done to the people of India than by all the other European invaders of the centuries before.

यह जानना असंभव है कि यदि ब्रिटिश कंपनी बंगाल और बिहार की शासक न बनी होती तो मृत्यु दर क्या होती। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह बहुत कम होती, क्योंकि परंपरा के अनुसार, सूखे के समय भूमि कर की वसूली कम सख्ती से की जाती थी और निश्चित रूप से बढ़ाई नहीं जाती थी। इसके अलावा, एकत्रित धन देश के भीतर ही रहता, साथ ही नवाबों द्वारा कंपनी और उसके लोगों को दी गई भारी धनराशि भी। इसलिए, प्रशासन और जनता के पास भारत के अन्य भागों से अनाज खरीदने के लिए अधिक धन होता। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिटिश शासन के पहले तेरह वर्षों में भारत की जनता को पिछली शताब्दियों के सभी यूरोपीय आक्रमणकारियों की तुलना में कहीं अधिक नुकसान पहुँचाया गया।

John Shore, who would later become Governor General of India in 1793, arrived in Bengal to work for the Company in 1769 and a year later was posted to Murshidabad. Nearly forty years later the memory was still with him:

जॉन शोर, जो बाद में 1793 में भारत के गवर्नर जनरल बने, 1769 में कंपनी के लिए काम करने के लिए बंगाल पहुंचे और एक साल बाद उन्हें मुर्शिदाबाद में तैनात किया गया। लगभग चालीस साल बाद भी उन्हें वह घटना याद थी:

Still fresh in memory's eye the scene I view,

वह दृश्य अभी भी मेरी स्मृति में ताजा है।

The shrivelled limbs, sunk eyes, and lifeless hue;

मुरझाए हुए अंग, धंसी हुई आंखें और निर्जीव रंग;

Still hear the mother's shrieks and infant's moans,

अब भी मां की चीखें और शिशु के कराहने की आवाजें सुनाई देती हैं,

Cries of despair and agonizing moans.

हताशा भरी चीखें और पीड़ादायक कराहें।

In wild confusion dead and dying lie;-

भयंकर अफरा-तफरी में मृत और मरणासन्न अवस्था में पड़े हैं;

Hark the jackal's yell and vulture's cry,

सियार की चीख और गिद्ध की पुकार सुनो,

The dogs fell howl, as midst the glare of day

दिन की तेज रोशनी के बीच कुत्ते जोर-जोर से भौंकने लगे।

They riot unmolested on their prey!

वे अपने शिकार पर बेरोकटोक हमला करते हैं!

Dire scenes of horror, which no pen can trace,

भयावह दृश्य, जिनका वर्णन कलम नहीं कर सकती,

Nor rolling years from memory's page efface.

और न ही स्मृति के पन्नों से मिटते हुए बीते वर्षों को भुलाया जा सकता है।

In Britain the newly acquired fortunes of the Company's men caused envy and alarm among the established families. Moreover, the wealth seemed not to have benefited the Company or its shareholders. The Company paid for the armies in India and the adventures of its soldiers, but any rewards had been seized by the Company's employees. The benefits to the Company that had

been supposed to flow from the conquest of Bengal never materialized. The costs of administration and conflict began to eat up any increase in revenue.
ब्रिटेन में कंपनी के कर्मचारियों की नई-नई संपत्ति ने प्रतिष्ठित परिवारों में ईर्ष्या और चिंता पैदा कर दी। इसके अलावा, ऐसा प्रतीत होता था कि इस धन से कंपनी या उसके शेयरधारकों को कोई लाभ नहीं हुआ। कंपनी ने भारत में सेनाओं और अपने सैनिकों के अभियानों का खर्च उठाया, लेकिन सारा लाभ कंपनी के कर्मचारियों ने हड़प लिया। बंगाल की विजय से कंपनी को जो लाभ मिलने की उम्मीद थी, वह कभी प्राप्त नहीं हुआ। प्रशासन और संघर्ष के खर्चों ने राजस्व में हुई किसी भी वृद्धि को खत्म करना शुरू कर दिया।

In India the Company's men continually expanded the Company's army so as to control more territory. At the beginning of the century it had been a thousand or so strong; by 1794 it had 13,000 Europeans and 57,000 Indian soldiers. With so much money to be made by its employees, the Company in India was beyond control.
भारत में कंपनी के लोगों ने अधिक से अधिक क्षेत्र पर नियंत्रण पाने के लिए लगातार कंपनी की सेना का विस्तार किया। शताब्दी की शुरुआत में इसकी संख्या लगभग एक हजार थी; 1794 तक इसमें 13,000 यूरोपीय और 57,000 भारतीय सैनिक शामिल हो गए थे। अपने कर्मचारियों द्वारा कमाए जा रहे भारी मुनाफे के कारण भारत में कंपनी पर नियंत्रण पाना असंभव हो गया था।

In 1767 the East India Company was unable to pay an agreed annual levy to the treasury of £400,000. Parliament forced through some reforms to control the activities of the Company's employees. Administration improved but, nevertheless, in 1773 the Company had to beg for a government loan of £1,500,000. The Company then found itself involved in more wars, this time against the Marathas in central India. Huge sums had to be extorted from Indian rulers to meet the cost. The resulting furore led to the impeachment of the Company's Governor General. In 1784 ultimate control of the Company

passed to the British government. Soon, imperial ambitions would make the Company, as an agent of the British government, no longer a business enterprise but the ruler of India. Profitable trade and conquest had proved incompatible.

1767 में ईस्ट इंडिया कंपनी सरकारी खजाने को तय वार्षिक कर के रूप में 400,000 पाउंड का भुगतान करने में असमर्थ रही। संसद ने कंपनी के कर्मचारियों की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए कुछ सुधार लागू किए। प्रशासन में सुधार हुआ, लेकिन फिर भी, 1773 में कंपनी को सरकार से 1,500,000 पाउंड का ऋण लेना पड़ा। इसके बाद कंपनी खुद को और अधिक युद्धों में उलझा हुआ पाया, इस बार मध्य भारत में मराठों के खिलाफ। खर्चों को पूरा करने के लिए भारतीय शासकों से भारी मात्रा में कर वसूलना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप हुए हंगामे के कारण कंपनी के गवर्नर जनरल पर महाभियोग चलाया गया। 1784 में कंपनी का अंतिम नियंत्रण ब्रिटिश सरकार के हाथों में चला गया। जल्द ही, साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं ने कंपनी को, ब्रिटिश सरकार के एक एजेंट के रूप में, एक व्यावसायिक उद्यम से भारत का शासक बना दिया। लाभदायक व्यापार और विजय परस्पर असंगत साबित हुए।

© University of Texas at Austin. Colbeck, C. (ed.), from The Public Schools Historical Atlas, 1905.

© यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास एट ऑस्टिन। कोलबेक, सी. (संपादक), द पब्लिक स्कूल्स हिस्टोरिकल एटलस, 1905 से।

BIBLIOGRAPHY

ग्रंथ सूची

Barlow, Edward, *Barlow's Journal*, Basil Lubbock (transcribed by), London: Hurst and Blackett, 1934.

बार्लो, एडवर्ड, बार्लो की डायरी, बेसिल लुबॉक (द्वारा प्रतिलेखित), लंदन: हर्स्ट एंड ब्लैकेट, 1934।

Bence-Jones, Mark, *Clive of India*, London: Constable and Robinson, 1974.

बेंस-जोन्स, मार्क, क्लाइव ऑफ इंडिया, लंदन: कॉन्स्टेबल एंड रॉबिन्सन, 1974।

Biddulph, John, *The Pirates of Malabar*, London: Smith, Elder and Company, 1907.

बिडुलफ, जॉन, द पाइरेट्स ऑफ मालाबार, लंदन: स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी, 1907।

Bredsdorff, Asta, The Trials and Travels of Willem Leyel: An Account of the Danish East India Company in Tranquebar, 1639–48, Copenhagen: Museum Tusculanum Press, University of Copenhagen, 2009.

ब्रेड्सडॉर्फ, एस्टा, द ट्रायल्स एंड ट्रेवल्स ऑफ विलेम लेयेल: एन अकाउंट ऑफ द डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी इन ट्रांकेबार, 1639-48, कोपेनहेगन: म्यूजियम टस्कुलानम प्रेस, यूनिवर्सिटी ऑफ कोपेनहेगन, 2009।

Boxer, Charles Ralph, *Two Pioneers of Tropical Medicine*, London: Wellcome Historical Medical Library, 1963.

बॉक्सर, चार्ल्स राल्फ, उष्णकटिबंधीय चिकित्सा के दो अग्रणी, लंदन: वेलकम हिस्टोरिकल मेडिकल लाइब्रेरी, 1963।

Boxer, Charles Ralph, *The Portuguese Seaborne Empire*, Manchester: Carcanet Press, 1991.

बॉक्सर, चार्ल्स राल्फ, पुर्तगाली समुद्री साम्राज्य, मैनचेस्टर: कारकेनेट प्रेस, 1991।

Bruce, John, *Annals of the Honourable East-India Company*, London: Black, Parry, and Kingsbury, 1810.

ब्रूस, जॉन, एनल्स ऑफ द ऑनरेबल ईस्ट-इंडिया कंपनी, लंदन: ब्लैक, पैरी और किंग्सबरी, 1810।

Chaudhuri, Kirti Narayan, *Asia before Europe*, Cambridge: Cambridge University Press, 1990.

चौधरी, कीर्ति नारायण, एशिया बिफोर यूरोप, कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990।

Churchill, Awnsham and John Churchill, *A Collection of Voyages and Travels*, London: Bookseller, 1704–32.

चर्चिल, आउंशम और जॉन चर्चिल, यात्राओं और भ्रमणों का संग्रह, लंदन: बुकसेलर, 1704-32।

Commissariat, M.S., *Mandelslo's Travels in Western India*, London and Bombay: Oxford University Press, 1931.

कमिसारिएट, एम.एस., मैंडेलस्लो की पश्चिमी भारत यात्राएँ, लंदन और बॉम्बे: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1931।

___, *History of Gujarat*, Vol III, Ahmedabad: Gujarat Vidya Sabha, 1980.

___, गुजरात का इतिहास, खंड III, अहमदाबाद: गुजरात विद्या सभा, 1980।

Gerson da Cunha, J., *The Origin of Bombay*, New Delhi: Asian Educational Services, 1993.

गर्सन दा कुन्हा, जे., द ओरिजिन ऑफ बॉम्बे, नई दिल्ली: एशियन एजुकेशनल सर्विसेज, 1993।

R. de Souza, Teotonio, (ed.), *Essays in Goan History*, New Delhi: Concept, 2002.

आर. डी सूजा, टियोटोनियो, (संपादक), गोवा के इतिहास पर निबंध, नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट, 2002।

Dodwell, Henry, *Dupleix and Clive: The Beginning of Empire*, London: Methuen Books, 1920.

डोडवेल, हेनरी, डुप्लेक्स और क्लाइव: साम्राज्य की शुरुआत, लंदन: मेथुएन बुक्स, 1920।

Downing, Clement, *A History of the Indian Wars*, Oxford: Oxford University Press, 1924.

डाउनिंग, क्लेमेंट, भारतीय युद्धों का इतिहास, ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1924।

Dutt, Ramesh C., *The Economic History of India*, London: Routledge and Kegan Paul, 1906.

दत्त, रमेश सी., भारत का आर्थिक इतिहास, लंदन: रूटलेज और केगन पॉल, 1906।

Eraly, Abraham, *The Mughal World: India's Tainted Paradise*, London: Weidenfeld and Nicolson, 2007.

एराली, अब्राहम, द मुगल वर्ल्ड: इंडियाज टैंटेड पैराडाइज, लंदन: वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन, 2007।

Foster, William, *The English Factories in India*, Oxford: Clarendon Press, 1908–55.

फोस्टर, विलियम, भारत में अंग्रेजी कारखाने, ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1908-55।

Gokhale, Balkrishna Govind, *Surat in the Seventeenth Century*, London/Malmo: Curzon Press, 1979.

गोखले, बालकृष्ण गोविंद, सत्रहवीं शताब्दी में सूरत, लंदन/माल्मो: कर्ज़न प्रेस, 1979।

Grose, John Henry, *A Voyage to the East Indies*, London: (printed for) S. Hooper, and A. Morley, 1757.

ग्रोस, जॉन हेनरी, ए वॉयज टू द ईस्ट इंडीज, लंदन: (मुद्रित) एस. हूपर, और ए. मोर्ले, 1757।

Hourani, George Fadlo, Arab Seafaring in the Indian Ocean in Ancient and Early Medieval Times, Princeton: Princeton University Press, 1995.

हौरानी, जॉर्ज फडलो, प्राचीन और प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में हिंद महासागर में अरब समुद्री यात्रा, प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।

Hunter, William W., *The Annals of Rural Bengal*, London: Smith, Elder and Company, 1868.

हंटर, विलियम डब्ल्यू., द एनल्स ऑफ रूरल बंगाल, लंदन: स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी, 1868।

Jayne, K.G., *Vasco da Gama and His Successors*, London: Methuen Books, 1910.

जेन, के.जी., वास्को दा गामा और उनके उत्तराधिकारी, लंदन: मेथुएन बुक्स, 1910।

Krishna, Bal, Commercial Relations between India and England, 1601 to 1757, London: Routledge, 1924.

कृष्णा, बाल, भारत और इंग्लैंड के बीच वाणिज्यिक संबंध, 1601 से 1757, लंदन: रूटलेज, 1924।

Lawford, James P., *Britain's Army in India*, London: Allen and Unwin, 1978.

लॉफोर्ड, जेम्स पी., ब्रिटेन की सेना भारत में, लंदन: एलन एंड अनविन, 1978।

Lach, Donald F., and van Kley, Edwin J., *Asia in the Making of Europe*, Vol III, Chicago: University of Chicago, 1993.

लाच, डोनाल्ड एफ., और वैन क्ले, एडविन जे., एशिया इन द मेकिंग ऑफ यूरोप, खंड III, शिकागो: शिकागो विश्वविद्यालय, 1993।

Lockyer, Charles, *An Account of the Trade in India*, London: General Books LLC, 1711.

लॉकियर, चार्ल्स, भारत में व्यापार का विवरण, लंदन: जनरल बुक्स एलएलसी, 1711।

Mainwaring, Arthur Edward, *Crown and Company*, London: Arthur L. Humphreys, 1911.

मैनवारिंग, आर्थर एडवर्ड, क्राउन एंड कंपनी, लंदन: आर्थर एल. हम्फ्रीज़, 1911।

Malgonkar, Mahohar, *Kanhoji Angrey Maratha Admiral*, London: Asia Publishing House, 1959.

मालगोनकर, महोहर, कान्होजी अंग्रेज़ मराठा एडमिरल, लंदन: एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1959।

Marshall, P.J., East Indian Fortunes: The British in Bengal in the Eighteenth Century, Oxford: Oxford University Press, 1976.

मार्शल, पी.जे., ईस्ट इंडियन फॉर्च्यून्स: द ब्रिटिश इन बंगाल इन द एटीन सेंचुरी, ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1976।

Miller, James Innes, *The Spice Trade of the Roman Empire*, Oxford: Clarendon Press, 1969.

मिलर, जेम्स इन्स, रोमन साम्राज्य का मसाला व्यापार, ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1969।

Nairne, Alexander Kyd, *History of the Konkan*, Bombay: Government Central Press, 1894.

नैर्ने, अलेक्जेंडर किड, कोंकण का इतिहास, बॉम्बे: सरकारी केंद्रीय प्रेस, 1894।

Nambiar, O.K., *The Kunjalis*, Bombay: Asia Publishing House, 1963.

नांबियार, ओ.के., द कुंजलिस, बॉम्बे: एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1963।

Oaten, Edward Farley, *European Travellers in India*, London: Kegan Paul, Trench, Trubner and Company, 1909.

ओटेन, एडवर्ड फ़ार्ले, यूरोपियन ट्रैवलर्स इन इंडिया, लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच, ट्रूबनर एंड कंपनी, 1909।

Pagadi, Setu Madhavrao, *Chhatrapati Shivaji*, Poona: Continental Prakashan, 2004.

पगड़ी, सेतु माधवराव, छत्रपति शिवाजी, पूना: कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, 2004।

Pinkerton, John, *A General Collection of the Best and Most Interesting Voyages and Travels*, London: Longman, Hurst, Rees, Orme and Brown, 1808–14.

पिंकरटन, जॉन, सर्वश्रेष्ठ और सबसे दिलचस्प यात्राओं का एक सामान्य संग्रह, लंदन: लॉन्गमैन, हर्स्ट, रीस, ओर्मे और ब्राउन, 1808-14।

Poddar, Prem, Rajeev S., Patke, and Lars Jensen, (eds), *A Historical Companion to Postcolonial Literature: Continental Europe and its Empires*, Edinburgh: Edinburg University, 2008.

पॉद्दार, प्रेम, राजीव एस., पटके, और लार्स जेन्सेन, (संपादक), उत्तर-औपनिवेशिक साहित्य का एक ऐतिहासिक साथी: महाद्वीपीय यूरोप और उसके साम्राज्य, एडिनबर्ग: एडिनबर्ग विश्वविद्यालय, 2008।

Poonen, T.I., *Dutch Hegemony in Malabar*, Trivandrum: University of Kerala, 1978.

पूनन, टी.आई., मालाबार में डच आधिपत्य, त्रिवेंद्रम: केरल विश्वविद्यालय, 1978।

Priolkar, Anant Karba, *The Goa Inquisition*, New Delhi: A.K. Priolkar, 1991.

प्रियोलकर, अनंत करबा, द गोवा इनक्विजिशन, नई दिल्ली: ए.के. प्रियोलकर, 1991।

Rasmussen, Peter Ravn, *Tranquebar: The Danish East India Company 1616–1669*, available at http://scholiast.org/history/tra-narr.html (last accessed on 10 August 2016).

रासमुसेन, पीटर रावन, ट्रांकेबार: द डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी 1616-1669, http://scholiast.org/history/tra-narr.html पर उपलब्ध (अंतिम बार 10 अगस्त 2016 को देखा गया)।

Rawlinson, H.G., *British Beginnings in Western India*, Oxford: Clarendon Press, 1920.

रॉलिंसन, एच.जी., ब्रिटिश बिगिनिंग्स इन वेस्टर्न इंडिया, ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1920।

Subrahmanyam, Sanjay, *The Career and Legend of Vasco da Gama*, Cambridge: Cambridge University Press, 1997.

सुब्रह्मण्यम, संजय, वास्को दा गामा का कैरियर और किंवदंती, कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997।

Markus Vink, 'The World's Oldest Trade: Dutch Slavery and Slave Trade in the Indian Ocean in the Seventeenth Century', *Journal of World History, Vol. 14, No. 2*, Hawaii: University of Hawaii Press, 2003.

मार्कस विंक, 'विश्व का सबसे पुराना व्यापार: सत्रहवीं शताब्दी में हिंद महासागर में डच दासता और दास व्यापार', जर्नल ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, खंड 14, संख्या 2, हवाई: यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, 2003।

Welsh, James, *Military Reminiscences*, London: Smith, Elder & Co., 1830.

वेल्श, जेम्स, सैन्य संस्मरण, लंदन: स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी, 1830।

Whiteway, R.S., *The Rise of Portuguese Power in India 1497–1550*, Westminster: Archibald Constable, 1899.

व्हाइटवे, आर.एस., भारत में पुर्तगाली सत्ता का उदय 1497-1550, वेस्टमिंस्टर: आर्चीबाल्ड कॉन्स्टेबल, 1899।

Goverment Publications, etc.

सरकारी प्रकाशन आदि।

Gazetteer of the Bombay Presidency, Bombay: Central Government Press, 1880.

बॉम्बे प्रेसीडेंसी का गजेटियर, बॉम्बे: केंद्रीय सरकारी प्रेस, 1880।

Imperial Gazetteers of India, Oxford: Clarendon Press, 1908.

इंपीरियल गजेटियर्स ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1908।

Oxford Dictionary of National Biography, Oxford: Oxford University Press, 2004–05.

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी, ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004-05।

Parliamentary Papers: Report of the Indian Famine Commission, Part III, Famine Histories, 18, India, Famine Inquiry Commission, London: Printed for His/Her Majesty's Stationery Office, Darling and Son, 1901.

संसदीय दस्तावेज़: भारतीय अकाल आयोग की रिपोर्ट, भाग III, अकाल इतिहास, 18, भारत, अकाल जांच आयोग, लंदन: महामहिम के स्टेशनरी कार्यालय, डार्लिंग एंड सन, 1901 के लिए मुद्रित।

Hakluyt Society Publications

हैकलुइट सोसायटी प्रकाशन

Burnell, A.C., and P.A. Tiele, (eds), *The Voyage of J. H. van Linschoten to the East Indies*, London: Hakluyt Society, 1885.

बर्नेल, ए.सी., और पी.ए. टिएले, (संपादक), जे. एच. वैन लिंसचोटेन की पूर्वी इंडीज की यात्रा, लंदन: हकलुइट सोसाइटी, 1885।

Major, R.H. (ed.), India in the Fifteenth Century: Being a Collection of Narratives of Voyages to India, London: Hakluyt Society, 1857.

मेजर, आर.एच. (संपादक), पंद्रहवीं शताब्दी में भारत: भारत की यात्राओं के वृत्तांतों का संग्रह, लंदन: हैकलुइट सोसाइटी, 1857।

Ravanstein, E.G. (ed.), *A Journal* [by an unknown writer] *of the First Voyage of Vasco da Gama, 1497-1499*, London: Hakluyt Society, 1898.

रावनस्टीन, ई.जी. (संपादक), वास्को दा गामा की पहली यात्रा का एक जर्नल [एक अज्ञात लेखक द्वारा], 1497-1499, लंदन: हकलुइट सोसाइटी, 1898।

Stanley, H.E.J. (ed.), *The Three Voyages of Vasco da Gama and his Viceroyalty*, London: Hakluyt Society, 1869.

स्टैनली, एच.ई.जे. (संपादक), वास्को दा गामा की तीन यात्राएँ और उनका वायसरायल्टी, लंदन: हैकलुइट सोसाइटी, 1869।

Gray, Albert and Harry Charles Purvis, Bell (eds), The Voyage of François Pyrard of Laval to the East Indies, the Maldives, the Moluccas, and Brazil, London: Hakluyt Society, 1887.

ग्रे, अल्बर्ट और हैरी चार्ल्स पुरविस, बेल (संपादक), द वॉयज ऑफ फ्रांकोइस पायर्ड ऑफ लावल टू द ईस्ट इंडीज, द मालदीव्स, द मोलुकास, एंड ब्राजील, लंदन: हैकलुइट सोसाइटी, 1887।

Huntingford, G.W.B. (ed.), *The Periplus of the Erythraean Sea*, London: Hakluyt Society, 1980.

हंटिंगफोर्ड, जी.डब्ल्यू.बी. (संपादक), द पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी, लंदन: हैकलुइट सोसाइटी, 1980।

Temple, Sir Richard Carnac (ed.), *The Travels of Peter Mundy in Europe and Asia, 1608–1667*, Cambridge: Hakluyt Society, 1907.

टेम्पल, सर रिचर्ड कार्नाक (संपादक), पीटर मुंडी की यूरोप और एशिया में यात्राएँ, 1608-1667, कैम्ब्रिज: हैकलुइट सोसाइटी, 1907।

Fryer, John, (Crooke William, ed.), A New Account of East India and Persia, Being Nine Years' Travels, 1672–1681, by John Fryer, London: Hakluyt Society, 1909–15.

फ्रायर, जॉन, (क्रूक विलियम, संपादक), ए न्यू अकाउंट ऑफ ईस्ट इंडिया एंड पर्शिया, बीइंग नाइन इयर्स ट्रेवल्स, 1672-1681, जॉन फ्रायर द्वारा, लंदन: हकलुइट सोसाइटी, 1909-15।

Foster, Sir William (ed.), The Voyages of Sir James Lancaster to Brazil and the East Indies, 1591–1603, London: Hakluyt Society, 1940.

फोस्टर, सर विलियम (संपादक), सर जेम्स लैंकास्टर की ब्राजील और पूर्वी इंडीज की यात्राएँ, 1591-1603, लंदन: हैकलुइट सोसाइटी, 1940।

FURTHER READING

अग्रिम पठन

Cipolla, Carlo M., Guns and Sails in the Early Phase of European Expansion, 1400–1700, London: Collins, 1965.

सिपोला, कार्लो एम., यूरोपीय विस्तार के प्रारंभिक चरण में बंदूकें और पाल, 1400-1700, लंदन: कॉलिन्स, 1965।

Cliff, Nigel, The Last Crusade: The Epic Voyages of Vasco da Gama, New York: Harper Perennial, 2011.

क्लिफ, निगेल, द लास्ट क्रूसेड: द एपिक वॉयजेस ऑफ वास्को दा गामा, न्यूयॉर्क: हार्पर पेरिनियल, 2011।

Farrington, Anthony, *Trading Places*, Exhibition Catalogue, London: British Library, 2002.

फैरिंगटन, एंथोनी, ट्रेडिंग प्लेसेस, प्रदर्शनी कैटलॉग, लंदन: ब्रिटिश लाइब्रेरी, 2002।

Hamilton, Alexander, *A New Account of the East Indies*, London: Argonaut Press, 1930.

हैमिल्टन, अलेक्जेंडर, ए न्यू अकाउंट ऑफ द ईस्ट इंडीज, लंदन: आर्गोनॉट प्रेस, 1930।

Keay, John, The Honourable Company: A History of the English East India Company, London: HarperCollins, 1991.

की, जॉन, द ऑनरेबल कंपनी: ए हिस्ट्री ऑफ द इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी, लंदन: हार्परकॉलिन्स, 1991।

Smith, Vincent A., (Percival Spear, ed.), *The Oxford History of India*, 3rd ed., Oxford: Clarendon Press, 1958.

स्मिथ, विंसेंट ए., (पर्सीवल स्पीयर, संपादक), द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, तीसरा संस्करण, ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1958।

Spear, Percival, *The Nabobs*, London: Oxford University Press, 1963.

स्पीयर, पर्सीवल, द नवाब, लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1963।

Tindall, Gillian, *City of Gold*, London: Penguin, 1992.
टिंडाल, गिलियन, सिटी ऑफ गोल्ड, लंदन: पेंगुइन, 1992।

PLACE NAME CHANGES

स्थान के नाम में परिवर्तन

Many place names in India have been changed in recent years and some of the old place names that have been given either new names or revised spellings are listed below:

हाल के वर्षों में भारत में कई स्थानों के नाम बदल दिए गए हैं और कुछ पुराने स्थानों के नाम जिन्हें या तो नए नाम दिए गए हैं या जिनकी वर्तनी संशोधित की गई है, नीचे सूचीबद्ध हैं:

Baroda	Vadodara
बड़ौदा	वे गर्वित हैं।
Bassein	Vasai
स्विमिंग पूल	कुम्हार
Bombay	Mumbai
बंबई	Mumbai
Broach	Bharuch
सीख	Bharuch
Calcutta	Kolkata
कलकत्ता	कोलकाता
Calicut	Kozhikode
कालीकट	कोझिकोड
Cannanore	Kannur
कैन्नानोर	कन्नूर
Cochin	Kochi
कोचीन	कोच्चि
Conjeeveram	Kanchipuram
कोंजीवरम	कांचीपुरम
Cranganore	Kodungalloor

क्रैंगनोर	कोडुंगल्लूर
Dacca	Dhaka
ढाका	ढाका
Devikota	Devkot
देविकोटा	देवकोट
Gheria	Vijaydurg
घेरिया	Vijaydurg
Hooghly	Hugli
हुगली	हुगली
Madras	Chennai
मद्रास	चेन्नई
Masulipatam	Machilipatnam
Masulipatam	मछलीपट्टनम
Ormuz	Ormus
ओर्मुज़	ओरमस
Panjim	Panaji
पणजी	Panaji
Quilandi	Koyilandy
क्विलैंडी	कोयिलैंडी
Quilon	Kollam
क्विलोन	कोल्लम
Tellicherry	Thalassery
तेल्लीचेरी	थालास्सेरी
Trichinopoly	Tiruchirappalli
त्रिचिनोपोली	तिरुचिरापल्ली

INDEX

अनुक्रमणिका

Akbar

अकबर

Albuquerque, Afonso de

अल्बुकर्क, अफोंसो डे

Ali, Mohammed

अली, मोहम्मद

Angre, Kanhoji (Maratha admiral)

Angre, Kanhoji (Maratha admiral)

and British

और ब्रिटिश

and Siddis

और सिद्दी

implemented *dastak*

implemented dastak

treaty of peace

शांति संधि

Anjego

अंजेगो

Anwar-ud-din, Nawab of the Carnatic

अनवर-उद-दीन, कर्नाटक संगीत के नवाब

Arabs

अरबों

Armenians

आर्मीनियाई

Attingal

अटिंगल

Rani of

रानी

Aungier, Gerald (English)

औंगियर, गेराल्ड (अंग्रेजी)

Aurangzeb

औरंगजेब

Barlow, Edward (English)

बार्लो, एडवर्ड (अंग्रेज़)

his ship, the *Experiment*

उसका जहाज, प्रयोग

Bengal, British in

बंगाल, अंग्रेजों में

trade business in

व्यापार व्यवसाय में

East India Company

ईस्ट इंडिया कंपनी

under Mughals

मुगलों के अधीन

Boone, Charles (English)

बूने, चार्ल्स (अंग्रेजी)

Boscawen, Admiral (English)

बोस्कावेन, एडमिरल (अंग्रेजी)

Bourdonnais, Mahé de La (French)

बॉर्डोनिस, माहे डे ला (फ्रेंच)

Brown, Admiral Walter (English)

ब्राउन, एडमिरल वाल्टर (अंग्रेजी)

Cabral, Pedro Álvares (Portuguese)

कैब्रल, पेड्रो अल्वारेस (पुर्तगाली)

Calcutta, British in

कलकत्ता, ब्रिटिश

trade from

व्यापार से

Calicut

कालीकट

Carnatic

कर्नाटक

British in

ब्रिटिश में

French in

फ्रेंच में

Marathas in

मराठों में

Caron, Francis (French)

कैरोन, फ्रांसिस (फ्रेंच)

Carré, Abbé (French)

कैरे, अब्बे (फ्रेंच)

Chanda Sahib (Carnatic)

चंदा साहिब (कर्नाटक संगीत)

Chandranagar

Chandranagar

Charles de Bussy (French)

चार्ल्स डी बुसी (फ्रांसीसी)

Charnock, Job (English)

चार्नॉक, जॉब (अंग्रेजी)

Child, John (English)

बच्चा, जॉन (अंग्रेजी)

Christianity in India

भारत में ईसाई धर्म

Clive, Robert

क्लाइव, रॉबर्ट

Cooke, Catherine (married John Harvey, Thomas Chown, and William Gyfford)

कुक, कैथरीन (विवाहित जॉन हार्वे, थॉमस चॉउन और विलियम गिफोर्ड)

Cooke, Humphrey (English)

कुक, हम्फ्री (अंग्रेजी)

Courten, Sir William

कोर्टेन, सर विलियम

Danish East India Company

डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी

reborn as Asiatic Company

एशियाटिक कंपनी के रूप में पुनर्जन्म हुआ

Denmark

डेनमार्क

Devikota

देविकोटा

Drake, Roger (English)

ड्रेक, रोजर (अंग्रेजी)

Drake, Sir Francis (English)

ड्रेक, सर फ्रांसिस (अंग्रेजी)

du Bury, General (French)

डु बरी, जनरल (फ्रेंच)

Dumas, Pierre Benoît (French)

डुमास, पियरे बेनोइट (फ्रेंच)

Dupleix, Joseph François

डुप्लेक्स, जोसेफ फ्रांकोइस

differences with La Bourdonnais

ला बॉर्डोनिस के साथ मतभेद

Dutch

डच

and Cochin

और कोचीन

and English

और अंग्रेजी

and Goa

और गोवा

and Portuguese

और पुर्तगाली

and religion

और धर्म

and Zamorin

और ज़मोरिन

at Surat

सूरत में

companies (VOC)

कंपनियां (वीओसी)

East India Company

ईस्ट इंडिया कंपनी

trade by

व्यापार द्वारा

East India Company

ईस्ट इंडिया कंपनी

and Mughals

और मुगलों

army in India

भारत में सेना

at Bombay

और बॉम्बे

life of employees

कर्मचारियों का जीवन

money used for private trade

निजी व्यापार के लिए प्रयुक्त धन

policy of peaceful trade

शांतिपूर्ण व्यापार की नीति

policy of religious tolerance

धार्मिक सहिष्णुता की नीति

problems they faced

उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा

Egypt

मिस्र

English economy in the sixteenth century

सोलहवीं शताब्दी में अंग्रेजी अर्थव्यवस्था

Every, Henry (pirate)

एवरी, हेनरी (समुद्री डाकू)

exports from India

भारत से निर्यात

slaves

गुलाम

spices

मसाले

textiles

वस्त्र

famines

अकाल

Francisco de Almeida, Viceroy

फ्रांसिस्को डी अल्मेडा, वायसराय

Fremlen, William

फ्रेमलेन, विलियम

French

फ्रेंच

and British

और ब्रिटिश

and Carnatic

और कर्नाटक

and Dutch

और डच

and Marathas

और मराठा

and Mughals

और मुगलों

enterprises, conflict within

उद्यमों, भीतर संघर्ष

in Bengal

बंगाल में

in Madras

मद्रास में

in Pondicherry

पांडिचेरी में

trade with India

भारत के साथ व्यापार

trading company

ट्रेडिंग कंपनी

Fryer, John (English)

फ्रायर, जॉन (अंग्रेजी)

Gayer, Sir John (English)

गेयर, सर जॉन (अंग्रेजी)

Gyfford, William (English)

गिफोर्ड, विलियम (अंग्रेजी)

Goa

गोवा

attacked by Adil Shah

आदिल शाह द्वारा हमला किया गया

Dutch in

डच में

Portuguese in

पुर्तगाली में

Godeheu, Charles (French)

गोडेहु, चार्ल्स (फ्रांसीसी)

Golconda

गोलकोंडा

Grappe, Roland (Dutch)

ग्रैपे, रोलैंड (डच)

Gujarat

Gujarat

life in

जीवन में

trade from

व्यापार से

Hamilton, Alexander

हैमिल्टन, अलेक्जेंडर

Harvey, John (English)

हार्वे, जॉन (अंग्रेजी)

Hawkins, William, captain of *Hector*

हॉकिन्स, विलियम, हेक्टर के कप्तान

Heath, Captain William (English)

हीथ, कैप्टन विलियम (अंग्रेज़)

Hindus, treatment given by external powers to

हिंदुओं के साथ बाह्य शक्तियों द्वारा किया गया व्यवहार

Honavar, Raja of

होनवर, राजा

Ibn Batuta's account of Malabar

इब्न बतूता का मालाबार का विवरण

India and Persia, trade between

भारत और फारस के बीच व्यापार

Islam

इसलाम

Jafar, Mir

जाफर, मीर

Jahangir

Jahangir

Jains

जैन

James, Commodore William (English)

जेम्स, कमोडोर विलियम (अंग्रेज़ी)

Jang, Muzaffar

जंग, मुजफ्फर

Jang, Nasir

जंग, नासिर

João de Castro (Portuguese)

कास्त्रो का जॉन (पुर्तगाली)

Keeling, William, captain of *Dragon*

कीलिंग, विलियम, ड्रैगन के कप्तान

Khan, Dost Ali (Carnatic)

खान, दोस्त अली (कर्नाटक संगीत)

Khan, Mahfuz

खान, महफूज़

Khan, Rumi (Turk)

खान, रूमी (तुर्क)

Kawaka Minas, Armenian

कावाका मिनस, अर्मेनियाई

Kidd, Captain (English pirate)

किड, कैप्टन (अंग्रेज़ समुद्री डाकू)

Kunjali Marakkar, Mohammad

कुंजाली मराक्कर, मोहम्मद

Kunjali Marakkars

मराक्कर की कुंजाली

Lawrence, Major Stringer

लॉरेंस, मेजर स्ट्रिंगर

Levant Company (English), trade with Turkish Empire

लेवेंट कंपनी (अंग्रेज़), तुर्की साम्राज्य के साथ व्यापार

Leyel, Willem (Dutch)

लेयेल, विलेम (डच)

Madan, Mir

मदन, मीर

Madras

मद्रास

British trade business from

ब्रिटिश व्यापार व्यवसाय से

Dutch exported slaves from

डचों ने दासों का निर्यात किया

Malabar Coast and Romans, trade between
मालाबार तट और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार
Marathas
मराठों
and English
और अंग्रेजी
and French
और फ्रेंच
and Mughals
और मुगलों
Marco Polo, life in India
मार्को पोलो, भारत में जीवन
Martin, François (French)
मार्टिन, फ़्रांस्वा (फ्रेंच)
Mathews, Commodore Thomas (English)
मैथ्यूज, कमोडोर थॉमस (अंग्रेजी)
Morse, Nicholas
मोर्स, निकोलस
Mughal India
मुगल भारत
account of life and work in
जीवन और कार्य का विवरण
and trade
और व्यापार
cruelties of the
क्रूरताओं

Mundy, Peter, life in British times

मुंडी, पीटर, ब्रिटिश काल में जीवन

Muslims, treatment given by Europeans

यूरोपियों द्वारा मुसलमानों के साथ किया गया व्यवहार

Nayak, Damarla Venkapapati (Carnatic)

Nayak, Damarla Venkapapati (Carnatic)

Nikitini's, Afanasy, account of India

निकितिनी, इतिहास, भारत का विवरण

Odoric, life in India

ओडोरिक, भारत में जीवन

Omichand (Nawab's intermediary)

ओमीचंद (नवाब का मध्यस्थ)

Ovington, Reverend John (English)

ओविंगटन, रेवरेंड जॉन (अंग्रेजी)

Paradis, Louis (French)

पैराडिस, लुई (फ्रेंच)

Parsis

पारसियों

Pean, Captain (English)

पीन, कप्तान (अंग्रेजी)

Pessart, Barrent (Dutch)

पेसार्ट, बैरेंट (डच)

Phipps, William (English)

फिप्स, विलियम (अंग्रेजी)

piracy in India

भारत में समुद्री डकैती

laws against

कानूनों के खिलाफ

suppression

दमन

Plassey, Battle of

प्लासी की लड़ाई

Pondicherry

पांडिचेरी

development of

का विकास

French at

फ्रेंच में

trade from

व्यापार से

Portuguese

पुर्तगाली

and Hindus

और हिंदू

and Islam

और इस्लाम

at Diu

दीव में

contribution to India

भारत में योगदान

conversions to Christianity

ईसाई धर्म में धर्मांतरण

in Goa

गोवा में

India, life in

भारत में जीवन

Inquisition

न्यायिक जांच

terror

आतंक

trade by

व्यापार द्वारा

Pyrard, Francois (French)

पायर्ड, फ्रांकोइस (फ्रेंच)

fellow soldiers of

साथी सैनिकों

religious conversions

धार्मिक रूपांतरण

Roe, Sir Thomas

रो, सर थॉमस

Rykloff van Goens (Dutch)

राइक्लोफ़ वैन गोएन्स (डच)

Sambhaji (Marathas)

संभाजी (मराठा)

Shah Jahan

शाहजहाँ

Shah, Bahadur (Gujarat)

Shah, Bahadur (Gujarat)

Shah, Yusuf Adil

शाह, यूसुफ आदिल

Shivaji, Maratha king

Shivaji, Maratha king

Siddis of Janjira

जंजीरा के सिद्दी

Siraj-ud-daula, Nawab of Bengal

सिराज-उद-दौला, बंगाल के नवाब

slave trade

ग़ुलामों का व्यापार

slaves, use of

दास, उपयोग

Smythe, Thomas

स्माइथ, थॉमस

Sodré, Vincente

सोद्रे, विन्सेंटे

Stephens, Thomas

स्टीफेंस, थॉमस

sufferings inflicted on Indians by European powers

यूरोपीय शक्तियों द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचार

Surat

सूरत

trade centre for

व्यापार केंद्र के लिए

British

ब्रीटैन का

Dutch

डच

French

फ्रेंच

Tanjore

तंजोर

Tavernier, Jean-Baptiste (French)

टैवर्नियर, जीन-बैप्टिस्ट (फ्रेंच)

temples, destruction of

मंदिरों का विनाश

Vasco da Gama

वास्को डिगामा

Vora, Virji (businessman) and East India Company

वोरा, विरजी (व्यापारी) और ईस्ट इंडिया कंपनी

Waite, Sir Nicholas (English)

वेट, सर निकोलस (अंग्रेजी)

Watson, Vice-Admiral Charles (English)

वॉटसन, वाइस-एडमिरल चार्ल्स (अंग्रेज़ी)

Weddell, John (English)

वेडेल, जॉन (अंग्रेजी)

Xavier, Francis

जेवियर, फ्रांसिस

Zamorin and

ज़मोरिन और

Dutch

डच

English

अंग्रेज़ी

Portuguese

पुर्तगाली

Raja of Cochin

कोचीन के राजा

ACKNOWLEDGEMENTS

आभार

I have received help and hospitality from many in India and the UK while writing this book, for which I am extremely grateful. I would particularly like to thank Dileep Chinchalker, Tejas Desai, Ashvin Naik, C.K. Ramachandran, Premalatha Seshadri, Sharada Srinivasan and Jehangir Vakil.

इस पुस्तक को लिखने के दौरान मुझे भारत और ब्रिटेन के कई लोगों से सहायता और आतिथ्य सत्कार प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं अत्यंत आभारी हूं। मैं विशेष रूप से दिलीप चिंचल्कर, तेजस देसाई, अश्विन नाइक, सी.के. रामचंद्रन, प्रेमलता शेषाद्री, शारदा श्रीनिवासन और जहांगीर वकील को धन्यवाद देना चाहता हूं।

I would also like to thank the staff of the British Library's African and Asian Studies reading room for their assistance in my research, Rachel Joy Tanzer for facilitating the publication of this book, and all the staff of HarperCollins India who have striven to make it a success.

मैं ब्रिटिश लाइब्रेरी के अफ्रीकी और एशियाई अध्ययन वाचनालय के कर्मचारियों को मेरे शोध में उनकी सहायता के लिए, राहेल जॉय टैन्ज़र को इस पुस्तक के प्रकाशन को सुगम बनाने के लिए, और हार्परकॉलिन्स इंडिया के सभी कर्मचारियों को, जिन्होंने इसे सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किया, धन्यवाद देना चाहता हूँ।

About the Book

किताब के बारे में

From the bestselling author of

The Great Hedge of India

भारत की महान बाड़ के बेस्टसेलर लेखक की ओर से

In the three centuries that followed Vasco da Gama's discovery of the sea route from Europe to India, European powers made a beeline for India's fabled riches, its spices, gold and gems. Though they ostensibly came for trade and commerce, and the thrill of discovering a new land, the lines between exploration and exploitation soon blurred.

वास्को दा गामा द्वारा यूरोप से भारत तक समुद्री मार्ग की खोज के बाद की तीन शताब्दियों में, यूरोपीय शक्तियां भारत के प्रसिद्ध खजाने, मसालों, सोने और रत्नों की खोज में जुट गईं। हालांकि वे ऊपरी तौर पर व्यापार और वाणिज्य तथा एक नई भूमि की खोज के रोमांच के लिए आए थे, लेकिन अन्वेषण और शोषण के बीच की रेखा जल्द ही धुंधली हो गई।

The Theft of India documents the intense rivalry for spoils that played out between the British, the French, the Dutch and the Portuguese, and the impact this had on Indians. It details the political intrigue, the agreements and the betrayals, the oppression, swindling and greed of these foreign powers as they each tried to strengthen their grip on this vast and 'exotic' land.

'द थेफ्ट ऑफ इंडिया' ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच और पुर्तगाली शासकों के बीच चल रही लूट-पाट की तीव्र प्रतिद्वंद्विता और भारतीयों पर इसके प्रभाव का दस्तावेजीकरण करती है। यह इन विदेशी शक्तियों की राजनीतिक साजिशों, समझौतों और विश्वासघातों, उत्पीड़न,

धोखाधड़ी और लालच का विस्तृत वर्णन करती है, क्योंकि प्रत्येक शक्ति इस विशाल और 'अनोखी' भूमि पर अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास कर रही थी।

Roy Moxham's work, though, is no dry study of textual materials. Through probing research, he unearths eyewitness accounts and memoirs from the era. Moxham supplements these with an exhaustive study of academic works on the subject. The result is an unflattering picture of the 'civilized' West as it systematically strips India of its riches.

रॉय मॉक्सहैम का काम केवल लिखित सामग्री का नीरस अध्ययन नहीं है। गहन शोध के माध्यम से, वे उस युग के प्रत्यक्षदर्शी वृत्तांतों और संस्मरणों को उजागर करते हैं। मॉक्सहैम इस विषय पर अकादमिक कृतियों के व्यापक अध्ययन से इन्हें पूरक बनाते हैं। परिणामस्वरूप, 'सभ्य' पश्चिम की एक ऐसी निंदनीय तस्वीर सामने आती है, जिसमें भारत को उसकी समृद्धि से व्यवस्थित रूप से वंचित किया जा रहा है।

About the Author

लेखक के बारे में

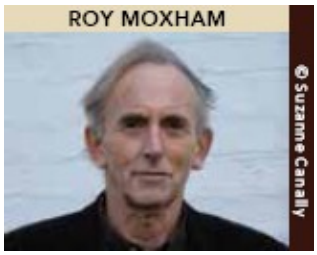

Roy Moxham is the author of *Outlaw – India's Bandit Queen and Me* (2010), *A Brief History of Tea* (2009), an updated edition of *Tea – Addiction Exploitation and Empire* (2003), *The Great Hedge of India* (2001), and two novels, *The East Indian Company Wife* (2014) and *The Freelander* (1990). He was born and brought up in Evesham, England. After working for a while on a fruit farm, he went to Africa in 1961 to manage a tea estate in Nyasaland, now Malawi. He spent thirteen years in eastern Africa before returning to London to set up a gallery of African art.

रॉय मॉक्सहैम आउटलॉ – इंडियाज़ बैंडिट क्वीन एंड मी (2010), ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टी (2009), टी – एडिक्शन एक्सप्लॉयटेशन एंड एम्पायर (2003) का अद्यतन संस्करण, द ग्रेट हेज ऑफ इंडिया (2001), और दो उपन्यासों, द ईस्ट इंडियन कंपनी वाइफ (2014) और द फ्रीलैंडर (1990) के लेखक हैं। उनका जन्म और पालन-पोषण इंग्लैंड के ईवेशम में हुआ था। एक फल फार्म में कुछ समय काम करने के बाद, वे 1961 में अफ्रीका के न्यासालैंड (अब मलावी) में एक चाय बागान का प्रबंधन करने के लिए चले गए। उन्होंने पूर्वी अफ्रीका में तेरह वर्ष बिताए और फिर लंदन लौटकर अफ्रीकी कला की एक गैलरी स्थापित की।

Subsequently, Roy Moxham went to Camberwell College of Arts and qualified as a book and paper conservator. After a period at Canterbury Cathedral Archives, he became senior conservator of the Senate House Library, University of London. He also taught and examined in the Institute of English

Studies on an MA in ‘The History of the Book’. Following ‘retirement’, he devotes most of his energies to writing and giving talks. He spends half his time in London and the other half travelling, principally in South and South-East Asia.

इसके बाद, रॉय मॉक्सहैम ने कैम्बरवेल कॉलेज ऑफ आर्ट्स में दाखिला लिया और पुस्तक एवं कागज संरक्षण विशेषज्ञ के रूप में योग्यता प्राप्त की। कैंटरबरी कैथेड्रल अभिलेखागार में कुछ समय बिताने के बाद, वे लंदन विश्वविद्यालय के सीनेट हाउस पुस्तकालय में वरिष्ठ संरक्षण विशेषज्ञ बन गए। उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश स्टडीज में 'पुस्तक का इतिहास' विषय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्यापन और परीक्षा भी ली। सेवानिवृत्ति के बाद, वे अपना अधिकांश समय लेखन और व्याख्यान देने में व्यतीत करते हैं। वे अपना आधा समय लंदन में और शेष आधा समय यात्रा में, मुख्यतः दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में बिताते हैं।

www.roymoxham.com

www.roymoxham.com

TALK TO US

हमसे बात करें

Join the conversation on Twitter

ट्विटर पर बातचीत में शामिल हों

http://twitter.com/HarperCollinsIN

http://twitter.com/HarperCollinsIN

Like us on Facebook to find and share posts about our books with your friends

हमारी किताबों से संबंधित पोस्ट ढूंढने और अपने दोस्तों के साथ साझा करने के लिए हमें फेसबुक पर लाइक करें।

http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia

http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia

Follow our photo stories on Instagram

इंस्टाग्राम पर हमारी फोटो स्टोरीज़ को फॉलो करें

http://instagram.com/harpercollinsindia/

http://instagram.com/harpercollinsindia/

Get fun pictures, quotes and more about our books on Tumblr

Tumblr पर हमारी किताबों से जुड़ी मज़ेदार तस्वीरें, उद्धरण और बहुत कुछ पाएं।

http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

First published in India in 2016 by
भारत में पहली बार 2016 में प्रकाशित।
HarperCollins *Publishers* India
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया
Copyright © Roy Moxham 2016
कॉपीराइट © रॉय मॉक्सहैम 2016
P-ISBN: 978-93-5264-090-4
पी-आईएसबीएन: 978-93-5264-090-4
Epub Edition © December 2016 ISBN: 978-93-5264-091-1
ईपब संस्करण © दिसंबर 2016 ISBN: 978-93-5264-091-1
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1
Roy Moxham asserts the moral right to be identified as the author of this work.
रॉय मॉक्सहैम इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं।
The views and opinions expressed in this book are the author's own and the facts are as reported by her, and the publishers are not in any way liable for the same.
इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और मत लेखिका के अपने हैं और तथ्य उन्हीं के द्वारा बताए गए हैं, और प्रकाशक इसके लिए किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं हैं।
All rights reserved under The Copyright Act, 1957. By payment of the required fees, you have been granted the nonexclusive, nontransferable right to access and read the text of this ebook on-screen. No part of this text may be reproduced, transmitted, downloaded, decompiled, reverse-engineered, or stored in or introduced into any information storage and retrieval system, in any form or by any means, whether electronic or mechanical, now known or

hereinafter invented, without the express written permission of HarperCollins *Publishers* India.

कॉपीराइट अधिनियम, 1957 के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। आवश्यक शुल्क के भुगतान पर, आपको इस ईबुक के पाठ को स्क्रीन पर देखने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है। हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, इस पाठ का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, प्रसारित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात हो या भविष्य में आविष्कार किया जाए, संग्रहीत या उसमें शामिल नहीं किया जा सकता है।

Cover design © HarperCollins *Publishers* India

कवर डिज़ाइन © हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया

Cover image: **Getty Images**

कवर इमेज: गेटी इमेजेस

www.harpercollins.co.in

www.harpercollins.co.in

HarperCollins Publishers

हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स

A-75, Sector 57, Noida, Uttar Pradesh 201301, India

ए-75, सेक्टर 57, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301, भारत

1 London Bridge Street, London, SE1 9GF, United Kingdom

1 लंदन ब्रिज स्ट्रीट, लंदन, SE1 9GF, यूनाइटेड किंगडम

Hazelton Lanes, 55 Avenue Road, Suite 2900, Toronto, Ontario M5R 3L2

हेज़ल्टन लेन्स, 55 एवेन्यू रोड, सुइट 2900, टोरंटो, ओंटारियो M5R 3L2

and 1995 Markham Road, Scarborough, Ontario M1B 5M8, Canada

और 1995 मार्खम रोड, स्कारबोरो, ओंटारियो M1B 5M8, कनाडा

25 Ryde Road, Pymble, Sydney, NSW 2073, Australia

25 राइड रोड, पिम्बल, सिडनी, NSW 2073, ऑस्ट्रेलिया

195 Broadway, New York, NY 10007, USA

195 ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क, NY 10007, यूएसए